गुरुवर की धरोहर 3

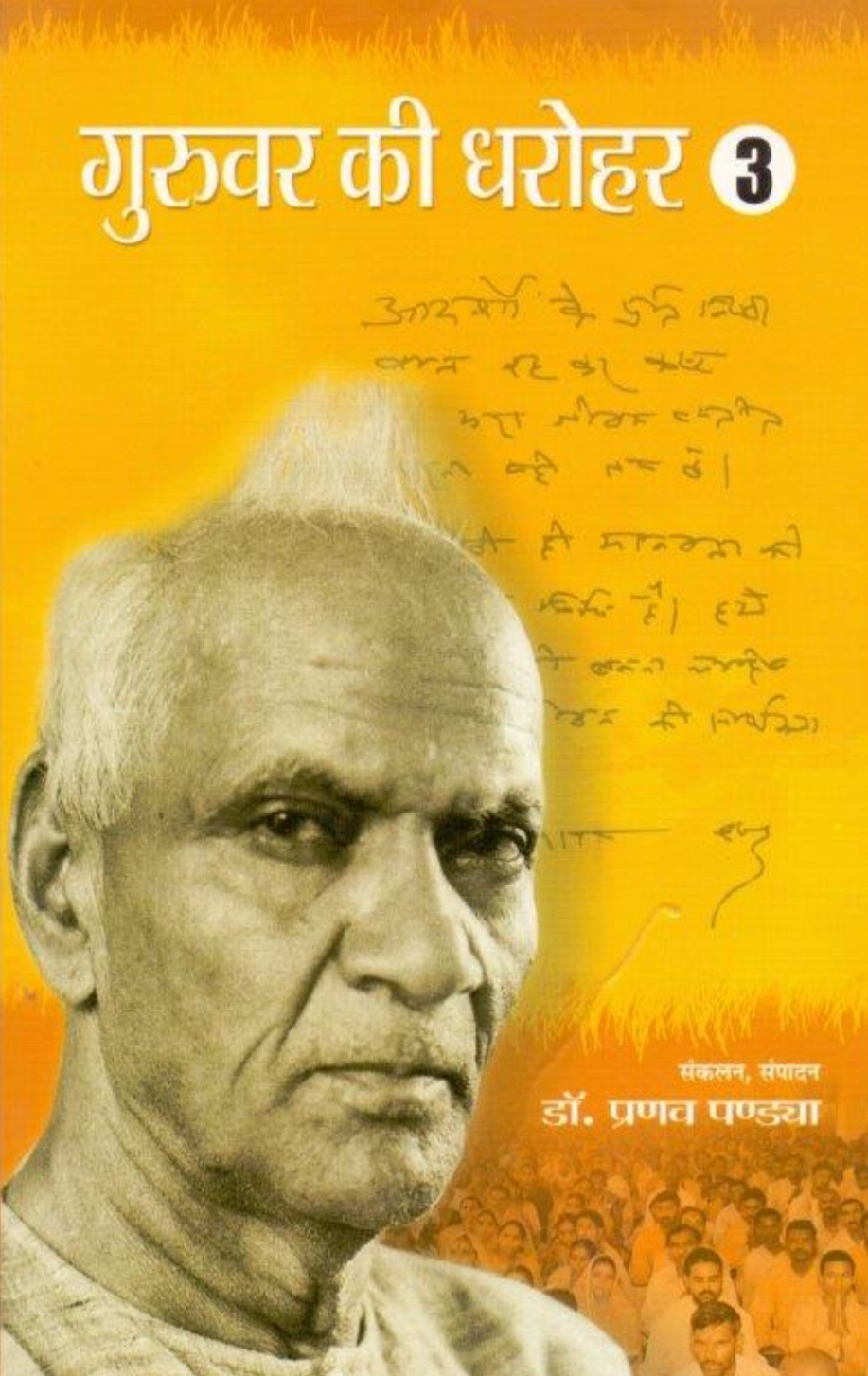

संकलन, संपादन

डॉ. प्रणव पण्ड्या

गुरुवर की धरोहर

भाग-3

✪

संपादक

डॉ० प्रणव पण्ड्या

ब्रह्मवर्चस

प्रकाशक

श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (TMD)

गायत्री नगर, श्रीरामपुरम्-शांतिकुंज, हरिद्वार

(उत्तराखण्ड) पिन-249411

पुनरावृत्ति सन् 2013 मूल्य-48/-

गुरुवर की धरोहर

भाग-3

संपादक
डॉ० प्रणव पण्ड्या
ब्रह्मवर्चस

प्रकाशक
श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (TMD)
गायत्री नगर, श्रीरामपुरम्-शांतिकुंज, हरिद्वार
(उत्तराखण्ड) पिन-249411

पुनरावृत्ति सन् 2013

मूल्य-48/-

ISBN 81 - 8255 - 016 - 5

गायत्रीतीर्थ-शांतिकुंज, हरिद्वार
(उत्तराखण्ड) 249411
Ph.No.Off.- 01334-260602, 260403, 261328 Fax-260866
Email:shantikunj@awgp.org www.awgp.org

विषय सूची

क्र०	विषय	पृष्ठ संख्या
१.	आपका विवाह हम भगवान् से कराना चाहते हैं	५
२.	विवेक की साधना और सिद्धि	१८
३.	धर्मतंत्र का परिष्कार अत्यंत अनिवार्य	२५
४.	अध्यात्म के सही मर्म को समझें	४७
५.	त्याग-बलिदान की संस्कृति-देवसंस्कृति	५४
६.	हमारा कुटुम्ब तब और अब	७७
७.	स्वयं को ऊँचा उठायें-व्यक्तित्ववान बनें	९४
८.	जीवंत विभूतियों से भावभरी अपेक्षाएँ	१२६
९.	धर्मग्रंथ हमें क्या शिक्षण देते हैं, यह जानें	१४७
१०.	फिजाँ बदल देती है-अवतार की आँधी	१६२

*****

प्राक्कथन

महापुरुषों के अमृत वचन हमारे लिए उनके साथ किये गए सत्संग की पूर्ति कर देते हैं। उनका उपदेश हमारी चित्तशुद्धि करता है एवं हमें "क्षुरस्य धारा" की तरह अध्यात्म के दुस्तर मार्ग पर चलने का साहस देता है। परम पूज्य गुरुदेव **पं० श्रीराम शर्मा आचार्य** जी के जीवन की एक सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनने जीवन भर ऐसा लिखा, जिसने लाखों-करोड़ों का मार्गदर्शन किया तथा अपने प्रवचनों में इतना कुछ कहा कि अगणित व्यक्ति जो साहित्य के माध्यम से नहीं जुड़े थे, उनकी अमृतवाणी सुनकर जुड़ गए। इतनी सरल भाषा, इतने सुन्दर जीवन से जुड़े उदाहरण, कथानक एवं कबीर, तुलसी, वाल्मीकि, व्यास की विद्वत्ता का, आद्य शंकर एवं स्वामी विवेकानंद के कुशाग्र भावसिक्त विचारों का समन्वय और कहीं देखने को नहीं मिलता।

प्रस्तुत पुस्तक गायत्री व यज्ञ को जन-जन तक पहुँचाने वाले उसी युगपुरुष की अमृतवाणी का संकलन-सम्पादन है। एक प्रयास अप्रैल १९९५ में हुआ था, जब गुरुवर की धरोहर के भाग एक व दो प्रकाशित हुए थे। इनके माध्यम से आँवलखेड़ा पूर्णाहुति की पूर्ववेला में लाखों साधकों-परिजनों ने उनके विचारों को उनकी लिपिबद्ध प्रकाशित वाणी के रूप में पढ़ा। इसी के तुरंत बाद वाङ्मय के ७० खण्डों का प्रकाशन हुआ। इनमें एक खण्ड अड़सठवें (६८ वें) खण्ड के रूप में पूज्यवर की अमृतवाणी प्रकाशित हुई। इसमें भी प्रवचनों का संकलन है। अब उसके दस वर्ष बाद यह दो खण्ड तीन एवं चार हम शेष कई प्रवचनों में से कुछ का संकलन कर आपके समक्ष प्रकाशित कर रहे हैं। सभी भिन्न-भिन्न विषयों पर हैं। एक महापुरुष जब लिखता है, तो उसकी भाषा संस्कृतनिष्ठ, उर्दू मिश्रित व किम्बदन्तियों-मुहावरों के साथ गुँथी होती है, इसका प्रमाण पूज्यवर की लेखनी है। पर जब वे बोलते हैं, तो नरमानव के स्तर पर उतर कर उसे जनसामान्य की भाषा में संबोधित करते हैं। ऐसा ही कुछ विलक्षण संकलन यह बन पड़ा है।

हमें आशा है कि शताब्दी वर्ष (२०११-२०१२) की पूर्व वेला में होने जा रहे कुछ चुने हुए प्रकाशनों में ये दोनों ही खण्ड प्रथम दो खण्डों की तरह जन-जन में स्थान बनाएँगे, सभी का मार्गदर्शन करेंगे। जो परिष्कृत अध्यात्म क्या है, जीवन कैसे जिया जाना चाहिए, यह जानना चाहते हैं तो पढ़ें गुरुवर की धरोहर। गुरुसत्ता की वाणी उन्हीं को सादर समर्पित है।

—डॉ० प्रणव पण्ड्या

आपका विवाह हम भगवान् से कराना चाहते हैं

(जनवरी १९६९ गायत्री तपोभूमि में दिया गया प्रवचन)

भगवान् की हताशा

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! आपने केवल अपने बेटे के लिए कमाया है, भले ही वह दो कौड़ी का हो। आपने केवल उसी के लिए जीना सीखा है। मित्रो, हमारा जीवन किस काम के लिए खर्च हो गया ? केवल मुट्ठी भर पत्थरों के लिए! हमने कभी भी सोचा नहीं कि हमें किस प्रकार जीना चाहिए। तो गुरुजी हमारी कमाई का क्या होगा? आपकी कमाई बेटे को मिलने वाली है, साले को मिलने वाली है, जमाई को मिलने वाली है। आपने अपनी बीबी को तबाह कर डाला। अरे आप चाहते, तो उसको ऊँचा उठा सकते थे। भगवान् ने आपको मनुष्य का शरीर दिया था। जिस दिन उसने आपको बनाया था, उसके लम्बे-लम्बे ख्वाब थे, उम्मीदें थीं। आपने सब पर पानी फेर दिया।

मित्रो! भगवान् बहुत ज्यादा थक गया है। उसकी इच्छा है कि हमारे प्रिय बेटे मनुष्य, यदि इस दुनिया को सुन्दर बनाते, तो मजा आ जाता। भगवान् को सहभागी और सहयोगी की आवश्यकता थी। इसलिए भगवान् ने आपको बनाया था। उसने आपको अपने नक्शे के अनुसार बड़ी मेहनत से बनाया था। भगवान् के पास गीली मिट्टी थी। उसने कुम्हार के तरीके से उस मिट्टी को इस प्रकार लम्बा कर दिया कि साँप बन गया। गोल-मटोल कर दिया तो कछुआ बन गया, मेढक बन गये। परन्तु जिस दिन भगवान् ने आपको बनाया, तो उन्हें पसीना आ गया। उनका बहुत सारा समय बीत गया। इसके पीछे इस दुनिया को सुन्दर बनाने का उनका उद्देश्य था। एक-एक कण शरीर का, जिसमें मस्तिष्क, हृदय, आँखें आदि सभी अंग बने। आज तक ऐसी बेमिसाल चीज दुनिया में नहीं बनी है, जैसा कि मनुष्य का शरीर है। जब हम हिमालय गये, तो नन्दन वन का फोटो खींचकर लाये। लम्बाई-चौड़ाई थी, परन्तु गहराई का पता नहीं लग सका तथा जो फोटो खींचा था, वह पीले रंग का

आया था। उसे देखकर मैंने सोचा कि यह कैसे हो सकता है! फोटो का रंग, तो इस प्रकार का नहीं होना चाहिए। वह तो मखमली था। मैंने उसे उठाकर फेंक दिया। यह सब लेंस का कमाल था।

वरिष्ठ राजकुमार का यह व्यवहार

मित्रो, हमारी आँखें कितने सुंदर लेंस की बनी हैं, इसका जवाब इस दुनिया में नहीं है। यह वास्तविक फोटो खींच लेती है। इतना बेशकीमती शरीर तथा भगवान् का ऐसा अनुदान किसी प्राणी को नहीं मिला है। इतनी उदारता भगवान् ने क्यों बरती? यह प्रश्न आपके सामने है। आपको विचार करना चाहिए कि भगवान् ने ऐसा पक्षपात क्यों किया? अगर अन्य प्राणियों में सोचने का, विचार करने का माद्दा रहा होता, तो वे भगवान् के सामने उपस्थित हो जाते तथा अपनी फरियाद सुनाकर आपको जेल भिजवा देते। परन्तु उनमें यह माद्दा नहीं, अतः वे बेचारे क्या करें! परन्तु आपको तो विचार करना चाहिए। इस मामले में भगवान् को अगर कोर्ट में बुलाया जाता, तो वह काँपता हुआ आता। जब उससे इस बावत पूछा जाता, तो वह कहता कि मनुष्य को हमने विशेष चीजें इसलिए नहीं दीं कि वह फिजूलखर्ची करे तथा मौज-मस्ती उड़ाये। हमने तो इस दुनिया को सुन्दर बनाने के लिए, उसे सजाने-सँवारने के लिए बनाया था। यह हमारा बड़ा बेटा है, राजकुमार है। हमने इस कारण से उसे राजगद्दी दे दी थी और सारी जिम्मेदारी सौंपी थी। यह इसलिए दिया था कि वह मेरा सहयोग करेगा। हमने बहुत बड़ा ख्वाब देखा था, इसके बारे में कि यह हमारा बड़ा बच्चा है, वरिष्ठ राजकुमार है, जो इस दुनिया को सुन्दर बनाता हुआ चला जाएगा।

परन्तु उस अभागे को, बेहूदे को मैं क्या कहूँ, जो धूम्रपान कर वहीं आ गया, जहाँ से चला था। वह कुत्ते की योनि से, बन्दर की योनि से, सुअर की योनि से आया था और निम्नकोटि के चिन्तन, विचार होने के कारण फिर से उसी योनि में चला गया। उसे निम्न कोटि के प्राणियों की तरह ही अब भी पेट तथा प्रजनन की बात याद है, बाकी चीजें, तो वह भूल-सा ही गया। उस अभागे को यह समझ में नहीं आया कि जब भगवान् ने बन्दर के लिए, अन्य प्राणियों के लिए पेट भरने की व्यवस्था की है, तो क्या उसके प्रिय पुत्र मनुष्य को वह रोटी का प्रबन्ध नहीं करेगा? परन्तु हाय रे! अभागे मनुष्य-वह इसकी कीमत नहीं जान सका। वह अपने उद्देश्य को भूल गया तथा यह कहने लगा कि मैं अपनी अकल से कमाऊँगा, बहुत अर्जन करूँगा, मौज से रहूँगा। इसी में वह खपता रहा।

अभागे मनुष्य की दुर्गति

मित्रो! उसका हीरे एवं मोती जैसा दिमाग इसी में घूमता रहा, आगे-पीछे होता रहा, उस अभागे ने बर्वाद कर लिया अपने आपको। साथियो, घोड़ा, हाथी, भैंस आदि जानवर मनुष्य से ज्यादा खाते हैं और उनका पेट भर जाता है। परन्तु इस अभागे मनुष्य का पेट भाई से, बाप से, बीबी से भी नहीं भरता है। हाय रे! अभागा यह मनुष्य, पेट की खातिर बर्वाद हो गया। भगवान् ने हमसे कहा कि क्या कहूँ आचार्य जी, हम तो बहुत चिन्तित हैं। हमने उन्हें पानी पिलाया और कहा कि आप जाइये एवं चिन्तित मत होइये। आपके पास तो चौरासी लाख योनि वाले प्राणियों की अनेकों शिकायतें आ चुकी हैं। आप जाइये, अब हम इन्हें ठीक करेंगे। मनुष्य के पास बुद्धिबल है, उसे हम ठीक करेंगे। इस दुनिया में खुशी, आनन्द, उल्लास का वातावरण पैदा करेंगे। अभी तो वह पेट-प्रजनन में लगा है। मैं पूछता हूँ कि तेरे पास धर्म, संस्कृति कहाँ है? तू कभी इसके बारे में सोचता है क्या? अरे तूने इतने सारे बच्चे पैदा कर लिए? इसे नासमझी के अतिरिक्त और क्या कहा जाय?

भगवान् ने कहा कि मैंने इसे बहुत प्यार से पैदा किया, पाला, बड़ा किया कि शायद यह मेरे काम आयेगा। मेरा सहयोगी बनेगा तथा इस संसार को सुन्दर बनायेगा, परन्तु इसने तो हमारी सारी-की-सारी इच्छाओं पर पानी फेर दिया है। यह वहीं जा पहुँचा है, जहाँ अन्य चौरासी लाख योनियों के प्राणी रहते हैं। इसने भगवान की नाक में दम कर रखा है। हमने भगवान् से कहा-हे प्रभु! इसे इस बार माफ कर दीजिये। अगर किसी को आगे इनसान बनाना, तो उसे ठोंक-बजाकर देख लेना। हमने भगवान् से प्रार्थना की कि भगवान्! पहले उससे पूछ लेना कि क्या वह कोई सेठ बनने जा रहा है या बच्चा पैदा करने जा रहा है? पहले यह पूछ लेना फिर उसे इनसान का जन्म देना। अगर मनुष्य का जन्म चाहिए, तो दो रुपये के कागज पर हस्ताक्षर करा लेना और बता देना कि अमुक-अमुक लक्ष्य हैं। अगर उसे मंजूर हो तो जीवन देना, वरन नहीं देना। अगर चाहिए तो जाओ, अन्यथा तुम बन्दर, कुत्ते की योनि में जाओ। तुम्हारे लिए मनुष्य का जीवन जीना तथा पाना संभव नहीं है। हमने भगवान् से कहा और उन्होंने स्वीकार कर लिया। उन्होंने कहा कि हमें जिनका दिमाग, विचार, कार्य जानवरों जैसा दिखलाई पड़ेगा, उन्हें हम मनुष्य का जन्म नहीं देंगे।

जीवनक्रम बदलिए

मित्रो, यह सच्चाई नहीं है। आप भगवान् के बड़े बेटे हैं। आप उनके बेटे हैं, जो बड़ा उदार, दयालु, कृपा का सागर तथा सर्वसम्पन्न है। भगवान् अपने लिए क्या

चाहता है ? क्या खाता है ? वह केवल दूसरों के लिए जिन्दा रहता है, आपको यह सोचना चाहिए तथा अपना जीवनक्रम बदलने का प्रयास करना चाहिए। आप तो केवल लक्ष्मी का मंत्र सीखना चाहते हैं। आप कहते हैं कि गुरुजी यह क्या कह रहे हैं ? मित्रो, आप चौरासी लाख योनियों का शरीर देखिये। आप अच्छे कर्म नहीं करेंगे, तो आपको गधे की योनि स्वीकार करनी पड़ेगी। आप पर ईंट लादी जाएँगी। वजन के मारे पीछे का पैर जख्मी हो जाएगा। पैर लड़खड़ाने लगेंगे। आप कहेंगे क आचार्य जी हम तो मन्नूलाल सेठ हैं। हम इस योनि में कैसे जाएँगे ? आपने अच्छा कर्म नहीं किया, तो आपको घुसना ही होगा।

मित्रो! आपको अपनी मूर्खता पर विचार करना चाहिए। आप बेकार की समस्याओं-बेसिर-पैर की समस्याओं में उलझे हैं। आपका दिमाग इस उलझन में पड़ा रहता है। आपका जीवन बर्बाद हो रहा है और आप चुप बैठे रहते हैं। हम आपको धन्यवाद देने वाले थे, परन्तु अब नहीं देना चाहते। आपको अभी १२५ रुपये मिल रहे थे, पर आप ३५० रुपये की नौकरी चाहते हैं। यह बेकार की बातें हैं। आपको जब १२५ रुपये खर्च करना नहीं आता, तो ३५० रुपये कैसे खर्च करेंगे। बेकार की बातें बन्द कीजिए। अगर आप आचार्य जी का आशीर्वाद ले जाते तथा अपने जीवन को महान बना लेते, तो हम और आप दोनों धन्य हो जाते।

भगवान् को जवाब क्या देंगे ?

मित्रो! हमने शानदार जिन्दगी जी है तथा प्रसन्नता के साथ विदा होने को बैठे हैं कि हम भगवान् को सही उत्तर देंगे। परन्तु आप भगवान् को क्या ज़वाब देंगे। आप तो अपनी जिन्दगी भर रोते रहे एवं मरने के बाद भी रोते रहेंगे। हमारा जीवन तालाब की तरह हो गया है। हमारा आधार कमजोर है। अगर अभी हमें लकवा हो जाये, तो हम कहीं के नहीं रह जाएँगे। हमारा तालाब सूख जाएगा, तो फिर क्या होगा ? हमारी उन्नति का आधार समाप्त हो गया है। हमारे पास ज्ञान है, परन्तु हमारे मस्तिष्क का चिन्तन खराब है, तो वह किसी तरह उपयोगी नहीं है। हमारे पास सम्पत्ति है, परन्तु कुछ उलटा हो जाये, अकाल पड़ जाये, तो हमारी सारी सम्पत्ति स्वाहा हो सकती है। जिसके प्रति हमारा अहंकार है, लोभ है, मोह है, वह बेकार हो जाएगा।

तालाब के ऊपर खेती का क्या भरोसा है। खेती कुंआ के पास के, बम्बे के ऊपर की ठीक होती है। जहाँ कुछ-न -कुछ अवश्य पैदा हो जाया करता है। वह हरा-भरा रहता है तथा पानी की चिन्ता उसे नहीं होती है। हमारा भी इस तरह का

ही चिन्तन है कि हमें भी मजबूत सहारा पकड़ना चाहिए, जिससे कि हम भी हरे-भरे रह सकें। इस तरह का सहारा हमारे लिए भगवान् से बढ़कर और कोई नहीं है, जो हमें सदैव हरा-भरा रख सकता है। इसमें जिन्दगी की उन्नति का सारा-का-सारा मार्ग खुला हुआ है। यह एक अज्ञात शक्ति है, जिसके इशारे पर सारा संसार चल रहा है।

आप तो बेटे के नशे में हैं। हाय बेटा-हाय बेटा चिल्लाते रहते हैं। एक बार हमारे पास मध्यप्रदेश के एक सज्जन आये थे। उनके दूसरे नम्बर के बेटे की शादी तो हो गयी, पर नौकरी नहीं लगी थी। वह मक्कार था, श्रम करना नहीं चाहता था। उसने अपने बाप से कहा कि आपने पैदा किया है, तो खिलाइये, पैसा दीजिए, नहीं तो हम जान से मार देंगे। बेचारे डर के मारे भागकर हमारे पास आये एवं कहा कि हम दो-तीन माह तक नहीं जाएँगे। छुट्टी ले लेंगे एवं यहाँ छिपे रहेंगे। उन्होंने कहा कि गुरुजी अगर उसका कोई पत्र आ जाये, तो यह मत कहना कि हम यहाँ हैं। मित्रो,उनके मन में बेटे के प्रति जो ख्वाब था वह चूर-चूर हो गया था। आप भी बेटों के पीछे पागल रहते हैं। रात-दिन बेटा-बेटा करते रहते हैं। हमारा एक और दूसरा ख्वाब यह होता है कि हम यह बन जाएँगे, वह बन जाएँगे, परन्तु एक आँधी आती है और हमारे सब ख्वाब समाप्त हो जाते हैं। हमने इतना कमजोर आधार बना दिया है कि हमें दिन में हँसना पड़ेगा तथा रात में रोना पड़ेगा। इस प्रकार हम अपनी बहिरंग जिन्दगी इसी प्रकार रोते हुए खत्म कर देंगे।

भगवान् का सहारा लीजिए

लेकिन मित्रो! एक और सहारा है, अगर आप उसे पकड़ लेंगे, तो आपका जीवन कुछ बन सकता है। वह सहारा भगवान का है। आप कहेंगे कि हम तो रोज शंकरजी के मंदिर जाते हैं, पूजा-पाठ करते हैं, परन्तु शंकरजी हमारी कोई मदद नहीं करते हैं। सावन के महीने में हमने बेलपत्र चढ़ाया, पानी का मटका लगाया, परन्तु भगवान् शंकर ने कोई मदद नहीं की। मित्रो, शंकर भगवान् की कृपा प्राप्त करने के लिए आपको बड़ा कदम उठाना होगा।

मित्रो! बड़े कार्यों के लिए बड़ा कदम, जोखिम भरा कदम उठाना पड़ता है, तब लाभ प्राप्त होता है। शंकर जी ने वरदान दिया था-रावण को, भस्मासुर को तथा शंकरजी ने वरदान दिया था परशुराम को, परन्तु उनके व्यवहार एवं कर्म करने के ढंग के कारण रावण एवं भस्मासुर को मरना पड़ा। अगर आपकी विचारधारा ठीक होगी और आप भगवान् का अनुदान-वरदान प्राप्त करके इस संसार का कुछ अच्छा

करना चाहते हैं, तो आपको भगवान् का हर प्रकार का सहयोग मिलेगा। बल एवं धन के आधार पर मनुष्य बलवान नहीं हो सकता है। हमको अपने विकास के लिए मजबूत आधार ढूँढ़ना होगा। वह मजबूत आधार केवल भगवान है। भगवान् का सहारा लेने के बाद हमारे पास क्या कमी रहेगी? हमें उनका प्यार-अनुदान प्राप्त करके अपना आध्यात्मिक विकास करने का प्रयास करना चाहिए। भगवान् के पास अनन्त सुख के भंडार भरे पड़े हैं। उनके एक मित्र थे सुदामा, वे गरीबी का जीवन जी रहे थे। लोगों ने कहा कि आपकी भगवान् से मुलाकात है। आप इस प्रकार क्यों हैं? सुदामा जी भगवान् के पास गये, भगवान् ने अपने मित्र को निहाल कर दिया।

संबंध हो जाए तो!

गुरुनानक को उनके पिता ने नाराज होकर बीस रुपये व्यापार करने को दिये और कहा-जो व्यापार द्वारा अपना जीवन निर्वाह कर। गुरुनानक देव संत थे, उन्होंने बीस रुपये की हींग खरीदी और वहाँ आये, जहाँ पर संतो का एक भण्डारा चल रहा था। उस समय दाल बन रही थी। उसमें हींग का छोंक लगा दिया तथा सभी के आगे दाल परोस दी। सभी उपस्थित लोगों ने प्रेम से भोजन किया तथा प्रसन्न हुए। प्रात:काल जब नानक घर पहुँचे, तो उनके पिता काफी नाराज थे। उन्होंने पूछा कि पैसों का क्या किया? नानक जी ने सारी बात बता दी तथा यह कहा कि पिताजी! हमने ऐसा व्यापार किया है, जो भविष्य में हजार गुना होकर वापस होगा। आज वास्तव में गुरुनानक साहेब की याद में स्वर्णमन्दिर अमृतसर में विद्यमान है, जो करोड़ों-अरबों का है। मित्रो, यह भगवान् के साथ व्यापार करने का लाभ है। हमने विचार किया—वह कैसा मंदिर है। करोड़ों का कौन-सा मन्दिर है, जिसमें गुरुनानक सोये हुए हैं। मित्रो, यह महत्त्व है भगवान् के साथ जुड़ने का, उससे सम्बन्ध करने का।

मित्रो, काश्मीर में हजरत मोहम्मद साहब का पवित्र बाल एक शीशी में रखा है। जहाँ हजारों-करोड़ों रुपयों की मस्जिद बनी है, जहाँ मोहम्मद साहब का बाल रखा है। अगर आज गुरुनानक देव, मोहम्मद साहब आ जायें तथा इतना बड़ा मूल्यवान मकान देख लें, तो उनको आश्चर्य होगा। मित्रो, यह आध्यात्मिकता का मूल्य है। भगवान् से सम्बन्ध बनाने के बाद आदमी कितना मूल्यवान हो जाता है, यह विचार करने का विषय है। वह बहुत कीमती हो जाता है। नानक, विवेकानंद, मोहम्मद साहब महान हो गये। भगवान् से सम्बन्ध हो जाने पर आदमी का वजन और मूल्य दोनों बढ़ जाते हैं।

अगर एक औरत की शादी एक सेठजी के साथ होती है तथा दुर्भाग्य से उसके पति का देहान्त हो जाता है, तो दूसरे दिन से ही वह सेठानी, उसकी सारी जमीन-जायदाद की मालकिन बन जाती है। यही होता है—भक्त का भगवान् से सम्बन्ध जोड़ने पर। डॉक्टर की पत्नी डॉक्टरनी, वकील की पत्नी वकीलनी, पंडित की पत्नी पंडितानी बन जाती है, चाहे वह पाँचवीं क्लास ही क्यों न पास हो। जिस प्रकार धर्मपत्नी बनकर आत्मा से सम्बन्ध जोड़ने पर वह पति की सारी सम्पत्ति की मालकिन बन जाती है, उसी प्रकार भगवान् से सम्बन्ध जोड़ने पर होता है। आपको यहाँ हमने इसलिए बुलाया है कि आपका ब्याह भगवान् से करा दें। इसके लिए आपको हमने अनुष्ठान प्रारम्भ कराया है। यह अनुष्ठान आपके विवाह के समय हल्दी लगाने तथा बाल सँवारने, वस्त्र आदि से सजाने के बराबर है। हम आत्मा का परमात्मा से मिलन कराना चाहते हैं। यह बाजीगरी है। हम आपका संबंध भगवान् से कराना चाहते हैं, ताकि आपका सम्बन्ध मालदार आदमी से हो जाये। मालदार आदमी के साथ सम्बन्ध बना लेने से आदमी को हर समय फायदा रहता है।

मित्रो, किसी का सम्बन्ध मालदार आदमी से होता है और वह उसके यहाँ काम करता है, तो उसे सेठजी कुछ लाने को भेजते हैं, तथा सौ रुपये देते हैं। वह अस्सी रुपये का सामान लाता है तथा बीस रुपये अपने पॉकेट में रख लेता है। सेठजी उससे पूछते भी नहीं हैं। इस प्रकार छोटे-छोटे कामों में वह पैसा इकट्ठा करता जाता है और मालदार के साथ मालदार हो जाता है। उसकी बीबी कहती है कि हमारे घर में बाबू की तनख्वाह से क्या होगा, अगर रोज न कमायें। यह है मालदार आदमी से जुड़ने पर भौतिक लाभ। भगवान् से जुड़ने पर हमें क्या-क्या लाभ मिलते हैं, यह आप जुड़कर स्वयं देखें।

भगवान् की गोद में

मित्रो! मालदार आदमी के पास नौकरी करने पर पैसों के लिए चालाकी, बेईमानी करनी पड़ती है, तो आप पैसा कमाते हैं, परन्तु हम ऐसे मालदार आदमी, जिसका नाम भगवान् है, उसके यहाँ आपकी नौकरी लगाना चाहते हैं, जिसके पास आपको सारी चीजें प्राप्त होती रहेंगी। उसके लिए आपको चालाकी या बेईमानी करने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ेगी। हम चाहते हैं कि आपको भगवान् की गोद में रख दें। गोद में रहने वाला व्यक्ति घाटे में नहीं रहता है। बाप कमाता रहता है। बेटा खाता रहता है।

बेटे, हम भी आपको बाँटते रहते हैं, आशीर्वाद देते रहते हैं कि आपका कष्ट दूर हो जाये। आपकी मनोकामना पूर्ण हो जाये। आज आप कमजोर हैं, हो सकता है कि कल आप मजबूत हो जायें तथा भगवान् का काम कर सकें। आप यह सोचते हैं कि दो साल के बाद गुरुजी चले जाएँगे तथा हमें तपोभूमि या फिर हरिद्वार जाने से क्या मिलेगा? आप इधर-उधर बगलें झाँकने लगते हैं तथा साँई बाबा के पास चले जाते हैं। वहाँ जाने के बाद हनुमान जी के पास, करौली वाली माँ के पास जाते हैं, इधर-उधर भटकते रहते हैं। जिन्दगी भर आप खाली हाथ रहते हैं। मित्रो, इधर-उधर आप भटकते न रहें, आप भगवान् का पल्ला पकड़ लीजिए तथा अपने जीवन को पार कर लीजिए।

मित्रो, हमारी मुलाकात किसी एम.पी., एम.एल.ए. या मिनिस्टर से होती है या उससे जान-पहचान, साँठ-गाँठ होती है, तो हमारी समस्या तथा हमारी मुसीबतें दूर हो जाती हैं। अगर हमारा सम्बन्ध भगवान् से हो तो फिर क्या कहना? मध्यप्रदेश के पूर्व मंत्री हमारे पास आये और यह कहा कि गुरुजी हमें एक दिन के लिए ही मुख्यमंत्री बना दीजिए। वे दो ढाई घण्टे तक हमारे पास बैठे रहे। भगवान् की कृपा से तुक्का लग गया और वे मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री बन गये। मित्रो, यह क्या बात है? हमारी जान-पहचान किससे है? हमारी जान-पहचान भगवान् से है।

जान पहचान का चमत्कार

आदमी की पहचान बड़े आदमी से होने पर काम बन जाता है। एक बार ऐसा ही हुआ कि एक पंडित जी थे। पंडित जी ने एक दुकानदार के पास पाँच सौ रुपये रख दिये। उन्होंने सोचा कि जब बच्ची की शादी होगी, तो पैसा ले लेंगे। थोड़े दिनों के बाद जब बच्ची सयानी हो गयी, तो पंडित जी उस दुकानदार के पास गये। उसने नकार दिया कि आपने कब हमें पैसा दिया था। उसने पंडित जी से कहा कि क्या हमने कुछ लिखकर दिया है। पंडित जी इस हरकत से परेशान हो गये और चिन्ता में डूब गये। थोड़े दिन के बाद उन्हें याद आया कि क्यों न राजा से इस बारे में शिकायत कर दें ताकि वे कुछ फैसला कर दें एवं मेरा पैसा कन्या के विवाह के लिए मिल जाये। वे राजा के पास पहुँचे तथा अपनी फरियाद सुनाई। राजा ने कहा- कल हमारी सवारी निकलेगी, तुम उस लालाजी की दुकान के पास खड़े रहना। राजा की सवारी निकली। सभी लोगों ने फूलमालाएँ पहनायीं, किसी ने आरती उतारी। पंडित जी लालाजी की दुकान के पास खड़े थे। राजा ने कहा-गुरुजी आप यहाँ कैसे, आप तो हमारे गुरु हैं? आइये इस बग्घी में बैठ जाइये। लालाजी यह

सब देख रहे थे। उन्होंने आरती उतारी, सवारी आगे बढ़ गयी। थोड़ी दूर चलने के बाद राजा ने पंडित जी को उतार दिया और कहा कि पंडित जी हमने आपका काम कर दिया। अब आगे आपका भाग्य।

उधर लालाजी यह सब देखकर हैरान थे कि पंडित जी की तो राजा से अच्छी साँठ-गाँठ है। कहीं वे हमारा कबाड़ा न करा दें। लालाजी ने अपने मुनीम को पंडित जी को ढूँढ़कर लाने को कहा-पंडित जी एक पेड़ के नीचे बैठकर कुछ विचार कर रहे थे। मुनीम जी ने आदर के साथ उन्हें अपने साथ ले गये। लालाजी ने प्रणाम किया और बोले-पंडितजी हमने काफी श्रम किया तथा पुराने खाते को देखा, तो पाया कि हमारे खाते में आपका पाँच सौ रुपये जमा है। पंडित जी दस साल में मय ब्याज के बारह हजार रुपये हो गये। पंडित जी आपकी बेटी हमारी बेटी है। अतः एक हजार रुपये आप हमारी तरफ से ले जाइये तथा उसे लड़की की शादी में लगा देना। इस प्रकार लालाजी ने पंडित जी को तेरह हजार रुपये देकर प्रेम के साथ विदा किया।

मित्रो, यह हम क्या कह रहे थे? यह बतला रहे थे कि आप भी अगर इस दुनिया के राजा, जिसका नाम भगवान् है अगर अपना सम्बन्ध उससे जोड़ लें तो आपकी कोई समस्या, कठिनाई नहीं रहेगी। आपको कोई तंग भी नहीं करेगा। आपके साथ अन्याय भी कोई नहीं कर सकता। पाँच फुट वाला आदमी जब भगवान् से जुड़ गया, तो मित्रो, वही आदमी महात्मा बन गया। उस आदमी का नाम महात्मा गाँधी हो गया, जिसको देखकर अँग्रेज डरते थे और यह कहते थे कि यह जादूगर है। इससे बचकर रहो। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री उससे डरते थे और यह कहते थे कि यह 'बम' है। उनने अपने सभी मंत्रियों से गाँधीजी से नजर न मिलाने की हिदायत दे रखी थी। वह काला गाँधी नहीं, वरन् वह गाँधी था, जो भगवान् से जुड़ गया था और वह उसी का चमत्कार था। वह चालाकी या अक्ल वाला गाँधी नहीं था, बल्कि भगवान् का सहयोगी गाँधी था। इन शक्तियों को आप भी भगवान् के पास बैठकर पा सकते हैं। अपने को महान बना सकते हैं। अगर आप अपने आप को तैयार कर लें, तो सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं तथा संत, महामानव स्तर तक पहुँच सकते हैं।

अनुकम्पा की अनुभूति

मित्रो, सूर्य की रोशनी इस धरती पर पड़ती तो है, परन्तु है यह हमारी आँखों का चमत्कार। अगर आँखें न रहतीं, तो हम यह विभिन्न तरह के रंग कैसे देखते तथा आनन्द अनुभव कैसे करते? आँख का सूर्य अगर ठीक हो, तो यह आपको

रामायण, भागवत पढ़ा सकता है। बगीचों का आनन्द आपको मिल सकता है। अगर आपको बुखार आ जाये तथा तबियत खराब हो जाए, तो आप ठीक से नहीं खा सकते हैं। यह बात आपको सोचनी चाहिए। एक महिला थी। उसके मरने का समय हो गया। उसे पकौड़ी, नीबू का अचार, रबड़ी दी गयी, परन्तु उसका मुँह कड़ुवा था। उसे सब चीजें मिट्टी के समान लगीं। अगर आपकी अक्ल खराब हो जाए, तो इस दुनिया की सारी सम्पत्ति आपको किसी काम की नहीं दिखायी पड़ेगी। यह क्या है ? जिसके कारण आप दुनिया के सारे आनन्द ले रहे हैं ? चौरासी लाख योनियों में सर्वश्रेष्ठ राजकुमार की तरह रह रहे हैं। यह है भगवान् की अनुकम्पा, भगवान् की कृपा, जो निरन्तर आपके ऊपर बरस रही है। हमें यह महसूस करना चाहिए कि भगवान् हमारे सारे अंग-अंग में, सारे रोम-रोम में समाया हुआ है तथा उसकी शक्ति हमारे अन्दर समायी हुई है। वह हमें महान बना रहा है, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ा रहा है। हमारा कायाकल्प कर रहा है। अगर इतना आप कर सकें, तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आप धन्य हो जाएँगे।

साथियो! हमारी काया के भीतर ऐसे सेल्स भरे पड़े हैं, जिसमें हीरे-मोती, सोना-जवाहरात भरे पड़े हैं। अगर आप उसे जगा लें, तो मालामाल हो सकते हैं। आप पारस, कल्पवृक्ष हो सकते हैं। आपका सम्पर्क जिस किसी से होगा, उसको आप धन्य करते चले जायेंगे। आपका विकास होता चला जाएगा। हमें अपनी हर उँगुली प्यारी है। भगवान् को भी हर प्राणी प्यारा है। वह सबका बराबर ध्यान रखता है।भगवान् अपने हर अंग को सुन्दर और सुडौल देखना चाहता है। भगवान् के ऊपर पक्षपात का दोष नहीं लगाया जा सकता है। वह सबको बराबर देता है, परन्तु मनुष्य अपने गुण, कर्म, स्वभाव, श्रम, आलस्य के कारण पिछड़ जाता है। अगर आपकी पात्रता हो, तो आप सारी चीजें प्राप्त कर सकते हैं। आप अपनी प्रगति के लिए न जाने कहाँ-कहाँ घूमते हैं, किस-किस को गुरु बनाते फिरते हैं। हम भी १३ ये १५ वर्ष की उम्र तक इसी चक्कर में पड़े रहे तथा तमाशा देखते रहे। हमने भी बहुत पैसा फेंका है, मात्र यह बाजीगरी देखने के लिए।

नकली व असली गुरु

मित्रो! इन दो सालों में हमने हिन्दुस्तान के किसी भी सिद्ध पुरुष, महात्मा, योगी को नहीं छोड़ा, जो आज बाजीगर की तरह नाम बतलाते हैं तथा सोना बनाते हैं। अगर आप चाहें, तो हम उनका नाम आपको बतला सकते हैं। एक बार हमने एक सिद्ध पुरुष की बात सुनी तथा उसके लिए हमने बहुत बड़ा जोखिम उठाया,

प्राणों की बाजी लगा दी। वो सिद्ध पुरुष घने जंगल की एक गुफा में रहते थे। लोगों ने बतलाया कि वे सबका नाम-पता तथा भूत-भविष्य, वर्तमान सबकुछ बता देते हैं। हम पहुँच गये उनके पास। बाबा ने सब बतलाया। हमें दाल में कुछ काला नजर आया। हम वहीं रुक गये तथा पैर में मोच का बहाना बना दिया। यह बात उनके चेले को बता दी और एक कोने में पड़े रहे। एक दिन एक अध्यापक आया। हमने उसे बतला दिया कि यह बेकार आदमी है। इसके चेले धंधा करते हैं। हमने अध्यापक से कहा कि आप सब नाम-पते आदि गलत-सलत बताना। उसने चेलों से अपना नाम-पता सब गलत बतला दिया। दूसरे दिन महात्माजी मिले, तो उन्होंने भी वैसा ही बतलाया। अध्यापक तथा हम दोनों यह सब देखकर मुस्कुरा पड़े। यह उन चेलों ने देख लिया था। हमने किसी प्रकार धोती-कुरता समेटा और तोलिया लपेटकर दीर्घशंका का बहाना बनाकर वहाँ से भाग लिये। जाना था पूरब की ओर और पश्चिम की ओर निकल गये। किसी तरह प्राण बचाकर तीन दिन तक जंगल में भटकने के बाद अपने स्थान पर पहुँचे।

साथियो! हमने उस गुरु को भी देखा है, जो पंद्रह वर्ष की उम्र पूरी होने पर वसंत पंचमी के दिन हमारे पास आया था। उसने हमारे तीन जन्मों का दृश्य हमें दिखाया और हमें गायत्री उपासना में लगाया, जिसे हमने चौबीस साल तक विधि-विधान पूर्वक किया। हमने अपने गुरुदेव से एक प्रश्न पूछा कि पूज्यवर हमारी एक शंका है। आप बतलायें कि गुरुओं की खोज में लोग छुट्टी लेते हैं, मेडीकल लीव लेते हैं, घर-बार छोड़ते हैं, तब जाकर शायद किसी कोने में कोई सच्चा गुरु मिलता है, परन्तु आप तो स्वयं हमारे पास चले आये, यह क्या बात है? पूज्यवर ने बतलाया-बेटे! धरती क्या बादलों के पास जाती है या बादल स्वयं आते हैं धरती पर? हमने कहा बादल स्वयं आते हैं एवं धरती पर बरस जाते हैं। बादलों को चलना पड़ता है। बादल स्वयं बरसते रहते हैं। उन्होंने कहा कि आकाश में बादलों की तरह सिद्ध पुरुषों की भी कमी नहीं है, जो बादलों की तरह बरसने के लिए सुपात्र की खोज करते रहते हैं। दिव्य आत्माओं की वे तलाश करते रहते हैं।

मित्रो! आपने देखा होगा कि जब इस धरती पर मरी हुई लाश, कुत्ते आदि पड़े रहते हैं, तो गीध, कौवे, चील स्वयं आ जाते हैं तथा उसे नोच-नोच कर खा जाते हैं। उसी प्रकार भगवान्, दिव्य पुरुष, संत भी ऊपर से तलाश करते हैं कि इस धरती पर कौन दिव्य पुरुष है, जिसे भगवान् गुरु, संत की कृपा, वरदान, आशीर्वाद की आवश्यकता है और वह वहाँ पर पहुँचकर सारा काम करते हैं। वे देखते हैं कि

कौन दया के पात्र हैं। हम बद्रीनाथ, रामेश्वर जाते हैं, किन्तु वे भी हमारे पास आते हैं एवं हमारी परख करके चले जाते हैं। केवट की भक्ति, श्रद्धा महान थी। उसे देखकर भगवान् राम स्वयं उसके पास आये और दर्शन दिया। केवट रामचंद्र जी के पास नहीं गया था। शबरी के पास रामचंद्र स्वयं आये थे। शबरी नहीं गई थी। श्रीकृष्ण गोपियों के पास गये थे तथा उन्हें प्यार दिया था, गोपियाँ नहीं गईं थी। मित्रो! उसी प्रकार पात्रता देखकर गुरु शिष्य के पास आता है तथा उसे धन्य कर जाता है। अगर वास्तव में पात्रता हो, तो ऋद्धि-सिद्धियाँ पाई जा सकती हैं तथा निहाल हुआ जा सकता है।

पात्रता ही है महान् तत्त्व

भगवान् के यहाँ अनंत वैभव, कृपा, अनुदान भरा पड़ा है। वह केवल ऐसे आदमी को मिलता है, जिनकी पात्रता है। एक बार हम पोरबंदर-गुजरात गये थे और वहाँ गाँधीजी का जन्म स्थान देखा था। वह बहुत छोटा था। तब वहाँ छोटा सा मकान था। परन्तु भगवान् तो मालदार हैं। उसने गाँधीजी को धन्य कर दिया। आज वहाँ करोड़ों का स्मारक बना हुआ है। भगवान् आते हैं, तो मनुष्य के सोचने का, विचार करने का, कार्य करने का ढंग बदल जाता है। उसकी अवाज बदल जाती है। उसे सारे लोगों के प्रति श्रद्धा-निष्ठा हो जाती है। वह दूसरों को प्यार देता है, दूसरों के दुखों को देखकर द्रवित होता है। गाँधी जी के अंदर भगवान् आये और जो भी आवाज उनने दी, उसे पूरा होते देखा गया। भगवान् की खुशामद करने से कोई काम नहीं चलेगा। पात्रता ही महान तत्व है। जिसमें पात्रता होती है, सरकार उसे फिर बुला लेती है। उसको काम देती है। प्रेम महाविद्यालय के प्रिंसीपल ९० वर्ष के होने को आये, परन्तु गवर्नमेन्ट ने उन्हें नहीं छोड़ा। हर साल उन्हें नया पद मिल जाता।

मित्रो! प्रतिभाओं की माँग, योग्यता की माँग, गुणों की माँग हर जगह होती है। हमारा भी यही उद्देश्य है कि आप आगे बढ़े। हम चाहते हैं कि आपके अंदर भी वे चीजें आ जाएँ, भगवान् आ जाएँ तथा आपका विकास हो जाये। इसीलिए हमने आपका ब्याह भगवान् से कराने का निश्चय किया है। परन्तु मित्रो, अगर कन्या अस्वस्थ हो, बीमार हो, कमजोर हो, तो उसका विवाह अच्छे लड़के के साथ कैसे हो सकता है। उसी तरह आपकी पात्रता कमजोर हो, तो भगवान कैसे आपको अपनायेगा? कैसे स्नेह, प्यार देगा? अगर राजकुमार से विवाह करना हो, तो लड़की भी ठीक होनी चाहिए। अगर आप कोढ़ी है, तो अच्छी लड़की आपको नहीं मिलेगी। आप अपाहिज हैं, तो भगवान् के साथ विवाह नहीं कर

सकते हैं। स्वस्थ, निरोग शरीर, स्वच्छ-पवित्र मन की आवश्यकता है—भगवान् से विवाह करने के लिए।

भगवान् से विवाह

स्वच्छ मन, स्वस्थ-निरोग शरीर बनाने के लिए आपको यहाँ बुलाया गया है, ताकि आप भगवान से जुड़ सकें। आपको हम गायत्री महापुरश्चरण करा रहे हैं। हमें प्रसन्नता है कि आप बहुत प्रातःकाल ही उठकर पूजा, ध्यान, जप, प्राणायाम में लग जाते हैं। यह सब देखकर हमें खुशी होती है। अगर आप इन करने वाले कर्मकाण्डों से कुछ प्रेरणा ले सकें तथा अपनी पात्रता का विकास कर सकें, अपने को जीवंत बना सकें, तो आप यकीन रखें कि आपका विवाह भगवान से हो जायेगा। तथा आपके पास सारी ऋद्धि-सिद्धियाँ, वैभव स्वतः आ जायेंगे, जिसके लिए आप रातोंदिन परेशान रहते हैं।

मित्रों! एक लड़की थी। उसका रिश्ता तय हो गया। उसकी गोद में एक नारियल भी लड़के वालों ने दे दिया था। बाद में लड़के वालों ने मना कर दिया। लड़की ने कमर कसी और लाठी लेकर उस गाँव में पहुँच गई। उसने कहा कि अरे विवाह कर, नहीं तो लाठी के सामने आ जा। मामला पंचायत तक पहुँचा। लड़की ने कहा कि इसने ही शादी पक्की की, नारियल भी दिया और अब ना कर रहा है। पंचायत ने फैसला किया कि विवाह इसी लड़की के साथ होगा।

मित्रो! हमने भी आपका विवाह भगवान् से कराने का निश्चय किया है। आप भी उस लड़की की तरह दृढ़ निश्चय करके अपनी पात्रता को विकसित करके भगवान को प्राप्त करें। आपकी परेशानी दूर हो जायेगी। हम भगवान के पास होकर आये हैं। उनके पास ढेरों हीरे की अंगूठी-जवाहरात, बाल-बच्चे हैं, जिसे चाहे उठाकर ले आओ। मित्रो! यह विवाह किसी प्रकार घाटे का सौदा नहीं है। आप इसे निभाना। इसमें हमें प्रसन्नता होगी।

आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शान्तिः ॥

विवेक की साधना और सिद्धि

(४ जून, १९६९ गायत्री तपोभूमि, मथुरा)

सात्विकता से सिद्धि

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बोलें-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! महात्मा आनंद स्वामी ने एक बार एक व्यक्ति से कहा था कि तू जब तक अनीति द्वारा कमाया हुआ धन खाएगा, तेरी प्रगति और बुद्धि नष्ट होती चली जाएगी। अतः हमें सात्विक अन्न खाना चाहिए। अन्नमय कोश की साधना के लिए आपको विशेष रूप से यह विचार करना होगा कि आपका आहार सात्विक है या नहीं। यहाँ अन्न से मतलब आजीविका से है। आजीविका शुद्ध होनी चाहिए। आजीविका ठीक होगी, तो मन भी ठीक होगा। मनुष्य के जीवन में आजीविका का अपना महत्त्व है। अन्न का अपना महत्त्व है। यदि ये शुद्ध होंगे, तो साधना से सिद्धि मिलने में देर नहीं होगी। सात्विकता से सिद्धियाँ स्वतः आती हैं।

एक तपस्वी महात्मा जी थे। वह एक पेड़ के नीचे बैठे थे कि एक चिड़िया ने बीट कर दिया। उन्होंने उसकी ओर देखा और वह जलकर भस्म हो गयी। महात्मा जी को अपनी सिद्धि पर अहंकार हो गया था। एक दिन वे एक गाँव में गए और एक महिला से भीख माँगने लगे। महिला ने कहा कि आप थोड़ी देर रुकें। थोड़ी देर बाद भी जब वह नहीं आयी, तो महात्मा जी ने आवाज लगायी। महिला बोली कि इस समय हम योगाभ्यास कर रहे हैं। पति की सेवा करना, खाना खिलाना, बच्चों को स्कूल भेजना-यह मेरा योगाभ्यास है। जब यह खत्म हो जाएगा, तो हम आपकी सेवा करेंगे।

महात्मा जी नाराज हो गए और उसे शाप देना चाहा। महिला बोली कि महात्मन्! हम चिड़िया नहीं है, जो आप हमें जला देंगे। महिला के इस कथन से महात्मा जी को आत्मग्लानि हुई और वे सोच में पड़ गए। उन्होंने पूछा कि तुम कैसे जानती हो कि यह घटना घटित हो चुकी है। महिला बोली कि मैं पति को ही परमेश्वर मानकर उनकी सेवा करती हूँ, जो हमारे लिए भोजन-वस्त्र की व्यवस्था

करते हैं, देखभाल करते हैं। यह उसी का परिणाम है। महात्मा जी को उसने एक और गुरु के पास भेजा। वे बनिया के पास गए। वह प्रात:काल से सायं तक पूरे परिश्रम और ईमानदारी से अपनी दुकानदारी करता था। यही उसका नित्य का योगाभ्यास था। इसके बाद महात्मा जी एक और व्यक्ति के पास गए। वह भी ईमानदारी के साथ अपने कर्त्तव्य-कर्म-सफाई के काम मे लगा रहता। शाम को माता-पिता की सेवा करता। उसने भी महात्मा जी को बतलाया कि देखा हमारा योगाभ्यास। हमारी यही है ईमानदारी का योगाभ्यास, परिश्रम का योगाभ्यास।

तप में बल आहार साधना से

वस्तुत: ये तीनों ही शुद्ध अंत:करण वाले व्यक्ति थे। पिप्पलाद ऋषि का नाम सुना या पढ़ा होगा आपने। उनके जीवन में जो भी चमत्कार होता चला गया, वह उनके सात्विक आहार का था। तपस्या-उपासना में जो बल देता है, उसका नाम अन्न है। यह सात्विक होना चाहिए। इससे मन पवित्र, स्थिर और शांत रहता है। अगर आपका मन ठीक नहीं रहता है, तो साधना-उपासना का मूल आप समझ नहीं पाये हैं, तपस्या का मूल आप समझ नहीं पाये। फिर मैं आपको कैसे समझा सकता हूँ, जब आपके दिमाग में कूड़ा भरा पड़ा है। उस गंदगी को आपके दिमाग से हम कैसे साफ कर सकते हैं। इसकी सफाई आपको स्वयं ही करनी होगी।

मित्रो! हमारा मन साधना-उपासना में बहुत लगता है। इसमें हमें जो आनंद आता है, उसका वर्णन हम नहीं कर सकते हैं। आपका भी मन लगे, इसके लिए आपको अन्न की सात्विकता अपनानी होगी, तभी प्रगति हो सकती है। हमने चौबीस साल तक अपनी जीभ को साधा तथा सात्विक अन्न का सेवन किया। आप अपने को साधना नहीं चाहते हैं, तो उपासना के क्षेत्र में आगे कैसे बढ़ेंगे? एक दिन हमने आपको आहार-विहार के बारे में बताया था, साथ ही यह भी चर्चा की थी कि समय का विभाजन करें और समय का मूल्य समझें। अगर आप अपनी जीभ को साध लें, तो चमत्कार उत्पन्न हो जाएगा। आहार-विहार के असंयम के कारण ही बीमारियाँ आपको घेरे रहती हैं। इसी के कारण अभी तक आप छोटे आदमी बने रहे।

व्यवहार की सिद्धियाँ

मित्रों, चंद्रभान नामक एक व्यक्ति भारत-पाक विभाजन के बाद पाकिस्तान से यहाँ आये थे। वे वहाँ पर एक टेलीफोन आपरेटर थे। यहाँ आने पर उन्होंने अपने कागज वगैरह दिखाया, तो उनको भारत में नौकरी मिल गयी। आज बीस वर्ष बाद

वे इसी विभाग के डायरेक्टर बनकर उच्चतम पोस्ट पर पहुँच गये। मित्रो यही सिद्धि है। यह कैसे मिली? यह उनके व्यवहार, परिश्रम तथा सात्विक आचार-व्यवहार के कारण मिली और वे प्रगति-पथ पर आगे बढ़ सके। उन्होंने उपासना के साथ साधना भी की, जिसका लाभ उन्हें मिल गया। वे ऑपरेटर के साथ-साथ विभाग के अन्य पेंडिंग कार्य को भी पूरा करते रहे। उनके विभाग के लोग उनके कार्य एवं व्यवहार से प्रसन्न रहते थे।

मित्रो, जब हम आगरा में प्रेस में काम करते थे, वहाँ एक हमारे मित्र थे, जो कहते थे कि काम ऐसा करो कि मालिक के हाथ-पैर तोड़कर रख दो। हमने कहा कि आप हमें जेल भिजवाएँगे क्या? उन्होंने कहा कि इसका मतलब यह है कि मालिक का सारा कामकाज अपने जिम्मे ले लो, तो मालिक आप पर निर्भर हो जाएगा, साथ ही आपकी इज्जत भी करेगा। चंद्रभान जी, जिनके बारे में अभी मैंने बताया, वे इसी प्रकार अपने ऑफीसर के हाथ-पैर तोड़ते चले गए। आगे जब कभी मौका आता था, तब अपने अफसर से कहते कि हमारा प्रमोशन नहीं हो सकता? अफसर कहता था अवश्य होगा। वे परीक्षा में बैठते और ऑफीसर उनका सहयोग कर देता था। इस प्रकार उनकी प्रगति होती चली गयी। उनका पहनावा-ड्रेस भी बहुत सीधा-सादा था। लोगों को उनकी सादगी से प्रेम था।

मित्रो! मैं आपको अभी व्यवहार की सिद्धियाँ बता रहा था। आहार की सिद्धियाँ बता रहा था कि आप अपनी जबान पर काबू पाइए तथा सबके मित्र बनते चले जाइए। पिछले दिनों हमने आपको बतलाया भी था कि जब हम अज्ञातवास में गए थे तो एक साल तक केवल शाक-भाजी पर जिंदा रहे। आप तो आडंबर में आकर न जाने क्या-क्या खाते चले गए। आपने प्राकृतिक चिकित्सा की पुस्तकें भी पढ़ीं, परंतु आपने कभी भी उस पर चलने का प्रयास नहीं किया। आपने समय का संयम भी नहीं किया। इस कारण आप उन्नतिशील भी न बन सके। जापान एवं अमेरिका के लोग सारे दिन भजन नहीं करते, परंतु वे कितनी प्रगति पर हैं। वे अपने समय का एक मिनट भी बर्बाद नहीं करते हैं। हमारा बच्चा जब कमाने लगता है और हम बूढ़े हो जाते हैं, तो घर में बैठे रहते हैं, मक्खी मारते रहते हैं। जबकि बुड्ढे को बहुत काम करना चाहिए। बुड्ढे गाँधी ने बहुत काम किया। बूढ़े जवाहर ने लगभग पिचहत्तर वर्ष की उम्र में भी अठारह-अठारह घंटे काम किया। जवान आदमी की तरह ही बूढ़े व्यक्ति को भी काम करना चाहिए। कामचोर-हरामखोर हमें पसंद नहीं हैं।

मन की साधना कैसे?

साधना, जो मनुष्य को उत्कृष्ट बना देती है, इसी संदर्भ में, मैं बतला रहा था, जो आपको अपने दिमाग में बैठा लेना चाहिए। कल हमने आपको बतलाया था कि मन को काबू में कर लेने के बाद भगवान का ध्यान कैसे करना चाहिए। गायत्री माता का ध्यान कैसे करना चाहिए? उन्हें बार-बार घूम-घूमकर देखना होगा, ताकि आपका इधर-उधर भागने वाला मन काबू में रहे तथा आप उनसे संबंध रख सकें। इसके लिए आपको मन की साधना करनी पड़ेगी। मन की साधना के दो माध्यम हैं। पहला है-विवेक और दूसरा-साहस। इनके द्वारा ही हम ऋद्धि-सिद्धियों से भरते चले जाते हैं। अपने आहार-विहार को ठीक करने के बाद अपनी प्रगति होती चली जाती है। मनुष्य के अंत:करण में बैठा हुआ विवेक और साहस जब जाग्रत हो जाता है, तो इन दो आधारों पर ही मनुष्य जो चाहे प्राप्त करता हुआ चला जाता है।

मित्रो! राजस्थान में एक संस्कृत के अध्यापक थे-हीरालाल शास्त्री। शास्त्री जी की पत्नी की मृत्यु हो गयी। हमारे आपके साथ ऐसा हो जाने पर या तो आत्महत्या कर लेंगे या दूसरी शादी कर लेंगे, परंतु संस्कृत का वह अध्यापक गाँव चला गया। उसने कहा कि उस महान नारी ने हमें आनंद-उल्लास से भर दिया था, हमारे अंदर विवेक, साहस जाग्रत कर दिया था। उसके मरने के बाद उसकी याद में हम इस गाँव के अंतर्गत कुछ करना चाहते हैं। हम उसके प्रति अपना फर्ज अदा करना चाहते हैं। इस गाँव की कन्याओं को हम पढ़ाना चाहते हैं। वे नौकरी छोड़कर गाँव आ गए और एक पेड़ के नीचे बैठकर उस गाँव की कन्याओं को पढ़ाने लगे। तीस दिन की रोटी का प्रबंध तीस घरों से हो गया और वह अपने आदर्श-कर्त्तव्यों पर आरूढ़ हो गए तथा पूरी निष्ठा के साथ उस कार्य को करने लगे। आदर्श-सिद्धांतों का धनी वह उस स्कूल को चलाता चला गया। लोग आए और मदद करते चले गए। विद्यालय का काम सुचारू रूप से चलने लगा।

मित्रो, शीरी-फरहाद की कहानी आप जानते हैं। शीरी को फरहाद चाहता था। राजा ने इस समस्या का हल करना चाहा तथा फरहाद को इस रास्ते से अलग करने का मन बना लिया। उसने एक योजना बनायी। फरहाद से कहा कि देख-इस पहाड़ के उस पार एक नदी है। उसको इसको काटकर उधर से नहर लानी है। फरहाद का प्रेम अमर था। उसने कहा कि ठीक है, हम वैसा ही करेंगे। उसने कुल्हाड़ी उठायी और पहाड़ को काटकर नहर ले आया। लोगो ने भी सहयोग दिया। इस साधना को देखकर राजा को शीरी का हाथ फरहाद के हाथ में देना पड़ा।

विवेक की सिद्धि का राजमार्ग

इसी प्रकार उस अध्यापक का भी विद्यालय चल पड़ा तथा कुछ ही दिनों में वह राजस्थान का एक महान विद्यालाय बन गया। वह व्यक्ति राजस्थान का मुख्यमंत्री भी बन गया। उस हीरालाल शास्त्री को सब लोगों ने पसंद किया तथा उसे सर्वसम्मति से मुख्यमंत्री बनाया गया। मित्रो, इस तरह विवेक की सिद्धियाँ प्राप्त करने वाले लोग महान बनते चले गए, उनकी प्रगति के रास्ते खुलते चले गए।

साथियो! एक छोकरी थी। उसकी शादी एक दारोगा के लड़के के साथ हो गयी थी। दारोगा शराब पीता था तथा उसके लड़के को भी शराब की लत लग गयी थी। वह भी अठारह साल की उम्र से ही शराब पीने लगा। छोकरी ससुराल आयी, उस घर का सारा दृश्य देखा, परंतु घबराई नहीं। अपने पति की सेवा करती रही और अपनी कर्त्तव्य-परायणता पर अडिग रही। उसका पति रोज बारह बजे रात में आता था, तब तक वह जागती रहती थी। उसको भोजन कराके ही वह भोजन करती थी। चूँकि उसके परिवार वालों ने बताया था कि पत्नी को पति को भोजन कराके खाना चाहिए।

एक दिन रात को दो बज गए। वह आया ही नहीं। आटा गूँधकर रखा था, चूल्हा जल रहा था। थोड़ी देर के बाद वह आया, तो काफी शराब पी रखी थी। आते ही उल्टी करने लगा। सारे कपड़े खराब कर दिए। पत्नी ने सफाई की, नहलाया-धुलाया तथा सुला दिया। सुबह आँखें खुली, तो उसने देखा कि चूल्हा जल रहा है, आटा गुँधा रखा है। उसने पत्नी से पूछा कि क्या तुमने खाना नहीं खाया? पत्नी बोली-भला मैं कैसे खा लेती। मेरे माता-पिता ने कहा है कि पति के खाने के बाद खाना तथा उसकी सेवा करना। कल रात्रि में जब आप आए, तो काफी मात्रा में शराब पी रखी थी। हमने सफाई की, क्योंकि आपने उल्टी कर दी थी। आपने जब भोजन नहीं किया, तो फिर हम कैसे कर लेते?

मित्रो! करुणा की देवी, वात्सल्य की देवी की आवाज उसकी आत्मा में पहुँची, वह द्रवित हो गया। उसे आत्मग्लानि हुई तथा उसी दिन से उसने शराब न पीने का संकल्प ले लिया। साथियो! आगे चलकर वही व्यक्ति मुंशीराम, स्वामी श्रद्धानंद के नाम से विख्यात हुआ। उनके द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय कितना महान है। वह मालवीय जी द्वारा स्थापित विश्वविद्यालय के समकक्ष एक दूसरा विश्वविद्यालय है

आदर्शवादिता की ओर

विवेक के आधार पर आत्मचिंतन करने वाला व्यक्ति स्वामी श्रद्धानंद बन गया। आदर्शवादिता की ओर अग्रसर कर देने वाला विवेक बड़ा महान है। विवेक मनुष्य को कहाँ-से-कहाँ उछालकर ले जाता है। सिद्धियाँ मनुष्य के भीतर भरी पड़ी हैं। अगर विवेक के आधार पर हम चलें, तो सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं।

एक बार हम महाराष्ट्र गए और महर्षि कर्वे के आश्रम से यह सीखकर आए कि महिलाओं की सेवा किस तरह से हो सकती है? बच्चों की सेहत को कैसे सुधारा जा सकता है? महर्षि कर्वे के आश्रम में जाकर मैंने यह सब सीखा। उन्होंने कहा कि मैं बंधन का जीवन नहीं जीना चाहता और न ही नौकरी करना चाहता हूँ। मैं तो देश, समाज तथा संस्कृति की सेवा करना चाहता हूँ। इस दुनिया के अंतर्गत जो भी पीड़ित और पतित हैं, उनकी मैं सेवा करना चाहता हूँ। जो दुखी हैं, उनकी आँखों के आँसू को मैं पोछना चाहता हूँ। उनके आश्रम में जाकर हमने भी एक प्रेरणा प्राप्त की थी कि नौकरी नहीं करेंगे तथा दूसरों को भी नौकर बनने की शिक्षा नहीं देंगे। महर्षि कर्वे ने भी जीवन भर गुलामी नहीं की, नौकरी नहीं की।

मित्रो! उनके पिताजी ने सभी लड़कों को तीन-तीन हजार रुपये दिए थे। महर्षि कर्वे ने उन्हें जमा कर दिया और सेवा में लग गए। साथियो, बच्चों को फोकट का खिलाना ठीक नहीं है। इससे बच्चे बिगड़ जाते हैं। यह अनीति एवं अत्याचार है। बच्चों को कुसंस्कारी, भ्रष्ट एवं दुराचारी बनाना है, तो उनके हाथों में बेकार के, मुफ्त के पैसे थमा दीजिए।

कर्त्तव्य का पाठ पढ़ाएँ

अगर आप अपने बच्चों को कर्त्तव्य-परायणता का पाठ पढ़ाते चले जाएँ, तो आपके बच्चे हीरे एवं मोती के बनते चले जाएँगे, परंतु अगर आपने बेईमानी से कमाया तथा वह अन्न उन्हें खिलाया, तो उसका असर उन पर अवश्य होगा। अगर आप फोकट का धन छोड़ते हैं तथा यह सोचते हैं कि इसे बेटा खाएगा, तो यह आपकी भारी भूल है। मित्रो, इस धन को बेटा नहीं खाएगा, उसे बर्बाद करेगा। विवेक की सिद्धियाँ अगर आपको प्राप्त करनी हैं, तो आप सरदार पटेल बनने का प्रयास करें। लालबहादुर शास्त्री को नाना ने ढाई रुपये दिए थे, जो उनके जीवन में चमत्कार करता हुआ चला गया। उनने जवाहरलाल नेहरू के ऊपर अपनी छाप छोड़ी और भारत के प्रधानमंत्री बने। यह है विवेक की सिद्धि, जिसे आप तो समझते ही नहीं हैं। इस सपर सोचते भी नहीं हैं। विचार भी नहीं करते हैं। बच्चों को फिजूलखर्च बनाते चले जाते हैं।

सातवलेकर एवं राजा महेन्द्रप्रताप

मित्रो, सातवलेकर ने रिटायर्ड होने के बाद अपने विवेक का साथ लिया और संस्कृत पढ़ना प्रारंभ किया, तो वह महानता को प्राप्त हो गये। उनने चारों वेदों का भाष्य किया और हिंदुस्तान में सम्मान प्राप्त किया। साथियो! यह है विवेक की उपासना, जो सातवलेकर ने की और उच्चतम स्थान पर पहुँच गए। मछली पानी को चीरती हुई आगे बढ़ती है, उसी प्रकार अध्यात्मवादी आदमी अपना रास्ता स्वयं बनाते हुए चले जाते हैं। उनका रास्ता कोई नहीं रोक सकता है।

मित्रो! मथुरा के राजा महेन्द्र प्रताप ने विवेक की उपासना की थी। लोगों ने कहा कि आपके बच्चे नहीं हैं, अतः आपको दूसरी शादी करनी चाहिए या फिर कोई बच्चा गोद ले लेना चाहिए, नहीं तो वंश कैसे चलेगा? उन्होंने कहा कि ऐसा संभव नहीं है। हमें देश, संस्कृति की सेवा करनी है। असंख्य ऐसे बच्चे हैं, जिनकी पढ़ाई नहीं होती है, जो गरीबी की मार से दबे रहते हैं, उनकी हमें सेवा करनी है। उन्होंने अपने मन में विचार किया और मालवीय जी को नामकरण संस्कार कराने के लिए बुलाया।

संस्कार के समय सब आश्चर्य में पड़ गए कि यहाँ तो कोई बच्चा नहीं है, किसका संस्कार होगा? लोगों ने सोचा दासी आती होगी और अपने साथ किसी बच्चे को लाएगी। थोड़ी देर बाद राजा साहब ने कहा कि रानी के बच्चे नहीं हुए हैं, हमारे बच्चे हुए हैं। लोग बड़े आश्चर्यचकित हुए कि कहीं राजा के भी बच्चे होते हैं? उन्होंने एक थाली में रखी चादर हटाई और लोगों को दिखा कि यही हमारा बच्चा है, जिसका नाम आदरणीय मालवीय जी ने 'प्रेम महाविद्यालय' रखा है। यहाँ बच्चों की पढ़ाई होगी। बच्चे विवेकवान होंगे तथा देश, समाज और संस्कृति की सेवा करेंगे। हमारा नाम जो रोशन होगा, वह ऐसे बच्चों से ही होगा। उसमें देश के विभूतिवान व्यक्ति अध्यापक रखे गए थे। उसमें पढ़ाई भी आश्चर्यजनक हुई। इस विद्यालय से विवेकवान, विभूतिवान, आदर्शवान विद्यार्थी निकले, जिन्होंने देश, समाज तथा राजा महेन्द्र प्रताप का नाम उज्ज्वल किया।

मित्रो! यह विवेक की सिद्धि महान थी, जिसने राजा महेन्द्र प्रताप को ऊँचा उठा दिया। आज अज्ञान में डूबे लोग, तृष्णा में डूबे लोग, अहंकार में डूबे लोग उपासना के सही अर्थ को समझ नहीं पाते हैं। वास्तव में विवेक की सिद्धि महान स्थान रखती है।

आज की बात समाप्त

धर्मतंत्र का परिष्कार अत्यंत अनिवार्य

(१९६९ मथुरा पू. गुरुदेव द्वारा दिया गया उद्बोधन)

दो ही मुख्य तंत्र

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! व्यक्ति एवं समाज के ऊपर नियंत्रण करने वाली दो ही शक्तियाँ मुख्य हैं। एक शक्ति का नाम धर्ममंत्र और दूसरी का नाम है—राजतंत्र। राजतंत्र मनुष्य के ऊपर नियंत्रण करता है और धर्मतंत्र मनुष्य के भीतर श्रेष्ठताओं और रचनात्मक प्रवृत्तियों को ऊपर उठाता है, उभारता है। एक का काम संसार में और व्यक्ति में महत्ता को, श्रेष्ठता को ऊँचा उठाना है और दूसरे का काम मनुष्य की अवांछनीय गतिविधियों पर नियंत्रण करना है। भौतिक क्षेत्र राजनीति का है और आत्मिक क्षेत्र धर्म का है। दोनों ही एक गाड़ी के दो पहियों के तरीके से एक दूसरे के पूरक हैं। एक दूसरे का एक दूसरे से बहुत ही घनिष्ठ संबंध है। राजनीति यदि ठीक हो, राजसत्ता यदि ठीक हो, तो मनुष्यों की धार्मिकता, विचारणा, आध्यात्मिकता और श्रेष्ठता अक्षुण्ण बनी रहेगी और यदि मनुष्यों की धर्मबुद्धि ठीक हो, तो उसका परिणाम राजनीति पर हुए बिना नहीं रहेगा।

दोनों एक दूसरे के पूरक

मित्रो! अच्छे व्यक्ति, धार्मिक व्यक्ति अच्छी सरकार बना सकने में समर्थ हैं और अच्छी सरकार में यदि अच्छे व्यक्ति जा पहुँचें, तो साधन स्वल्प होते हुए भी, सामग्री स्वल्प होते हुए भी समाज का हितसाधन कर सकते हैं। धर्म के मार्ग पर जो रुकावटें पैदा हों या जो कठिनाइयाँ हों, उनको दूर करना राजसत्ता का काम है और राजसत्ता में जो विकृतियाँ पैदा हों, उनको नियंत्रित करना धर्मसत्ता का काम है। वस्तुतः दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों ही समर्थ हैं। दोनों का ही क्षेत्र बड़ा व्यापक है और दोनों की सामर्थ्य लगभग एक समान है। हमारे देश में धर्मसत्ता राजनीति सत्ता से कहीं आगे थी। इस समय में गई-गुजरी अवस्था में भी जबकि विकृतियाँ चारों ओर से फैल पड़ी हैं। ऐसे समय में भी धर्मसत्ता का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है।

हम देखते हैं कि इतनी जनशक्ति, धनशक्ति, भावनाशक्ति, विवेकशक्ति इस धर्म-क्षेत्र में लगी हुई है। यदि ये शक्तियाँ ठीक दिशा में नियोजित की गई होतीं और उनका ठीक तरीके से उपयोग किया गया होता, तो जो काम राजसत्ता देश भर में कर सकती है, उसकी अपेक्षा सौ गुना ज्यादा काम धर्मसत्ता ने कर लिया होता, क्योंकि अपने देश में धर्मसत्ता का स्थान बहुत ऊँचा और महत्त्वपूर्ण है। अपने यहाँ संसार के सभी क्षेत्रों से अधिक धार्मिक प्रक्रियाओं की ओर ध्यान दिया जाता है। अपने यहाँ संत-महात्माओं को ही लें, साधु-ब्राह्मण को ही लें, तो इतना बड़ा वर्ग जिस देश में है, जो धर्म के आधार पर जीविका भी प्राप्त करता है, अपने मन में यह समझता भी है कि हम धर्म के लिए जीवित हैं। न केवल अपने आपको समझता है, अपितु समाज में यह घोषित भी करता है कि हम समाज के ही नहीं हैं, हम धर्म के लिए भी हैं। अगर इन लोगों की गतिविधियाँ सही रही होतीं और यदि इन लोगों के विचार करने की शैली सही रही होती, तो इनके द्वारा इतना बड़ा विशाल कार्य देश में ही नहीं, समस्त विश्व में कर सकना संभव हो गया होता कि दुनिया को उलट-पुलट कर लिया जाता।

भगवान् बुद्ध के केवल ढाई लाख शिष्य थे। उन ढाई लाख शिष्यों को भगवान् बुद्ध ने आज्ञा दी कि आप लोगों को सारे एशिया और सारे विश्व के ऊपर छाप डालनी चाहिए। इस समय जो अनैतिक और अवांछनीय वातावरण पैदा हो गया है, उसे ठीक करना चाहिए। भगवान् बुद्ध की इच्छा के अनुसार गृहत्यागी, धर्म पर निष्ठा रखने वाले ढाई लाख व्यक्ति रवाना हो गए और सारे एशिया पर छा गए, सारे यूरोप पर छा गए, सारे विश्व पर छा गए। उन्होंने बौद्ध धर्म-संस्कृति एवं बौद्ध भावनाओं का प्रसार सारे विश्व में कर दिया।

विराट संख्या एवं बढ़े हुए साधन

मित्रो! आज हमारे साधन बहुत ज्यादा बढ़े-चढ़े हैं। अपने इस भारतवर्ष में सरकारी जनगणना के हिसाब से छप्पन लाख व्यक्ति इस तरह के हैं, जो कहते हैं कि हमारी जीविका केवल धर्म के आधार पर चलती है। धर्म ही हमारा व्यवसाय है, रोटी कमाने का स्रोत है। कुछ लोग ऐसे भी हैं, जिनकी जीविका धर्म नहीं है, जो केवल अपने मन और संतोष के लिए स्वांत: सुखाय और सामान्य कर्त्तव्य समझ करके पूजा-पाठ या धार्मिक कृत्य करते हैं। धर्म के माध्यम से जीविका कमाने वालों में साधु-बाबाजी, पंडे-पुजारी आते हैं। यह संख्या छप्पन लाख हो जाती है। यह संख्या इतनी बड़ी है कि सरकार के एंपलाइज—कर्मचारियों की संख्या उससे

कम है। सेमी गवर्नमेंट और पूरी गवर्नमेंट दोनों को मिला करके हिंदुस्तान में चालीस लाख के लगभग कर्मचारी हैं, लेकिन धर्मसत्ता के पास छप्पन लाख कर्मचारी हैं। यह जनशक्ति इतनी बड़ी है कि उसको यदि किसी रचनात्मक कार्य में लगा दिया जाए, तो सरकार के द्वारा जितने भी रचनात्मक और नियंत्रणात्मक कार्य होते हैं, उन सबकी अपेक्षा धर्म में काम करने वाले ज्यादा काम कर सकते हैं। क्योंकि सरकार की मशीनरी में केवल वेतनभोगी लोग होते हैं, समय पर काम करने वाले होते हैं। जरा भी समय ज्यादा खरच हो जाए, तो वे ओवर टाइम माँगते हैं। उन्हें पेंशन देने की जरूरत पड़ती है और भी बहुत से खरचे करने पड़ते हैं, इसलिए वे कर्मचारी बहुत महँगे भी होते हैं। उनके जीवन का उद्देश्य सेवा नहीं होता। अधिकांश लोगों की इच्छा-उद्देश्य नौकरी करना, पेट पालना होता है।

लेकिन मित्रो! धर्म के लिए जिन्होंने आजीविका स्वीकार की है, उनके सामने तो लक्ष्य भी होना चाहिए। उनके पास तो समय भी ज्यादा होना संभव है। आठ घंटे ही काम करेंगे, यह क्या बात हुई! संत-महात्मा छह घंटे सो लिए, भिक्षा से रोटी मिल गई, बनी-बनाई रोटी मिल गई, दो घंटे नित्यकर्म के लिए लगा दिए, आठ घंटे हो गए। आठ घंटे के बाद सोलह घंटे उनके पास बच जाते हैं। यदि वे इस सारे-के-सारे समय को धर्मकार्यों में लगाना चाहें, तो उनमें से एक व्यक्ति दो आदमियों के बराबर काम कर सकता है। उनमें भावनाएँ होती हैं, निष्ठाएँ होती हैं, धर्म-विश्वास होता है, और भी बहुत-सी बातें होती हैं। तो ये छप्पन लाख व्यक्ति वस्तुतः इतनी बड़ी जनसंख्या है कि चाहें तो बुद्ध भगवान् के ढाई लाख शिष्यों की अपेक्षा दुनिया भर में तहलका मचा सकते हैं।

एक लाख व्यक्तियों ने फैलाया तीन-चौथाई दुनिया में धर्म

ईसाई मिशनरी के पास केवल एक लाख के करीब पादरी हैं और वे पादरी सारी दुनिया में छाए हुए हैं। उत्तरी ध्रुव से लेकर भारतवर्ष के नागालैंड और बस्तर तक में, जंगलों में और आदिवासियों के बीच काम करते हैं। उनका यह विश्वास है कि ईसामसीह का संदेश और ईसाईयत का संदेश घर-घर पहुँचाया जाना चाहिए। इस विश्वास के आधार पर अपनी सुविधाओं का ध्यान किए बिना पादरी लोग सारे विश्व भर में काम करते हैं। परिणाम क्या हुआ? केवल ईसाई धर्म को, भगवान् ईसा को जन्म लिए सिर्फ उन्नीस सौ सत्तर वर्ष के करीब हुए हैं। तीन सौ वर्ष तक, तो उनका सारा-का-सारा क्रियाकलाप अज्ञान ही बना रहा। सेंट-पॉल ने ईसा के लगभग तीन सौ वर्ष बाद ईसाई धर्म की खोज की और ईसा की खोज की, उनका

जीवनचरित ढूँढ़ा, उनके उपदेशों को संकलित किया। तीन सौ वर्ष तो ऐसे ही निकल जाते हैं। केवल सोलह सौ वर्ष हुए हैं, लेकिन एक लाख व्यक्ति जो आज हैं, इससे पहले तो एक लाख भी नहीं थे। इन थोड़े से निष्ठावान, धार्मिक व्यक्तियों ने ईसाइयत का कितना प्रचार कर डाला कि दुनिया में एक-तिहाई मनुष्य अर्थात् एक अरब मनुष्य आज ईसाई हैं। तीन अरब की आबादी सारी दुनिया में है। मुसलमानों की बात अलग थी। उन्होंने तो तलवार के जोर से भी अपना धर्म फैलाया, लेकिन ईसाइयों ने जुल्म भी नहीं किया। कम-से-कम प्रारंभ में तलवार के जोर से धर्म नहीं फैलाया। इतना होते हुए भी इस थोड़े से समय में सारे विश्व में इतनी बड़ी संख्या फैल गई। इसका क्या कारण है? कारण केवल उन एक लाख मनुष्यों का श्रम, उनकी भावनाएँ और प्रयत्न हैं, जिनकी वजह से उन्होंने ईसा को, बाइबिल के ज्ञान को दुनिया में फैलाया।

मित्रो! अगर अपने पास धर्म की शक्ति में लगे हुए व्यक्ति इस तरह की भावना को लेकर के चले होते कि हमको ऋषियों का, सभ्यता और संस्कृति का, भगवान् का संदेश जनमानस में स्थापित करना है। उससे लोक मानस को, जन-जन को प्रभावित करना है। हर व्यक्ति को धार्मिक बनाना है और एक ऐसा समाज बनाना है कि जिसमें धर्मप्रेमी लोग रहते हों। मर्यादाओं का पालन करने वाले, परस्पर स्नेह करने वाले और बुराइयों, अनीतियों से दूर रहने वाले व्यक्ति पैदा हों। बताइए तो उसका परिणाम कितना बड़ा हो गया होता! जरा विचार तो कीजिए। जिसके मन में भगवान् की, देश और धर्म की लगन लगी हुई हो, वह एक ही आदमी कितना बड़ा काम कर सकता है। हमने कल-परसों महात्मा गांधी को देखा था, अकेले ही थे और सारे भारतवर्ष को जगा दिया। हमने कल-परसों बुद्ध भगवान् को देखा, एक ही महात्मा थे और सारे विश्वभर को जगा दिया। कल-परसों स्वामी रामतीर्थ एवं एक ही विवेकानंद को हमने देखा, एक ही योगी थे। उनने वेदांत का संदेश भारतवर्ष से लेकर अन्य द्वीप-द्वीपांतरों तक पहुँचा दिया।

शिक्षा नहीं, भावना प्रधान

आप कहेंगे कि वे लोग तो पढ़े-लिखे और सुशिक्षित महात्मा थे और ये छप्पन लाख तो सुशिक्षित नहीं हैं। शिक्षा से और धर्म से कोई खास समझौता नहीं है। शिक्षित व्यक्ति भी उतना ही काम कर सकते हैं, जितना कि बिना शिक्षित और बिना शिक्षित धर्मप्रेमी भी उतना ही काम कर सकते हैं, जितना कि शिक्षित। संत रैदास बिना पढ़े थे और कबीर की शिक्षा भी नाम मात्र की थी। मीरा कौन ज्यादा

पढ़ी-लिखी थी! नामदेव की शिक्षा क्या बढ़ी-चढ़ी थी! दादू से लेकर के अन्य महात्मा, जो भक्तिकाल में हुए हैं, उनको शिक्षा की दृष्टि से यदि तलाश किया जाए, तो उनकी योग्यता, उनकी विद्या और शिक्षा बहुत ही कम थी, लेकिन उन लोगों ने अपने-अपने समय पर कितने महत्त्वपूर्ण कार्य किए, आप सभी जानते हैं। समाज का संरक्षण और शिक्षण करने के लिए भावनाओं की जरूरत है, प्रभाव की जरूरत है, लगन और परिश्रम की जरूरत है। शिक्षा की उतनी जरूरत नहीं है।

भारतवर्ष में सात लाख गाँव हैं। यदि छप्पन लाख संत-महात्मा इस देश में काम करने के लिए खड़े हो गए होते, तो वह काम कर दिखाया होता कि हमने राष्ट्र का नया निर्माण ही कर लिया होता। कल्पना कीजिए कि आठ महात्मा एक गाँव के पीछे हैं, उनमें से कुछ तो पढ़े-लिखे होंगे ही। यदि कुछ भी पढ़े-लिखे नहीं हैं, तो भी अपने शारीरिक श्रम के द्वारा सारे गाँव की सफाई की व्यवस्था बना सकते हैं। अगर एक महात्मा झाड़ू लेकर चल पड़े, तो बाकी लोग उसका तमाशा देखते रहें, ऐसा तो नहीं हो सकता। गाँव के लोग भी श्रमदान के लिए चलेंगे, तो जहाँ गाँव की गलियों-कूचों में हर जगह गंदगी-ही-गंदगी दिखाई पड़ती है, वहाँ स्वच्छता दिखाई देने लगे। एक महात्मा पेशाबघर और चलते-फिरते शौचालय बनाने के लिए फावड़ा लेकर खड़ा हो जाए, तो गाँव वालों को शर्म नहीं आएगी क्या!

जरूर आएगी कि हम अपने गाँव में जहाँ-तहाँ गंदगी कर देते हैं। इसके लिए हमको एक कोने में छोटा-सा पेशाबघर और शौचालय बना लेना चाहिए। मैं छोटी-सी बात कह रहा था कि जापान ने अपने देश की खाद्य समस्या इसी प्रकार से हल कर ली है। वहाँ फर्टिलाइजर और दूसरे प्रकार के कारखाने नहीं हैं। मनुष्य के मल-मूत्र का ही उपयोग किया जाता है और उससे ही करोड़ों रुपए की खाद पैदा कर ली जाती है। अपने देहातों में मल-मूत्र का कोई उपयोग नहीं होता। गाँव के आस-पास ही लोग मल त्याग करके जगह खराब कर देते हैं। यदि हर गाँव में चलते-फिरते शौचालय, ड्रेनेज के शौचालय बना लिए गए होते, सारे गाँव के लोग उसी में शौच के लिए जाते, तो कितना खाद मिल सकता था। यदि महात्मा चाहते, तो इस छोटे से काम को अपने हाथ में ले करके राष्ट्र में करोड़ों मन अन्न पैदा करने और गाँव में स्वच्छता रखने का काम कर सकते थे।

आठ संत-महात्मा प्रति गाँव लग जाएँ तो....

मित्रो! शिक्षा को ही लें। आठ आदमियों में से एक भी पढ़ा-लिखा हो, तो गाँव में एक पाठशाला चला सकता है। प्रौढ़ पाठशाला, रात्रि पाठशाला चला सकता

है। जिससे अपना आज का अर्द्ध निरक्षर देश थोड़े ही दिनों में साक्षर बन सकता है। कितनी सामाजिक कुरीतियाँ और व्यसन अपने देश भर में फैले हुए हैं। ब्याह-शादियों में होने वाला खरच हिंदुस्तान के सिर पर कलंक के तरीके से है। धन का कितना अपव्यय होता है। लोगों में गरीबी और बेईमानी पैदा करने के लिए मजबूर करता है। इससे सारे राष्ट्र की जड़ें खोखली हो गई हैं। यदि ब्याह-शादियों में इतना धन खरच न किया गया होता, तो किसी को अपने बच्चे और बच्चियाँ भारी नहीं पड़तीं। किसी पिता को अपने बच्चों के लिए चिंता करने की जरूरत न होती। इन बुराइयों को दूर करने के लिए आठ संत-महात्मा प्रार्थना के द्वारा, प्रचार के द्वारा भी जनमानस तैयार कर सकते थे। कोई ऐसे अवांछनीय जिद्दी व्यक्ति हों, जो दुराग्रह दिखाते हों, तो उनको सत्याग्रह करने से लेकर घिराव तक की और अनशन से लेकर दूसरे काम करने तक की धमकी दी जा सकती थी। उनको बलपूर्वक रोका जा सकता था। सरकार जिस काम को नहीं रोक सकती, उसको ये लोग रोक सकते थे।

नशाबाजी किस तेजी के साथ बढ़ती चली जाती है, आप देख रहे हैं न! बीड़ी-तंबाकू आज घर-घर का शौक बन गई है। इसमें दो करोड़ रुपया प्रतिदिन खरच होता है। इस हिसाब से सात सौ तीस करोड़ रुपया अपने भारत वर्ष के लोगों को प्रतिदिन खरच करना पड़ता है। यदि इस व्यसन को रोका जा सके, तो सात सौ तीस करोड़ रुपये की राष्ट्रीय बचत हो सकती है। यह बचत इतनी बड़ी है, जिसके सहारे सारे देश में उच्च श्रेणी की शिक्षा-व्यवस्था हम आसानी से बना सकते हैं। यदि हमने नशे को रोका होता और नशे के स्थान पर आवश्यक चीजों को उत्पन्न किया होता, वह पैसा उन कामों में खरच कराया होता, जो रचनात्मक हैं, तो मजा आ जाता और पैसे के अभाव में रुके हुए शिक्षा से लेकर स्वास्थ्य तक के सारे-के-सारे काम कैसे बढ़िया बन गए होते। क्या कहा जाए! कुछ कह नहीं सकते, हमारी धर्मबुद्धि न जाने कैसी है! हम सब विचारशील लोगों को और बाहर के लोगों को भी हमारी धर्मबुद्धि पर हँसी आती है।

यह तो अध्यात्म नहीं है

मित्रो! भगवान् की प्रार्थना करें, पूजा करें, यह बात समझ में आती है, लेकिन डंडा लेकर भगवान् के पीछे ही पड़ जाएँ और कहें कि तुमको तो न हम खाने देंगे, न खाएँगे; न कुछ करेंगे, न करने देंगे; तो भगवान् भी कहेगा कि अच्छे चेलों से पाला पड़ा—ये न खाते हैं, न खाने देते हैं; न उठते हैं, न उठने देते हैं; न

चलते हैं न चलने देते हैं; न कुछ करते हैं, न करने देते हैं। भगवान् बहुत परेशान होगा कि बाबा इनसे पिंड कैसे छुड़ाया जाए! लोगों के मन में यह ख्याल है कि भगवान् का ज्यादा नाम लो, उनके ऊपर ज्यादा पानी चढ़ाओ, उनको ज्यादा उबटन करो, तो क्या हो जाएगा कि भगवान मजबूर होकर मनोकामना पूरी कर देगा। मित्रो! भगवान् का नाम लेना साबुन लगाने के बराबर है। थोड़ी देर साबुन लगाया भी जा सकता है, लेकिन इसके बाद यदि भगवान् का नाम लिया जाए, तो उसके बराबर भगवान् का काम भी किया जाए। तभी एक बात पूरी होती है, अन्यथा बात कहाँ पूरी होती है! यह बात अगर लोगों को समझ में आ गई होती, तो ये छप्पन लाख व्यक्ति राष्ट्र का निर्माण और देश की सामाजिक, नैतिक और दूसरी समस्याओं का समाधान करने के लिए जुट पड़े होते। यह संख्या कितनी बड़ी है! जितने आदमी सरकार की मशीनरी चलाते हैं, उतनी ही बड़ी मशीनरी धर्मतंत्र के द्वारा चलाई जा सकती थी।

मित्रो! धन को ही लें, तो गवर्नमेंट जितना रेवन्यू वसूल करती है, टैक्स वसूल करती है, उससे ज्यादा धन जनता हमारे धर्मकार्यों के लिए दिया करती है। मंदिरों में कितनी बड़ी संपदा लगी हुई है। सरकार के खजाने में जितनी कुल पूँजी है और रिजर्व बैंक के पास जितना धन है, लगभग उतना ही धन मंदिरों और मठों के पास इमारतों के रूप में, नकदी के रूप में, जायदादों के रूप में अभी भी विद्यमान है। धर्मतंत्र की संपदा एक तरह का रिजर्व बैंक है। अगर धर्मतंत्र की संपदा भोग-प्रसाद लगाने, मिठाई बाँटने, पंडे-पुजारियों का पेट पालने, शंख-घड़ियाल बजाने और कर्मकांड करने की अपेक्षा जनमानस को ऊँचा उठाने के लिए लगा दी गई होती, तो मजा आ जाता! मैं जहाँ मथुरा में रहता हूँ, वहाँ के दो मंदिरों की बात बताता हूँ। सबका जिक्र तो मैं नहीं कर सकता। वहाँ दो भगवान् दो मंदिरों में दो लाख रुपये मासिक का भोग खा जाते हैं।

क्या भगवान् यह सब चाहता है

ऐसे लगभग पाँच हजार मंदिर हैं। इसमें न्यूनाधिक मात्रा को लगाया जाए, तो मैं समझता हूँ कि रोज भगवान् के खाने-पीने का खरचा मथुरा-वृंदावन दो नगरों में पंद्रह लाख रुपये प्रतिदिन जा बैठता हो, तो कोई अचंभे की बात नहीं है। पंद्रह लाख प्रतिदिन से कितने करोड़ महीने के और कितने अरब साल भर के होते हैं, जरा हिसाब लगाइए न! यह सारा-का-सारा धन यदि भगवान् को भोग लगाने की अपेक्षा उन कामों में खरच किया जाता, जो व्यक्ति के भीतर से कुछ चेतना उत्पन्न

करने में, उनकी मन:स्थिति को ऊँचा उठाने में समर्थ हैं, जैसे लोगों को धर्म-धारणा के प्रचार-प्रसार की व्यवस्था। जिस तरीके से पादरी काम करते हैं। ईसाई मिशन के लोग बाइबिल और दूसरी पुस्तकों को संसार की छह सौ भाषाओं में छापते हैं और घर-घर में एक-एक पैसे के मूल्य पर पहुँचाते हैं। जैसे—शिक्षा की व्यवस्था, ऐसे विश्वविद्यालय और विद्यालय स्थापित करने में पैसा खरच किया गया होता, जहाँ से समाज का नया निर्माण करने वाले व्यक्ति निकल सकें। उनकी शिक्षा-दीक्षा का समुचित प्रबंध किया जा सके, तो कितना काम आता। मित्रो! पंद्रह लाख रुपया केवल अपने मथुरा की बात मैंने बताई है। सारे हिंदुस्तान का यदि ब्यौरा लिया जाए, तो ये करोड़ों और अरबों रुपया प्रतिदिन के बीच जा बैठेगा। यदि धर्मतंत्र को सही दिशा देना संभव रहा होता, तो न केवल हिंदुस्तान, बल्कि सारी दुनिया को ठीक कर लिया गया होता। धर्मतंत्र को सही दिशा नहीं दी जा सकी, धर्म का उद्देश्य लोक-मंगल नहीं समझा गया, अपितु कर्मकांड मात्र ही लोगों को बताया जा सका। जिसका परिणाम रचनात्मक न हो सका तथा व्यक्ति और समाज की कोई खास सेवा न हो सकी।

अत्यधिक अपव्यय धर्म के नाम पर

हिंदुस्तान में सोमवती अमावस्या के दिन गंगास्नान का बहुत महत्त्व है। कल्पना कीजिए कि हरिद्वार से लेकर गंगासागर तक स्नान करने वालों की संख्या कम-से कम हर सोमवती अमावस्या के दिन पचास लाख हो जाती है। एक आदमी के जाने-आने का, श्रम का, खाने-पीने का, दान-दक्षिणा आदि का खरच बीस रुपया आता हो और उसे पचास लाख से गुणा कर दिया जाए तो दस करोड़ रुपया प्रति सोमवती अमावस्या का खरच आता है। आप कल्पना कीजिए कि कम-से-कम चार और ज्यादा से ज्यादा पाँच सोमवती अमावस्या हर वर्ष होती हैं। उनका खरचा लगा दिया जाए, तो पचास करोड़ रुपया खरच करने वालों से प्रार्थना की गई होती कि आप एक वर्ष स्नान करने की अपेक्षा गंगा का उपयोग, गंगा की महत्ता समाज में बनाए रखने के लिए विवेकपूर्वक विचार करें।

मित्रो! जिन शहरों की गंदी नालियाँ गंगा में डाली जाती हैं, वहाँ का पानी अपवित्र कर दिया जाता है। स्नान करने वाला उसी नाले के दूषित पानी मिले हुए गंगाजल को पीता है और उसी का आचमन करके चला जाता है। वह गंदा पानी यदि गंगा में डालने की अपेक्षा शहर की नालियों-ड्रेनेज के द्वारा शहर से बाहर निकाला गया होता और खेतों में, बगीचों में डाल दिया गया होता तो कितने एकड़

भूमि की सिंचाई हो जाती! गंगा में, यमुना में और दूसरी नदियों में जो गंदगी पैदा होती है, उनका पानी खराब होता है, जो कि स्नान करने और पीने के लायक भी नहीं रह जाता, बीमारियाँ और फैलाता है। वह पचास करोड़ रुपया यदि उस गंदे पानी का सदुपयोग करने और नदियों को साफ रखने में खरच किया गया होता, तो कैसा अच्छा होता, मजा आ जाता!

धर्मभावना नहीं, धर्मभीरुता

लेकिन क्या कहा जाए? इसे मैं धर्मभीरुता कहता हूँ, धर्मभावना नहीं कहता। अपने देश में सिर्फ धर्मभीरुता है, धर्मभावना नहीं है। धर्मभीरुता और धर्मभावना में जमीन-आसमान का फरक है। गाँव-गाँव में रामचंद्र जी की लीलाएँ और श्रीकृष्ण की लीलाएँ होती हैं। एक-एक लीला में बीस-बीस, तीस-तीस हजार रुपया खरच हो जाता है। केवल मनोरंजन, तमाशा होता है। लोग तालियाँ बजाते हैं, मेला-ठेला, तमाशा देखते हैं और चले जाते हैं। मित्रो! वह धन, जो अवांछनीय और अनावश्यक खेल-प्रसंगों में खरच किया जाता है, जिसको जनता पुण्य समझती है, उसके द्वारा हमने एक क्रमबद्ध रूप से अभिनय मंच बनाया होता, ऐसी थियेटरिकल कंपनियाँ बनाई होतीं, जो गाँव-गाँव में जाकर भगवान् राम और श्रीकृष्ण भगवान् के जीवन के उद्देश्यों का शिक्षण देने में समर्थ रही होतीं। उनके नाटक, प्रहसनों ने जनता के मन-मस्तिष्क को और जनता की दिशाओं को बदल दिया होता। जिससे उनमें नैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक चेतना उत्पन्न की जा सकती थी पर हम देखते हैं कि तमाशे के, उपहास के, मजाक के रूप में भगवान् को एक खिलौना बना देते हैं। भगवान् का सम्मान करने की बात न जाने कहाँ चली जाती है!

मित्रो! थोड़े दिन पहले पंजाब में गुरुनानक पर एक फिल्म बनाई जाने वाली थी, तो पंजाबियों ने घोर विरोध किया कि गुरुनानक को ड्रामे के रूप में नहीं दिखाया जा सकता। उनकी नकल बनाने के लिए कोई झूठा आदमी खड़ा नहीं किया जा सकता। नानक की महत्ता और श्रद्धा हमारे मन में है। उसे हम छोटे से कमजोर आदमी के लिए नष्ट नहीं कर सकते और कोई भी नानक का पार्ट अदा करने के लिए तैयार नहीं हुआ। मित्रो! भगवान का पार्ट अदा करने के लिए ऐसे छोकरे खड़े हो जाएँ, जिनमें न कोई विवेक है, न विचार है, न कोई दिशा है, न लक्ष्य है, तो इससे मनुष्यों की श्रद्धा में क्या कमी नहीं आएगी! केवल लकीर पीटने के लिए कितने आदमी कितना पैसा अनावश्यक रूप से खरच कर डालते हैं। यह

पैसा कितनी विकृतियाँ पैदा करता है, यह किसी से छिपा नहीं है। जो भी आदमी हराम की कमाई खाएगा, उसका नाम चाहे 'अ' हो, चाहे 'ब', उसके आचरण अच्छे नहीं रह सकते। वह समाज के लिए उपयोगी व्यक्ति नहीं रह सकता।

दुरुपयोग रुके

साथियो! अपने देश की सांस्कृतिक, सामाजिक सेवा और नैतिक उत्कर्ष के लिए धन की जरूरत है। धन के बिना कुछ संस्थाएँ और प्रवृत्तियाँ बेमौत भूख से मर जाती हैं। पैसा ऐसे लोगों को दिया जाता है, जिनकी समझ में नहीं आता कि उसका क्या इस्तेमाल किया जाए? इस धर्मभीरु जनता को क्या कहा जाए? उनकी धर्मभीरुता को किस तरीके से धिक्कारा जाए? इतना समर्थ धर्मतंत्र जिसके पीछे छप्पन लाख व्यक्ति काम करते हैं। इतने मंदिरों, मठों, तीर्थों और कर्मकांड, श्राद्ध-तर्पण और न जाने क्या-क्या करने में छप्पन करोड़ रुपया खरच हो जाता हो, तो जरा भी अचंभे की बात नहीं है। इतनी बड़ी पूजी एक गवर्नमेंट का बजट बनाने के लिए काफी है। इतनी बड़ी धन की शक्ति, भावनाओं की शक्ति, इतनी बड़ी जनशक्ति, जो कि आज बिखरी पड़ी है और अवांछनीय दिशा में प्रवाहित हो रही है। आवश्यकता इस बात की है कि नई पीढ़ी के समझदार-विवेकशील लोग इस धर्म के अपव्यय को रोकें। जिसे मैं दुरुपयोग कहता हूँ।

मित्रो! धर्म की भावना का बुरी तरह से दुरुपयोग हो रहा है। इसे उस दिशा में लगाया जाए, जिससे कि व्यक्ति का श्रेष्ठ निर्माण हो। मनुष्यों की विचारणा-भावनाओं में परिष्कार हो और समाज को अच्छे रास्ते पर चलने के लिए प्रकाश मिले। इसके लिए समझदार-विवेकशील लोगों को आगे आना ही चाहिए। जिस तरीके से राजनीति में धक्का-मुक्की करके लोग आगे बढ़ते चले जाते हैं। उसमें उनका सत्ता और पद का लोभ रहा होगा, लेकिन सेवा का जो स्तर अपने धर्मक्षेत्र में है, वह अन्य किसी क्षेत्र में नहीं है। इसलिए मैं आह्वान करना चाहता हूँ उन सब लोगों का, जिनके अंदर देशभक्ति और विश्वमानव की पीड़ा विद्यमान है, जो समाज का हित साधन करना चाहते हैं, जो लोकमंगल के लिए कदम बढ़ाना चाहते हैं; उनको धर्म के विकृत स्वरूप का समाधान करने, धार्मिक भावनाओं और जनशक्ति को ठीक दिशा देने के लिए कदम बढ़ाकर आगे आना ही चाहिए। अगर ऐसा नहीं किया गया, तो राष्ट्र और विश्व की प्रगति के लिए एक भारी अभाव बना ही रहेगा। इतनी बड़ी पूँजी, जनशक्ति और भावनाशक्ति का दुरुपयोग होता ही रहेगा। इसको ठीक करना अब राष्ट्र की महती आवश्यकता है।

एक जगह भगवान् बैठें, यह गलत अवधारणा

भगवान् के मंदिर जगह-जगह बनाए जाएँ, यह विचार उस समय उत्पन्न हुआ, जब भगवान् की विचारणा को जनमानस में स्थापित करने, भगवान् की प्रेरणाओं को सर्वत्र प्रकाशित करने की आवश्यकता अनुभव की गई। भगवान् सब जगह विराजमान हैं। पेड़-पत्तों से लेकर फूल-पौधों तक और मनुष्य के हृदय से लेकर के इस आसमान तक, कोई भी स्थान ऐसा नहीं है, जहाँ वे विद्यमान न हों। फिर भगवान को एक स्थान पर बिठाने और खाना खिलाने की क्या जरूरत पड़ गई? यह विचारणीय प्रश्न है। भगवान तो बादलों को बरसाते हैं। जरूरत पड़े, तो जहाँ कहीं वर्षा हुआ करे, वहाँ जा बैठें और फुहारों का आनंद ले लें। नहाने की उनको क्या दिक्कत पड़ेगी? नदियाँ उनकी बहती हैं। जब कभी स्नान करना पड़े, घंटों नहा सकते हैं। उनको कोई रोकने वाला है क्या? फिर भगवान् को स्नान कराने की क्या जरूरत थी?

मित्रो,! भगवान् तो एक विचारणा है, भावना है, एक चेतना है। उनको एक जगह बिठाया जाए, ये कैसे मुमकिन हो सकता है? भगवान् की वृत्तियों और प्रवृत्तियों को हम लोग भूल गए हैं। उनको स्मरण दिलाने के लिए ही मंदिर, चेतना केन्द्र बनाए गए हैं, जिसके माध्यम से भगवान् की वृत्तियों को सर्वसाधारण के मनों तक पहुँचाना संभव हो सकेगा। गाँवों में देवालय इसीलिए बनाए गए हैं कि जो लोग भगवान् को भूल गए हैं, वे इस माध्यम से अपने जीवन लक्ष्य को पहचानें। लोग भगवान् का नाम तो जानते हैं कि भगवान् कृष्ण होते हैं, भगवान् राम होते हैं, हनुमान होते हैं। लेकिन सही बात यह है कि भगवान् के स्वरूप, उनके आदेश, उनकी शिक्षाओं और मानव जीवन से उनका संबंध इन सबको सौ फीसदी लोग भूल गए हैं। यदि वे भूले न होते, तो उनने अपने जीवन लक्ष्य को याद रखा होता और यह स्मरण रखा होता कि भगवान् ने इंसान को दुनिया में किसलिए भेजा है? उसके ऊपर क्या जिम्मेदारियाँ सौंपी हैं? भगवान् ने मनुष्य से क्या उम्मीदें की हैं।

मित्रो! भगवान् तो हृदय में, घट-घट में समाया हुआ है और वह मनुष्य के द्वारा अच्छी वृत्तियों को पूरा किया जाना देखना चाहता है। अगर ये बातें मनुष्य को याद नहीं हैं, उसे केवल किसी मंदिर की मूर्ति की शक्ल भर याद रहती है, तो कैसे कहा जाए कि इस आदमी को भगवान् याद है और वह भगवान् को भूला नहीं है? साथियो! लोग भगवान् को भूलते जा रहे थे और भूल रहे हैं। इसीलिए उनको स्मरण दिलाए रखने के लिए मंदिरों की स्थापना की गई, ताकि जब कभी भी

आदमी उधर से निकले, तो प्रणाम करे, दंडवत करे और सुबह-शाम उनका दर्शन करे, ताकि उसे याद आए कि कोई भगवान् नाम की सत्ता भी है और वह मनुष्य के जीवन से अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई है। मनुष्य जीवन के विकास के लिए, जीवन में सुख-शांति की स्थापना करने के लिए भगवान् की सहायता और भगवान् के सहयोग की नितांत आवश्यकता है। यह सिद्धांत और आवश्यकता मनुष्य को अनुभव होती रहे, इसलिए हर जगह मंदिर बनाए गए।

लोकशिक्षण जनजागृति हेतु बने थे मंदिर

मित्रों! उससे भी एक और बड़ा सामाजिक कारण यह था कि प्रत्येक गाँव और गली-मोहल्ले के लिए ऐसी आवश्यकता अनुभव की गई कि इन स्थानों पर सत्प्रवृत्तियाँ एवं सद्भावनाएँ फैलाने के लिए, रचनात्मक कार्यों को दिशा देने के लिए ऐसे स्थान होने ही चाहिए, जहाँ अनेकानेक प्रकार की प्रवृत्तियों का संचालन किया जा सके। उदाहरण के लिए कथा के द्वारा लोक-शिक्षण जितनी अच्छी तरह किया जा सकता है, उतना और किसी तरीके से नहीं। इसमें मनोरंजन भी है, इतिहास भी है और आनंद भी है। साथ-ही-साथ इसमें ऊँचे विचार एवं पूर्व शिक्षाएँ भी जुड़ी हुई हैं। इस तरह से कथाएँ कहकर के जनता को उत्साह और मनोरंजन के साथ सन्मार्गगामी बनाया जा सकता है।

प्राचीनकाल में मंदिरों में कथाएँ होती थीं, संगीत का शिक्षण होता था और वह कीर्तन के माध्यमों से लोकगायन और लोक-मंगल की शिक्षाओं के केन्द्र बने रहते थे। मंदिरों के साथ पाठशालाएँ जुड़ी रहती थीं, पुस्तकालय जुड़े रहते थे। मंदिरों में सत्संग की व्यवस्था होती थी। मंदिरों के आस-पास व्यायामशालाओं की भी व्यवस्था थी। कहने का अर्थ यह है कि असंख्य रचनात्मक प्रवृत्तियों का एक ही केन्द्र उस जमाने में था, जिसको हम कहते हैं—मंदिर। उन दिनों मंदिरों में जो कार्यकर्त्ता काम करते थे, वे बड़े प्रभावी, लोकसेवी होते थे। लोकसेवियों को जीविका की भी आवश्यकता है। लोकसेवी काम करे और खाने का प्रबंध न हो सके, तो काम कैसे चलेगा? इसी तरह यदि खाने का प्रबंध और गुजारे की व्यवस्था किसी को वेतन के रूप में लोग दें, तो लेने वाले का भी असम्मान होता है और देने वाले को अहंकार पैदा होता है।

इसलिए मित्रो! विचार ये किया गया कि उस गाँव में काम करने वाले लोकसेवियों को गुजारा निर्वाह करने की व्यवस्था के लिए भगवान का भोग लगाया जाए। थाली भरकर सवेरे का भोग लगा दिया और थाली भरकर शाम को भोग लगा

दिया। एक आदमी के गुजारे का प्रबंध हो गया। दोनों वक्त का भोजन मिल गया। लोगों ने यह समझा कि हमने भगवान् को खाना खिलाया और सेवा करने वाले व्यक्ति ने समझा कि हमारे गुजारे का प्रबंध हो गया। असम्मान भी नहीं हुआ और किसी के ऊपर प्रत्यक्ष रूप से दबाव भी नहीं पड़ा। इस तरीके से मंदिरों में भगवान् के जो खाने-पीने की व्यवस्था थी, वास्तव में वह वहाँ के कार्यकर्त्ता के लिए भोजन की व्यवस्था थी। लोग भगवान् के पास दक्षिणा चढ़ाया करते थे, पैसा चढ़ाया करते थे। वे चढ़ावे की चीजें सिर्फ एक ही काम आती थीं कि उस क्षेत्र में सेवाकार्य करने वाले लोगों के गुजारे तथा मंदिर की देखभाल का प्रबंध इस तरीके से हो जाता था।

लोकसेवियों की आवश्यकता पूर्ति था एक प्रयोजन

साथियो! लोकसेवी तो हर जगह होने ही चाहिए। लोकसेवियों के बिना सत्प्रवृत्ति का विकास कैसे हो सकता है? इसलिए पहले हर गाँव में कितने ही लोकसेवी रहते थे और एक-दूसरे के गाँव में परिभ्रमण करते रहते थे। परिभ्रमण करने वाले ऐसे लोकसेवियों को संत-महात्मा भी कहा जा सकता है, विद्वान भी कहा जा सकता है। वे जब कभी भी आते थे, तो उनके ठहरने के लिए डाक-बंगला चाहिए, धर्मशाला चाहिए। यह कहाँ से आए? इसलिए मंदिरों में इतनी गुंजाइश रखी जाती थी कि कभी दस-पाँच आदमी बाहर से आ जाएँ, तो उनके भी ठहराने और खाने-पीने का प्रबंध कर दिया जाए। इस तरीके से किसी जमाने में सत्प्रवृत्तियों के केन्द्र मंदिर थे। मंदिरों को इसीलिए बनाया गया था। भगवान् की पूजा-अर्चना भी हो जाती थी, साथ ही भगवान् को याद करने के बहाने से आस्तिकता का प्रचार भी होता था।

मित्रो,! ये सब बातें ठीक हैं, परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि भगवान् को उन सब चीजों की आवश्यकता थी, उनके बिना भगवान् का कोई काम रुका पड़ा था। आरती अगर न उतारी जाए, तो भगवान नाखुश हो जाएँ, या उनका काम हरज हो जाए, ये कैसे हो सकता है? सूर्यनारायण और चंद्रमा भगवान् की हर वक्त आरती उतारते रहते हैं। नवग्रहों से लेकर के तारामंडलों द्वारा हर क्षण उनकी आरती होती रहती है। फिर हमारे छोटे-से दीपक की क्या कीमत हो सकती है? फूल सारे विश्व में उन्हीं के उगाए हुए हैं, चंदन के पेड़ उन्हीं ने उगाए हैं। फूल और चंदन अगर भगवान् को नहीं मिलते, तो भगवान का क्या हरज था? मिठाई या खाना-भोग भगवान् को नहीं मिलता, तो क्या हरज था? राई के बराबर भी कुछ हरज नहीं था। भगवान् को खाने-पीने की और पहनने-ओढ़ने की वास्तव में कतई जरूरत नहीं है।

ये सब चीजें भगवान् को मंदिरों के माध्यम से जो भगवान् के निमित्त चढ़ाई जाती हैं, उनके पीछे सिर्फ एक ही उद्देश्य छिपा था कि लोकसेवी को, जो एक तरीके से भगवान् के प्रतिनिधि कहे जा सकते हैं, जिन्होंने अपने व्यक्तिगत स्वार्थों की तिलांजलि दी और अपनी व्यक्तिगत सुविधाओं को ताक पर रख दिया, जिन्होंने केवल लोकमंगल का ही ध्यान रखा, केवल भगवान् के संदेशों का ही ध्यान रखा, भगवान् का प्रतिनिधि न कहें तो क्या कहें ? भगवान् के प्रतिनिधियों को जीवनयापन करने के लिए निवास से लेकर भोजन, वस्त्र तक और दूसरी चीजों के खरच की आवश्यकता के लिए मंदिरों को बनाया गया। यह एक मुनासिब क्रम था।

मंदिर वस्तुतः जन-जागरण के केन्द्र थे। इसकी पुनरावृत्ति एक बार फिर बढ़िया ढंग से की गई। सिक्खों के गुरुद्वारों को आप देखते हैं। किसी जमाने में जब मुसलमानों का दबदबा बहुत ज्यादा था, अत्याचार भी बहुत होते थे, तब सिक्खों के गुरुद्वारे में जहाँ एक ओर भगवान् की भक्ति की बात होती थी, वहीं दूसरी ओर इस बात को भी स्थान दिया गया कि एक हाथ में माला और दूसरे हाथ में भाला लेकर के सिख धर्म के अनुयायी खड़े हों और समाज में जो अनीति फैली हुई है। उसका मुकाबला करें। मंदिर थे, गुरुद्वारे थे, पर तब उनमें लोकसेवा की, लोकमानस के परिष्कार की कितनी तीव्र प्रक्रिया विद्यमान थी।

मित्रो! समर्थ गुरु रामदास ने भी यही किया था। जब अपना देश बहुत दिनों तक पराधीन हो गया, तो उन्होंने देखा कि जनता को संघबद्ध करने के लिए, जनता को दिशा देने के लिए और जन-सहयोग का केन्द्रीकरण करने के लिए कोई बड़ा काम किया जाना चाहिए। समर्थ गुरु रामदास ने महाराष्ट्र भर में घूम-घूमकर सात सौ महावीर मंदिर बनाए। वे मंदिर केवल हनुमान जी को मिठाई या चूरमा-लड्डू खिलाने के लिए नहीं बनाए गए थे। हनुमान जी तो पेड़ पर चढ़कर भी अपना फल, लड्डू-चूरमा खा सकते हैं। उन्हें क्या गरज पड़ी है कि वे किसी का चूरमा और लड्डू खाएँ? वे तो अपने हाथ-पाँव से मेहनत करके खुद खा सकते हैं और सैकड़ों बंदरों को भी खिला सकते हैं। वे किसी का लड्डू और चूरमा खाने के लिए भूखे कहाँ थे? लेकिन महावीर स्थान, जो जगह-जगह सारे महाराष्ट्र में समर्थ गुरु रामदास के द्वारा बनाए गए, उसका एक ही उद्देश्य था कि इनमें जो काम करने वाले व्यक्ति हैं, वे जनता से सीधा संपर्क बनाएँ। उन सात सौ महावीर मंदिरों में ऐसे तीखे और भावनाशील पुजारी रखे गए, जिन्होंने गाँव को ही नहीं, पूरे इलाके को जगा दिया। वह सात सौ इलाकों में बँटा हुआ महाराष्ट्र एक तरीके से संगठित होता हुआ चला गया।

समर्थ के मंदिर व्यायामशालाएँ

साथियो! समर्थ गुरु रामदास ने छत्रपति शिवाजी के सिर पर हाथ रखा और कहा कि भारतीय स्वाधीनता के लिए, भारतीय धर्म की रक्षा करने के लिए तुम्हें बढ़-चढ़कर काम करना चाहिए। शिवाजी ने कहा कि मेरे पास वैसी साधन-सामग्री कहाँ है? मैं तो छोटे से गाँव का एक अकेला छोकरा, इतने बड़े काम को कैसे कर सकता हूँ। समर्थ गुरु रामदास ने कहा, "मैंने पहले से ही उसकी व्यवस्था सात सौ गाँवों में महावीर मंदिर के रूप में बनाकर के रखी है। जहाँ जनता में काम करने वाले बड़े प्रकांड, समझदार एवं मनस्वी लोग काम करते हैं। पुजारी पद का अर्थ मरा हुआ आदमी, बीमार, बुड्ढा, निकम्मा, बेकार आदमी नहीं है। पुजारी का अर्थ-जिसे भगवान् का नुमाइंदा या भगवान् का प्रतिनिधि कहा जा सके। जहाँ ऐसे समर्थ व्यक्ति हों, समझना चाहिए, वहाँ पुजारी की आवश्यकता पूरी हो गई।"

मित्रो! किसी आदमी को खाना दिया जाए और वह भी आधा-अधूरा, सड़ा-बुसा हुआ दिया जाए, तो उससे खाने वाले को भी नफरत होगी और उसके स्वास्थ्य की रक्षा भी नहीं होगी। इसी तरीके से भगवान् की सेवा करने के लिए लंगड़ा-लूला, काना-कुबड़ा, मरा, अंधा, बिना पढ़ा, जाहिल-जलील, गंदा आदमी रख दिया जाए, तो वह क्या कोई पुजारी है? पुजारी तो भगवान् जैसा ही होना चाहिए। भगवान् राम के पुजारी कौन थे? हनुमान जी थे। अतः कुछ इस तरह का पुजारी हो, तो कुछ बात भी बने। इसी तरह के पुजारी समर्थ गुरु रामदास ने सारे-के-सारे महाराष्ट्र में रखे थे। इन सात सौ समर्थ पुजारियों ने उस इलाके में जो फिजा, वो परिस्थितियाँ पैदा कीं कि छत्रपति शिवाजी के लिए जब सेना की आवश्यकता पड़ी, तो उन्हीं सात सौ इलाके से बराबर उनकी सेना की आवश्यकता पूरी की जाती रही।

इसी प्रकार जब उनको पैसे की आवश्यकता पड़ी, तो उन छोटे-से देहातों से, जिनमें कि महावीर मंदिर स्थापित किए गए थे, वहाँ से पैसे की आवश्यकता को पूरा किया गया। अनाज भी वहाँ से आया। उसी इलाके में जो लोहार रहते थे, उन्होंने हथियार बनाए। इस तरह जगह-जगह से छिटपुट हथियार बनते रहे। अगर एक जगह पर हथियार बनाने की बड़ी फैक्ट्री होती, तो शायद विरोधियों को पता चल जाता और उन्होंने उस स्थान को रोका होता। वे सावधान हो गए होते। मिलिट्री एक ही जगह रखी गई होती, तो विरोधियों को पता चल जाता और उसे रोकने की कोशिश की गई होती। लेकिन सात सौ गाँवों में पुजारियों के रूप में एक अलग

तरह की छावनियाँ पड़ी हुई थीं। हर जगह इन सैनिकों को ट्रेनिंग दी जाती थी। हर जगह इन छावनियों में १०-२० वालंटियर आते थे और वहीं से पैसा धन व अनाज आता था। इस तरीके से मंदिरों के माध्यम से समर्थ गुरु रामदास ने छत्रपति शिवाजी को आगे करके इतना बड़ा काम कर दिखाया।

मूल उद्देश्य हम भूल गए

मित्रो! मंदिर जन-जागरण के केन्द्र बनाए जा सकते हैं। मंदिरों का उपयोग लोकमंगल के लिए किया जा सकता है। क्योंकि उसके पास इमारत होती है। इमारत तो हर सेवा केन्द्र के पास होनी चाहिए, परंतु इसके अलावा वह व्यवस्था भी होनी चाहिए, जिससे कि उस क्षेत्र के कार्यकर्त्ताओं का, निवासियों का, गुजारे का प्रबंध किया जा सके। इस गुजारे का प्रबंध तभी हो सकता है, जब आजीविका के स्रोतों से जनता, इसके लिए त्यागवृत्ति पैदा की जा सके। मनुष्य में यह भावना पैदा की जा सके कि हमने भगवान् को दिया है, तुमको नहीं। इससे आदमी का मन हलका होता है। त्याग और सेवा की वृत्ति पैदा होती है। वह धन का एक केन्द्र पर इकट्ठा होने से समाज के लिए उससे उपयोगी काम किए जा सकते हैं।

प्राचीनकाल में मंदिर इसी उद्देश्य से बनाए गए थे। समाज में सत्प्रवृत्तियों का विकास वास्तव में भगवान् की सेवा का एक बहुत बड़ा काम है। लेकिन आज मैं क्या कहूँ! मंदिरों को देखकर रोना आता है। आज मंदिर पर मंदिर बनते चले जा रहे हैं। करोड़ों रुपया खरच होता है। क्या ऐसा संभव नहीं था कि करोड़ों रुपयों से बनने वाली इमारतों को इस ढंग से बनाया गया होता कि वहाँ लोकसेवा की प्रवृत्तियों के लिए गुंजाइश रहती और भगवान् के निवास की भी, एक छोटी-सी जगह बना दी गई होती। अब तो सारी-की-सारी इमारतें इस काम के लिए बनाई जाती हैं कि उसमें केवल भगवान् ही बैठें। भगवान् को इतनी जगह की क्या जरूरत है? भगवान् को चाहो, तो एक कोने में बिठा दो, तो भी वे मौज करेंगे। भगवान् को इतने बड़े भव्य निर्माण से क्या लेना-देना? उनके लिए तो इतना बड़ा आसमान विद्यमान है।

लोकसेवा की प्रवृत्तियों का केन्द्र हो मंदिर

मित्रो! मंदिरों की इमारतों को अगर इस ढंग से बनाया गया होता कि जिनमें मंदिर के साथ-साथ पाठशाला, प्रौढ़पाठशाला, संगीत विद्यालय, वाचनालय और कथा-कीर्तन का कक्ष भी बना होता; उसके आस-पास व्यायामशाला भी होती और थोड़ी-सी जगह में चिकित्सालय का भी प्रबंध होता; बच्चों के खेलने की भी जगह

होती। इस तरीके से लोकमंगल की, लोकसेवा की अनेक प्रवृत्तियों का एक केन्द्र अगर वहाँ बना दिया गया होता और वहीं एक जगह भगवान की भी स्थापना होती, तो जो धन मंदिरों में चढ़ाया जाता है, उसका ठीक तरीके से उपयोग होता। ऐसी स्थिति में मंदिरों के द्वारा कितना बड़ा लाभ होता।

साथियो! आपने गिरजाघरों को देखा है। गिरजाघरों में भगवान् के लिए कोई गुंजाइश नहीं है क्या? वहाँ कहीं-कहीं मरियम की मूर्ति लगी रहती है, तो कहीं-कहीं ईसा की प्रतिमा लगी रहती हैं। एक छोटा-सा प्रार्थनाकक्ष होता है। कहीं इसमें अस्पताल या दवाखाने वाला हिस्सा होता है। कहीं पादरियों के रहने का हिस्सा होता है। कहीं एक छोटा-सा दफ्तर बना होता है। इस तरह भगवान् का एक छोटा-सा केन्द्र बनाने के बाद में बाकी सारी-की-सारी इमारत, सारा स्थान लोकमंगल के लिए होता है। पहले भारतवर्ष में भी ऐसा ही किया जाता था और किया भी जाना चाहिए, लेकिन आज तो मंदिरों की दशा देखकर हँसी आती है और क्रोध भी। आज मंदिरों का सारा-का-सारा धन कुछ चंद लोगों के निहित स्वार्थ के लिए खरच हो जाता है। जो कुछ भी चढ़ाया या दान आया, कुछ निहित स्वार्थ के लिए मठाधीशों और मंदिरों के स्वामी और दूसरे महंतों के पेट में चला गया।

अनाचार एवं अज्ञान के केन्द्र हैं ये

मित्रो! वह अनावश्यक धन, हराम का धन जब उन लोगों के पास आया तो उन्होंने क्या-क्या किया? आप नहीं जानते, मैं जानता हूँ। पंडा-पुजारियों, महंतों और मठाधीशों की हकीकत मुझे मालूम है, आपको नहीं मालूम है। आप तो केवल उनकी बाहर की शकल जानते हैं। मुझे उनके पास रहने का मौका मिला है। मैं जानता हूँ कि समाज में खराब-से-खराब किस्म के तबके अगर हैं, तो उनमें से एक तबका इन लोगों का भी है, जो धर्म का कलेवर या धर्म का दुपट्टा ओढ़े हुए हैं। धर्म का झंडा गाड़े हुए हैं और धर्म का तिलक लगाए हुए हैं। धर्म की पोशाक और धर्म का बाना पहने हुए बैठे हैं। ये क्या-क्या अनाचार फैलाते हैं और क्या-क्या दुनिया में खुराफातें पैदा करते हैं, इनके निहित स्वार्थों को पूरा करने के लिए आज का धर्मतंत्र है—मंदिर।

तो क्या मंदिर सिर्फ इसी काम के लिए हैं? क्या इन परिस्थितियों को बदला नहीं जाना चाहिए? हाँ, अगर हमको समाज में ढोंग, अनाचार और अज्ञान फैलाना हो, तो मंदिरों का यही रूप बना रहने देना चाहिए। हाँ, अगर हमको समाज में ढोंग, अनाचार और अज्ञान फैलाना हो, तो मंदिरों का यही रूप बना रहने देना चाहिए।

अगर हमको यह ख्याल है कि जनता का इतना धन, जनता की इतनी श्रद्धा, जनता का इतना पैसा—इन सब चीजों का ठीक तरीके से उपयोग किया जाए, तो आज के जो मंदिर हैं, उनकी व्यवस्था पर नए ढंग से विचार करना पड़ेगा। जिन लोगों के हाथ में उनका नियंत्रण है, उनको समझना पड़ेगा और कहना पड़ेगा कि लोगों की उपयोगिता के लिए आप इनका इस्तेमाल क्यों नहीं करते? ट्रस्टियों को समझाया जाना चाहिए। अगर उनकी समझ में यह बात आ जाए कि मंदिर में जितना धन लगा हुआ है, इसमें से थोड़े पैसे से भगवान् की पूजा आसानी से की जा सकती है। एक पुजारी ने आधा घंटे सुबह और आधा घंटे शाम को पूजा कर ली। एक घंटे के बाद तेईस घंटे बच जाते हैं। नहीं साहब! तेईस घंटे पुजारी पंखा लिए खड़े रहेंगे। जब भगवान् सो जाएँगे, तो वे वहाँ से हटेंगे और जब भगवान् उठ जाएँगे, तो फिर पंखा डुलाते रहेंगे। यह कोई तरीका है?

जनश्रद्धा का दुरुपयोग न हो

मित्रो! हम अपने ढंग से भगवान् को बेकार आदमी जैसा बनाते हैं। अगर भगवान् सोया करेंगे, तो सूरज, चाँद कैसे उगेगा? हवाएँ कैसे चलेंगी? जीव-जंतु, पेड़-पौधे कैसे पैदा हो जाएँगे? भगवान् सो नहीं सकता, हवा सो नहीं सकती, गरमी सो नहीं सकती। जो इस तरह की विश्वव्यापी चेतनाएँ हैं, उनको सोने से क्या मतलब! इसलिए सोने-जागने वाला जो कृत्य है, वह बच्चों का मनबहलाव जैसा है। मनबहलाव का थोड़ा-सा काम रखा जाए, तो क्या हर्ज है! लेकिन उस कार्य के लिए जो धन, पैसा, श्रम लगा हुआ है, जो व्यक्ति लगे हुए हैं, उन सभी को लोकमंगल के लिए खरच किया जाना चाहिए। मंदिरों के जो कमेटी वाले हैं, महंत हैं, उनको विवेकशील लोगों की एक कमेटी बनाकर समझाया जाना चाहिए। अगर वे समझते नहीं हैं, तो उन्हें मजबूर किया जाना चाहिए कि मंदिर में धन तो आपने लगाया है, पर अब वह जनता का है। मंदिर का ट्रस्ट बनाने का मतलब है कि उसका स्वामित्व जनता के हाथ में चला जाता है। मंदिरों के ये न्यासी प्रबंधक होते हैं, स्वामी नहीं होते। वह संपत्ति जनता की मानी जाती है। जो देवालय बन गया, उसकी स्वामी जनता हो जाती है और उसका हक है कि उन लोगों को मजबूर करे और कहे कि आप इस तरीके से इस धन का अपव्यय नहीं कर सकते। जनता की श्रद्धा का गलत उपयोग नहीं किया जा सकता।

मित्रो! अपने देश में अरबों रुपया मंदिरों के नाम पर लगा हुआ है। मैं इसको अपव्यय ही नहीं, दुरुपयोग कहता हूँ और यह कहता हूँ कि उन पुजारियों को,

महंतों को यह कहा जाना चाहिए कि आप अगर अपनी श्रद्धा को कायम रखना चाहते हैं, जनता के मन पर अपनी छाप को कायम रखना चाहते हैं, तो आप लोकसेवी के तरीके से जिएँ और इस मंदिर को लोकसेवा का केन्द्र बनाएँ। न तो आप भगवान के वकील हैं, न एजेंट हैं और न ही नुमांइदे हैं। आप हमारे जैसे पुजारी और एक सामान्य व्यक्ति हैं।

प्रतिशील मंदिरों की आवश्यकता

मित्रो! अब समय आ गया है, जबकि मंदिरों का स्वरूप बदल दिया जाए। नमूने के लिए अब ऐसे मंदिर बनाए जा सकते हैं, जिनमें प्रयोगशाला के तरीके से लोग देख पाएँ कि मंदिरों का सही इस्तेमाल क्या हो सकता है और क्या होना चाहिए? हमने गायत्री तपोभूमि का मंदिर लोगों के सामने एक नमूना पेश करने की खातिर बनाया है। यों तो अपने देश में इतने सारे मंदिर हैं। भगवान् तो एक ही है। उनको ही शंकर कह दीजिए, गणेश कह दीजिए, हनुमान जी कह दीजिए। अनेक भगवान् नहीं हो सकते, हाँ उनके नाम अनेक हो सकते हैं। मंदिर में मूर्ति रख देना ही काफी नहीं है, वरन् मूर्ति के साथ-साथ उन भगवान् से संबंधित वृत्तियों को आगे बढ़ाया जाना और फैलाया जाना भी आवश्यक है। अपने यहाँ यही तो होता है। कितने कार्य होते हैं—विद्यालय वहाँ चलता है, प्रकाशन वहाँ होता है, देश भर के लिए कार्यकर्त्ता वहाँ से भेजे जाते हैं और न जाने क्या-क्या किया जाता है। लेकिन उस मंदिर तक ही हम सीमाबद्ध नहीं हैं। यदि सीमाबद्ध हो जाते, तो उसको प्रगतिशील मंदिर नहीं कहा जा सकता था। अब हमको प्रगतिशील मंदिरों की स्थापना की आवश्यकता है। समाज का नया निर्माण करने के लिए नए-नए रचनात्मक केन्द्र खोले जाने चाहिए।

अध्यात्म-चेतना के विस्तार में नियोजन हो

साथियो! मंदिरों के नाम पर करोड़ों-अरबों रुपये की संपत्ति को ऐसे ही पड़ा रहने दें, यह कैसे हो सकता है! इस संपत्ति को ठीक तरीके से इस्तेमाल किया जाना चाहिए। उसके लिए समझदार लोगों को, धार्मिक लोगों को आगे आना चाहिए और इस आवश्यकता को महसूस करना चाहिए कि यदि धर्म को जिंदा रहना है, तो वह ढोंग के रूप में नहीं जिएगा। वह केवल कर्मकांड के रूप में जिंदा नहीं रहेगा। बेशक धर्म के साथ में कर्मकांडरूपी कलेवर जिंदा रहे, लेकिन कर्मकांडों के साथ-साथ उन सत्प्रवृत्तियों को भी जीवित रखा जाना चाहिए, जिनसे लोक-मंगल की और समाज की आवश्यकताएँ पूरी होती हैं। धर्म केवल कर्मकांड

नहीं है। धर्म केवल आडंबर नहीं है। धर्म केवल पूजा-पाठ की प्रक्रिया नहीं है, वरन् इस पूजा-पाठ की प्रक्रिया और धार्मिक क्रिया-कृत्यों के पीछे और साथ-साथ में एक महती आवश्यकता जुड़ी हुई है कि हम व्यक्ति के अंतरंग को, उसकी भावनाओं को कैसे ऊँचा उठाएँ। समाज के अंदर फैली हुई धार्मिक वृत्तियों को कैसे बढ़ाएँ। यह सारे-के-सारे क्रियाकलाप जिस माध्यम से और जिस आधार पर पूरे किए जा सकते हैं, उसके लिए कोई केन्द्र या एक स्थान होना ही चाहिए। वह जगह हमारे मंदिर ही हो सकते हैं।

इन मंदिरों में पुजारी के रूप में सिर्फ लोकसेवियों की नियुक्ति हो, जिनके मन में समाज के लिए दरद है और जो समाज को ऊँचा उठाना चाहते हैं। जो मनुष्य के भीतर धर्मवृत्तियाँ पैदा करना चाहते हैं, उसी तरह के पुजारी वहाँ रहें। वे अपने पूजा-पाठ का एक-दो घंटा पूरा करने के बाद, अपने गुजारे की व्यवस्था करने के बाद जो समय उनके पास बच जाता है, उसका इस्तेमाल इस तरह से करें, जिससे कि हमारी सामाजिक और राष्ट्रीय एवं व्यक्तिगत चरित्र की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। मंदिरों में जहाँ दूसरी तरह के खरच होते हैं—कभी बँगले बनते हैं, कभी उत्सव होते हैं, कभी झाँकी बनती है, कभी क्या बनता है और उसी में लाखों रुपये खरच हो जाता है। उन सारे-के-सारे क्रियाकलापों में आंशिक किफायत की जा सकती है और इससे जो पैसा बचता है, उसको लोकमंगल की अनेक प्रवृत्तियों को आगे बढ़ाने के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है और करना भी चाहिए। इस तरीके से धन की आवश्यकता, इमारतों की आवश्यकता, जनसहयोग की आवश्यकता मंदिरों के आधार पर ठीक तरीके से पूरी की जा सकती है।

यह सोच भी बदलें

मित्रो! जो व्यक्ति ऐसा ख्याल करते हैं कि भगवान् निराकार हैं, उसकी मूर्तिपूजा की जरूरत नहीं है, उन लोगों से भी मेरी यह प्रार्थना है कि वे उस शक्तिशाली माध्यम की उपेक्षा नहीं करें। ये मंदिर हिंदू धर्म की श्रद्धा के केन्द्र हैं। उनको अब दिशा दी जानी चाहिए, नया मोड़ दिया जाना चाहिए। अब उनका विरोध करने की जरूरत नहीं रही। अब उनका खंडन करने की जरूरत नहीं रही। किसी जमाने में ऐसा रहा होगा कि लोगों के मनों में मूर्तिपूजा की बात, जो गहराई तक जम गई थी, उसको कमजोर करने के लिए संभव है, किसी ने मंदिर का विरोध किया हो और यह कहा हो कि इसमें मूर्तिपूजा की जरूरत नहीं है। उस आधार पर धन खरच करने की जरूरत नहीं है। हो सकता है, किसी जमाने में

धर्मसुधारकों ने अपनी बात समय के अनुरूप कही हो, लेकिन मैं अब यह कहता हूँ कि हिंदुस्तान में गाँव-गाँव में छोटे-बड़े मंदिर बने हुए हैं। उनको आप उखाड़िएगा क्या? भगवान् राम और भगवान् श्रीकृष्ण, जिनको हमारी असंख्य जनता श्रद्धापूर्वक प्रणाम करती है, क्या उनका आप विरोध करेंगे? निंदा करेंगे क्या? नहीं, अब यह गलती नहीं करनी चाहिए।

साथियो! ठीक है, जैसा भी अब तक चला आ रहा है, उसे अब हमें सुधार की दिशा में मोड़ देना चाहिए। यह एक बहुत बड़ा काम है। विरोध करके नई चीज को खड़ा करना कितना मुश्किल है। एक चीज को गिराया जाए और फिर एक नई इमारत बनाई जाए, इसकी अपेक्षा यह क्या बुरा है कि जो बनी-बनाई इमारत है, उसको हम ठीक तरीके से इस्तेमाल करना सीख लें और उसी को काम में लाएँ। मंदिरों को अगर ठीक तरीके से काम में लाया जा सकता हो और उनमें लगी पूँजी को ठीक तरीके से इस्तेमाल किया जाता रहा हो और इन दोनों का उपयोग लोकमंगल के लिए किया जाता रहा हो। उनमें ऐसे पुजारियों की, कार्यकर्त्ताओं की नियुक्ति की जा सकती हो, जो अपना एक-दो घंटे का समय पूजा-पाठ में लगाने के बाद बचा हुआ सारा समय समाज को ऊँचा उठाने में लगाएँ, तो मैं यह विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि सरकार और दूसरी संस्थाओं के द्वारा जो लंबे-लंबे प्लान, योजनाएँ बनती हैं, धन लगाती हैं, कार्यकर्त्ता नियुक्त करती हैं, फिर भी सारी योजनाएँ असफल हो जाती हैं, उसकी तुलना में यह योजना इतनी बड़ी, इतनी महत्त्वपूर्ण, इतनी मार्मिक और सार्थक है कि हम राष्ट्र को पुनः उसके शिखर पर पहुँचा सकते हैं।

राष्ट्र का कायाकल्प कर सकते हैं ये देवालय

इसके लिए हमें केवल मंदिरों की दिशाएँ मोड़ने की जरूरत है। लोगों को समझाने की जरूरत है, प्रचार करने की जरूरत है, धमकाने की जरूरत है। अगर ये काबू में न आते हों, तो घिराव करने से लेकर बहिष्कार करने तक की जरूरत है और यह समझाने की जरूरत है कि इस धन का और इमारतों का हम अपव्यय नहीं होने देंगे। मंदिरों को हम अंधश्रद्धा का केन्द्र नहीं बनने देंगे। हम धर्मभीरुता का पोषण करने वाले केन्द्र के रूप में नहीं, वरन् इन्हें धर्म की स्थापना का केन्द्र बनाएँगे। यदि इन मंदिरों को धर्म की स्थापना का केन्द्र बनाया जा सका, तो राष्ट्र की महती आवश्यकता पूरी की जा सकती है। तब नया युग लाने में, नया समाज बनाने में समाज की विकृतियों को दूर करने में और एक समर्थ राष्ट्र—समर्थ समाज बनाने

के लिए इतने बड़े साधन हमारे हाथ सहज ही लग सकते हैं। इन बने-बनाए साधनों को विवेकशीलों को अपने अधिकार में, कब्जे में लेना ही चाहिए और उनको वह दिशा देनी चाहिए, जिससे कि भगवान् वास्तव में प्रसन्न हों।

भगवान् की जो सद्वृत्तियाँ इस विश्व में फैली हुई हैं, जिनसे कि शांति आती है और धार्मिक-भावना की वृद्धि होती है और समाज समृद्ध होता है, उन भावनाओं को आगे बढ़ाने के लिए मंदिरों को केन्द्र बनाया ही जाना चाहिए। ताकि वास्तविक भगवान् अपनी वास्तविक पूजा को देखकर प्रसन्न हो जाए और भक्ति करने, पूजा-पाठ करने का उद्देश्य लोगों को प्राप्त हो सके और लोग उसका समुचित फायदा उठा सकें। यह करने की बहुत अधिक आवश्यकता है और हमको करना चाहिए। मंदिरों को जन-जागरण का केन्द्र बनाया जाना चाहिए, उनका कायाकल्प किया जाना चाहिए। इतना करना यदि संभव हो गया, तो समझना चाहिए कि हमने लोक-मंगल के क्षेत्र में एक बहुत बड़ी मंजिल पूरी कर ली और बहुत बड़े साधनों को हमने अपने आप में इकट्ठा कर लिया।

आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शान्ति ॥

अध्यात्म के सही मर्म को समझें

(जून १९७१ विदाई की पूर्व वेला पर उद्‌बोधन)

अध्यात्मवादी जीवन

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो!

सुविधाओं से भरा जीवन कमजोर आदमी जीते रहते हैं। उन्हें समाज, देश की चिन्ता नहीं होती। मनुष्यों की अकल एवं विचार करने की दिशा ठीक की जा सकी, तो कल्याण हो सकता है, ऐसा हमने आपको बतलाया था। हमने आपसे कहा था कि समाज की सेवा करने का, लोकमंगल का कार्य करने का एक ही माध्यम है कि अध्यात्मवादी जीवन जिया जाए। आज चोरी, अपराध को कैसे रोका जा सकता है? आज हर आदमी का ईमान खराब हो गया है। हर आदमी के पीछे अगर एक-एक सिपाही भी लगा दिया जाए, तो भी उसे रोका नहीं जा सकता है। वास्तव में कानून बनाकर तथा पुलिस की संख्या बढ़ाकर अपराध को क्या घटाया जा सकता है? मित्रो, यह कदापि कम नहीं किया जा सकता है, चाहे हम कितनी भी पुलिस या मिलिट्री लगा लें। वकील, पुलिस वाले बढ़ते चले जाएँगे तथा अपराधों की संख्या भी निरन्तर बढ़ती चली जाएगी।

मित्रो! इसमें जब भी बदलाव आयेगा, चाहे वह एक हजार वर्ष के बाद ही आये, वह तभी सम्भव होगा, जब मनुष्यों को बतलाया जाएगा कि अपने कर्मों के अनुसार ही मनुष्य को फल मिलता है। सर्वव्यापी एक भगवान् है, जो हर मनुष्य के कर्मों को देखता है तथा न्याय करता है। यह अध्यात्म था, जो हमने आपको इस शिविर में बतलाया था कि व्यक्ति निर्माण के साथ समाज का भी निर्माण करना चाहिए तथा उसके विकास के लिए भी प्रयास करना चाहिए, तभी मनुष्य के जीवन में सुख-शान्ति आ सकती है।

व्यक्तित्त्व परिष्कार के चमत्कार

अध्यात्म का नाम चमत्कार नहीं है। चमत्कार तो बाजीगरी है, चालाकी है। इस खेल-तमाशे का नाम अध्यात्म नहीं है। छोटे बच्चों को बहकाने का नाम अध्यात्म नहीं है। आप चमत्कार के बारे में सोचना बंद कर दीजिए तथा सही रूप से अध्यात्म को समझने का प्रयास कीजिए। अध्यात्म का मतलब है-हमारे गुण, कर्म, स्वभाव में बदलाव। ऐसा अगर आप कर सकते हैं, तो अपने आप में आप चमत्कारी व्यक्ति बन सकते हैं। हम तो यहाँ तक कह सकते हैं कि आप पूजापाठ बन्द कर दीजिए, परन्तु अपने व्यक्तित्व का परिष्कार कर लीजिए। आप देखेंगे कि जिस चमत्कार के पीछे आप भाग रहे हैं, वह आपके पीछे आता हुआ दिखायी पड़ेगा।

मित्रो! गाँधीजी ने नित्य आधा घण्टा पूजा, जप किया था, परन्तु वे जीवन में चमत्कार दिखलाते चले गये। उनके आशीर्वाद से लोग बादशाहों के बादशाह बन गये। हमारे आशीर्वाद से भी वैसा ही हुआ है। गाँधीजी के आशीर्वाद से दो-दो कौड़ी के लोग नेता बन गये। पं० जवाहरलाल और सरदार पटेल धन्य बन गये। गाँधीजी ने अँग्रेजों से कहा कि 'क्विट इण्डिया'। वे अपना बिस्तर लेकर चले गये। उनकी बंदूके रखी रह गयीं। गाँधीजी कौन थे? आधा घण्टा भजन-पूजन करने वाले व्यक्ति। उन्हें समाधि आती थी? बिलकुल समाधि नहीं जानते थे। ध्यान, प्राणायाम भी नहीं किया उन्होंने। एक भी चक्रवेधन नहीं किया था, न ही अपनी कुण्डलिनी जगायी थी, परन्तु उनके जीवन में चमत्कार होते चले गये थे। यह था उनके जीवन में व्यक्तित्व का परिष्कार, जो उन्होंने किया था। अपने गुण-कर्म-स्वभाव के परिष्कार और आधा घण्टे नित्य के भजन से वे मालामाल हो गये। इस पूरे शिविर में हमने विभिन्न माध्यमों से आपको यह बतलाने का प्रयास किया कि अध्यात्म क्या है तथा उसको आपके अन्दर उतारने का प्रयास किया। काश! आप अगर सही अध्यात्म को समझकर अध्यात्मवादी हो जाएँ, तो मजा आ जाएगा।

अगला समय शानदार

मित्रो! अगला समय बहुत शानदार आने वाला है, दुनिया में से अनीति मिटने जा रही है, कुरीतियाँ मिटने जा रही हैं। डिप्लोमेटिक मेण्टेलिटी मिटने जा रही है। आप विश्वास करें या न करें, परन्तु हमें अपनी आँखों से दिखायी पड़ रहा है कि एक नयी हवा आ रही है। नयी दुनिया बनती आ रही है। नये विश्व का निर्माण होने जा रहा है। बहुत शानदार समय आ रहा है। उस नये युग में आध्यात्मिकता की नयी परिभाषा होगी तथा पुरानी परिभाषा मिट जाएगी! यह संतोषी माता की

हवा उड़ती जा रही है तथा पता नहीं कहाँ जा रही है। मित्रो! अब वह संतोषी माता आ रही है, जिसमें मनुष्य को संतोष करना सिखाया जाएगा। भौतिक चीजों में जिसको संतोष आ जाए, तो मजा आ जाएगा। ऐसा व्यक्ति अपनी प्रतिभा और धन को लोकमंगल में खर्च कर देगा तथा वह अध्यात्मवादी बन जाएगा। छाया की तरह से सुख उस अध्यात्मवादी के पीछे भागते फिरेंगे। वह अपने लिए नहीं खर्च करेगा। ऐसे ही व्यक्ति का जीवन धन्य होता चला जाता है। उसकी प्रगति होती चली जाती है।

अध्यात्मवादी भीख माँगने वालों का नाम नहीं है। वह देने वालों का नाम है। वह भगवान् का अनुग्रह व एहसान माँगने वाला व्यक्ति नहीं है, बल्कि परमात्मा उसके पीछे-पीछे चलने लगता है तथा उसका जीवन धन्य कर देता है। परमात्मा उनकी सहायता करता है, जो अपनी सहायता आप करने को तैयार है। अपने अन्दर महत्त्वपूर्ण तथ्य जो छिपे पड़े हैं, उन्हें जाग्रत करने का नाम अध्यात्म है। अध्यात्म आत्मशक्ति विकसित करने का नाम है। इनको मैं आपको इस शिविर में बतलाता रहा हूँ। आप से निवेदन करता रहा हूँ कि आप हमारी बातों को इस कान से सुनकर उस कान से मत निकाल दीजिए। हम बैखरी वाणी का भी उपयोग करते रहे हैं। भगवान् यानि कि ब्रह्माजी भी चार मुख से बोलते रहे हैं। इनसान भी चार मुख से बोलते हैं। ये है 'वैखरी वाणी,' जिसे मैं एक घण्टे से बोल रहा हूँ। यह मनुष्यों के कानों में जाती है तथा मस्तिष्क से टकराती है। इस वाणी से हमने आपको अध्यात्म के सिद्धान्त को बतलाया तथा समझाया।

चार प्रकार की वाणी

दूसरी 'मध्यमा वाणी' है। यह भाव को उभारने का काम करती है। यह अन्त:करण को प्रभावित करती है। इसके प्रभाव से शेर एवं गाय एक घाट पर पानी पीते हैं। तीसरी है-'परावाणी'। विचारों की वाणी को परावाणी कहते हैं। चौथी है-'पश्यन्ती वाणी।' पश्यन्ती वाणी आत्मा की वाणी होती है। यह आत्मा में घुस जाती है। नारद ने वाल्मीकि के हृदय में एक बात कही थी और वह प्रभावित हो गये। बुद्ध ने अपने हजारों शिष्यों को इसी प्रकार प्रभावित किया था। आप भी जब सोते रहते हैं, तो हम आपके पास जाते हैं। किसी के पैर के पास बैठ जाता हूँ, तो किसी के सिर के पास बैठकर उसका सिर सहलाता रहता हूँ। आपको पता चलता है कि नहीं, यह मैं नहीं पूछ सकता हूँ। आपकी श्रद्धा जैसे-जैसे बढ़ती जाएगी, आप अनुभव करते चले जाएँगे। हमारे गुरुदेव जब हमारे कमरे में आए और पश्यन्ती

वाणी से क्या कहा, यह तो हमें पता नहीं, परन्तु वे हमें धन्य कर गये। **अनुदान क्या-क्या दिए, यह तो मैं नहीं कह सकता, परन्तु इस दुनिया से जाने के बाद हमारे जीवन का लिफाफा, जो बन्द है, वह जब खोला जाएगा, तो पता चलेगा कि हम कौन थे तथा हमने इस दुनिया के लिए, संसार के लिए, संस्कृति के लिए क्या-क्या किया ?** हमें विश्वास है कि आप यहाँ से जाएँगे तथा हमारा प्रसाद लेकर जाएँगे, तो वह आपके अपने जीवन में काम आएगा तथा आप धन्य होते हुए चले जाएँगे।

कैसा हो व्यवहार ?

आप अध्यात्म के सिद्धान्त को अपनाएँ या न अपनाएँ, परन्तु इस दुनिया में जो लोग रहते हैं, उनके साथ मीठा व्यवहार करना, उनके साथ प्रेम का व्यवहार करना, जिनको अपना दुश्मन बना लिया है, उनको भी मित्र, दोस्त बना लेना। इमर्सन कहते रहते थे कि हमें नरक में भेज दो, हम वहाँ भी स्वर्ग बना लेंगे। व्यक्ति दुश्मन हमारे व्यवहार के कारण बन जाता है। आप अपने व्यवहार को ठीक करने का प्रयास करना, तो धरती को स्वर्ग बनाया जा सकता है। अगर आपने अपनी भावना को परिष्कृत कर लिया, तो मजा आ जाएगा। अगर आपकी वाणी में मिठास आ जाती है, तो आपके लिए हर आदमी मित्र बन जाएगा।

एक बात हमने आपको और कही है कि आपको मेहनत करनी है, मशक्कत करनी है। धरती में जिस तरह लोहा, ताँबा-सोना भरा पड़ा है, ऐसे ही हमारे भीतर भी बहुत-सी चीजें भरी पड़ी हैं। जमीन में हल जोते बिना, बीज बोये बिना फसल कैसे प्राप्त हो सकती है ? बिना मेहनत के कोई चीज कैसे पायी जा सकती है ? मेहनत-मशक्कत करने के बाद ही सारी चीजों को प्राप्त किया जा सकता है। आपको अपने प्रति कठोर तथा दूसरों के लिए मुलायम बनना होगा। यह सिद्धान्त संयम का सिद्धान्त है।

आवश्यकता है ऊँचे विचारों की

चौथी बात हमने आपसे कही थी कि यह जलता हुआ जमाना है। हर व्यक्ति जल रहा है। आपको इस जलते हुए समाज के ऊपर पानी डालने की आवश्यकता है। यह है ऊँचे विचार की आवश्यकता। मित्रो ! हम यह पूछते हैं कि बकरा खाने के बाद कोई बकरे की औलाद कहलाएगा या नहीं ? यह तो हमें बतलाना। हम पूछते हैं कि उसमें जो अवगुण हैं, वह खाने वाले में आएँगे कि नहीं ? आज सामाजिक मान्यता के बारे में, खान-पान के बारे में, पड़ोसी के बारे में हर व्यक्ति

की उलटी अकल हो गयी है। इससे आपका क्या बनने वाला है-आपको यह ठीक करना होगा। समाज के लोगों के विचारों को ठीक करना होगा, उनकी भावनाओं में परिवर्तन लाना होगा।

मित्रो, इतना ही नहीं पैसा खर्च करने में, जीवन को महान बनाने के बारे में भी लोगों की उलटी अकल है। यदि सारे-के-सारे लोग इस तरह से होंगे, तो काम कैसे चलेगा? इन उलटी अकल वाले लोगों का नवनिर्माण करना होगा। उन्हें दिशा देनी होगी। उनके विचार ठीक करने होंगे। इस उलटे जमाने को सीधा करने के लिए, आपको जो हमारा अनुदान मिल रहा है, इस कार्य हेतु आप हमें सहयोग करिए। हमारे कंधे-से-कंधा मिलाकर चलने का प्रयास करेंगे, तो हमारा यह शिविर धन्य हो जाएगा। हम धन्य हो जाएँगे और आपका जीवन धन्य हो जाएगा। आने वाली पीढ़ियाँ आपको सदा याद रखेंगी।

हमारे कदम से कदम मिलाकर चलें

मित्रो! हम लम्बे कदम बढ़ाते हुए लम्बी मंजिल की ओर बढ़ते जा रहे हैं। आप भी अपना कदम उस ओर अवश्य बढ़ाना तथा हमारा सहयोग करना। गाँव में यह नियम होता है कि जब कोई मर जाता है या कोई भी काम होता है, तो जो व्यक्ति वहाँ जाता है, वह उसके साथ पाँच कदम चलता है तथा पाँच कदम के बाद ही वह वापस होता है। मित्रो! कम से कम आप लोग भी हमारे साथ पाँच कदम तो चलने का प्रयास करना। जमाना बदल रहा है हमारे साथ, जमाना उठ रहा है हमारे साथ, इसी तरह आप भी हमारे साथ चलना। कहीं ऐसा न हो कि आप चल तो रहे हैं इधर, पर देख रहे हैं उधर! ऐसा कभी मत करना। हमारे कदम से कदम मिलाकर चलना। ताल से ताल मिलाकर चलना, चाहे पाँच ही कदम क्यों न चलना, भले ही एक घण्टा हमारे साथ चलना।

हमने एक बात और कही थी आपसे कि आप अपनी कमाई का दस पैसा ही खर्च करना-एक नये समाज के नवनिर्माण के लिए, परन्तु उसमें सक्रियता लाना तथा उसे निभाना। आज पच्चीस पैसे की चाय आती है। हमने समाज, संस्कृति और देश के लिए आपसे केवल आधा प्याला चाय की माँग की है। वह तो आप अवश्य देना, अगर समाज के लिए इतना कर सकें, तो हम समझेंगे कि आपने हमारे साथ एक कदम चलने का साहस किया, प्रयास किया।

बिछोह के आँसू

मित्रो! जब आप सोये रहते हैं, तो हम आपके पास बैठकर आपके कानों में चार बातें कहते हैं, उसका शिक्षण दिया करते हैं, ताकि आप आध्यात्मिकता के

रास्ते पर आगे बढ़ सकें। आज आपको घर के लिए विदा कर रहे हैं। आप अपने घर चले जाएँगे तथा हम भी यहाँ घर में बैठे रहेंगे। हमें और आपको एक-दूसरे की याद अपने-अपने घरों में आती रहेगी। दो बैलों की जोड़ी होती है, अगर एक बैल बीमार हो जाता है या कहीं चला जाता है, तो दूसरा बैल काम नहीं करता है। वह सारा दिन कोहराम मचाता रहता है, न चारा खाता है, न पानी पीता है, उसकी आँखों में बिछोह के आँसू होते हैं। मित्रो, हम बैलों से ज्यादा हैं, कम नहीं, यह ध्यान रखना।

मित्रो, हम आपके सगे-सम्बन्धी हैं। सगे-सम्बन्धी वे नहीं हैं, जो एक खून से पैदा होते हैं, वरन वे होते हैं, जो एक रास्ते पर चलते हैं, जिनके विचार एक होते हैं, जिनके गुण मिलते हैं। आप हम सब एक गुण वाले लोग हैं, एक भावना वाले लोग हैं, एक दिशा वाले लोग हैं, मोहब्बत वाले लोग हैं। हमारे आपके बीच एक ऐसा प्यार, ऐसी मोहब्बत है, जो कभी भी खत्म होने वाली नहीं है। आप जब जा रहे हैं, तो हमारा दिल टूट रहा है। हम आपके जन्मदाता माता-पिता से भी ज्यादा मोहब्बत करते हैं, ऐसा तो हम दावा नहीं कर सकते, परन्तु आपके किसी भी मित्र से कम मोहब्बत नहीं करते। दोस्त के पास दोस्त आता है, तो उसको खुशी होती है, परन्तु जब वह विदा होता है, तो उसकी आँखों में आँसू आ जाते हैं। यह हमारी एवं आपकी कमजोरी है। आप जब विदा होते हैं, तो मेरा भी दिल दुखी हो जाता है। विदाई के क्षणों में बड़े-बड़े संतों की भी यही हालत हो जाती है। कबीरदास जब मरने लगे तो उन्होंने एक मर्मभरी बात कही थी-

राम बुलावा भेजिया, दिया कबीरा रोय।
जो सुख-प्रेमी संग में, सो बैकुण्ठ न होय।

वास्तव में प्रेम ही इस संसार की सर्वोपरि उपलब्धि है।

हम आपको बिछुड़ने न देंगे

मित्रो! जो व्यक्ति अपना होता है या जिसे जो अपना मानता है, उसकी विदाई बहुत ही कष्टकारक होती है। इसे मनुष्य की कमजोरी कहें या प्रकृति का विधान कहें। इसमें आप भी हैं तथा हम भी हैं। हमारा दिल टूट रहा है-ऐसा हम महसूस कर रहे हैं, परन्तु क्या हम आपको छोड़ देंगे? यह कभी नहीं हो सकता। भूत जो होता है, वह जिसे चाहता है, उसके पीछे लगा रहता है। हम भी आपके पीछे-पीछे लगे रहेंगे। आपको छोड़ नहीं सकते। आप भी अनुभव करते रहेंगे कि आचार्य जी के भाषण बन्द हो गये, परन्तु उनकी प्रतिध्वनि आपके कानों में हमेशा गूँजती रहेगी। हम नारियल की तरह ऊपर से कठोर हैं, परन्तु भीतर से मुलायम हैं, जिसमें

दूध भरा हुआ है। भगवान् ने न जाने क्यों हमें मनुष्य बना दिया और हमारे मूँछ लगा दी, अगर मूँछ निकाल दी जाएँ, तो हमारा हृदय माता की तरह है। माता का हृदय कितना कोमल होता है, यह आप सभी जानते हैं। हमारा हृदय भी कोमल है। आप चले जाएँगे, परन्तु हम आपको बिछुड़ने नहीं देंगे। हम आपको छोड़ नहीं सकते। हम आपको सुखी, सम्पन्न बनाना चाहते हैं, महान बनाना चाहते हैं। महान बनाते-बनाते वहाँ तक पहुँचाना चाहते हैं, जहाँ हमारे गुरु ने हमें पहुँचाया है।

निःस्वार्थ प्रेम ही एक मात्र निधि

मथुरा के विदाई समारोह के साथ ही हमारे प्रेम की प्रौढ़ता का शुभारम्भ हो रहा है। आज से हमारी मित्रता की शुरुआत है। यह जिन्दगी भर इसी प्रकार बनी रहेगी। हमारे ऊपर आप जैसे हजारों लोगों का स्नेह है। आपका प्यार जो हमें मिलता है, उसी में हम डूबे रहते हैं। हम चाहते हैं कि इस स्नेह के आदान-प्रदान का यह क्रम हमेशा बना रहे। हम बहुत सुखी हैं-आप लोगों का स्नेह पाकर। कभी-कभी हम यह सोचते हैं कि आप के इस प्रेम का हम किस तरह से बदला चुकाएँगे। आप अपने घर से आये थे-चिलचिलाती धूप में। ठहरने की अच्छी व्यवस्था यहाँ कहाँ थी ? पानी की व्यवस्था यहाँ कहाँ थी ? भोजन की व्यवस्था भी हम ढंग से नहीं कर सके, परन्तु एक चीज हमारे पास है और वही हमने आपको देने का प्रयास किया है, वह चीज है 'निस्वार्थ प्रेम'—यही निधि हमारे पास है, जो हम आपको देते रहे हैं और हमेशा देते रहेंगे। हमारे प्रेम में आप यह कभी भी नहीं पाएँगे कि यह व्यक्ति किसी स्वार्थ के लिए आपसे प्रेम करता है। यह आदमी पैसा लेना चाहता है या और न जाने क्या चाहता है ? मित्रो! हमें अपने प्यार पर विश्वास है, यही नहीं हम एवं आप पर विश्वास है, यही नहीं हम एवं आप न जाने कितने जन्मों से साथ-साथ चलते आ रहे हैं। हम और आप जब तक नये जमाने को नहीं ला देते, तब तक बिछुड़ने वाले नहीं हैं। अभी हमें सीता रूपी भारतीय संस्कृति को वापस लाना है,रावण को समाप्त करना है, समुद्र में पुल बाँधना है। आप लोग उस समय तक हमारे साथ रहेंगे। अभी हम आपको नहीं छोड़ेंगे तथा आप भी हमें नहीं छोड़ सकेंगे। आप जाएँ, सुखी रहें, समुन्नत बनें तथा प्रगति करें।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दुःखमाप्नुयात्।

॥ ॐ शान्तिः ॥

त्याग-बलिदान की संस्कृति
देवसंस्कृति

जून १९७३ शान्तिकुञ्ज परिसर में दिया गया प्रवचन

सभ्यता बनाम संस्कृति

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! दैवीय सभ्यता पर जब कभी मुसीबतें आई हैं, लोगों ने जीवन में कठिनाइयाँ उठाकर भी उसकी रक्षा की है। उच्च आदर्शों के लिए त्याग की, बलिदान की संस्कृति रही है—यह देवसंस्कृति। उन दिनों जब लंका की आसुरी सभ्यता का आतंक सब ओर छाया हुआ था, सब जगह त्राहि-त्राहि मची हुई थी। मालूम पड़ता था कि अब न जाने क्या होने वाला है और न जाने क्या होकर रहेगा? अनीति जब बढ़ती है, अवांछनीयताएँ जब बढ़ती हैं, दुष्टताएँ जब बढ़ती हैं, स्वार्थपरताएँ जब बढ़ती हैं, तो मित्रो! सारे विश्व का सत्यानाश हो जाता है। आदमी स्वार्थी होकर के यह सोचता है कि हम अपने लिए फायदा करते हैं, लेकिन वास्तव में वह अपने लिए भी सर्वनाश करता है और सारे समाज का भी सर्वनाश करता है। ये है-आसुरी सभ्यता। इसमें पहले आदमी स्वार्थी हो जाता है और स्वार्थांध होने के बाद में दुष्ट हो जाता है, पिशाच हो जाता है। स्वार्थी जब तक सीमित रहता है, तो वहाँ तक ठीक है, वहाँ तक फायदे में रहता है। लेकिन जहाँ एक कदम आगे बढ़ाया, फिर आदमी नीति छोड़ देता है, मर्यादा छोड़ देता है, सब शालीनताएँ छोड़ देता है और सत्यानाश पर उतारू हो जाता है। यह है आसुरी सभ्यता का क्रम।

लंका की आसुरी सभ्यता उस जमाने में सब जगह आतंक फैला रही थी और सारा विश्व, सारे देश त्राहि-त्राहि कर रहे थे कि अब क्या होने वाला है? हर आदमी अनीति के मार्ग पर चलने का शिक्षण प्राप्त कर रहा था और अनाचार के लिए कदम बढ़ाता हुआ चला जा रहा था-रावण के राज्य में। रावण की इस सभ्यता और संस्कृति में देवसंस्कृति के पक्षधरों को यह विचार करना पड़ा कि इसका प्रतिरोध कैसे किया जाएगा? इसकी रोकथाम कैसे की जाएगी? संतुलन कैसे

बिठाया जाएगा? भगवान् ने भी यह प्रतिज्ञा कर रखी थी कि हम धर्म की स्थापना के लिए और अधर्म के विनाश के लिए वचनबद्ध हैं। इसके लिए वे विचार करने लगें कि क्या करना चाहिए? अंत में फैसला हुआ कि अयोध्या से लंका की तुलना में एक ऐसा मोरचा खड़ा करना चाहिए, जो अनीति से लोहा ले सके।

लंका विजय

मित्रो! अयोध्या में लंका के विरुद्ध मोरचा खड़ा किया गया। एक तो मोटी-सी बात यह थी कि रावण बड़ा खराब आदमी था। एक बंदूक लेकर जाइए और उसे मार डालिए, खत्म कर दीजिए। यह क्या है? यह बहुत छोटा-सा तरीका है। इससे कोई संस्कृति नष्ट नहीं हो सकती, परंपराएँ नष्ट नहीं हो सकतीं। व्यक्ति मरते हैं और फिर नए व्यक्ति पैदा हो जाते हैं। रावण के बारे में तो कहावत भी थी कि रामचंद्र जी जब उसके तीर मारते थे, तो नया रावण बनकर खड़ा हो जाता था। बेटे! संस्कृतियाँ मारने से नहीं मरती हैं। वे दूसरे तरीकों से मरती हैं। आसुरी संस्कृति को हम किसी एक व्यक्ति को मारकर नहीं मार सकते।

रावण को मारना तो था जरूर। विचार किया गया। भगवान् ने विचार किया, देवताओं ने विचार किया कि मारने से काम नहीं चलेगा। लंका को नष्ट कर देंगे, रावण को मार देंगे, अमुक को मार देंगे, पर इससे काम नहीं बनेगा, क्योंकि परशुराम जी बहुत दिनों पहले ऐसा एक प्रयोग कर चुके थे। ऐसे लोगों को उन्होंने एक बार मारा, दो बार मारा, तीन बार मारा, पर मारने से काम नहीं चला। दैत्यों को इक्कीस बार मारकर ये यह कोशिश करने लगे कि पृथ्वी से असुरों को हम मिटा देंगे, तो काम चल जाएगा, परंतु काम चला नहीं। आखिर में परशुराम जी ने कुल्हाड़ा नदी में फेंक दिया और उसके स्थान पर फावड़ा उठा लिया। फावड़ा उठाया और नए-नए उद्यान लगाने लगे, बगीचे लगाने लगे। उनकी हार और पराजय ने स्वीकार किया कि कुल्हाड़ी के द्वारा हम यह कार्य नहीं कर सकते कि राक्षसों और असुरों को मारकर दुनिया खाली कर दें। इसके लिए एक और काम करना पड़ेगा, हमको हरियाली लगानी पड़ेगी। यही फैसला अयोध्या के संबंध में हुआ।

देवसंस्कृति का उदय

अयोध्या में देवसंस्कृति का उदय आरंभ हो गया। आसुरी संस्कृति से मुकाबला करने वाली देवसंस्कृति। देवसंस्कृति का उदय कैसे हुआ? वास्तव में अयोध्या में लंका के विरुद्ध मोरचाबंदी शुरू हो गई थी। कैसे हुई थी? बेटे! वे परंपराएँ आरंभ की गईं, जिनको देख करके दूसरों की हिम्मत बढ़ती है, हौसले

बढ़ते हैं। हौसले बढ़ाने के लिए बेटे, व्याख्यान एक तरीका तो है और हम काम में भी लाते हैं, लेकिन वह प्रारंभिक तरीका है। उपदेश करना और शिक्षण करना ये भी ठीक है। प्रारंभिक जानकारी के लिए यह भी अच्छा है, लेकिन उपदेश करने से, व्याख्यान देने से प्रेरणाएँ नहीं मिलतीं, दिशाएँ नहीं मिलतीं, आवेश नहीं आते, उत्साह नहीं बढ़ते, जीवन नहीं आते, जोश नहीं आते। तो सत्संग से गुरुजी? नहीं, बेटे! सत्संग से भी नहीं, और कलम से? कलम से तो आप बहुत अच्छा लिखते हैं। बेटे, हम अभी और अच्छा लिखेंगे, पर अगर आपका ये ख्याल है कि कलम से लिख करके आप अपना काम चला सकते हैं, तो अगर ऐसी बात रही होती, तो अब तक संपन्न लोगों ने ये काम, जो दुनिया चाहती है, बना सकते थे। अखबार प्रतिदिन लाखों की संख्या में छपते हैं। जापान, शिकागो में एक-एक अखबार करीब-करीब पचास लाख रोज छपता है। अपने हिन्दुस्तान में सबको मिलाकर पचास लाख तादाद होगी। एक ही अखबार जब इतना छपता है; तो इतने आदमियों तक विचार एक ही दिन में पहुँच जाते होंगे? हाँ, बेटे पचास लाख आदमियों तक अखबार के विचार एक ही दिन में पहुँच जाते हैं, लेकिन अगर कलम की दृष्टि से और छापेखाने की दृष्टि से लोगों का विचार-परिवर्तन संभव रहा होता, तो वह हमने कब का कर लिया होता।

और गुरुजी! वाणी के द्वारा? वाणी के द्वारा संभव रहा होता, तो बेटे रेडियो स्टेशन जिनके पास हैं, उनको वाणी के द्वारा व्याख्यान करने की जरूरत नहीं थी। दिल्ली से लेकर और कितने रेडियो स्टेशन हैं, वहीं पर एक-एक आदमी आराम से बैठा दिया होता और एक-एक 'स्पीच' झाड़नी शुरू कर दी होती, तो सारे-के-सारे देश के लोगों तक आवाज पहुँच सकती थी और उससे आसुरी सभ्यता का, अनाचार का, अनावश्यक परिस्थितियों का निवारण कर सकना संभव रहा होता। क्या ऐसा संभव हो सकता है? नहीं, ऐसा संभव नहीं हो सकता।

स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्

इसीलिए मित्रो! देवताओं को क्या करना पड़ा कि अयोध्या से दैवी सभ्यता की शुरुआत करनी पड़ी। कैसे शुरुआत करनी पड़ी? वहाँ जो आदमी छोटे से खानदान में थे, उन्होंने कहा कि हम अपने नमूने पेश करेंगे लोगों के सामने कि दैवी सभ्यता कैसी हो सकती है और हम इस सभ्यता का विकास क्यों करना चाहते हैं? दैवी सभ्यता के पीछे क्या परिणाम निकल सकते हैं? ये साबित करने के लिए दशरथ के कुटुंब ने, परिवार ने उसी तरह के नमूने पेश करने शुरु कर दिए, जैसे

कि लंका वालों ने किए थे। उन्होंने क्या पेश किए? बेटे, सबके सब एक दिन इकट्ठा हो गए और फैसला करने लगे कि हम बड़े काम करके दिखाएँगे, ताकि दुनिया समझे कि दैवी सभ्यता क्या हो सकती है और दैवी सभ्यता का अनुकरण करने के लिए जोश और जीवट कैसे उत्पन्न किया जा सकता है?

विश्वामित्र जी ने वहाँ से शुरुआत की और राजा दशरथ से कहा कि आप अपने बच्चे हमारे हवाले कीजिए। उन्होंने कहा कि बच्चे तो हमको जान से भी प्यारे हैं। उन्हें हम आई.ए.एस. बनाएँगे, पी.सी.एस. बनाएँगे। आप इन्हें कहाँ ले जा सकते हैं? विश्वामित्र ने कहा, आई.ए.एस., पी.सी.एस. तो पीछे बनते रहेंगे, पहले इन्हें मनुष्य बनना चाहिए और देवता बनना चाहिए। विश्वामित्र और दशरथ जी के बीच जद्दोजेहद तो बहुत हुई, लेकिन दैवी सभ्यता की, संस्कृति की शुरुआत तो कहीं से करनी ही थी। विश्वामित्र ने रजामंद कर लिया और कहा, बच्चे हमारे हवाले कीजिए। क्या करेंगे इनका? दैवी सभ्यता का शिक्षण करेंगे और ये दोनों अनीति के विरुद्ध संघर्ष करेंगे। अरे गुरुजी, ये तो छोटे बच्चे हैं। नहीं, वे छोटे बच्चे नहीं हो सकते। जो व्यक्ति सत्य का हिमायती हुआ, वह कभी छोटा नहीं हुआ। सत्य का हिमायती हमेशा बलवान् रहा है और जोरदार रहा है। उसके सामने चाहे वह मारीचि ही क्यों न हो, सुबाहु ही क्यों न हो, चाहे वह खर-दूषण ही क्यों न हो, कोई भी क्यों न हो, वह कमजोर ही रहेगा और उसको हारना पड़ेगा, झख मारनी पड़ेगी। विश्वामित्र जी ने राजा दशरथ को समझा दिया और वह शिक्षण देने के लिए, जो योगियों और तपस्वियों के आश्रम में रह करके पाया जाना संभव है, दोनों बच्चों को ले गए।

शुरुआत व्यावहारिक जीवन से

ये क्या होता है? बेटे! ये दैवी सभ्यता की शुरुआत होती है। यह न तो व्याख्यान से हुई, न कथा से हुई और न सत्संग से हुई। कैसे हुई? व्यावहारिक जीवन से हुई। इससे कम में नहीं हो सकती। कोई श्रेष्ठ परंपरा स्थापित करने के लिए व्यक्तिगत जीवन का आदर्श उपस्थित किए बिना दुनिया इधर-उधर नहीं हो पाएगी। कथा, व्याख्यान, सत्संग आदि सब खेल-खिलौने हैं। इनसे हम उसी तरह रास्ता बनाते हैं, जिस तरह रेलगाड़ी के लिए पटरी बनाते हैं। लेखनी के द्वारा, वाणी के द्वारा, प्रचार माध्यमों के द्वारा, जनसाधारण की शिक्षा के द्वारा, सत्संगों के द्वारा, कथाओं के द्वारा हम रेलगाड़ी की पटरी बनाते हैं, बस। फिर रेलगाड़ी कहाँ से

चलेगी? रेलगाड़ी तो बेटे, अपने व्यक्तिगत आदर्श उपस्थित करने से पैदा होती है। इससे कम में हो ही नहीं सकती। इस तरह उन्होंने पटरी बनाई और वहीं से शुरुआत हुई। पीछे सबने फैसला लिया कि हम दैवी संस्कृति, दैवी सभ्यता का स्वरूप क्या हो सकता है, उसको बताने के लिए एक-से-एक बढ़िया त्याग करेंगे और बलिदान करेंगे। सारी-की-सारी उस कंपनी ने, कमेटी ने फैसला कर लिया कि हम दुनिया को बताते हैं कि रामराज्य कैसे हो सकता है।

रामराज्य कैसे आया?

मित्रो! रामराज्य का बीज अयोध्या में बोया गया और वह भी एक छोटे-से खानदान में। कैसे बो दिया गया? बेटे! ऐसे बो दिया गया कि थोड़े-से आदमी थे, लेकिन वे एक-से-एक बढ़िया त्याग करने पर उतारू हो गए। रामचंद्र जी ने कहा कि राजगद्दी क्या होती है? इससे तो वनवास बेहतरीन है। इनसान को क्या चाहिए? पैसा चाहिए, विलासिता चाहिए, नौकरी में तरक्की चाहिए, प्रमोशन चाहिए, लेकिन उन लोगों ने कहा कि हमें त्याग चाहिए, बलिदान चाहिए। त्याग और बलिदान से आदमी महामानव बनता है, महापुरुष बनता है, तपस्वी बनता है, ऐतिहासिक पुरुष बनता है और पैसे से? पैसे बढ़ने से आदमी बनता है धूर्त और ढोंगी। और क्या बनता है? न जाने क्या-क्या बनता है।

मित्रो! क्या हुआ? उन्होंने त्याग और बलिदान के लिए, आदर्श उपस्थित करने के लिए ये फैसले किए कि हमको अब बड़े कदम उठाने चाहिए, ताकि रावण की लंका को नीचा दिखा सकें। रामचंद्र जी ने कहा कि हम ऋषियों के आश्रम में जा करके वनवासी जीवन जीने के लिए, तपस्वी जीवन जीने के लिए रजामंद हैं और राजपाट छोड़ने के लिए रजामंद हैं। परिस्थितियाँ ऐसी बन गई थीं और रामचंद्र जी जटा-जूट बाँधकर नंगे पैर जंगलों में चलने और वनवास में रहने के लिए उतारू और आमादा हो गए। लक्ष्मण जी ने कहा कि भाई-भाई के बीच में कैसी मोहब्बत होनी चाहिए, इसका आदर्श उपस्थित करने के लिए मुझे भी रामचंद्रजी का अनुकरण करना चाहिए। वह औरंगजेब वाला अनुकरण नहीं, जिसने बाप को कैद कर लिया था और भाइयों को मार डाला था। वह नहीं बेटे, दूसरा वाला आदर्श। उसके लिए क्या करना पड़ेगा? उसके लिए दैवी संस्कृति की सभ्यता की स्थापना करनी पड़ेगी, ताकि लोगों के भीतर से उमंगें, जोश, जीवट, एक-दूसरे के नमूने देख करके पैदा हो सकें।

साथ अपनों ने दिया

लक्ष्मण जी ने कहा, सिद्धांतों के लिए भाई को भाई के लिए क्या करना चाहिए और सुखों की अपेक्षा दुःखों का वरण कैसे करना चाहिए, इसके लिए हमने फैसला किया है कि हम आपके साथ-साथ रहेंगे और आपकी निगरानी करेंगे। सीता जी ने भी कहा कि तप और त्याग के मामले में हम पीछे नहीं रह सकते। आपको वनवास हुआ है, लेकिन देवर जी को नहीं हुआ है, फिर भी वे राज-पाट के विलासी जीवन की अपेक्षा वनवासी जीवन को श्रेष्ठ समझते हैं, इसलिए हमको भी विलासी जीवन स्वीकार नहीं है। हम भी वनवासी जीवन स्वीकार करेंगे। सीता जी रजामंद हो गई और वे भी चलने लगीं। बेटे, मैं देखता हूँ कि अयोध्या में ऐसे बीज बोये गए, जो कल्पवृक्ष की तरह उगे। कौशल्या जी ने अपने बच्चे के सिर पर हाथ फेरा और यह कहा कि जब तुम्हारी माता ने आज्ञा दी है, तो तुम बनवास जा सकते हो। उन्होंने भी छाती पर पत्थर रख करके उन्हें आज्ञा दे दी। किसके लिए? दैवीय संस्कृति के, दैवीय सभ्यता के विकास के लिए, त्याग और बलिदान करने के लिए।

मित्रो! दैवीय संस्कृति वह है, जो त्याग के लिए, बलिदान के लिए प्रोत्साहन देती है और आगे बढ़ाती है और दैत्यों की सभ्यता, राक्षसों की सभ्यता वह है, जो न स्वयं श्रेष्ठ काम करते हैं और न किसी को करने देते हैं। न चलते हैं और न चलने देते हैं और पत्थरों के तरीके से, जंजीरों के तरीके से जकड़ करके बैठ जाते हैं। ये राक्षस हैं, दुष्ट हैं और पिशाच हैं, जो सिद्धांतों के लिए, त्याग के लिए, बलिदान के लिए मार्ग में अड़ंगे लगाते हैं और ये कहते हैं कि अय्याशी अच्छी चीज है, मालदार होना बहुत अच्छी बात है, जमाखोरी बहुत अच्छी बात है। आप भी विलासी होइए और हमको भी विलासी होने दीजिए। मित्रो! ये हमारे खानदान वाले नहीं हैं। ये हमारे दुश्मन हैं।

सब एक दूसरे से बढ़कर

मित्रो! कौशल्या जी ने कहा कि आप वनवास जा सकते हैं। हम आपको आज्ञा देते हैं, आप खुशी-खुशी जाएँ। इस मामले में कोई भी पीछे नहीं रहा। सुमित्रा ने अपने बेटे लक्ष्मण से कहा कि बेटे, अगर तुम्हारे बड़े भाई वनवास जा रहे हैं, तो मैं त्याग के रास्ते पर, बलिदान के रास्ते पर चलने से तुम्हें नहीं रोक सकती। सुमित्रा ने कहा, **"जो पै सीय रामु वन जाहीं। अवध तुम्हार काजु कछु नाहीं।"** अयोध्या में तुम्हारा काम नहीं है। यहाँ के विलासी जीवन में, अय्याशी के जीवन में तुम्हारा कोई काम नहीं है। माँ ने छाती पर पत्थर रखकर के सिर पर हाथ फिराया,

आशीर्वाद दिया और कहा कि तुम जाओ वनवास। न केवल माँ ने वरन् उनकी पत्नी उर्मिला ने भी कहा कि ठीक है, आप श्रेष्ठ काम के लिए जा रहे हैं, तो मैं ऐसी घटिया नहीं हूँ, जो आपके भावी जीवन को रोक सकूँ। आप चौदह वर्ष के लिए वनवास जाइए। आप चौदह वर्ष ब्रह्मचर्य से रह सकते हैं, मैं भी ब्रह्मचर्य से रह सकती हूँ। आप एक आदर्श स्थापित करने के लिए चल पड़िए।

बेटे! ये क्या हो गया? सभ्यता की शुरुआत हो गई। ये कौन-सी सभ्यता थी? ये दैवीय सभ्यता थी, जिसने राक्षसों को परास्त किया। तो क्या रामचंद्र जी ने रावण को मार डाला था? बेटे, रावण को मारने भर से कोई परास्त नहीं हो सकता था। नये आदमी फिर से पैदा हो सकते थे। युद्धों के नतीजे हमने देख लिए हैं। पहला वर्ल्ड वार जब पैदा हुआ था, तो उसके पेट में उसी दिन दूसरे युद्ध का बीजारोपण हो गया था। उसमें से दूसरा वाला जो राक्षस निकला, वह पहले वाले से भी ज्यादा भयंकर था और जब 'सैकंड वर्ल्ड वार' हुआ तो उसने भी बहुत बड़ा विनाश किया और लोगों से कहा कि जो भी बुरे आदमी हैं, दुश्मन हैं, उन सबको हम मार डालेंगे और सबकी हत्या कर देंगे। हम तोप चलाएँगे, बम चलाएँगे और सफाया कर देंगे।

भविष्य की अशुभ संभावनाएँ

मित्रो! हम देखते हैं कि 'सैकंड वर्ल्ड वार' अभी खत्म नहीं हुआ है। 'थर्ड वर्ल्ड वार' के लिए ऐसा सर्वनाशी वातावरण अभी से तैयार हो रहा है। बेटे, बच्चा पेट में बैठा हुआ है और जगमगा रहा है। वह बार-बार मुँह चलाता रहता है और फिर पेट में घुस जाता है, उसी तरीके से जैसे कंगारू। कंगारू एक जानवर होता है। उसके पेट में एक थैली होती है, जिसमें बच्चे बैठे रहते हैं, उसी में मुँह चलाते रहते हैं और फिर पेट में घुस जाते हैं। 'थर्ड वर्ल्ड वार' अभी अपनी माँ के पेट में बैठा हुआ है, लेकिन जब वह माँ के पेट से निकलेगा, तो सफाया करेगा। किसका सफाया करेगा? सरस्वती फिर दुनिया में रहेगी नहीं और मनुष्य जाति का अस्तित्व दुनिया में रहेगा नहीं। अक्ल दुनिया में रहेगी नहीं, जिसके बल पर अभी मनुष्य मरने-मारने और लड़ने पर उतारू हुआ है। ये सभ्यता फिर जिंदा रह नहीं सकती, क्योंकि तीसरा वाला बच्चा जो पेट में बैठा हुआ है, वह सबको मार डालेगा।

मित्रो! बट्रेंड रसेल ने ठीक कहा था कि 'थर्ड वर्ल्ड वार' के पश्चात् फिर एक और 'वार' होगा अर्थात् चौथी लड़ाई भी होगी, लेकिन इस लड़ाई में क्या होगा? चौथी लड़ाई में आदमी ईंट और पत्थरों का उपयोग करेगा, फिर टैंकों का उपयोग न हो सकेगा। ईंट और पत्थरों का उपयोग क्यों होगा? क्योकि तब मनुष्य बुद्धिहीन

हो जाएँगे। तब जो कुछ प्राणी बचेंगे, वे इतने बेअकल, इतने साधनहीन और इतने असहाय हो जाएँगे कि ढेला फेंकने के अलावा लाठी चलाने लायक भी नहीं रह जाएँगे। उनके पास तब न इतनी अकल रहेगी, न साधन रहेंगे, न संपदा रहेगी। सबका सफाया हो जाएगा।

बेटे, मैं जानता हूँ कि संसार में जो मारक प्रकियाएँ हैं, वे आदमी को समाप्त नहीं कर सकतीं। इनसे कोई समाधान नहीं हो सकता। नहीं साहब हम तो मारेंगे। अच्छा है मारिए। मैं तो हिमायती हूँ मारने का, क्योंकि ऑपरेशन में मारक तत्त्व ही काम करता है। आँख में मोतियाबिंद है, मुश्किल से पाँच सैकंड में ऑपरेशन करके झिल्ली को उतारकर फेंक दिया और खट् से बंद कर दिया। आँख कितने दिन में अच्छी हुई? आँख तो बेटे पंद्रह दिन में अच्छी हुई। पंद्रह दिन क्या होता रहा? मरहम लगाया जाता रहा, पट्टी लगाई जाती रही, ड्रेसिंग होती रही। जख्म को अच्छा करने का प्रयत्न किया जाता रहा। मारक तत्त्वों की कभी जरूरत भी पड़ सकती है, मैं तो यह नहीं कह सकता कि जरूरत नहीं है, और कभी होगी नहीं। कभी जरूरत हो भी सकती है, लेकिन ज्यादा जरूरत नहीं है। दानवी सभ्यता, जिसने कि हमारे सारे-के-सारे मानव समाज को बुरे तरीके से जकड़ रखा है, इसको मारने के लिए वो तत्त्व काफी नहीं है, जिनको राजनीति वाले हथियारों के रूप में प्रयोग करना चाहते हैं और हम किस तरीके से प्रयोग करना चाहते हैं? हम संघर्ष के द्वारा करना चाहते हैं, घेराव के द्वारा करना चाहते हैं, सत्याग्रह के द्वारा लड़ना चाहते हैं। क्या इससे वे दूर हो जाएँगे? नहीं, इससे वे दूर नहीं हो सकते।

देवताओं का आना जरूरी

फिर कैसे दूर हो सकते हैं? मित्रो! दैत्यों को मारने के लिए देवता का पैदा होना आवश्यक है। दैत्य को दैत्य भी मार सकता है। दो राक्षस थे। दोनों आपस में लड़े। मरे तो सही दोनों, लेकिन दोनों के मरने के बाद में फिर नए राक्षस पैदा हो गए। नई पौध तैयार हो गई। दैत्यों को मारने के लिए देवताओं की जरूरत हुई। अयोध्या में देवता पैदा किया गया। देवता कैसे पैदा किया? बेटे, देव परंपराएँ पैदा कीं। देव परंपराओं का नाम है, देवता। छोटे-से कुटुंब ने लोगों के सामने नमूने प्रस्तुत किए, सिद्धांतों के लिए, आदर्शों के लिए, लोकहित के लिए। दूसरे लोग कहते रहे, इसमें हमारा कोई लाभ नहीं है। राक्षसों ने हमारे ऊपर हमला नहीं किया है, रावण ने हमको कोई नुकसान नहीं पहुँचाया है, लेकिन अयोध्यावासियों ने कहा कि हम दैवी सभ्यता की स्थापना करने के लिए अपने क्रियाकलाप करते हैं और

अपनी लीलाएँ करते हैं। इसका परिणाम क्या हुआ? बेटे, परिणाम यह हुआ कि दैवीय संस्कृति-दैवीय सभ्यता पनपने लगी, बढ़ने लगी।

कैसे बढ़ी? आपने देखा नहीं? वानरों ने, रीछों ने ये कहा, अगर मनुष्य दैवीय सभ्यता को जीवन में ढाल सकते हैं, तो हमको भी ऐसा जीवन ढालने में क्या आपत्ति हो सकती है और हम भी ऐसा जीवन ढालने में क्यों पीछे रहेंगे? रीछ-वानर अपनी जान हथेली पर रखकर तैयार हो गए।

देवता कौन?

दैवीय सभ्यता क्या होती है? क्या वह मिठाई खाती है, महल बनाती है? नहीं बेटे, ऐसी नहीं होती है—दैवीय सभ्यता। दैवीय सभ्यता ऐसी होती है, जिसमें एक ही वृत्ति रहती है, "हम देंगे।" देने के लिए वह अपना समय खरच करती है, श्रम खरच करती है, साधन खरच करती है और अपनी अक्ल खरच करती है और बदले में मुसीबतें उठाने के लिए तैयार रहती है। यही है दैवीय सभ्यता। दैवीय सभ्यता का एक ही स्वरूप है कि हम व्यक्तिगत जीवन में कठिनाइयाँ उठाएँ। किसके लिए? सारे समाज के लिए, धर्म के लिए और संस्कृति के लिए। हम इनके संवर्द्धन के लिए कष्ट उठाएँ और इन्हें आगे बढ़ाएँ। दैवीय सभ्यता इसी का नाम है। बस न इससे कम और न ज्यादा। देवताओं का स्वरूप यही है। देवता वह नही है, जो अय्याशी करते रहते हैं, मौज उड़ाते रहते हैं, कल्पवृक्ष के नीचे बैठे रहते हैं। देवता उन लोगों के नाम हैं, जो जीवन भर लोगों के लिए कठिनाइयाँ उठाते हैं। इंद्र देवता होता है। देवता कौन-सा होता है? बेटे, बादल समुद्र में से पानी ढो-ढो करके बड़ी मुश्किल से लाते हैं। वे कितनी मुश्किल और कितना कष्ट उठाते हैं और हमें बिना जानकारी दिए, हमारे धन्यवाद की अपेक्षा किए बिना चुपचाप हमारे खेतों में पानी बरसा जाते हैं। ये देवता हैं। इससे न ज्यादा होने की जरूरत है और न इससे कम। जो भी देवता हुआ है, वह न इससे कम हुआ और न ज्यादा, ठीक उसी तरीके से जैसे मैंने आपको अभी बादलों का नमूना बताया।

देवसंस्कृति का नमूना खड़ा करना होगा

मित्रो! वानर और रीछ किससे प्रेरित हुए? अयोध्या वालों से प्रेरित हुए। उनसे प्रेरित होकर उन्होंने कहा कि देव सेना में हम भी भरती होते हैं और देवत्व के संरक्षण के लिए हम भी कदम बढ़ाते हैं; वे चल पड़े। क्या नतीजा हुआ? ज्यादा विस्तार से नहीं बताना चाहता हूँ, किंतु इसका छोटा-सा स्वरूप झाँकी बनाकर आपको बता सकता हूँ। जब मनुष्य-जाति के लिए मुसीबतें आई हों, भविष्य के

लिए आशंका आई हो कि हमारा भविष्य अंधकारमय होने वाला है, जैसा कि आज हमको दिखाई पड़ता है, तो क्या करना पड़ेगा? उपाय एक ही है, दूसरा कोई उपाय नहीं है। अब हमको दैवीय सभ्यता का ढाँचा खड़ा करना पड़ेगा, नमूना खड़ा करना पड़ेगा। नहीं साहब! हम राक्षस को मारेंगे। अरे बेटा वह मरेगा नहीं। हम उसको गालियाँ देंगे, विरोध करेंगे। बेटे, इससे भी कुछ बनने-बिगड़ने वाला नहीं है। असली विरोध इस बात का है कि हम उसके मुकाबले में ऐसी जबरदस्त तैयारी करें, जिससे प्रेरणा लेकर के, प्रभावित हो करके लोग उस रास्ते पर चलें। उस पर चलने के लिए यह आवश्यक है कि आदमी दैवीय सभ्यता के अनुरूप त्याग और बलिदान करने के लिए तैयार हो जाएँ।

मित्रो! यही था रावण मारने का उपाय। सारे-के-सारे लंकाकांड का जो परिणाम मैंने देखा, वह यह कि त्याग करने के लिए, बलिदान करने के लिए हर आदमी तैयार हो गया। छोटे-छोटे जानवर भी तैयार हो गए। रीछ-वानर तो तैयार हो ही गये थे, कुछ और पक्षी श्रेणी के भी तैयार हो गए। उनमें से एक गिलहरी आई और बोली, आपकी सहायता के लिए हम त्याग करेंगे और सहयोग करेंगे। क्या करेगी? हम कष्ट उठाएँगे और मशक्कत करेंगे। फिर फायदा क्या होगा? हम उस पुल के लिए रास्ता खोलेंगे, जिस पुल पर से होकर ये रीछ-वानर पार हो सकें और रावण को मार सकें। इसलिए हम समुद्र को पाटने के लिए अपने बालों में मिट्टी भरकर ले जाएँगे और उसमें डालेंगे।

भावना महत्त्वपूर्ण

ये क्या था? ये दैवीय सभ्यता है बेटे और कुछ नहीं है। गिलहरी कौन थी? मुझे गिलहरी का जिक्र करने की जरूरत नहीं है। मैं गिलहरी के पीछे नहीं पड़ना चाहता। मैं तो दैवीय सभ्यता की बात कहता हूँ। दैवीय सभ्यता जहाँ कहीं भी हुई है, वहाँ रावण मरे हैं, कुंभकरण मरे हैं, आततायी मरे हैं और वहाँ रामराज्य आया है, सतयुग आया है, धर्मयुग आया है, अगर लोगों ने गिलहरी के तरीके से अपने नमूने पेश करने की कोशिश की है। निःस्वार्थ भाव से जनहित के लिए, श्रेष्ठ परंपराओं के संरक्षण के लिए त्याग और बलिदान का जहाँ सवाल आया, वहाँ गिलहरी ने नमूना पेश किया। बेटे, गिलहरी की कथा कहते-कहते हमारा मन नहीं भरता। गिलहरी ने क्या किया। परंपरा कायम की? गिलहरी की जरा-सी मिट्टी से क्या हो गया? बालू की नहीं, भावना की बात चल रही है। भावना जरा-सी हो, चाहे छोटी हो या बड़ी हो, बड़ी जबरदस्त होती है और दुनिया में बहुत काम करती है।

मित्रो! रामराज्य स्थापित हुआ था। रामराज्य किसने स्थापित किया था? छप्पर फाड़ करके रामराज्य गिरा था या पोटली में बाँध करके देवता रख गए थे। गुरुजी रामराज्य कौन-सी तारीख को आएगा? युग निर्माण कब हो जाएगा? क्यों तू क्या करना चाहता है? मुझे क्या पता कब तक हो जाएगा? मित्रो! क्या करना पड़ेगा कि जब परंपराएँ इस तरह की दिखाई पड़ती हों, तब आप विश्वास करना कि अब रामराज्य आने ही वाला है। किस तरीके की परंपराएँ दिखेंगी तब? जैसे कि छोटे-छोटे पखेरुओं ने करके दिखाईं। गीधराज एक कोंतर में बैठा हुआ था और मजे से दिन काट रहा था। लेकिन उसको मौज के दिन काटना सहन नहीं हुआ। अनीति देखकर एक दिन वह तिलमिला गया और कहने लगा, यहाँ ये अनीति फैल रही है। किसी की बेटी का अपहरण ऐसे हो रहा है, तो हम जिंदा इन आँखों से नहीं देखेंगे। अपनी बेटी हो तो क्या और किसी की बेटी हो तो क्या? अब हम इन जिंदा आँखों से ऐसा अधर्म नहीं देखेंगे। ये ठीक है कि हम रावण को नहीं मार सकते, पर हम स्वयं तो मर सकते हैं। उसे मारना संभव नहीं हो सकता, मैं जानता हूँ। हरेक व्यक्ति पाप और अनीति को मार नहीं सकता, पर मर तो सकता है। मरना भी बहुत बड़ी बात है। बेटे मरने की ताकत मारने की ताकत से भी बहुत बड़ी है, तू जानता नहीं है। पर वह गिद्ध रावण को मार नहीं सका, मैं जानता हूँ, लेकिन उसने स्वयं मरकर वह काम करके दिखाया, जो हजार अँग्रेजों को मारकर के भगतसिंह नहीं कर सकते थे। देश में तहलका नहीं मचा सकते थे।

नेक मकसद के लिए

अरे गुरुजी! मरने में तो हार होती है, पराजय होती है। मरने में नुकसान होता है, घाटा होता है। नहीं बेटे, किसी नेक मकसद के लिए मरना, मारने से भी ज्यादा बहादुरी का काम है। नुकसान करना भी एक बहादुरी का काम हो सकता है। मित्रो! पखेरू ने तो नुकसान उठाया और रावण से लड़ने गया। उसने कहा, हमारे जिंदा रहते आप सीता जी पर हमला नहीं कर सकते, सीता जी को नहीं ले जा सकते। रावण ने कहा, आपके पास ताकत कहाँ है? तलवार कहाँ है? गीध ने कहा, नहीं सही, पर हमारे पास जान तो है और न्याय के लिए, आदर्श के लिए, धर्म के लिए हम मर तो सकते हैं। पखेरू युद्ध के लिए तैयार हो गया। रावण ने उसके पंख काटकर फेंक दिए। तो क्या पखेरू हार गया और रावण जीत गया? नहीं बेटे, पखेरू जीत गया। रामचंद्र जी जब आए, तो उन्होंने पखेरू को छाती से लगा लिया, अपने हाथों से उसके पंखों को साफ किया और अपनी आँखों के

आँसुओं से उसके जख्मों को धोया। उसने कहा, भगवान्! मैंने तीनों लोकों का राज्य पा लिया और सब कुछ पा लिया। मैंने यश पा लिया और आज अमर हो गया। हजारों मनुष्यों को युगों-युगों तक प्रेरणा देने के लिए वह एक स्मारक बन गया, प्रकाशस्तंभ बन गया।

सतधुगी परम्परा

मित्रो! आदमी हो या कोई पक्षी हो, बुड्ढा हो, बिना पढ़ा हो या साधनहीन हो, तो भी कम-से-कम उसके भीतर इतनी हिम्मत अवश्य होनी चाहिए कि अनीति का विनाश करने के लिए, लड़ाई लड़ने के लिए सीना तानकर खड़ा हो जाए। बेटे! बड़े-बड़े बादशाहों को तो हम भुला सकते हैं, लेकिन उस पखेरू को हम सदैव याद रखेंगे। उसे हम भुला नहीं सकते। उस पखेरू को न भूलाने का मतलब है, देवपूजन अर्थात् देवत्व का पूजन। बेटे! भारतीय संस्कृति में देवत्व का पूजन करने की परंपरा है। यही परंपरा सतयुग को लाती है, धर्मयुग को लाती है। मानवजाति के उज्ज्वल भविष्य को लाती है। कौन-सी परंपराएँ? जिनको हम दैवीय परंपराएँ कहते हैं। दैवीय परंपराएँ क्या होती हैं? तिलक लगाना, माला जपना, गंगाजी नहाना, सत्यनारायण की कथा कहना आदि, क्या यही दैवी परंपराएँ हैं? नहीं, बेटे! ये तो खेल-खिलौने मात्र हैं। जो इसी खेल-खिलौनों में उलझे रहते हैं, उन्हें हम 'अफीमची' कहते हैं, सनकी कहते हैं। काम होता नहीं है, त्याग की बात बनती नहीं,बैठे-बैठे कोने में छपकियाँ लेता रहता है, सनकता रहता है और कहता है कि प्रकाश दिखा दीजिए। घंटी बजा दीजिए, कान में नादब्रह्म सुना दीजिए। पेट में से पिल्ला निकाल दीजिए। उसमें से निकाल दें तेरा सिर।

देवताओं के बेटे कौन?

मित्रो! क्या करना पड़ेगा? दैवीय सभ्यता यह नहीं है। दैवीय सभ्यता वह है, जिसमें त्याग और बलिदान की बात करनी पड़ती है। बेटे! हजारों वर्षों का इतिहास जब हम पढ़ते हैं, तो हमको दैवीय सभ्यता का यही स्वरूप दिखाई पड़ता है। रामचंद्रजी के बाद श्रीकृष्ण जी का नंबर आता है। श्रीकृष्ण जी का जीवन चरित्र जैसा कुछ भी आता है, उन्होंने जिन लोगों को साथ लेकर के काम शुरू किया था, उन लोगों के नाम थे, पांडव। पांडवों में क्या था? दैवीय सभ्यता थी। पांडव देवताओं से पैदा हुए थे। मैंने सुना है कि कुंती ने देवताओं का जप-पूजन किया था और जप-पूजन करने के बाद में बच्चे पैदा किए थे। कैसे थे पाँच बच्चे? तो क्या उनमें एक था आई.ए.एस. एक था इन्कम टैक्स आफीसर, एक था सी.बी.आई.

आफीसर आदि। इस तरह क्या उन्होंने लाखों रुपयों की आमदनी की थी? करोड़ों की जायदाद खरीदकर रख गए थे? तो फिर कुंती का बेटा, देवता का बेटा कौन होता है? क्या वह जिसके पास मोटरें हों, जिसके पास दौलत हो, जिसके पास मकान हो। नहीं, यह आपकी परिभाषा है। देवताओं की परिभाषा अलग थी।

मित्रो! देवताओं के बेटों को कैसा होना चाहिए? अगर कोई देवता का बेटा है, तो उसके व्यवहार में और जीवन में क्या गुण आना चाहिए? इसे हम पाँचों पांडवों के जीवन में देख लेते हैं। हमको सबसे अच्छी घटना पांडवों की याद आती है। हमको अज्ञातवास के समय कुंती अपने बच्चों के साथ एक ब्राह्मणी के यहाँ छिपी हुई थी। उस इलाके में कोई एक राक्षस रहता था। जो वहाँ के हर घर से एक-एक आदमी प्रतिदिन मारने के लिए बुलाया करता था और उन्हें खा जाता था। नंबर के हिसाब से उस दिन ब्राह्मणी के बच्चे का नंबर आ गया। ब्राह्मणी रोने लगी। जब वह बैठी हुई रो रही थी, तो कुंती ने पूछा, बहिन क्या बात है? ब्राह्मणी बोली कि हमारे पास एक ही बच्चा है और उसको आज राक्षस के पास जाना पड़ेगा। उसे मरना ही होगा। अब हम क्या कर सकते हैं?

कुंती ने कहा कि आपने अपनी जान जोखिम में डालकर हमको छिपा रखा है, तो हमारा भी तो कुछ कर्त्तव्य हो जाता है। हम भी तो कुछ करेंगे आपके लिए। उन्होंने कहा, बच्चो! तुम पाँच हो। एक काम करो, यह जो ब्राह्मणी है, इसके एक ही बालक है। इसने अपनी जान जोखिम में डालकर हमको छिपाकर रखा है। इसलिए क्या करना चाहिए बच्चो? तुममें से एक बच्चे को अपना बलिदान कर देना चाहिए और ब्राह्मणी के बच्चे को बचा लेना चाहिए। बच्चों ने कहा, माता जी! इससे बड़ा सौभाग्य हमारा क्या हो सकता है? भीम चले गए और उसे बचा लिया।

सच्चा अध्यात्म

मित्रो! यह क्या है? यह है देवता का मन। देवता का मन वह होता है कि जब उसके जीवन में कोई त्याग करने, बलिदान करने का मौका आता है, तो बल्लियों उछलने लगता है। यह होता है, देवताओं का दिल। और राक्षसों का दिल कैसा होता है? राक्षसों का, चोरों का, घटिया आदमी का दिल यह है कि जब त्याग का वक्त आता है, तो वह थर-थर कॉपने लगता है। हर समय जिसकी यही नीयत रहती है कि यह मंत्र जपूँगा, यह तंत्र जपूँगा, यह पूजा करूँगा और इससे यह पैसा कमाऊँगा, यह औलाद पाऊँगा, धन कमाऊँगा। कामना-ही-कामना, कामना-ही-कामना जिसके अंदर भरी हुई है, बेटे यह कोई अध्यात्म नहीं है।

ठीक है मित्रो! यह बच्चों का अध्यात्म रहा होगा। मैं यह तो नहीं कहता कि बच्चों को इसकी जरूरत नहीं है। हम मिठाई बाँट करके और कोई लोभ देकर के बच्चों को अपने पास बुला लेते हैं। यह भी अध्यात्म का कोई हिस्सा होगा, पर मैं इसको छूँछ कहता हूँ, भूसी कहता हूँ। किसकी? अध्यात्म की। भूसी कौन-सी? जिसमें यह पाया जाता है कि अध्यात्म क्या है। बेटे, यह अध्यात्म का खिलवाड़ है, छिलका है, जूठन का पत्ता है। पत्ते पर मिठाई खाकर के लोग उसे फेंक देते हैं और कुत्ते उसे चाटने के लिए टूट पड़ते हैं, चट कर जाते हैं। यह भी हो सकता है-प्राप्त करने की दृष्टि से। अध्यात्म को हम भौतिक चीजों को पाने के लिए इस्तेमाल करते हैं, इसलिए बेटे, मैं इसको जूठन का पत्ता कहता हूँ। किसी आदमी का खाया हुआ पत्ता फेंक दिया गया, दूसरा कहता है कि हमको भी दे दीजिए। हाँ बेटे, तुझे भी दे देंगे।

आपने क्या किया?

बेटे, हमने तप किया है और तप करके पाया है और तू हिस्सा माँगता है। चल तुझे भी दे देंगे। यह क्या है? छोटी चीज है, रत्तीभर चीज है। न इसमें किसी को घमंड करने की जरूरत है और न सफलता प्राप्त करने की जरूरत है। हमने अध्यात्म से यह पा लिया, वह पा लिया। बेटे, पाने से अध्यात्म का कोई संबंध नहीं है। अध्यात्म का संबंध है देने से। आपने क्या दिया बताइए? बस यही एक सवाल है। अगर आप यह कहते हैं कि हम भगवान् की भक्ति से कोई ताल्लुक रखते हैं, तो **आप यह जवाब दीजिए कि दैवीय सभ्यता के लिए, श्रेष्ठ आचरणों के लिए, लोगों के सामने अच्छी परंपरा स्थापित करने के लिए आपने क्या किया?** यही एक जवाब दीजिए और दूसरा हम कुछ नहीं सुनना चाहते। हमने इतना भजन किया, तो ठीक है-अपने भजन को डिब्बी में रखिए। भजन का या किसी और का हवाला देना हम नहीं सुनना चाहते। गायत्री मंत्र की ग्यारह कापी हमने लिखीं। तो आप अपनी ग्यारह कापी ताले में बंद कर दीजिए। हमें मत बताइए। हमको तो यह बताइए कि आपने दैवीय सभ्यता के लिए कितना त्याग किया है? कितना बलिदान किया है? कितनी सेवा की है? नहीं साहब! हमने तो ग्यारह कापियाँ लिखी हैं। अच्छा, ग्यारह कापियाँ मुबारक हों, उसे अपने घर रखिए। हम नहीं सुनना चाहते।

मित्रो! **अध्यात्म की प्राचीन परंपराएँ, शालीन परंपराएँ, महान् परंपराएँ भगवान् को अपनी ओर खींचती हैं और खींचने के अलावा दूसरों की**

सहायता करने में समर्थ होती हैं। ऐसा कोई अध्यात्म नहीं है, जो मनोकामना को प्राप्त कराता है। अध्यात्म वह है, जिससे आदमी अपना कल्याण करते हैं और दूसरों का कल्याण करने में समर्थ होते हैं। ऐसी शक्ति, जो दूसरों का कल्याण करती है, वह केवल असली अध्यात्म में रहती है। **वह त्याग किए बिना, बलिदान किए बिना, सेवा धर्म किए बिना, दैवीय सभ्यता और संस्कृति के अनुरूप जीवन ढाले बिना किसी में नहीं आ सकती। न आई है और न आएगी।** कौन सी? **जिसमें त्याग जुड़ा हुआ न हो, सेवा जुड़ी हुई न हो, लोकहित जुड़ा हुआ न हो, कष्ट सहने की बात जुड़ी हुई न हो, उसमें अध्यात्म कैसे हो सकता है?** नहीं बेटे! इससे कम में अध्यात्म न था और न कभी होगा।

पाण्डवों का उदाहरण

मित्रो! भगवान् श्रीकृष्ण ने उस जमाने में, दुर्योधन के जमाने में जब चारों ओर असभ्यता और अनीति फैली पड़ी थी, तब यही नमूना पेश किया था। उनके पाँच हितैषी और हिमायती थे। पाँचों हिमायतियों का मैं एक नमूना बता रहा था। पाँचों पांडवों से कुंती ने कहा, बच्चो! तुममें से एक को वहाँ जाना चाहिए। बच्चे उछलने लगे और कहने लगे कि यह सौभाग्य तो हमको मिलना चाहिए। प्रतिस्पर्द्धा-कॉम्पिटीशन शुरू हो गई कि बलिदान में हम आगे जाएँगे। पाँचों बच्चों में प्रतिस्पर्द्धा शुरू हो गई। कुंती के लिए जद्दोजहद खड़ी हो गई। युधिष्ठिर कहते कि हम सबसे बड़े हैं। हम दुनिया में सबसे पहले आए थे, इसलिए हमारा नंबर पहला है। सबसे छोटे वाले नकुल कहने लगे कि हम सबसे छोटे हैं, इसलिए हमको जाना चाहिए। अर्जुन कहने लगे कि इसके लिए हमको जाना चाहिए। सबमें झगड़ा होने लगा। कुंती ने कहा, अच्छा तुममें से कौन सबसे भाग्यवान् है, इसके लिए मैं गोली बनाकर निकालती हूँ। पाँचों पांडवों के नाम से गोली बनाकर डाल दी गई और कहा गया कि अच्छा, एक गोली उठा लो। जिसका नाम आ जाएगा, उसी को जाना चाहिए।

गोली उठाई गई। भीम का नाम आ गया। भीम उछलने लगे, ओ हो! यह मेरा सौभाग्य है। मित्रो! सौभाग्य किसे कहते हैं? नौकरी में तरक्की हो जाने को? लॉटरी में रुपया निकल आने को? तीन बेटियों के बाद दो बेटा हो जाने को? आपकी दृष्टि में इसके अतिरिक्त और कोई सौभाग्य होता है क्या? नहीं होता। बेटे! यह सौभाग्य नहीं होता। **सौभाग्य वह होता है, जिसमें आदमी अजर-अमर हो जाता है। बेटे! सौभाग्य वह होता है, जिसमें हजारों-लाखों आदमी श्रद्धा के सुमन चढ़ाते रहते हैं और उसके चरणों पर आँसू बहाते रहते हैं और जिसके**

मरने के बाद भी आदमी उससे प्रकाश-प्रेरणा ग्रहण करते रहते हैं, रोशनी ग्रहण करते रहते हैं। देवता उन्हें ही कहते हैं, सौभाग्य उसे कहते हैं। सौभाग्यशाली वे हैं, वंदनीय वे हैं, जिन्होंने अपना आचरण इस तरीके से पेश किया कि जिससे प्रेरित होकर हजारों आदमी नमूने पेश करते रहें और दिशा प्राप्त करते रहें।

मित्रो! ऐसी ही हुआ। भीम का नंबर आ गया। भीम बच्चा था और राक्षस नौजवान। राक्षस कितना बड़ा था? समझ लीजिए छत के बराबर रहा होगा। और भीम? छोटा सा ही था। भीम लड़ने के लिए चला गया। महाभारत की कथा के अनुसार मैंने सुना है कि भीम ने कहा, अच्छा, आप हमको खाएँगे तो है ही, तो क्यों न पहले दो-दो हाथ कर देख लें। राक्षस ने कहा, चल, इसमें कोई ऐतराज नहीं है हमको। आ, हो जाए, दो-दो हाथ। भीम लड़ने के लिए खड़ा हो गया और उसने राक्षस को पटककर मार दिया।

सत्य में है बल

क्यों साहब! ऐसा हो सकता है? हाँ बेटे ऐसा हो सकता है। सत्य हजार हाथी के बराबर बलवान् होता है। बच्चों ने भी सत्य का आश्रय लेकर बड़ी-बड़ी सफलताएँ पाई हैं। कौन-कौन ने पाई हैं? चंद बच्चों के नाम बता सकता हूँ। प्रह्लाद बच्चा था, लेकिन उसका बाप हिरण्यकशिपु कितना समर्थ था। वह इतने बड़े दैत्य से लड़ने के लिए खड़ा हो गया और उसका कचूमर निकाल दिया। यह बच्चों की बात कह रहा हूँ। कंस से लड़ने के लिए श्रीकृष्ण भगवान् गए थे। तब वे कितने छोटे थे। बच्चा जब लड़ने के लिए गया तो कंस को, चाणूर को और बकासुर को मार डाला और किस-किस को मारा? हाथियों को, कालिया को मार डाला, कैसे मार डाला बच्चे ने? बेटे, बच्चे ने नहीं, सत्य ने मार डाला। सत्य के पास हजार हाथियों के बराबर बल होता है। इसीलिए मुष्टिकासुर कौन था? एक हाथी था। भगवान् श्रीकृष्ण चाहते, तो और भी निन्यानवे हाथियों को मार सकते थे, क्योंकि उनके पास सत्य था। बच्चा हो तो क्या, बड़ा हो तो क्या, जिसके पास सत्य है, विजय उसकी ही होती है।

मित्रो! महाभारत की कथाएँ भी इसी तरह की मालूम पड़ती हैं, जिसमें लोगों ने देवत्व पैदा किया। देवत्व का छोटा सा फार्म बनाया, सीढ़ी बनाई, आदर्श उपस्थित किया, जिससे लोगों के सामने देवत्व घिसटता हुआ चला गया, और वे दिन भी आए, जबकि दुर्योधन की आसुरी सभ्यता का निवारण हो गया, समाधान

हो गया। कभी और भी ऐसे ही हुआ था। सारे इतिहास में तो यही पढ़ता रहता हूँ। अठारह पुराणों का अनुवाद मैंने किया है और इतिहास भी पढ़ा है। दो वर्ष पहले मैंने इतिहास को ज्यादा गहराई और ध्यान से पढ़ा है। 'भारतीय संस्कृति का समस्त विश्व को अजस्र अनुदान' नामक बड़ा ग्रंथ मैंने लिखा है। आपने पढ़ा होगा, उसमें मैंने हिन्दुस्तान की सारी-की-सारी हिस्ट्री लिखी है। सारी दुनिया को निहाल कर देने की हिस्ट्री। किससे निहाल कर दिया था? बेटे, सारी दुनिया को धन दिया था, विद्या दी थी, ज्ञान दिया था। सारी दुनिया में भारतीयों का वर्चस्व छा गया था और उनको जगद्गुरु माना गया था, देवता माना गया था।

महाराज जी! सब कैसे हुआ था? बता दीजिए, हम भी करना चाहते हैं। ऐसी विधि हमको भी बता दीजिए। हाँ बेटे, ला तुझे भी बता देते हैं कि क्या विधि है? बस एक तो तू माला ले ले और एक मंत्र। मंत्र लेकर क्या करूँ? जप किया कर ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय। नमः शिवाय से क्या हो जाएगा? सारे विश्व में तेरा यश हो जाएगा और तू अजर-अमर हो जाएगा। सारी दुनिया का कल्याण हो जाएगा। ऐसा हो जायगा? नहीं बेटे, ऐसा नहीं हो सकता।

त्याग-बलिदान की कथागाथाएँ

मित्रो! मैंने जो पुस्तक लिखी है 'भारतीय संस्कृति का समस्त विश्व को अजस्र अनुदान'। उसमें मैंने यह लिखा है कि भारतीय लोगों ने किस कदर त्याग और बलिदान किए हैं और एक से बढ़कर एक कैसे-कैसे नमूने खड़े किए हैं। बलिदानों का जखीरा लगा दिया है। भारतीय सभ्यता को अपने अनुदान देने वाले लोगों का जब मैं इतिहास पढ़ता हूँ, तो आँखों में से आँसू टपक पड़ते हैं। उनमें से एक थे, कुमारजीव, जो हिंदुस्तान से रवाना हुए और चीन पहुँच गए। जहाँ की न वे भाषा जानते थे और न कुछ जानते थे। "चीन नाम का देश है, जिसमें जाकर बौद्ध धर्म का प्रसार करेंगे।" यह सोचकर वे अकेले ही रेगिस्तानों को पार करते हुए चले गए। उन भयंकर रेगिस्तानों को जहाँ तीस-तीस दिनों तक पानी की एक बूँद भी नहीं मिलती थी। पेड़ की एक छाया तक नहीं है, केवल रेगिस्तान-ही-रेगिस्तान भरा पड़ा है। अपनी थैली में थोड़ा-सा पानी लेकर वे रवाना हो गए। कौन? कुमारजीव। वे चाइना में रह गए। चाइना में कौन था उनका? न कोई बेटा था, न मित्र था, न कोई शिष्य था उनका। वहाँ जाकर के उन्होंने चायनीज भाषा सीखी और सीखने के बाद में बौद्ध धर्मग्रंथों का अनुवाद करके वहाँ रखा। सारे-के-सारे चाइना को बौद्ध बनाने का श्रेय कुमारजीव जैसे बुद्ध के अनुयायियों को था।

गुरुजी! यह कैसे हो गया? बेटे, जादू से। जादू से कैसे हो गया? हमको भी सिखा दीजिए। बेटे, जिस जादू से दुनिया में बड़े-बड़े काम हुए हैं और अध्यात्म का प्रचलन हुआ है, उसका नाम है, त्याग और बलिदान। नहीं महाराज जी। त्याग-बलिदान का नहीं, हमको तो बता दीजिए—मंत्र। मंत्र कैसा होता है? अहा! इसी मंत्र के चक्कर में फिर रहा है धूर्त। अच्छा महाराज जी! बता दीजिए जादू। जादू बता दें तेरा सिर। मित्रो! क्या हुआ? **सारी-की-सारी पुस्तकों में मैंने लिखा है कि भारत के गौरव को ऊँचा उठाने के लिए, सारे विश्व का कायाकल्प कर डालने के लिए, जो आधारभूत मंत्र था, वह था त्याग और बलिदान।** त्याग और बलिदान की आवश्यकता महात्मा बुद्ध को पड़ी कि जिससे न केवल हिंदुस्तान, वरन् सारे के सारे विश्व को सुसंस्कृत बनाया जाए, फिर से सुसंस्कृत बनाया जाए। इसके लिए उन्हें अपील करनी पड़ी कि जो हमारे सबसे प्यारे हों, जो हमारे हितैषी हों, जो हमारी आज्ञा का पालन करने वाले हों, जो हमसे यह कहते हों कि बुद्ध हमारा है, तो वह त्याग करके दिखाएँ। यही सीधा-सरल मार्ग है।

महाराज जी! हम तो आपके चरणों में फूल चढ़ा देंगे। आपके ऊपर फूल चढ़ाएँगे और तीन बार नमस्कार करेंगे। ओ हो! बड़ा भारी शिष्य है हमारा। और क्या करेगा? महाराज जी! पच्चीस पैसे का आपका एक रंगीन फोटो खिंचवाऊँगा। फिर क्या करेगा उसका? टाँगूँगा। कैसे टाँगेगा, उलटा या सीधा? महाराज जी! टाँगूँगा तो सीधा। बेटे, हमारा कहना मान, तो उलटा टाँग दे फोटो को। उलटा टाँग देगा, तो ज्यादा फायदा हो जाएगा। क्यों? क्योंकि तब गुरु जी की नाक में दम आएगी, तो जल्दी आशीर्वाद देंगे। तो यह मामला है? हाँ बेटे, घटिया लोगों का, छोटे लोगों का, हलके लोगों का यही मामला है। इनके लिए जितनी गाली दी जाए कम है। यह हमारे आपके सबके ऊपर लागू होती है। इसमें आदमी सिवाय चालाकी के, सिवाय माँगने के, सिवाय बड़ा आदमी बनने के, सिवाय ऐय्याशी के, सिवाय विलासिता के कुछ बाकी नहीं है।

बुद्ध ने दिखाया पथ

मित्रो! क्या करना पड़ेगा? भारतीय सभ्यता और संस्कृति को जिंदा रखने के लिए बुद्ध ने जो कदम उठाए, उसने अपने-अपने मित्रों और शिष्यों से कहा कि आप आएँ और हमारे पीछे-पीछे चलें। किस तरह चलें? आप हमारी बात मानते हैं, तो हमारे रास्ते पर चलें और हमारा अनुकरण करें। क्या रास्ता है आपका? हमारा रास्ता है, त्याग और बलिदान का। किसने त्याग और बलिदान के रास्ते पर

कदम बढ़ाए? एक लाख शिष्य और सवा लाख शिष्याओं ने। उन सारे-के-सारे लोगों ने कहा कि हम आपके रास्ते पर चलेंगे। आपने जिस काम के लिए अवतार लिया है, उस काम में हम आपका सहयोग करेंगे और सहायता करेंगे। दो लाख आदमियों को लेकर बुद्ध ने न केवल हिंदुस्तान, वरन् समूचे एशिया, न केवल एशिया, वरन् सारे-के-सारे महाद्वीपों में दैवीय सभ्यता का प्रसार किया। उस जमाने में सात महाद्वीप माने जाते थे। अब तो हमने पाँच कर लिए हैं। सारे महाद्वीपों में उन लोगों ने न जाने क्या-से-क्या काम करने शुरू कर दिए, जिससे वे जगद्गुरु कहलाने के अधिकारी हुए।

यह क्या किया बुद्ध ने? **बेटे, बुद्ध ने यही किया। दैवीय सभ्यता का प्रसार इसी से हुआ है। तो क्या बुद्ध ने बड़े व्याख्यान दिए थे? हाँ बेटे, बुद्ध ने बड़े व्याख्यान दिए थे, लेकिन व्याख्यान देने के साथ-साथ में उसके नमूने भी पेश किए गए थे।** क्या नमूना पेश किया? उनका बेटा राहुल आया और बोला, पिताजी! हम आपके अंश-वंश से पैदा हुए हैं। हाँ बेटे, तुम हमारे अंश-वंश से पैदा हुए हो, तो तुम्हें हमारी वंश-परंपरा की रक्षा करनी चाहिए। वंश-परंपरा की रक्षा कैसे होती है? पंडित जी से पूछा, तो वे बोले, बस जौ का पिंड बना लो और उस पर धूप-दीप, फूल लगा दो और 'तर्पयामि' करके पिंड को गंगा जी में चढ़ा दो। बस, वंश का उद्धार हो जाएगा। तो क्या पिताजी। ऐसे उद्धार होगा? नहीं बेटे, ऐसे उद्धार नहीं होगा। कैसे होगा? जिस रास्ते पर हम चले हैं, उस रास्ते पर तू भी चल।

बेटा वह, जो पिता के रास्ते पर चले

राहुल ने कहा, अच्छा पिता जी! कोई और रास्ता बताइए? बुद्ध ने कहा, नहीं बेटे, हम जिस रास्ते पर चले हैं, उससे अच्छा कोई रास्ता नहीं हो सकता है। अगर रहा होता, तो हम भी उस पर चल दिए होते। यही सबसे अच्छा रास्ता है। तुझे यही करना पड़ेगा। अगर तू हमारा बेटा है और यह कहता है कि हम आपका वंश चलाएँगे, तो हमारे रास्ते पर चल। राहुल तैयार हो गया। वह सारी जिंदगी भर अपने पिता के कदमों पर चलता रहा और न जाने कहाँ-से-कहाँ चला गया। वह वर्मा गया। सारे-के-सारे विश्व में एक सिरे से दूसरे सिरे तक भटकता फिरा और अपने पिता के कामों का और उत्तरादायित्वों का निर्वाह करने के लिए त्याग-बलिदान की झड़ी लगाता रहा।

मित्रो! बेटा कैसा होना चाहिए? राहुल की तरह से होना चाहिए। बेटा ऐसा नहीं होना चाहिए कि बाप मरेगा, तो उसकी जायदाद हमको मिलनी चाहिए और

जो खेत है, वह हमको मिलना चाहिए। बाप का पैसा हमको मिलना चाहिए। बाप जिंदा है, तो हिस्सा मिलना चाहिए। नहीं, ऐसे बेटे नहीं हो सकते। नहीं, महाराज जी! बेटे ऐसे ही होते हैं। बाप के पास इक्कीस बीघे जमीन है। बाप को मरने में अभी देर है। बेटा कहता है कि हमारा हिस्सा अभी दे दो। हम मरेंगे तब देंगे। नहीं, मरने का इंतजार हम नहीं करेंगे, अभी दे दो। यह कौन है? क्या बेटे ऐसे ही होते हैं? नहीं, ऐसे नहीं होते बेटे। श्रवणकुमार के तरीके से बेटे होते हैं और राहुल के तरीके से बेटे होते हैं और बेटियाँ कैसी होती हैं? बेटियाँ संघमित्रा के तरीके से होती हैं। संघमित्रा सम्राट् अशोक की बेटी थी। उसने कहा, पिताजी आपने संन्यास ले लिया? हाँ। तो फिर हमारे लिए हुक्म दीजिए कि हमको क्या करना चाहिए।

मित्रो! संघमित्रा जो थी, उसने कहा, पिताजी क्या करना पड़ेगा? बेटी, हमारे रास्ते पर चलना पड़ेगा। सम्राट् अशोक की बेटी संघमित्रा निकल पड़ी और उसने जितने बुद्ध ने विहार बनाए थे, उससे ज्यादा विहार बनाकर दिखा दिए। महिलाओं के क्रियाकलाप, महिलाओं के संगठन, महिलाओं के विहार संघमित्रा ने ढेर सारे बना दिए। यह सब हमारी किताब में वर्णन किया गया है; उसका मैं हवाला दे रहा था। कितने ज्यादा बुद्ध के विहार थे और कितने महिलाओं के लिए? यह कैसे हो गया? बेटे, इस तरीके की परंपराओं से हो गया। कहाँ-से-कहाँ तक हुआ? बेटे, जहाँ कहीं भी अनीति के विरुद्ध संघर्ष करने की जरूरत पड़ी होगी अथवा धर्म की स्थापना करने की जरूरत पड़ी होगी और जब ठोस कदम उठाने की जरूरत पड़ी होगी, तब जैसे कि आज है। पोला कदम जब तक उठाना है, तब तक तो मीटिंग करेंगे, वार्षिकोत्सव करेंगे, रामायण सम्मेलन करेंगे। ठीक है बेटे, ये पोला कदम हो सकता है, पर यह ठोस कदम नहीं हो सकता। ठोस कदम यह हो सकता है कि हमें लोगों के, जनसाधारण के सामने त्याग और बलिदान की परंपराएँ प्रस्तुत करनी चाहिए, ताकि लोगों का मुँह यह कहने के लिए बंद हो जाए कि ये कहने-सुनने की बातें हैं। ये दूसरों को उपदेश देने की बातें हैं। ये बातें काम नहीं आ सकतीं और कोई आदमी इन्हें जीवन में करके नहीं दिखा सकता। दूसरों को कह सकता है कि आपको त्यागी होना चाहिए, ब्रह्मचारी रहना चाहिए, परोपकारी होना चाहिए। आप और हम कह सकते हैं, लेकिन जब स्वयं करने का मौका आएगा, तब हम नहीं कर सकते। यही कारण है कि वक्ताओं का, उपदेशकों का कहीं कोई प्रभाव पड़ता नहीं दिखाई देता।

आप नमूना बनिए

मित्रो! चिंता करने की कोई बात नहीं है। आप अपने से ही शुरुआत कीजिए, नमूना बनिए, साँचा बनिए। हमारी परंपरा स्वयं से शुरुआत करने की रही है। जहाँ कहीं भी हम देखते हैं, अपने से ही शुरुआत देखते हैं। विश्वामित्र और हरिश्चंद्र दोनों आपस में घनिष्ठ थे। इतने घनिष्ठ थे कि गुरु-शिष्य का प्रेम, जो राजा विश्वामित्र में था और किसी में नहीं देखा गया। विश्वामित्र एक बड़ा काम करने वाले थे नई दुनिया बनाने वाले थे। जब हम पढ़ते हैं, तो उसमें नई सृष्टि लिखा हुआ है। वे नई सृष्टि बना रहे थे। मैं समझता हूँ—नई सृष्टि तो क्या बना रहे होंगे, लेकिन नया जमाना ला रहे होंगे। विश्वामित्र ने राजा हरिश्चंद्र से कहा, तू हमारा मित्र है, दोस्त है? उनने कहा, हाँ। तो फिर हमारे साथ-साथ चल, हमारे काम आ। राजा हरिश्चंद्र ने कहा, हम आपके साथ-साथ चलेंगे और आपके काम आएँगे, तो फिर काम आ, चल हमारे साथ।

मित्रो! विश्वामित्र को पैसे की जरूरत पड़ी होगी, तो उन्होंने हरिश्चंद्र का राज्य माँगा होगा, दूसरी चीजें माँगी होंगी और आखिर में जहाँ मौका आ गया होगा, तो भौतिक साधनों के लिए राजा हरिश्चंद्र ने अपने आपको नीलाम कर दिया होगा। अपनी बीबी-बच्चों को नीलाम कर दिया होगा। यह क्या चीज है? त्याग और बलिदान है। इसको हम भूल नहीं सकते। क्यों विश्वामित्र ने हरिश्चंद्र को ही दोस्त बनाया? इससे कम में काम नहीं चल सकता था? अभी भी हजारों गाँधियों को पैदा करने की ताकत हरिश्चंद्र में है। गाँधी जी ने बचपन में हरिश्चंद्र का ड्रामा देखा और ड्रामा देखकर उन्होंने कहा, मैं हरिश्चंद्र होकर जिऊँगा। वे वास्तव में हरिश्चंद्र होकर के जिए। हरिश्चंद्र ने एक हरिश्चंद्र तो अभी-अभी पैदा किया है—हमारे सामने और असंख्य हरिश्चंद्र जाने कितने पैदा कर गए। कैसे हो गए? बेटे और कोई तरीका नहीं है अपने आपको त्याग की बलिवेदी पर समर्पित करने के अलावा। अगर हमारे व्यक्तिगत जीवन में लोकहित के लिए, परमार्थ के लिए कहीं त्याग की परंपरा नहीं है, तो फिर कहने भर की बातें हैं, बरगलाने भर की बातें हैं और आपको छलने एवं जनता को बरगलाने की बातें हैं। नया युग लाने के लिए, तो हमें फिर वहीं से आरंभ करना होगा, जहाँ हमारे ऊपर यह बात लागू होती है कि त्याग और बलिदान का प्रश्न आए, तो हम कहाँ होते हैं? बगलें झाँकते हैं या आगे बढ़ चढ़कर लग जाते हैं।

सबसे पहले स्वयं

मित्रो! हमारी संस्कृति में त्याग-बलिदान की परंपराएँ आदि काल से रही हैं, चाहे बुद्ध हो या हरिश्चंद्र, कोई भी रहा हो। त्याग-बलिदान की परंपराएँ गाँधी जी के आश्रम में जब 'नमक सत्याग्रह' शुरु हुआ, तो लोगों ने कहा कि आप चुपचाप बैठे रहिए और लोगों को हुक्म दीजिए। सब लोग जेल जा सकते हैं, नमक बना सकते हैं। आप शांति से बैठे रहिए, बाकी लोग ये सब काम करेंगे। गाँधी जी ने कहा, ऐसा नहीं हो सकता। जो लोग साबरमती आश्रम में रहते हैं, उन आश्रमवासियों का सबसे पहला नंबर है, बाकी लोगों का पीछे नंबर है। उन्होंने सबसे पहले अपना नाम लिखाया। गाँधी जी के आश्रम में जो उन्नीस आदमी थे, उनको लेकर और आश्रम में ताला डालकर गाँधीजी अपने साथियों को लेकर नमक बनाने के लिए रवाना हो गए और वहाँ से जेल चले गए। उनके जेल जाने के बाद जो आग फैली, तो गाँधी जी के बच्चे, जनसेवक सभी ने कहा कि हमें भी जेल जाना चाहिए। यह प्रभाव व्याख्यानों का था? नहीं, त्याग के लिए गाँधी जी का स्वयं को प्रस्तुत करने का था। बिना कोई व्याख्यान दिए, बिना कोई कथा कहे, बिना कोई प्रवचन दिए, बिना कोई सम्मेलन बुलाए कितने सारे आदमी जेल चले गए। गाँधी जी के उस साहस को, त्याग को देखकर लोगों ने समझ लिया कि इस आदमी की कथनी और करनी के बारे में दो राय नहीं हैं। इसकी कथनी और करनी एक है।

सिख धर्म भी इसी का साक्षी

मित्रो! यही परंपरा बनी रही है और बनी रहेगी। सारे का सारा इतिहास, पुराणों का इतिहास, धर्म-शास्त्रों का इतिहास, अमुक का इतिहास जब हम देखते हैं, तो दूसरा कोई तरीका दिखाई नहीं पड़ता। यवनों के विरुद्ध जब सिख धर्म बनाया गया और इस बात की जरूरत पड़ी कि लोगों को हिंदू धर्म की रक्षा के लिए सिपाहियों के तरीके से, सैनिकों के तरीके से तनकर खड़ा हो जाना चाहिए और अपनी जान को जोखिम में डालना चाहिए। यह बहादुरी जब गुरुगोविंद सिंह पैदा करने वाले थे, तब उन्होंने लोगों से पूछा कि इसका कौन-सा तरीका हो सकता है? लोगों में बहादुरी कैसे भरी जा सकती है? अगर यह उपदेश से हो जाए कि उससे सब लोग सूली पर चढ़ जाएँ, सब मारे जाएँ और हम सुरक्षित बैठे रहेंगे, ऐसा नहीं हो सकता। गुरुगोविंद सिंह ने कहा, "पहला नंबर हमारा है।" उन्होंने जान-बूझकर ऐसी परिस्थितियाँ पैदा कीं, ताकि लोगों में जोश और जीवन पैदा हो सके।

मित्रो! गुरुगोविंद सिंह के दो बच्चे दीवार में चिनवा दिए गए। दो बच्चे युद्ध में थे। एक बच्चा लड़ाई के मैदान में जब मारा गया, तो दूसरा बच्चा, जो उसके साथ-साथ लड़ रहा था, भागकर आया और अपने पिताजी को खबर सुनाई कि हमारे भाईसाहब तो लड़ाई में मारे गए। गुरुगोविंद सिंह ने कहा, मारे गए, तो बेटा फिर तू कैसे आ गया? उस वक्त बच्चे से जवाब नहीं बन पड़ा। वह बेचारा समझ नहीं सका कि पिताजी का क्या इशारा है? पिताजी का यह इशारा था कि एक भाई लड़ाई के मैदान में मारा गया, तुझे भी वही करना चाहिए था। वह इशारा समझ गया, लेकिन उनके आगे जवाब क्या दे सकता था। उसने कहा, पिताजी! मुझे प्यास लगी थी। पानी पीने के लिए और आपको खबर सुनाने एवं सुस्ताने के लिए मैं आया था। ठीक है बेटा! जितनी देर सुस्ताना था सुस्ता लिया। हाँ और देख प्यासा है, तो बेटे बैरी के खून से अपनी प्यास बुझाना। चल यहाँ से और उसे भगा दिया।

मित्रो! वह चलता हुआ चला गया। मैं यह क्या कह रहा हूँ। ये अध्यात्म की बातें कह रहा हूँ, देव-परंपराओं की बातें कह रहा हूँ और ये बात कह रहा हूँ कि अगर दुनिया में कोई बड़े काम हुए हैं या बड़े काम हो सकते हैं, तो इससे कम में नहीं हो सकते और न इससे अधिक में हो सकते हैं। आज की बात समाप्त

॥ ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥

हमारा कुटुम्ब, तब और अब

(पूज्य गुरुदेव द्वारा दिया गया उद्‌बोधन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

तमाशों से उबरें, सच्चा अध्यात्म जानें

भाइयो! अपना ये कुटुंब हमने बहुत दिनों पहले बनाया था। उस समय हमारे पास बच्चे-ही-बच्चे थे। बच्चों के बारे में जो नीति अख्तियार करनी चाहिए, वो ही नीति हमारी थी। बच्चों के लिए, उन्हें देने के लिए क्या हो सकता है? पिताजी गुब्बारा देना, टॉफी देना, लेमनचूस देना। पिताजी चाबी की रेलगाड़ी लाना। हम बरफ की कुल्फी खाएँगे, आदि सारी-की-सारी माँगें, फरमाइशें-डिमांड बच्चे करते रहते हैं। ये कौन हैं? बच्चे। अध्यात्म क्षेत्र में फरमाइश करने वाले ये कौन हैं? बिलकुल बच्चे हैं, बालक हैं। इनको इसी बात की फिक्र पड़ी रहती है कि हमको दीजिए, हमको दीजिए। इसलिए ये बालक हैं। बेटे, आज से तीस साल पहले हमने बिलकुल बालकों का समूह जमा किया था और लोगों से कहा था कि हमारे पास जो कुछ है, आप ले जाइए। तब लोगों ने कहा था, पिताजी! आपके पास क्या है? गुब्बारे हैं। तो हमको दे दीजिए। बस एक गुब्बारा पेटी से निकाला, फूँक मारकर हवा भर दी और कहा ये रहा तुम्हारा गुब्बारा। एक ने कहा, पिताजी! आप तो सबको वेटा देते हैं? हाँ वेटे, हमारी पेटी में बहुत-सी चीजें हैं। ये देख टॉफी है, ये लेमनचूस हैं। ये नौकरी में तरक्की है। ये दमे की बीमारी का इलाज है।

ये क्या है? ये बेटे सब तमाशे हैं, खेल-खिलौने हैं। ये सब बहुत दिनों पहले थे। हमारी दुकान बड़ी हो गई है और अब मैं आपसे दूसरे तरीके से उम्मीद करता हूँ। अब आप गुब्बारे माँगते हैं, तो मैं नाराज होता हूँ और आप से कहता हूँ कि अब आप तीस साल के हो गए हैं। आपको शर्म नहीं आती, जो गुब्बारे माँगने आए हैं। तो पिताजी! मुझे क्या करना चाहिए? बेटे अब हम बुड्ढे हो गए हैं और तू कमाने लगा है। तुझे साढ़े छह सौ रुपये मिलते हैं। देख, हम ये फटा हुआ पाजामा पहनते हैं, हमारे लिए नया पाजामा ला दे और देख हम बुड्ढे हो गए हैं और हमको कम

दिखाई पड़ता है। डॉक्टर ने कहा है कि आँखों को टेस्ट कराना और चश्मा खरीद देना। डॉक्टर ने बताया था कि अट्ठाईस रुपये का चश्मा आएगा। बेटे, निकाल अट्ठाईस रुपये का चश्मा। बेटे, निकाल अट्ठाईस और हमारी आँखों का टेस्ट कराकर ला। चश्मा खरीदकर ला। अरे! पिताजी, आपने तो 'टर्न' ही बदल दिया। हाँ बेटे, बदल दिया। पहले हम गुब्बारे दिया करते थे, अब हम चश्मे के लिए पैसे माँगते हैं। ये क्या बात हो गई? ये तो बिलकुल उलटा हो गया। हाँ बेटे हमारा ही क्या उलटा हो गया, तेरा भी उलटा हो गया। जब तू गोदी में था, तब नंगा फिरता था और अब तो तू कच्छा भी पहनता है, पैंट भी पहनता है। तूने बदल दिया कि नहीं? हाँ महाराज जी! मैंने तो बदल दिया। बेटे बदल गया, तो हम भी बदल गए।

मित्रो! अब हमारा कुटुंब जवान हो गया है। हम जवान आदमियों से अपेक्षा करते हैं देने की। अब हम माँगने की अपेक्षा करते हैं और हमारा हक है कि हम आपसे माँगें। अब आपसे माँगा गया है और माँगना चाहिए। जहाँ कहीं भी वास्तविकता का उदय हुआ है, जहाँ कहीं भी जवानी आई है, जहाँ कहीं भी प्रौढ़ता आई है, जहाँ कहीं भी विवेकशीलता आई है, वहीं परंपरा पलट जाती है। अब हम आपसे लेने की परंपरा आरंभ करते हैं, क्योंकि आप अब जवान हो गए हैं। खासतौर से इस जमाने में, जिसमें हम और आप जिंदा हैं। यह जीवनभर का सवाल है। आज मनुष्य जाति जहाँ चली जा रही है, आदमी का चिंतन जिस गहराई के गड्ढे में धँसता हुआ चला जा रहा है, ये ठीक वही परंपराएँ हैं, जो कि रावण के जमाने में आई थीं। इसमें वह मनुष्यों को मारकर हड्डियों का ढेर लगा देता था। आज हड्डियों के ढेर, तो नहीं लगाए जाते, पर हम हड्डियों के ढेर को चलते-फिरते आदमियों के रूप में देख सकते हैं। हड्डियाँ जो जिंदा तो हैं, पर जिनको चूस लिया गया है। मैं समझता हूँ कि प्राचीनकाल में ज्यादा भले आदमी थे और शरीफ आदमी थे। कौन से आदमी? वे जो मारकर डाल देते थे, उनको मैं ज्यादा पसंद करता हूँ, क्योंकि तब आदमी को मारकर खत्म कर देते थे, लेकिन आज का तरीका बहुत गंदा है। आज तो आप रुला-रुलाकर मारते हैं, टोंच-टोंचकर मारते हैं, तरसा-तरसाकर मारते हैं। ये गंदा तरीका है। रावण के जमाने में तब भी अच्छा तरीका था, सीधे खत्म कर देने का।

आज की विडंबना

मित्रो! आज हम क्या करते हैं? आज हम अपनी स्वार्थपरता के कारण हर एक को चूसते हैं। किसको चूसते हैं? जो कोई भी हमारे पास आता है, हम उसको चूस जाते हैं, उसे जिंदा नहीं छोड़ना चाहते, केवल उसकी हड्डियाँ रह जाती हैं।

उदाहरण के लिए, जैसे हमारी बीबी। हमने अपनी बीबी को चूस लिया है। अब वह हड्डी का ढाँचा मात्र है। कैसे हुआ? बेटे, जब वह अपने बाप के घर से यहाँ आई थी, तो यह उम्मीद लेकर आई थी कि हमारा स्वास्थ्य अच्छा बनाया जाएगा। हमको पढ़ाया जाएगा। शिक्षित किया जाएगा और यह उम्मीद लेकर आई थी कि बाप हमको जितना स्नेह देता है, जितनी सुविधा हमें देता है, हमारा पति और भी अधिक प्यार और सुविधा देगा। लेकिन हमने उसको चूस लिया। हर साल बच्चे पैदा किए। कामवासना-पूर्ति की वजह से हमने उसके पेट में से पाँच बच्चे निकाल दिए। पाँच बेटियाँ हो गईं, अभी एक बेटा और होना चाहिए। अब वह बेचारी लाश रह गई है। बार-बार हमारे पास आती रहती है और कहती रहती है कि हमारे पेट में दरद होता है, कमर में दरद होता है और हमारे सिर में दरद होता है। मैं कहता हूँ कि बेटी तू जिंदा है, भगवान् को बहुत धन्यवाद दे कि ये पिशाच तुझे अभी तक जिंदा छोड़े हुए हैं। इसका बस चले, तो तुझे खाकर तेरी जिंदगी खत्म कर दे,चांडाल कहीं का। इसे तो अभी और बच्चे चाहिए।

मित्रो! उस बेचारी के पास न मांस है, न रक्त है शरीर में और न उसके पास जान है। उसके पास कुछ भी नहीं है। न जाने किस तरीके से साँस ले रही है और कैसे दिन बिता रही है। नहीं साहब! मेरा तो वंश चलना चाहिए। इस राक्षस का, दुष्ट का वंश चलना चाहिए? ये क्या है? ये बेटे, कसाईपन है। आज हर आदमी कसाई होता हुआ चला जा रहा है। आज हम देखते हैं कि न हमको अपनी बीबी के प्रति दया है, न अपने माँ-बाप के प्रति दया है, न अपने बच्चों के प्रति दया है। रोज बच्चे पैदा कर लेते हैं। इस बात की लिहाज-शर्म नहीं है कि आखिर इनको पढ़ाएगा कौन? शिक्षा के लिए पैसा कहाँ से आएगा? इनको खेलने के लिए रेल कहाँ से आएगी? हमको तो बस काम-वासना से प्यार है। हम तो चौरासी बच्चे पैदा करेंगे। आज आदमी चांडाल होता हुआ चला जा रहा है।

मित्रो! आज हमें किसी के ऊपर दया नहीं है। हमारे पास कहीं भी धर्म नहीं है। हमारे पास कहीं भी ईमान नहीं है। आज आदमी इतना खुदगर्ज होता हुआ चला जा रहा है कि मुझको ये मालूम पड़ता है कि हमारी खुदगर्जी का पेट इतना बढ़ता हुआ चला जा रहा है कि इंसानों से हमारा गुजारा नहीं हो सकता। अब जो कोई भी सामने आएगा, हम उसको अपनी खुदगर्जी का शिकार बनाएँगे। किसको बनाएँगे? देवी-देवताओं में से जो भी हमारे चक्कर में फँसेगा, हम उसको खत्म करके रहेंगे। संतोषी माता हमारे चक्कर में आ जाएँगी, तो उनको बदनाम करके रहेंगे। हम उन्हें

दो बकरे खिलाएँगे और ये कहेंगे कि हमको डकैती में फायदा करा दो। हम उसको बदनाम कराकर रहेंगे। हर एक को हम बदनाम कराएँगे। जो कोई भी हमारा गुरु होगा, हम उसको बदनाम कराकर रहेंगे। हम कहेंगे कि हमारा गुरु ऐसा है, जिसको न इंसाफ की जरूरत है, न उचित-अनुचित की जरूरत है। जो कोई भी हाथ जोड़ता है, जो कोई भी सवा रुपये देता है, उसी की मनोकामना पूरी कर देता है।

दुर्मतिजन्य दुर्गति से हुआ आदमी का अवमूल्यन

बेटे, हम कहाँ जा रहे हैं और न जाने क्या हो रहा है? हम जिस जमाने में रह रहे हैं, उसमें आदमी न जाने क्या होने जा रहा है? अगर आदमी इसी तरीके से बना रहा, तो उसका परिणाम क्या होगा? अभी जितनी ज्यादा मुसीबतें आई हैं, आगे उससे भी ज्यादा आएँगी। इससे तो अच्छा होता अगर युद्ध हो जाता और दुनिया खत्म हो जाती, लेकिन हमारी स्वार्थपरता जिंदा रही और आज हम पर हावी होती चली जा रही है। आदमी, जैसा निष्ठुर, जैसा नीच, जैसा स्वार्थी होता हुआ चला जा रहा है, अगर यही क्रम जारी रहा, तो मैं आपसे कहे देता हूँ कि आदमी-आदमी को मार करके खाएगा। पकाकर खाएगा कि नहीं, मैं नहीं जानता, लेकिन आदमी-आदमी से डरने लगेगा। अभी तक हमको भूत का डार लगता था, साँप का डर लगता था, चोरों का डर लगता था, लेकिन अब हमको मनुष्यों का डर लगेगा। इतना तो अभी ही हो गया है कि आदमी की कीमत उसके बिस्तर से कम हो गई है। आज आप बिस्तर लेकर धर्मशाला में जाते हैं, तो धर्मशाला वाला कहता है, आइए साहब! कमरा खाली है, लेकिन अगर आपके पास बिस्तर नहीं है, अटैची नहीं है और आप एक थैला लेकर जाते हैं और कहते हैं कि साहब! धर्मशाला में ठहरने की जगह है कि नहीं? धर्मशाला वाला कहता है कि आपके साथ और कौन-कौन हैं? आपका सामान कहाँ है?

अरे भाई! गरमी के दिन हैं, सामान की क्या जरूरत है? अरे साहब! आजकल बड़ी भीड़ है। सारी जगह भरी हुई है। कहीं जगह नहीं है। आप ऐसा कीजिए, चौथे नंबर की धर्मशाला है, वहाँ चले जाइए। वहाँ जाते हैं, तो वह कहता है कि अरे साहब! आप अब आए हैं? आपसे पहले पच्चीस आदमियों को मना कर दिया है कि यहाँ जगह नहीं है। ऐसा क्यों होता है? क्यों मना करते हैं? यह आदमी का मूल्य, आदमी की प्रामाणिकता, आदमी की इज्जत को बताता है कि आदमी की कीमत से धर्मशाला के बिस्तर की कीमत ज्यादा है। आज आदमी का मूल्य इतना गिर गया है। कल आदमी और भी भयंकर होने वाला है।

मित्रो! आदमी जब कल और भयंकर हो जाएगा, तब वह भूत बन जाएगा, पिशाच बन जाएगा। तब आदमी को देखकर आदमी भागेगा और कहेगा, "आदमी आ गया चलो भागो यहाँ से। वह देखो आदमी खड़ा है।" कल यही परिस्थितियाँ पैदा होने वाली हैं। यह हमारे मन का घिनौनापन है। अभी हमारे ऊपर स्वार्थ छाया हुआ है। हम समाज के किसी काम में भाग लेना नहीं चाहते। हम समाज के लिए कोई सेवा करना चाहते हैं, तो पहले यह देखते हैं कि सेवा के बहाने हमारा उल्लू सीधा होगा कि नहीं होगा। हमारा उल्लू सीधा होता है, तो बेटे हम संस्था में जाते हैं, कमेटी में जाते हैं, प्रेसीडेंट बनते हैं, मीटिंग में जाते हैं, अगर उल्लू सीधा नहीं होता है, तो कहते हैं कि समाज के जीवन से हमारा कोई लगाव नहीं है, कोई संबंध नहीं है।

मित्रो! लोकहित के लिए हमारे मन खाली होते चले गए। उदारता हमारे मन में से निकलती चली जा रही है और निष्ठुरता हमारे रोम-रोम में घुसती चली जा रही है। परिणाम क्या होगा? आप देख लेना, इसका परिणाम बहुत भयंकर होगा। कलियुग के बारे में पुस्तकों में जो बताया गया है, उसको मैं सही मानता हूँ। आदमी का चिंतन जैसा और जितना घटिया होगा, मुसीबतें उसी हिसाब से आएँगी। आज भगवान् की दी हुई मुसीबतें हमारे पास आती हुई चली जा रही हैं। बीमारियाँ हमारे पास बराबर बढ़ रही हैं। डॉक्टर बढ़ रहे हैं, अस्पताल बढ़ रहे हैं, लेकिन बीमारियों का दौर अभी और बढ़ेगा। डॉक्टर कितने बढ़ गए हैं, भगवान् करे डॉक्टर दोगुने-चौगुने हो जाएँ। लेकिन बीमारियों का क्या हो जाएगा? बीमारियाँ अच्छी नहीं हो सकतीं। बीमारियाँ सौ गुनी ज्यादा होंगी, हजार गुना ज्यादा होंगी। वे तब तक अच्छी नहीं हो सकतीं, जब तक आदमी आध्यात्मिकता के रास्ते पर लौटकर नहीं आएगा, तब तक आदमी का पिंड बीमारियों से नहीं छूटेगा। और घर का नरक? बेटे घर का नरक भी दूर नहीं हो सकता।

अगले दिन और खराब होंगे

गुरुजी! हमारे घर का नरक तो दूर हो जाएगा। कैसे हो जाएगा? गुरुजी! हमने तो अपने चारों बच्चों को चार-चार सौ रुपया महीना देकर देहरादून के पब्लिक स्कूल में भेज दिया है। उससे क्या हो जाएगा? उससे गुरुजी! हमारे बच्चे ऐटीकेट सीखकर के आएँगे। ऐटीकेट क्या होता है? एटीकेट उसे कहते हैं, जब कोई आदमी आए और घर में पानी पीने को माँगे, तो उसको कहना चाहिए, "थैंक यू वैरी मच।" तो क्या इसी को एटीकेट कहते हैं? हाँ इसी को कहते हैं। हमने चार सौ रुपये महीने पर बोर्डिंग स्कूल में अपने बच्चे को दाखिल करा दिया है। वह

क्रीज किया हुआ पैंट पहनेगा। हमारा लड़का अच्छा बनेगा। नहीं बेटे, तेरा लड़का अच्छा नहीं बन सकता, क्योंकि उसके भीतर, उसकी जीवात्मा में भाइयों के लिए, बहनों के लिए, माता-पिता के लिए जो प्रेम और सेवा की वृत्ति होनी चाहिए, वह कहाँ से आएगी? बेटे, हमको ये मालूम पड़ता है कि अगले दिन बहुत बुरे आने वाले हैं। अगले दिनों युद्ध के दौर भी आ सकते हैं। बीमारियों के दौर भी आ सकते हैं। टेंशन बढ़ता हुआ चला जा रहा है। क्यों महाराज जी! सबको टेंशन हो जाएगा? शायद सबको हो जाए। अमेरिका में तो छाप भी दिया गया है कि सिगरेट पीजिए, टेंशन बुलाइए। सिगरेट पीजिए, कैंसर बुलाइए। तो क्या सबको टेंशन हो जाएगा? हाँ। अगर टेंशन न हुआ, तो और बीमारी हो जाएगी। डायबिटीज हो जाएगी। नींद न आने की शिकायत हो जाएगी। पेप्टिक अल्सर हो जाएगा और बहुत-सी बीमारियाँ हैं, जो आदमी को धर दबोचेंगी।

ये कैसे हो जाएँगी? मित्रो! आदमी की जो घटियाँ वृत्तियाँ हैं, वे न केवल आदमी के शरीर को, वरन् उसके ईमान को और अंत:करण को गलाती और जलाती चली जाएँगी। घर नरक बनते चलते जाएँगे। नहीं साहब! हमारे बेटे की बहू तो एम.ए. पास है। तो बेटे, तेरे घर में जल्दी नरक आएगा। हमारे बेटे की बहू तो इंटर पास है। तो तेरे घर में थोड़ी देर भी हो सकती है। अरे साहब! हमारी औरत तो बिना पढ़ी-लिखी है। तो तेरे घर और भी कुछ ज्यादा दिन तक शांति रह सकती है। लेकिन अगर मेरी बहू एम.ए. पास है, तो बेटे, तेरे घर में नरक जल्दी आएगा, तू देख लेना।

मित्रो! ऐसा क्यों होता चला जा रहा है? शिक्षा की दृष्टि से, धन की दृष्टि से, अमुक की दृष्टि से, सब तरह से आदमी संपन्न होता चला जा रहा है, लेकिन ईमान की दृष्टि से, अंतरंग की दृष्टि से इतना खोखला होता चला जा रहा है कि उसके ऊपर मुसीबतें आएँगी। नेचर हमारे ऊपर मुसीबतें पटक देगी। वह हमें क्षमा करने वाली नहीं है। हमारे शरीर का स्वास्थ्य सुरक्षित रहने वाला नहीं है। हमको किसी से प्यार-मोहब्बत रहने वाली नहीं है। हम मरघट के प्रेत-पिशाच के तरीके से अब जिंदा रहने वाले हैं। मरघट के प्रेत-पिशाच के तरीके में एक ही बात होती है कि न तो कोई उसका होता है और न वह किसी का होता है। प्रेत-पिशाचों में क्या फर्क होता है? बेटे, एक ही होता है, हर भूत के मन की ये बनावट होती है कि न वह किसी का और न कोई उसका। तो महाराज जी! आपने देखे हैं कि भूत कैसे होते हैं? हाँ, हमने देखे हैं और आपको भी दिखा सकते हैं।

चलते-फिरते प्रेत-पिशाच

ये भूत आपको कहाँ मिलेंगे? मित्रो! आप पाश्चात्य देशों में चले जाइए। वहाँ आपको प्रेत मिलेंगे, पिशाच मिलेंगे। कैसे? जो अशांत-ही-अशांत हैं। पैसा जिनके पास अंधाधुंध है, लक्जरी जिनके पास बहुत सारी है, टेलीविजन है, पीने को फलों का जूस है, लेकिन वे इतने अधिक अशांत हैं, टेंशन में हैं कि प्रेत-पिशाचों से कम नहीं हैं। न कोई उनका और न वे किसी का। न बीबी उसकी, न भैया उसका। दोनों-के-दोनों वेश्या और भड़ुवे हैं। जब तक दोनों आते हैं, तब तक तमाशा दिखाते हैं और जब मन भर जाता है, तो एक-दूसरे को लात मारकर भगा देते हैं। हम ये किसकी बात कह रहे हैं? बेटे, इसी को पिशाच कहते हैं। पाश्चात्य देशों में यही होता है।

मित्रो! इसका परिणाम क्या होगा? इसका परिणाम यह होगा कि हमारा अंतरंग खोखला होता चला जाएगा। पैसा बढ़ेगा, तो हम क्या कर सकते हैं? शिक्षा बढ़ेगी, सभ्यता बढ़ेगी, तो हम क्या कर सकते हैं? दौलत बढ़ेगी, तो हम क्या कर सकते हैं। मित्रो! इससे आदमी के ऊपर मुसीबतें ही आएँगी। हम और आप जिस जमाने में रहते हैं, बेटे, हमारे प्राण निकलते हैं—उसे देखकर। जब हम भविष्य की ओर देखते हैं, विज्ञान की ओर देखते हैं, तब हमें खुशी होती है कि हमारे बाप-दादे कच्चे मकानों में रहते थे और हम पक्के में रहते हैं। हमारे बाप-दादों में से कोई पढ़ा-लिखा नहीं था और हम सब पढ़े-लिखे हैं। सुविधाओं को देखते हैं, तो हमारे पास टेलीफोन है और बहुत सारी चीजें हैं, लेकिन जब उनके साफ-सुथरे जीवन को, उज्ज्वल चरित्र को देखते हैं, तो उस दृष्टि से हम किस कदर दिनों दिन घटते हुए चले जा रहे हैं, यह स्पष्ट दिखाई देता है।

विवेकानंद के पास रामकृष्ण परमहंस जाया करते थे और कहते थे कि बेटा! हमारा कितना काम हर्ज होता है? तू समझता नहीं है क्या? महाराज जी मैं बी.ए. करूँगा, एम.ए. करूँगा, नौकरी करूँगा। नहीं बेटे, तू नौकरी करेगा, तो मेरा काम हर्ज हो जाएगा और हम जिस काम के लिए आए हैं और तू जिस काम के लिए आया है, सो उसका क्या होगा? नहीं महाराज जी! देखा जाएगा, पहले तो मैं नौकरी करूँगा। नहीं बेटे, ऐसा नहीं हो सकता। एक दिन रामकृष्ण परमहंस रोने लगे। उन्होंने कहा, बेटे तू नौकरी करेगा, तो मेरा काम हर्ज होगा। मित्रो! विवेकानंद चले गए और रामकृष्ण ने उन्हें क्या-से-क्या बना दिया। कई आदमी कहते रहते हैं कि गुरुजी! हमको आशीर्वाद देकर आप विवेकानंद बना सकते हैं? बेटे, हम

आपको बना सकते हैं। इसके लिए हम व्याकुल भी हैं और लालायित भी, लेकिन पहले तू कीमत तो चुका। नहीं, महाराज जी! कीमत तो नहीं चुकाऊँगा। आप तो आशीर्वाद दीजिए। बेटे, जो तू आशीर्वाद-ही-आशीर्वाद माँगता है, वह जीभ की नोंक से कह देने भर से आशीर्वाद नहीं हो जाता। उसे आशीर्वाद नहीं कहते। आशीर्वाद के लिए आदमी को अपना पुण्य देना पड़ता है, मनोयोग देना पड़ता है, तप देना पड़ता है, श्रम देना पड़ता है। नहीं, महाराज जी! जीभ हिला देते हैं, सो वही आशीर्वाद हो जाता है।

आशीर्वाद इतना सस्ता नहीं

बेटे, तू जीभ हिलाकर के आशीर्वाद माँगता है। मैं समझता हूँ—तू जीभ हिलाकर के ही राम के नाम को भी हजम करना चाहता है, मंत्र को हजम करना चाहता है। जीभ को हिलाकर और न जाने क्या-क्या काम कराना चाहता है। मंत्र जपने से देवता मिल सकते हैं, स्वर्ग मिल सकता है, तो फिर गुरुजी का आशीर्वाद क्यों नहीं मिल सकता? जीभ से सब चीजें मिल सकती हैं। हाँ, महाराज जी! जीभ की नोंक हिलाइए फिर देखिए, क्या करामात आती है। हाँ बेटे, जीभ की नोंक हिलाकर वहाँ चला जाना बैंक में और जीभ हिला देना-दीजिए दो हजार रुपये। देखें कहाँ से लाएगा जीभ हिलाकर। बेटे, तुझे सब जीभ-ही-जीभ दिखाई पड़ती है और कोई दूसरी चीज नहीं दिखाई पड़ती। गुरुजी का आशीर्वाद भी जीभ और हमारा भजन भी जीभ, सब जीभ-ही-जीभ। क्रिया की जरूरत ही नहीं पड़ेगी? हाँ गुरुजी! क्रिया की क्या जरूरत है। आप तो जीभ हिला दीजिए, बस हो जाएगा, आशीर्वाद। बेटे, ऐसा कोई आशीर्वाद नहीं है, न था और न कभी होगा।

युग की पुकार सुनिए

मित्रो! फिर क्या करना पड़ेगा? अब मैंने आपको इसलिए बुलाया है क हमको आपकी आवश्यकता आ पड़ी है। हम तीस साल से कुटुंब बनाकर रह रहे थे और तीस साल से आपको बुला रहे थे। अब हम आपसे पूछते हैं कि क्या आपके लिए ऐसा संभव है कि आप अपने जीवन में दैवी संपदा का खरच और सबूत दे पाएँ। क्या आपके लिए यह संभव है कि आप अपने जीवन में त्याग का, बलिदान का, परोपकार का और परमार्थ का कोई प्रमाण दे सकते हैं कि नहीं? मित्रो! अभी ये लड़कियाँ गा रही थीं और मेरे मन में भी लहर आ रही थी। वे गा रही थीं, जरूरत आ पड़ी है, "काल की भी चाल मोड़ो तुम।" ये समय ने पुकार की है, युग ने पुकार की है, धर्म ने पुकार की है, मानवी सभ्यता ने पुकार की है कि

आपके पास कुछ है, तो आप दीजिए। गुरुजी हमारे पास नहीं है। ठीक है, जहाँ तक पैसे का सवाल है, मैं जानता हूँ कि आपके पास पैसा होता तो शायद आप मेरे पास न आते। मैं जानता हूँ आपकी गरीबी को और परेशानी को, पर इस गरीबी के बीच में भी मेरी ये आँखें चमकती हैं और एक चीज के बारे में दृष्टि डालती हैं, तो पाती हैं कि अभी भी आपके पास मन है, आपके पास कलेजा है। आपके पास दिल है। अगर आप अपने मन, अपने हृदय और अपने श्रम की बूँदें लगा सकते हों, तो इस परीक्षा की घड़ी में आपका आना जीवन धन्य बनाने के लिए पर्याप्त है।

मित्रो! अब परीक्षा की घड़ी सामने आ गई है। इसको हमने पुर्नगठन योजना कहा है। इसके कितने पहलू हैं, पहले भी हमने इसके बारे में बताया था और फिर आज बताएँगे कि इसके क्या परिणाम आ सकते हैं। हम अपने जवान कुटुम्ब से क्या कराना चाहते थे और क्या करा सकते हैं? क्या संभावना है? हाँ, सौ फीसदी संभावना है। महाराज जी! आप तो ऐसे ही सपने देखते हैं। हाँ बेटे, हमने सपने ही देखे हैं और हमारे सपने पूरे होकर रहे हैं। हमने सपने देखे, जब गायत्री तपोभूमि नहीं बनी थी। जब हमारे पास मात्र छह हजार रुपये थे, तब हमने 'गायत्री तपोभूमि' का एक नक्शा छापा था—अखण्ड ज्योति पत्रिका में, तो लोगों ने कहा, क्यों साहब! आपने तो बड़ा लंबा-चौड़ा सपना छाप दिया। हाँ भाई ये सपना है। गायत्री तपोभूमि हम ऐसे ही बनाएँगे। महाराज जी! ये तो कितनों रुपयों की हो जाएगी? आपके पास इतने रुपये कहाँ हैं। देख बेटे, मेरे पास छह हजार रुपये हैं। इतने से नहीं बनेगी, तो छह लाख से बन जाएगी।

मित्रो! हमारा ख्वाब और हमारा सपना पूरा होकर के रहा। गायत्री तपोभूमि जो बनी है, वह उससे तीन-चार साल पहले छपे हुए गायत्री तपोभूमि के चित्र से हू-बहू मिलती हुई बनाई गई है हमारे सपने युग को बदलेंगे, नया जमाना लाएँगे। दैवीय सभ्यता और दैवीय संपदा की फिर से स्थापना करेंगे। हम असुरता को चैलेंज करेंगे। क्यों? क्योंकि हम मनुष्यता से प्यार करते हैं, क्योंकि हम मानवी भविष्य को उज्ज्वल बनाना चाहते हैं, क्योंकि हमको अपनी नई पीढ़ियों के बारे में बड़ी उमंग है। हम अपनी नई पीढ़ियों को बहुत प्यार करते हैं। जिन मुसीबतों से हम गुजर रहे हैं, अपनी नई पीढ़ियों को गुजरवाना नहीं चाहते, क्योंकि हम बच्चों को बहुत प्यार करते हैं।

इसलिए मित्रो! हम नई सभ्यता लाने के लिए और नया युग लाने के लिए प्रयत्न करते हैं और उस प्रयत्न के लिए आपसे सहयोग माँगते हैं। पुर्नगठन योजना

हमारे और आपके समय की परीक्षा की एक कसौटी है। इसमें हम आपका पी.एम.टी. के लिए इम्तिहान लेते हैं, क्योंकि अगले चरण में, जिनमें हमको ब्रह्मवर्चस की स्थापना भी करानी है, अपने अनुदान भी देने हैं, आपके यश भी अजर-अमर बनाने हैं, आपकी जीवात्मा में शक्ति का संचार भी करना है। इसके लिए यह देखना है कि आप लोगों में से कुछ में जान है, जिसको 'दैवीय सभ्यता' कहते हैं, 'दैवीय संपदा' कहते हैं। उसमें त्याग-बलिदान की बात होती है। क्या उसके लिए आप कुछ कर पाएँगे?

दैवीय संपदा का विस्तार करें

साथियो! दैवीय सभ्यता जिसका अर्थ भजन करना नहीं होता, वरन् जीवन को दैवीय सभ्यता के अनुरूप ढाल लेना होता है। छोटे-से अनुदान के रूप में हर एक का हमने समय माँगा है। हमने जो कार्यक्रम बनाए हैं, सब एक उद्देश्य से बनाए हैं। वह सब इसलिए बनाए हैं कि हममें से कोई भी आदमी निष्क्रिय न रहने पाए। हर एक से कहा है कि अगर आपके अंदर निष्क्रियता है, तो उसे दूर कीजिए और अपने अंदर सक्रियता का विकास कीजिए। अपने युग निर्माण परिवार के हर सदस्य को हम सक्रिय देखना चाहते हैं। किसके लिए? जो हमारा मिशन है, उसके लिए। गुरुजी! आपने किसको क्या-क्या सक्रियता सौंपी है? बेटे, हमने उन आदमियों के लिए भी, जो घोर व्यस्त हैं, कार्य सौंपा है। जिसके पास योग्यता है, उनको भी कार्य सौंपा है और कहा है कि आप इस विचारधारा को फैलाने में योगदान दीजिए, मदद कीजिए।

महाराज जी! हम आपकी मदद कैसे करें? बेटे, आपके पास जो हमारी रिसर्च है, जिसको आपने माना है, जो आप हमारी पत्रिकाएँ पढ़ते हैं, उनको आप पाँच आदमियों को पढ़ाइए। अगर आप पुस्तकालय नहीं चला सकते हैं, तो कोई बात नहीं, लेकिन आप एक पत्रिका को पाँच आदमियों को पढ़ा सकते हैं। इससे हमारा मिशन पाँच गुना अधिक दो महीने के भीतर हो जाएगा। इस तरह जितना हमने तीस साल में किया है, उतना आप एक साल में कर सकते हैं।

गुरुजी! और हम क्या कर सकते हैं? बेटे, कब से हमारे झोला पुस्तकालय चल रहे हैं, चल पुस्तकालय चल रहे हैं। इन्हें आप दो घंटे भी चला दिया करें, तो मजा आ जाए। दो घंटे का उदाहरण मैं अक्सर देता रहता हूँ। हमारे यहाँ सुलतानपुर के कई बच्चे आए हुए हैं। वहीं के एक वकील हैं—लखपत राय। वे अभी भी हैं, यद्यपि अब बुड्ढे हो गए, शरीर उतना काम नहीं करता। लेकिन अब से दस साल

पहले उनका नियम था कि वे चल पुस्तकालाय की धकेलगाड़ी लेकर चल पड़े बाजार में, लीजिए साहब पुस्तक पढ़िए। लीजिए हमारे गुरुजी का साहित्य पढ़िए, युग निर्माण का साहित्य पढ़िए। जितने भी मुवक्किल थे, दुकानदार थे, सबको साहित्य देते हुए चले जाते थे। सारे-के-सारे सुलतानपुर में उन्होंने इस तरह रौब गाँठ दिया।

एक अकेले का पुरुषार्थ

एक बार मैं सुलतानपुर गया। पहले भी कई बार जा चुका था। लोग पाँच कुंडीय यज्ञ कराते थे, तब सौ-पचास आदमी इकट्ठा हो जाते थे। मुझे याद है, एक-दो बार मेरे प्रवचन भी हुए थे। वकील साहब ने जब मुझसे कहा, गुरुजी! एक बार आप आ जाएँ, तो मजा आ जाए। मैंने कहा, क्या आएँगे आपके यहाँ, पाँच कुंडीय यज्ञ ही तो करते हैं? नहीं, गुरुजी! अबकी बार बड़ी जोर से करेंगे। कैसे करेंगे? सौ कुंड का यज्ञ करेंगे। मित्रो! यज्ञ करने का निर्धारण होने के बाद चलते समय मैंने उनसे कहा कि जाने से पहले गायत्री तपोभूमि के लिए कुछ पैसे छोड़ जाने का हमारा मन है। क्या आप कुछ पैसे इकट्ठा करा सकते हैं? हाँ गुरुजी! हम करा देंगे। कितना? पच्चीस हजार का तो हमारा वायदा है, फिर आगे आपका भाग्य है।

मित्रो, उन्होंने क्या काम किया कि सारे शहर को हमारा साहित्य पढ़ा दिया और हर एक व्यक्ति से ये कहा, हमारे गुरुजी जिनका कि आपने साहित्य पढ़ा है, क्या आपको पसंद है? सबने एक स्वर से कहा कि अरे भाई! पढ़ा ही क्या, हम तो पगला गए हैं, उनके विचारों को पढ़कर। हम गुरुजी को बुलाकर लाएँ, तो आप उनके लिए कुछ खरच करेंगे क्या? उनको बुलाएँ, तो आप अपना कुछ समय हर्ज करेंगे क्या? हाँ साहब! खरच करेंगे। मित्रो! उन्होंने तीन-चार दिन का कार्यक्रम रखा था। जब मैं वहाँ गया, तो मैंने अचंभा देखा। देखा कि सुलतानपुर, जो कि छोटी-सी बस्ती है, छोटा-सा जिला है, वहाँ उन्होंने लगभग पचास हजार आदमियों के बैठने के लिए पांडाल बनाया था। मैं सोचता हूँ, उसमें एक लाख से कम आदमी नहीं थे। इतना बड़ा विशाल आयोजन देखकर मैं अचंभे में पड़ गया कि ये सुलतानपुर है या और कोई शहर है। इसकी तो आबादी ही इतनी है। दूर-दूर के देहातों से लोग आए थे।

मित्रो! मैं यह एक व्यक्ति की बात कह रहा हूँ कि एक अकेले आदमी ने क्या-क्या कर डाला। एक आदमी की सक्रियता का परिणाम ये हुआ कि उसने सारे सुलतानपुर को जगा दिया था। तीन-चार दिन यह चमत्कार मैंने देखा और जब

विदा हुए, तो मैं समझता हूँ कि उन्होंने हमको यज्ञ में से बचाकर पैतीस-चालीस हजार रुपये दिए थे। यह मैं एक आदमी की करामात कहता हूँ, जिसमें उसके सहयोगी भी शामिल थे। उन्होंने भी सहयोग किया, **पर मैं बात एक की कहता हूँ। आपसे पूछता हूँ कि आप क्या ये काम नहीं कर सकते? आप एक घंटा समय नहीं दे सकते? दो घंटे समय नहीं दे सकते? कलेजा है आप में? हृदय है आप में? हिम्मत है आप में? जीवन है आप में? निष्ठा है आप में? श्रद्धा है आप में? अगर ये नहीं हैं, तो ये बहाने मत बनाइए कि शाखा बंद हो गई है। कोई आता नहीं है। सबमें लड़ाई हो गई है। सबमें फूट फैल गई है। गुरुजी! कोई सुनता नहीं है। कमेटी में कोई आता नहीं है। धूर्त, बेकार की बातें बकता है, वह नहीं करता, जो मैं कहता हूँ।** कितनी बार एक ही बात को कहता है। मैं पूछता हूँ तू क्या करता है?

मिशन—नया युग-नया मानव का भविष्य

मित्रो! **जब एक आदमी लड़ने के लिए खड़ा हो जाए, तो क्या कर सकता है,** यह बात मैंने एक उदाहरण देकर बताई। ऐसे मैं ढेरों उदाहरण बता सकता हूँ आपको। एक आदमी सक्रिय हो गया, तो उसने सारे इलाके को सक्रिय कर दिया। आपसे मैं पूछता हूँ कि आपके अंदर अगर निष्ठा है, तो क्या आप समय नहीं दे सकते मिशन के लिए? मिशन से मतलब 'नया युग' से है। मिशन से मतलब मानवी सभ्यता, मानवी भविष्य। इस पर आपकी आस्था है या कुछ भी नहीं है?नहीं, महाराज जी! हमारी तो बेटे पर आस्था है और पैसे पर आस्था है। तो बेटे, मैं तुझे बालक मानूँगा और ये कहूँगा कि अध्यात्म की किरणें तेरे पास नहीं आई। अध्यात्म की किरणें जब भी आई हैं, तो देवत्व को आसुरी सभ्यता खिलाफ खड़ा होना पड़ा है। हमारे अंदर जब गायत्री मंत्र आया, तो साथ में देवत्व भी आया। देवत्व और गायत्री मंत्र दोनों ने मिलकर के चमत्कार दिखाया। बेटे, तू तो गायत्री मंत्र लिए ही फिरता है, देवत्व कहाँ है तेरा? देवत्व तो है ही नहीं। केवल मंत्र-ही-मंत्र रटने चला है।

मित्रो! क्या करना पड़ेगा? मैं चाहता हूँ कि हमारी परीक्षा की घड़ी में आप लोग साथ दें। पुनर्गठन योजना आपकी एक परीक्षा है, ब्रह्मवर्चस के आधार पर और दूसरे आधारों पर यह आपकी परीक्षा है। हम अपने कुटुंब को कुछ और मजबूत बनाना चाहते हैं, सक्षम बनाना चाहते हैं, लेकिन हम क्या कर सकते हैं? **आप चाहें, तो झोला पुस्तकालय के माध्यम से, चल पुस्तकालय के माध्यम**

से इसे अकेले ही चला सकते हैं। तीर्थ यात्राओं के माध्यम से, स्लाइड प्रोजेक्टर के माध्यम से अकेले ही चला सकते हैं। यह मैं एक व्यक्ति की बात कहता हूँ। अब हम नए किस्म के स्लाइड प्रोजेक्टर बनाने वाले हैं। अब कुछ ऐसी योजना बना रहे हैं, जिससे ये सब चीजें तीन सौ-साढ़े तीन सौ के भीतर ही तैयार हो जाएँ। आप तीन सौ रुपये खरच कीजिए और हर घर में हमारा सिनेमा दिखाइए।

मित्रो! यह मैं अकेले की बात कहता हूँ, 'एकला चलो रे'—'एकला चलो रे' की बात कहता हूँ। **अकले चलकर भी आप जाने क्या-से-क्या कर सकते हैं। तीर्थयात्रा के लिए, साइकिल यात्रा के लिए, पदयात्रा के लिए आप निकल सकते हैं और एक-दो आदमी साथ ले सकते हैं। दीवारों पर सद्वाक्य लिखने का काम आप अकेले कर सकते हैं। अकेले के इस तरह ये इतने काम हैं, झोला पुस्तकालय, तीर्थयात्रा, दीवारों पर वाक्य-लेखन आदि। ये सब एक आदमी का काम है। इसे एक व्यक्ति अकेले ही कर सकता है।** इसलिए अगर आप चाहें, अगर आपके अंदर जीवन हो, देवत्व की भावना उदय होती हो, तो आप इन सब चीजों को कर सकते हैं।

संगठित हों, इंजन बनें

यह तो हुई नंबर एक बात। नंबर दो—अगर आप अकेले नहीं कर सकते और आप में कोई संगठन की वृत्ति है, तो संगठन की वृत्ति के लिए आप हमारा हाथ बँटाइए और अपना थोड़ा समय दीजिए। टोली नायकों का काम स्थानीय है। आप उसमें सम्मिलित होकर के एक घंटा-दो घंटा समय लगा सकते हैं और आपको लगाना चाहिए। दस-दस आदमी की आप टोली बना लें और पचास पाठकों को इकट्ठा कर लें, तो बेटे, ये साठ की मंडली होती है। साठ व्यक्तियों की मंडली बहुत बड़ी होती है। **साठ डाकुओं ने सारे चंबल को हिलाकर रख दिया था। साठ आदमियों का संगठन अगर आपके पास है, तो आप गजब कर सकते हैं। अगर आपके पास जीवट है, तो साठ आदमी बहुत होते हैं। इंजन अगर जीवित हो, तो साठ डिब्बों की रेलगाड़ी जाने कहाँ-से-कहाँ जा सकती है। इंजन जिंदा हो तो, लेकिन अगर इंजन मरा हुआ हो तो बेटे हम नहीं जानते।**

इसलिए मित्रो! टोली नायकों की दृष्टि से आपको काम करना चाहिए। आप चाहें, तो समय दिए बिना अपने स्थानीय क्षेत्र में घर में रहकर एक काम यह भी

कर सकते हैं कि **आप जन्मदिन मनाने की परंपरा को जीवंत करने के लिए समय लगा सकते हैं। घर-घर में गोष्ठियाँ, घर-घर में सभा, घर-घर में सम्मेलन हर जन्मदिन के माध्यम से फिर से शुरू कर सकते हैं। शुरू के दिनों में दिक्कत मालूम पड़ेगी, फिर बाद में आप देखेंगे कि कितना ज्यादा लोग सहयोग देते हैं।** आपको साथ-साथ सत्संग में सहयोग नहीं मिलता था, लेकिन अगर आप देखें, तो पाएँगे जन्मदिन के आधार पर जन्मदिन मनाते समय लोग कितना खुश होते हैं। उसमें व्यक्ति को अपनी प्रसन्नता व्यक्त करने का मौका मिलता है, खुशी का मौका मिलता है। सब आदमी आशीर्वाद देते हैं, कोई फूल चढ़ाता है और कोई प्रणाम करता है। आज हमारा जन्मदिन है। हम अपना मुँह शीशे में देखते हैं, तो कितनी खुशी होती है। आप ये भी नहीं जानते? इसमें जनता के सहयोग का कितना लाभ भरा पड़ा है, क्या आप इसे नहीं जानते? अगर आप हकीकत में आएँ, तो आप इसे देख सकते हैं। हकीकत में नहीं आएँ, तब मैं नहीं कह सकता। **अगर आप जन्मदिन मनाने की परंपरा को फिर से फैला सकें, तो आप देखेंगे कि ये मिशन, जिसमें देवत्व के पुनरुज्जीवन का संकल्प छिपा हुआ है, उसको जिंदा करने के लिए आप क्या कर सकते हैं।**

वार्षिकोत्सव अनिवार्य

बेटे, एक और काम के लिए हमने आपसे कहा था कि अगले वर्ष हम और भी सामूहिक जोश उत्पन्न करेंगे, वार्षिकोत्सव के रूप में। अब यह नियम बना दिया गया है कि **कोई भी शाखा ऐसी नहीं रहनी चाहिए, जिसका कि वार्षिकोत्सव न मनाया जाता हो। जो शाखा वार्षिकोत्सव नहीं मनाएगी,** उसका हमारे रजिस्टर में से शाखा के नाम से नाम कट जाएगा। क्यों साहब! नाम कट जाएगा कि नाक कट जाएगी? चाहे जो समझ ले बेटा। तू अपने संबंध में समझ ले कि नाक कट गई और हम समझ लेंगे कि तेरा नाम कट गया। बात एक ही है।

मित्रो! हमने हर एक जीवंत शाखा के ऊपर यह वजन डाला है कि उसको वार्षिकोत्सव करना ही पड़ेगा और करना ही चाहिए। कम-से-कम कितने में यह कार्यक्रम हो सकता है? हमने छाप दिया है कि ढाई सौ से चार सौ रुपये तक में बहुत बढ़िया यज्ञ हो सकता है, आयोजन हो सकता है। इसमें हजार आदमी भी आएँ, तो यज्ञ भी हो जाए और जुलूस भी निकल जाए, सब हो जाए। यह सब चार-पाँच सौ रुपये में हो सकता है। इतना पैसा गुरुजी! हम इकट्ठा कर लेंगे। हाँ, बेटे! इतना इकट्ठा करने में क्या लगता है। एक दिन की तनख्वाह निकालता हुआ चला

जाए, तो एक साल में अकेले ही इतना खरच कर सकता है। बेटे, एक माह में तुझे कितने रुपये मिलते हैं। सात सौ रुपये मिलते हैं। तो एक दिन की तनख्वाह कितनी होगी? गुरुजी! इक्कीस-बाईस रुपये होती है। तो बाईस रुपया महीने के हिसाब से कितना हो गया? महाराज जी! ये तो कोई दो सौ साठ रुपये हो गए। बस बेटे, तू अकेला हो जा और हर महीने में एक दिन की तनख्वाह निकालता चल। अब साथ में दस व्यक्ति और ले ले। इसी से एक वार्षिकोत्सव पूरा हो जाएगा। नहीं, गुरुजी! इससे चंदा माँगूंगा, उससे माँगूंगा। अपने पास से कुछ देगा? अपने में से तो कुछ नहीं दूँगा। कंजूस कहीं का, पहले अपने पास से निकाल, तब चंदा माँगना।

मित्रो! क्या करना चाहिए? वार्षिकोत्सव में कहीं कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। अगर आपके पास रोटी खाने के लिए आर्थिक तंगी नहीं है, सिगरेट पीने के लिए आर्थिक तंगी नहीं है, सिनेमा देखने के लिए आर्थिक तंगी नहीं है। हाँ, महाराज जी! इसके लिए तो तंगी नहीं है। बड़ा आया आर्थिक तंगी वाला। न उद्देश्य को समझता है, न धर्म को समझता है, न संस्कृति को समझता है और न देवत्व को समझता है। आर्थिक तंगी की रट लगाता है। मित्रो! चाहे तो यह सब एक आदमी अकेले ही कर सकता है।

हमारा एक ही लक्ष्य

मित्रो! हम चाहते हैं कि वार्षिकोत्सव हर जगह हो। उसके लिए हमको एक और दिक्कत पड़ेगी। हमने छाप दिया है कि हमारा प्रतिनिधि आएगा, रिप्रजेन्टेटिव आएगा। अब हमको वक्ता नहीं चाहिए। वक्ताओं से हमको घृणा होती चली जा रही है, क्योंकि वक्ता जीभ तो चलाते हैं, परंतु जीभ चलाकर जितना काम करना चाहिए, उससे चौगुना सफाया कर जाते हैं। अपना आचरण, अपना व्यवहार, अपना खान-पान, अपने रहन-सहन से ऐसी छाप डालकर आते हैं कि उसे देखकर लोग कहते हैं कि ऐसे वक्ता को गोली मारो। जो बक्-बक् करता है, उसका नाम वक्ता है। हमें ऐसा वक्ता अब नहीं चाहिए, जो बकता तो बहुत है, पर आचरण और व्यवहार में बिलकुल विपरीत है। अब हम वक्ता नहीं, अपना प्रतिनिधि भेजेंगे। यह प्रतिनिधि कैसा होगा? हमारा नमूना होगा और हमारे आचार्य कैसे होने चाहिए? उनका रहन-सहन, उनकी बोल-चाल, उनका व्यवहार, उनका आचरण, उनका उठना-बैठना, उनका खान-पान बिलकुल ऐसा होना चाहिए, जैसा कि हमारा है। उसे देखकर लोग ये कहें कि यह आचार्य जी का प्रतिनिधि है, आचार्य जी का बेटा है। बेटे, हमको ऐसे व्यक्तियों की बहुत तलाश है। क्योंकि हम ये घोषणा कर चुके हैं

कि हम छह हजार शाखाओं का वार्षिकोत्सव करेंगे। इसे हम थोड़े ही समय में पूरा करने के इच्छुक हैं। अक्टूबर से लेकर मार्च तक पूरा कर लेना चाहते हैं, क्योंकि फिर गरमी आ जाती है, इम्तिहान आ जाता है। स्कूलों में स्पीकर लगाना बंद हो जाता है। गरमी में लू चलती है, आँधी-तूफान चलते हैं। इसलिए इस अभियान को हम जल्दी पूरा करना चाहते हैं।

मित्रो! इस कार्यक्रम के लिए हमें प्रतिनिधियों की विशेष रूप से आवश्यकता पड़ेगी। हमको आप लोगों में से जो अपने आपको इस लायक समझते हों कि हम गुरुजी के विचारों को, युग निर्माण के विचारों को, पुनर्गठन के विचारों को जन-साधारण के सामने व्यक्त कर सकते हैं, तो अपने नाम हमें नोट करा दें और जो ये प्रतिज्ञा कर सकते हों कि हम जाएँगे तो आपकी फजीहत कराकर नहीं आएँगे, आपकी बदनामी कराकर नहीं आएँगे, वहाँ आपकी बेइज्जती कराकर नहीं आएँगे। बेटे, वह आपकी बेइज्जती नहीं, हमारी बेइज्जती है। आप यहाँ से हमारे वक्ता हो करके जाएँगे और होटलों में चाय पिएँगे, तो वह आप नहीं हम पी रहे होंगे, क्योंकि आप हमारे प्रतिनिधि हैं, रिप्रजेंटेटिव हैं। रिप्रजेंटेटिव को न केवल वक्ता होना चाहिए, न केवल व्याख्यानदाता होना चाहिए, बल्कि उसके अंदर वे सारी विशेषताएँ होनी चाहिए, जो हमारे रहन-सहन में, उठने-बैठने में हैं।

वाणी से नहीं, आचरण से शिक्षण

मित्रो! ये आपको अभ्यास का मौका है। इस बहाने, इस लोक-लाज के बहाने आपको हम बंधन में इतना बाँधकर भेजेंगे कि अगर आप छह महीने अभ्यास कर लें, तो आप समझना कि आपने छह महीने का योगाभ्यास कर लिया। छह महीने की तप-साधना कर लेंगे आप। आपकी जीभ के ऊपर अंकुश, खान-पान के ऊपर अंकुश, उठने-बैठन के ऊपर अंकुश, हजार अंकुश लगाने पड़ेंगे। नहीं गुरुजी! हम तो व्याख्यान देंगे। बेटे, हमें नहीं कराना व्याख्यान। अगर हमारी शर्तें पूरी कर सकता है, तो तेरे व्याख्यान का स्वागत है। नहीं साहब! हम कोई शर्त पूरी नहीं करेंगे, हम तो बक्-बक् करेंगे और चाहे जैसे रहेंगे। बेटे, हम तुझे चाहे जैसे नहीं रहने देंगे।

इसलिए मित्रो! ऐसे लोगों की खासतौर से हमको आवश्यकता है, जो बक्-बक् से नहीं, अपने आचरण और व्यवहार से हमारा प्रतिनिधित्व करें। ये शिविर, जो हमने बुलाया है, इस हिसाब से भी बुलाया है कि हमको छह हजार शाखाओं में वार्षिकोत्सव कराने के लिए अपने छह हजार प्रतिनिधियों को जरूरत पड़ेगी। क्या

हम ऐसा नहीं कर सकते कि अपने दो लाख मित्रों में से, जिनमें अधिकांश व्यक्ति पढ़े हों, सुशिक्षित हों, इस लायक हों कि आत्मशोधन और आत्मनिर्माण के अलावा लोक निर्माण की जिम्मेदारी निभा सकते हों, उनको हम छह महीने का योगाभ्यास कराना चाहते हैं। यह विशुद्ध प्रशिक्षण है, जिसमें लोक-लाज की वजह से और हमारी शरम की वजह से, दोनों दबावों की वजह से व्यक्ति अपने चरित्र को ठीक ढालता हुआ चला जाएगा और लोकहित के लिए, जिसमें मानव-जाति का हित जुड़ा हुआ है, दोनों काम करता हुआ चला जाएगा। आप हमारे प्रतिनिधि के रूप में जाना और जो शाखाएँ, जो शक्तिपीठें निष्क्रिय पड़ी हुई हैं, उनमें उमंग पैदा करना, टोलियाँ बनानी पड़ेंगी, जन्मदिन मनाना पड़ेगा और अपने आचरण एवं व्यवहार से लोगों को शिक्षण देना पड़ेगा। यदि इतना काम आप कर सकें, तो हमारा यह शिविर सार्थक हो जाएगा, हम और आप दोनों धन्य हो जाएँगे।

आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शांति ॥

स्वयं को ऊँचा उठायें व्यक्तित्ववान बनें

८ अप्रैल १९७४ वानप्रस्थ सत्र पर दिया गया उद्बोधन

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बोलिए-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

मजबूत ठप्पे बनिए

देवियो, भाइयो! जो कार्य और उत्तरदायित्व आपके जिम्मे सौपा गया है, वह यह है कि दीपक से दीपक को आप जलाएँ। बुझे हुए दीपक से दीपक नहीं जलाया जा सकता। एक दीपक से दूसरा दीपक जलाना हो, तो पहले हमको जलना पड़ेगा, इसके बाद में दूसरा दीपक जलाया जा सकेगा। आप स्वयं ज्वलंत दीपक के तरीके से अगर बनने में समर्थ हो सकें, तो हमारी वह सारी-की-सारी आकांक्षा और मनोकामना और महत्त्वाकांक्षाएँ पूरी हो जाएँगी, जिसको लेकर के हम चले हैं और यह मिशन चलाया है और हमने आपको यह कष्ट दिया है और बुलाया है। आपका सारा ध्यान यहीं इकट्ठा होना चाहिए कि क्या हम अपने आपको एक मजबूत ठप्पे के रूप में बनाने में समर्थ हो गए? गीली मिट्टी को आप लाना। ठप्पे पर ठोंकना, तख्ते पर लगाना-वह वैसे ही बनता हुआ चला जाएगा, जैसे हमारे ये खिलौने बनते हुए चले जाते हैं। हमें खिलौने बनाने हैं। खिलौने बनाने के लिए हमने साँचे और ठप्पे मँगाए हुए हैं। साँचे में मिट्टी लगा देते हैं और एक नया खिलौना बन जाता है। एक नए शंकर जी बन जाते हैं। एक नए गणेश जी बन जाते हैं। ढेरों के ढेरों श्रीकृष्ण और शंकर जी बनते जा रहे हैं। कब? जब हमारे पास छापने के लिए ठप्पे हों और साँचा हों। साँचा अगर आपके पास सही न होता, तो न कोई खिलौना बन सकता था, न कोई और चीज बन सकती थी।

मित्रो! हमको जो सबसे महत्त्वपूर्ण काम मानकर चलना है, वह यह कि हमारा व्यक्तित्व किस प्रकार का हो? न केवल हमारे विचारों का वरन, हमारे क्रिया-कलापों का भी। आपके मन में कोई चीज है, आप मन से बहुत अच्छे आदमी हैं, मन से आप शरीफ आदमी हैं, मन से आप सज्जन आदमी हैं, मन से आप ईमानदार आदमी है, लेकिन आपका क्रिया-कलाप और आपका लोक-

व्यवहार उस तरह का नहीं है, जिस तरह का शरीफों का और सज्जनों का होता है। तो बाहर वाले लोगों को कैसे मालूम पड़ेगा कि आप जिस मिशन को लेकर चले हैं, उस मिशन को पूरा करने में आप समर्थ होंगे कि नहीं? मिशन को आप समर्थ बना सकते हैं कि नहीं? आपके विचारों की झाँकी आपके व्यवहार से भी होनी चाहिए। व्यवहार आपका इस तरह का न होगा, तो मित्र लोगों को यह पता लगाने में, अंदाज लगाने में मुश्किल हो जाएगा कि आपके विचार क्या हैं और सिद्धान्त क्या हैं? जो विचार और सिद्धान्त आपको दिए गए थे, वो आपने अपने जीवन में धारण कर लिए हैं कि नहीं किए हैं। आपको ये बातें मालूम होनी चाहिए। जहाँ कहीं भी आप जाएँगे, आपको अपने नमूने का आदमी बनकर के जाना है।

नमूना बनिए

नमूने का उपदेशक कैसा होना चाहिए? नमूने का गुरु कैसा होना चाहिए? नमूने का साधु कैसा होना चाहिए? नमूने का ब्राह्मण कैसा होना चाहिए और गुरुजी का शिष्य कैसा होना चाहिए? ये सारी की सारी जिम्मेदारियाँ हमने अनायास ही नहीं लाद दी हैं—आप पर। आपको बोलना न आता हो, तो कोई शिकायत नहीं हमें आपसे। आपको बोलना न आए, लेक्चर देना न आए, जो प्वाइंट्स और जो नोट्स आपने यहाँ लिए हैं, उन्हीं को जरा 'फेयर' कर लेना और अपनी कापी को लेकर के चले जाना। कहना गुरुजी ने आपके लिए हमको पोस्टमैन के तरीके से भेजा है। जो उन्होंने कहलवाया है, हम उस बात को कह रहे हैं। चिट्ठी को पढ़कर के हम आपको सुनाए देते हैं। आप अपनी डायरी के पन्ने खोलकर के सुना देना। मजे में काम चल जाएगा।

हम जब अज्ञातवास चले गए थे, तो उससे पूर्व यहाँ लोगों ने आधा-आधा घंटे के लिए हमारे संदेश टेप कर लिए थे और जहाँ कहीं भी सम्मेलन हुआ करते थे, जहाँ कहीं भी सभाएँ होती थीं, लोग उन टेपों को सुना देते थे। कह देते थे कि गुरुजी तो नहीं हैं, पर गुरुजी जो कुछ भी कह गए हैं, संदेश दे गए हैं, शिक्षा दे गए हैं आपके लिए, उसको आप लोग ध्यान से सुन लीजिए और ध्यान से पढ़ लीजिए। लोगों ने सारे व्याख्यान सुने और उसी तरह मिशन का कार्य आगे बढ़ता चला गया।

व्यक्तित्व और चरित्र

देवियो और भाइयो, **जो काम हम करने के लिए चले हैं, उसका सबसे बड़ा और पहला हथियार हमारे पास जो कुछ भी है, वह है-हमारा व्यक्तित्व और हमारा चरित्र।** हमको जो कोई भी कार्य करना है, जो कोई भी सहायता प्राप्त

करनी है, वह रामायण के माध्यम से नहीं, गीता के माध्यम से नहीं, व्याख्यानों के माध्यम से नहीं, प्रवचनों के माध्यम से नहीं, यज्ञों के माध्यम से नहीं पूरा होने वाला है। अगर किसी तरह से हमारे मिशन को सफलता मिलनी है और वह उद्देश्य पूरा होना है तो आपका चरित्र-आपका व्यक्तित्व ही एक मार्ग है, एक हथियार है हमारा। व्याख्यान के बारे में आपको ज्यादा ध्यान नहीं देना चाहिए और बहुत ज्यादा परेशान नहीं होना चाहिए। व्याख्यान अगर आपको न आए, तो आपने यहाँ इस शिविर में जो कुछ भी सुना हो, समझा हो उसे ही लोगों को सुना देना। हमने प्राय: यह प्रयत्न किया है कि अपने कार्यकर्त्ताओं के शिविर जहाँ कहीं भी आपको चलाने पड़ें, वहाँ सबेरे प्रात:काल जाकर के प्रवचन किया करना, जो हमने कार्यकर्त्ताओं के लिए और आपके क्रिया-कलापों के लिए कहे हैं। यहाँ आपको दूसरे लोग समझा देंगे कि कार्यकर्त्ताओं में कहे जाने के लिए प्रवचन कौन-से हैं और जनता में कहे जाने वाले प्रवचन कौन से हैं। **हमको जनता के विचारों का संशोधन और विचारों का संवर्द्धन करने के लिए व्याख्यान करने पड़ेंगे और लोकशिक्षण करना पड़ेगा, क्योंकि आज मनुष्य के विचार करने की शैली में सबसे ज्यादा गलती है। सबसे ज्यादा गलती कहाँ है? एक जगह है और वह यह कि आदमी के सोचने का तरीका बड़ा गलत और बड़ा भ्रष्ट हो गया है।** बाकी जो मुसीबतें हैं, परेशानियाँ हैं, वे तो बर्दाश्त की जा सकती हैं, लेकिन आदमी के सोचने का तरीका अगर गलत बना रहा तो एक भी गुत्थी हल नहीं हो सकती और सारी गुत्थियाँ उलझती चली जाएँगी। इसलिए हमें करना क्या पड़ेगा? हमको जनसाधारण के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण सेवा जो है, वह यह करनी पड़ेगी कि उनके विचार करने की शैली, सोचने की शैली को बदल देना पड़ेगा। अगर हम सोचने के तरीके को बदल देंगे, तो उनकी कोई भी समस्या ऐसी नहीं है, जिसका समाधान न हो सके।

समाधान संभव है

सारी समस्याओं का निदान, समाधान जरूर हो जाएगा, यदि आदमी इस बात पर विश्वास कर ले कि आहार और विहार, खान और पान, संयम और नियम, ब्रह्मचर्य, इनका पालन कर लेना आवश्यक है तो मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि अस्पताल को खोले बिना, डाक्टरों को बुलाए बिना, इन्जेक्शन लगवाए बिना और अच्छी कीमती खुराक का इन्तजाम किए बिना हम सारे समाज को निरोग बना सकते हैं। आदमी की स्वास्थ्य से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान हम जरूर कर सकते हैं। हमारी लड़कियाँ पढ़ी-लिखी न हों, गाना-बजाना न आता हो और

हमारी स्त्रियाँ सुशिक्षित न हों, उन्होंने एम.ए. पास न किया हो, लेकिन हमने एक-दूसरे के प्रति प्रेम, निष्ठा और वफादारी की शिक्षा दे दी, तो फिर जंगली हों तो क्या, गँवार हों तो क्या, आदिवासी हों तो क्या, भील हों तो क्या, कमजोर हों तो क्या, गरीब हों तो क्या? उनके झोपड़ों में स्वर्ग स्थापित हो जाएगा। उनके बीच में मोहब्बत और प्रेम, निष्ठा और सदाचार हमने पैदा कर दी तब? तब हमारे घर स्वर्ग बन जाएँगे।

अगर ये सिद्धान्त हम पैदा करने में समर्थ न हो सके, तब फिर चाहे हम सबके घर में एक रेडियो लगवा दें, टेलीविजन लगवा दें। हर एक के घर में हम एक सोफासैट डलवा दें और बढ़िया से बढ़िया बेहतरीन खाने-पीने की चीज का इन्तजाम करवा दें, फिर हमारे घरों की और परिवारों की समस्या का कोई समाधान न हो सकेगा। परिवारों की समस्याओं का समाधान जब कभी भी होगा, तो प्यार से होगा, मोहब्बत से होगा, ईमानदारी से होगा, वफादारी से होगा। इसके बिना हमारे कुटुम्ब दो कौड़ी के हो जाएँगे और उनका सत्यानाश हो जाएगा। फिर आप हर एक को एम.ए. करा देना और हर एक के लिए बीस-बीस हजार रुपये छोड़कर मरना। इससे क्या हो जाएगा? कुछ भी नहीं होगा। सब चौपट हो जाएगा।

विचार परिवर्त्तन अनिवार्य

मित्रो! सामाजिक समस्याओं की गुत्थियों के हल, विचारों के परिवर्तन से होंगे। कौन मजबूर कर रहा है आपको कि नहीं साहब दहेज लेना ही पड़ेगा और दहेज देना ही पड़ेगा। अगर इन विचारों को और इन रीतियों को बदल डालें, ख्यालातों को बदल डालें, तो न जाने हम क्या से क्या कर सकते हैं और कहाँ से कहाँ ले जा सकते हैं। **हमारे पास सबसे बड़ा काम मित्रो, जनता की सेवा करने का है।** इसके लिए हम धर्मशाला नहीं बनवाते, हम चिकित्सालय नहीं खुलवाते, अस्पताल नहीं खुलवाते और हम प्रसूतिगृह नहीं खुलवाते। हम ये कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को परिश्रमशील होना चाहिए ताकि उसे किसी प्रसूतिगृह में जाने की और किसी नर्सिंग होम में जाने की आवश्यकता न पड़े। लुहार होते हैं, आपने देखे हैं कि नहीं, गाड़ी वाले लुहार, एक गाँव से दूसरे गाँव में रहा करते हैं उनकी औरते घन चलाती रहती हैं। घन चलाने के बाद उन्हें यह नहीं पता रहता कि बच्चा कोख में से पैदा होता है या पेट में से पैदा होता है। आज बच्चा पैदा हो जाता है, कल-परसों फिर काम करने लगती हैं। पन्द्रह घंटे घन चलाती हैं। उनकी सेहत और कलाई कितनी मजबूत बनी रहती है। उनको नर्सिंग होम खुलवाने की और डिलिवरी होम खुलवाने की जरूरत नहीं है। हमको प्रत्येक स्त्री और पुरुष को

यही सिखाने की जरूरत है कि हमको मेहनती और परिश्रमशील होना चाहिए। परिश्रमशील होने का माद्दा अगर लोगों के दिमागों में हम स्थापित कर सकें, तो मित्रो हमारे घरों की समस्याएँ, परिवारों की समस्याएँ, समाज की समस्याएँ और सारी समस्याएँ जैसे बेईमानी की समस्याएँ आदि कोई समस्या ऐसी नहीं है, जिसका हम समाधान न कर सकते हों।

इसलिए महत्त्वपूर्ण कदम हमको यह बढ़ाना पड़ेगा कि जनता का लोकशिक्षण करने के लिए आप जाएँ और जनता में लोकशिक्षण करें। लोकशिक्षण करने के लिए हमने जो विचारधारा आपको यहाँ दी है, उसे एक छोटी-सी पुस्तक के रूप में भी छपवा दिया है। ये व्याख्यान जो आपको यहाँ सुनने को मिले हैं, वे सारे के सारे प्वाइंट्स छपे हुए मिल जाएँगे। इनका आप अभ्यास कर लेना और इन्हीं प्वाइंट्स को आप कंठस्थ कर लेंगे और डेवलप कर लेंगे, तो क्या हो जाएगा कि सायंकाल के प्रवचनों में जो आपको जनता के समक्ष कहने पड़ेंगे, बड़ी आसानी से कहने में पूरे हो जाएँगे। कार्यकर्त्ताओं के समक्ष भी आप यही कहना। जहाँ कहीं भी आपको समझाने की, प्रवचन करने की जरूरत पड़े, आप यह कहना कि गुरुजी ने हमें डाकिये की तरह से भेजा है और एक चिट्ठी देकर आपके लिए एक संदेश लिखकर के भेजा है। लीजिए चिट्ठी को पढ़कर के सुना देते हैं। सबेरे वाले प्रवचन जो हमने दिए हुए हैं, अगर आप सुना देंगे, समझा देंगे, तो वे आपकी बात को मान जाएँगे। आपको व्याख्यान देना न आता हो और समझाने की बात न आती होगी, तो भी बात बन जाएगी। व्याख्यान देना और प्रवचन देना, चाहे आपको न आता हो, कोई हर्ज आपका होने वाला नहीं है। ये जो प्वाइंट्स हमने आपको दिए हैं, किसी भी स्थानीय वक्ता को, किसी भी स्थानीय व्याख्यानदाता को आप समझा देना और कहना कि जो प्रवचन गुरुजी ने दिए हैं, इन्हें आप अपने ढंग से, अपनी समझ से, अपनी शैली से, अपने तरीके से, आप इन्हीं प्वाइंटों को समझा दीजिये। कोई भी अच्छा वक्ता जिसे बोलना आता होगा, बोलने की तमीज होगी या बोलने का ज्ञान होगा, इन बातों को समझा देगा, जो सायंकाल को हैं। ये काम और कोई नहीं कर सकेगा, जो आपको करना है।

जो आपको करना है

वे कौन-से काम हैं, जो आपको करने पड़ेंगे? आपको यह करना पड़ेगा कि जहाँ कहीं भी आप जाएँ, जिस शाखा में भी आप जाएँ, एक छाप इस तरह की छोड़कर आएँ कि गुरुजी के संदेश वाहक और गुरुजी के शिष्य जो होते हैं, वे किस

तरह से और क्या कर सकते हैं और क्या करना चाहिए। आप यहाँ से जाना और वहाँ इस तरीके से अपना गुजारा करना, इस तरीके से निर्वाह करना जैसा कि संतों का गुजारा होता है और संतों का निर्वाह होता है। **आप जहाँ कहीं भी जाएँ, अपने खानपान संबंधी व्यवस्था को कंट्रोल रखना। खानपान संबंधी व्यवस्था के लिए हुकूमत मत चलाना किसी के ऊपर। वहाँ जैसा भी कुछ हो, जैसा भी कुछ लोगों ने दिया हो उसी से काम चला लेना।** आपको तरह-तरह की फरमाइशें पेश नहीं करनी चाहिए। जैसे कि बाराती लोग किया करते हैं। बारातियों का काम क्या है? बाराती लोग सारे दिन फरमाइशें पेश करते रहते हैं और नेताओं का क्या काम होता है? बजाजियों का क्या होता है? जहाँ कहीं भी वे जाते हैं, तो ऑर्डर करते रहते हैं और तरह-तरह की चीजों के लिए, अपने खाने-पीने की चीजें, अपनी सुविधा की चीजें, बीसों तरह की अपनी फरमाइशें करते रहते हैं। आपको किसी चीज की जरूरत पड़ती हो, चाहे आपको दिन भर भोजन न मिला हो, तो आप अपने झोले में सत्तू लेकर के जाना, थोड़ा नमक ले करके जाना। छुपकर के अपने कमरे में अपना सत्तू और अपना नमक घोल करके पी जाना, लेकिन **जिन लोगों ने आपको बुलाया है, उन पर ये छाप छोड़ करके मत आना कि आप चटोरे आदमी हैं और आप इस तरह के आदमी हैं कि आप खाने के लिए और पीने के लिए और अमुक चीजों के लिए आप फरमाइश ले करके आते हैं।** इसलिए हमने एक महीने तक आपको पूरा अभ्यास यहाँ कराया। हमने ये अभ्यास कराया कि जो कुछ भी हमारे पास है, साग, सत्तू आप घोलकर खाइए। साग-सत्तू आप खा करके रहिए और जबान को कंट्रोल करके रहिए। उन चीजों की लिस्ट को फाड़कर फेंक दीजिए कि अमुक चीज खाएँगे तो आप ताकतवार हो जाएँगे और अमुक चीज खाएँगे, तो आप पहलवान हो जाएँगे। अमुक चीज आप खाएँगे, तो आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। **मित्रो हम यकीन दिलाते हैं कि खाने की चीजों से स्वास्थ्य का कोई ताल्लुक नहीं है और अगर आपको घी नहीं मिलता, तो कोई हर्ज नहीं, कुछ आपका बिगाड़ नहीं होने वाला है।**

ताकत का केन्द्र कहाँ?

हम आपको कई बार कथा सुनाते रहे हैं। एक बार अपनी अफ्रीका यात्रा की मसाईयों का हमने किस्सा सुनाया था, जिन बेचारों को मक्का मुहैया होती है। जिन लोगों के लिए सफेद बीज की दाल मुहैया होती है। जिन लोगों के लिए केवल

जंगली केला मुहैया होता है। चार चीज उनको मिलती हैं। न कभी उनको घी मिलता है, न कभी और कोई पौष्टिक चीजें मिलती हैं, लेकिन उनकी कलाइयाँ, उनके हाथ कितने मजबूत होते हैं। ओलंपिक खेलों में सोने के मैडल जीतकर लाते और शेरों का शिकार करते रहते हैं। ताकत अनाज में नहीं है, ताकत शक्कर में नहीं है, ताकत घी में नहीं है और ताकत मिठाई में नहीं है। **मित्रो, ताकत का केन्द्र दूसरा है। ताकत की जगह वह है, जो गाँधी जी ने अपने भीतर पैदा की थी। घी खाकर के पैदा नहीं की थी उन्होंने। वह अलग चीज है, जिनसे ताकत आती है। इसलिए जहाँ कहीं भी आप जाएँ, हमारे संदेशवाहक के रूप में, वहाँ पर आपका खान-पान का व्यवहार ऐसा हो, जिससे कोई आदमी यह कहने न पाए कि ये लोग कोई बड़े आदमी आए हैं और कोई वी.आई.पी. आए हैं। यहाँ से जब आप जाएँ, तो प्यार और मोहब्बत को ले करके जाना। अगर आपके अन्दर कड़ुवावन रहा हो तो उसको यहीं पर छोड़कर जाना। कड़ुवापन मत ले करके जाना, अपना अहंकार ले करके मत जाना।**

कड़ुवापन क्या है? कड़ुवापन आदमी का घमण्ड है, कड़ुवापन आदमी का अहंकार है। अपने अहंकार के अलावा कड़ुवापन कुछ है ही नहीं। आप जब ये कहते हैं कि हम तो सच बोलते हैं, इसलिए कड़ुवी बात कहते हैं। ये गलत कहते हैं। सच में बड़ा मिठास होता है। उसमें बड़ी मोहब्बत होती है। गाँधी जी सत्य बोलते थे, लेकिन उनके बोलने में बड़ी मिठास भरी होती थी। अँग्रेजों के खिलाफ उन्होंने लड़ाई खड़ी कर दी और ये कहा कि आपको हिन्दुस्तान से निकालकर पीछा छोड़ेंगे। आपके कदम हिन्दुस्तान में नहीं रहने देंगे। मारकर भगा देंगे और आपका सारा जो सामान है, वो यहीं पर जब्त कर लेंगे और नहीं देंगे। गाँधी जी की बात कितनी कड़ुवी थी और कितनी तीखी थी और कितनी कलेजे को चीरने वाली थी। लेकिन उन्होंने शब्दों की मिठास, व्यवहार की मिठास को कायम रखा, हमको और आपको व्यवहार की मिठास को कायम रखना चाहिए। अगर अपके भीतर मोहब्बत है और प्यार है, मित्रो! तो आपकी जबान में से कड़ुवापन नहीं निकलेगा। इसमें मिठास भरी हुई होनी चाहिए। प्यार भरा हुआ रहना चाहिए। प्यार अगर आपकी जबान में से निकलता नहीं और मिठास आपकी जबान में से निकलती नहीं है, आप निष्ठुर की तरह जबान की नोंक में से बिच्छु के डंक के तरीके से मरते रहते हैं, दूसरों को चोट पहुँचाते रहते हैं और दूसरों का अपमान करते रहते हैं और विचलित करते रहते हैं, तब आपको यह कहने का अधिकार नहीं है कि आप सच बोलते हैं।

वाणी में प्यार-शील

सच क्या है ? जैसा आपने देखा है, सुना है, उसको ही कह देने का नाम सच नहीं है। सच उस चीज का भी नाम है, जिसके साथ में प्यार भरा हुआ रहता है और मोहब्बत जुड़ी हुई रहती है। प्यार और मोहब्बत का व्यवहार आपको यहीं से बोलना-सीखना चाहिए और जहाँ कहीं भी शाखा में आपको जाना है, और जनता के बीच में जाना है, उन लोगों के साथ में आपके बातचीत करने का ढंग, बातचीत करने का तरीका ऐसा होना चाहिए कि उसमें प्यार भरा हुआ हो, मोहब्बत जुड़ी हुई हो। उसमें आत्मीयता मिली हुई हो, दूसरों का दिल जीतने के लिए और दूसरों पर अपनी छाप छोड़ने के लिए। यह अत्यधिक आवश्यक है कि आपके जवान में मिठास और दिल में मोहब्बत होनी चाहिए। आप जब यहाँ से जाएँ, तो इस प्रकार का आचरण ले करके जाएँ, ताकि लोगों को यह कहने का मौका न मिले कि गुरुजी के पसंदीदे यही हैं। अब आपकी इज्जत-आपकी इज्जत नहीं है, हमारी इज्जत है। जैसे हमारी इज्जत हमारी इज्जत नहीं है, हमारे मिशन की इज्जत है। हमारी और मिशन की इज्जत की रक्षा करना अब आपका काम है। अपने वानप्रस्थ आश्रम की रखवाली करना आपका काम है।

हमने ये तीन-चार तरीके की जिम्मेदारी आपके कंधे पर डाली है। इन जिम्मेदारियों को लेकर के आप जाना। फूँक-फूँक करके पाँव रखना। आप वहाँ चले ज़ाना, जहाँ कि आवोहवा का ज्ञान नहीं है। कहीं गर्म जगह हम भेज सकते हैं, कहीं ठंडी जगह हम भेज सकते हैं। कहीं का पानी अच्छा हो सकता है और कहीं का पानी खराब हो सकता है। आप वहाँ जाकर के क्या कर सकते हैं ? आप बीमार नहीं पड़ सकते। बीमारी के लिए मैं दवा बता दूँगा, आप जहाँ कहीं भी जाएँगे, आप बीमार नहीं पड़ेंगे और बीमारी आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। **मैं ऐसी दवा दे दूँगा कि आप चाहे जहाँ कहीं भी जाना और जो चाहे कुछ खिला दे, वही खाते रहना। बेजिटेबिल की पूड़ियाँ खिलाता हो, तो पूरे महीने पूड़ियाँ खाना और बीमार होकर आये, तो आप मुझसे कहना।** मैं ऐसी गोली देना चाहता हूँ, कि कोई भी चीज खिलाता हो, आप खाते रहना और आपके पेट में कब्ज की शिकायत हो जाए, तो आप मुझसे कहना, मेरी जिम्मेदारी है। आप मुझसे शिकायत करना कि गुरुजी आपकी गोली ने काम नहीं किया, हमको कब्ज की शिकायत हो गई।

खुराक से कम खायें

इसके लिए आप एक काम करना, अपनी खुराक से कम खाना। यहाँ चार रोटी की खुराक है, तो यहाँ से निकलते ही एक रोटी कम खाना। एक रोटी कम, तीन रोटी खाना शुरू कर दीजिए। आप जायके के माध्यम से जाएँगे, तो हर आदमी के मेहमान होंगे और मेहमान का तरीका हिन्दुस्तान में यह होता है कि जो कोई भी आता है किसी के घर, तो उस आदमी के लिए अगर हम मक्का की रोटी खाते हैं, तो उसे गेहूँ खिलाएँगे और हम गेहूँ की खाते हैं, तो आपको चावल खिलाएँगे। चावल खाते हैं, तो मिठाई खिलाएँगे। हम अगर छाछ पीते हैं, तो आपको दूध पिलाएँगे। हर हिन्दू यह जानता है कि सन्त-महात्मा का वेश पहन कर के आप जा रहे हैं, तो स्वभावतः आपको अपने घर की अपेक्षा अच्छा भोजन कराए, अच्छी-अच्छी चीजें खिलाएँ। यदि आपने अपनी जबान पर कंट्रोल रखा नहीं, तो आप जरूर बीमार पड़ जाएँगे। आप ध्यान रखिए आबोहवा तो बदलती ही है। यहाँ का पानी आज, वहाँ का कल, वहाँ का पानी परसों। समय का ज्ञान नहीं, कुसमय का ज्ञान नहीं। यहाँ पर आप ग्यारह बजे खाना खा लेते हैं, सम्भव है कि कोई आपको दो बजे खिलाए, आपका पेट खराब हो सकता है। आप बीमार हो सकते हैं, **लेकिन ये खुराक जो मैंने आपको बताई है, अगर उसको कायम रखेंगे, तो आप कभी भी बीमार नहीं होंगे।**

मित्रो! हमने लम्बे-लम्बे सफर किये हैं और तरह-तरह की चीजें और तरह तरह की खुराकें खाने का मौका मिला है। एक बार मैं मध्यप्रदेश गया, तो लाल मिर्च साबुत खाने की आदत उन लोगों की थी। रामपुरा में यज्ञ हुआ। यज्ञ हुआ तो वहाँ वो बड़ी-बड़ी पूड़ी परोस रहे थे और ऐसी सब्जी परोस रहे थे, जो मुझे टमाटर की सी मालूम पड़ी। लाल रंग का सारे का सारा टमाटर का साग परोस रहे थे। टमाटर मुझे अच्छा भी लगता है, माताजी मेरे लिए अक्सर बना लिया करती हैं। मँगा लेती हैं। मैंने भी मँगा लिया और रख लिया थाली में। जैसे ही मैंने पूड़ी का टुकड़ा मुँह में दिया कि मेरी आँखें लाल-लाल हो गईं। अरे यह क्या? गुरुजी यह टमाटर का साग नहीं है, यह तो लाल मिर्च है। जब हरी मिर्च पक जाती है और लाल हो जाती है, तो उनको ही पीस करके उसमें नमक और खटाई मिलाकर के ऐसा बना देते हैं- लुगदी जैसी, उसको आप चटनी कह लीजिए। ऐसी भी जगह मुझे जाना पड़ा है कि मैं क्या कहूँ आपसे।

एक बार मैं आगरा गया और वहाँ भोजन करना पड़ा। दाल-रोटी जो घर में खाते हैं, जहाँ कहीं भी जाता हूँ, वही खाता हूँ और कहता हूँ कि तुम्हारे घर में जो कुछ भी हो, वही खिलाना। नहीं हो, तो मेरे लिए बनाना मत, अलग चीज बनाओगे, तो मैं खाऊँगा नहीं। अगर तुम पूड़ी रोज खाते हो, तो पूड़ी बना दो मेरे लिए। मुझे एतराज नहीं, लेकिन तुम हमेशा कच्ची रोटी खाते हो तो मेरे लिए कच्ची रोटी ही बनाना, मक्का की रोटी खाते हो अपने घर में तो, वही खिलाना, क्योंकि मैं तुम्हारा मेहमान नहीं हूँ, तुम्हारा कुटुम्बी हूँ। आगरा में उन लोगों ने दाल बना दी और रोटियाँ धर दीं। दाल में जैसे ही मैंने कौर डुबोया, इतनी ज्यादा मिर्च कि मेरे तो बस आँखों में से पानी आ गया। मैं क्या कह सकता था। अगर मैं यह कहता कि साहब दाल बड़ी खराब है उठा ले जाइए। यह आपने क्या दे दिया और मेरे लिए तो दही लाइए और वह लाइए। मेरी आँख में से पानी तो आ गया और मैंने एक घूँट पानी पिया, पीने के बाद रोटी के टुकड़े खाता तो गया। रोटी के टुकड़े दाल तक ले तो गया, पर दाल में डुबोया नहीं। हाथ मैंने चालाकी से चलाया, जिससे मालुम पड़े कि मैं दाल खा रहा हूँ। दाल खाई नहीं और वैसे ही रूखी रोटी खाता और पानी पीता रहा। पानी पीने के बाद उतर कर आ गया। उसे पता भी नहीं चला, मुझे भी पता नहीं चला। न उसको शिकायत हुई कि आपने ये कैसे खाया।

हमारे यहाँ एक स्वामी परमानन्द जी और नत्थासिंह भी थे पहले। दोनों साथ थे। हम नत्थासिंह और परमानन्द जी को अक्सर बाहर भेज देते थे। दोनों का जोड़ा था। जब भोजन होता था, तब स्वामी परमान्द उससे कहते थे-नत्थासिंह, हाँ! देख, मैं मर जाऊँ कभी और तुझे ये खबर मिले कि स्वामी परमानन्द मर गया, तो ये मत पूछना कि कौन-सी बीमारी से मर गया। पहले से लोगों से यह कह देना कि परमानन्द ज्यादा खा करके मर गया। सारा घी स्वामी जी खा जाएँ, तो भी पता न चले। जहाँ कहीं भी जाते, खाने की उनकी ऐसी ललक कि एक बार खिला दीजिये, खाने से पिण्ड छोड़ने वाले नहीं। टट्टियाँ हो जाएँ तो क्या? उल्टियाँ हो जाएँ तो क्या? पर खाने से बाज न आने वाले थे वे।

जबान के दो विषय

मित्रो हमारी जबान के दो विषय हैं, जबान हमारी बड़ी फूहड़ है। एक विषय इसका यह है कि यह स्वाद माँगती है और जायके माँगती है। आप स्वादों को नियंत्रण करना- जायके को नियंत्रित करना। सन्त जायके पर नियंत्रण किया करते हैं और स्वाद पर नियंत्रण किया करते हैं। जिस आदमी का जायके पर नियंत्रण

नहीं है और स्वाद पर नियंत्रण नहीं है, वह आदमी सन्त नहीं कहला सकता। आपने-हमने ऐसे संत देखे हैं, जो भिक्षा माँग करके लाए और एक ही कटोरे में-एक ही जगह में दाल को मिला दिया और उसको मिला दिया और इसको मिला दिया और साग को मिला दिया और खीर को मिला दिया और सबको मिला दिया। एक ही जगह मिलाकर खाया। वे ऐसा किसलिए खाते हैं? इसलिए कि वे जबान के जायके पर काबू करके खाते हैं। जबान के जायके का अभ्यास आपको यहाँ नहीं हो सका, तो आप जहाँ कहीं भी कार्यकर्त्ताओं के बीच में जाएँ, आपको एक छाप छोड़ने की बात मन में लेकर के जानी चाहिए कि हम जबान के जायके को कंट्रोल में करके आए हैं। अब देखना आपके ऊपर छाप पड़ती है कि नहीं पड़ती है।

खान-पान का भी हमारे हिन्दुस्तान में ध्यान रखा जाता है। एक महात्मा ऐसे थे, जो हथेली के ऊपर रखकर के रोटी खाया करते थे। उनका नाम महागुरु श्रीराम था। अभी भी वे हथेली पर रोटी रखकर खाने वाले महात्मा के नाम से मशहूर हैं। मैं नाम तो नहीं लेना चाहूँगा, पर आप अन्दाज लगा सकते हैं कि मैं किसकी ओर इशारा कर रहा हूँ। इस समय तो वे नहीं करते, इस समय तो वे मोटरों में सफर करते हैं और अच्छे चाँदी और सोने के बर्तनों में भोजन करते हैं। पर कोई एक जमाना था, जब हथेली पर रख करके भोजन करते थे। एक ही विशेषता ऐसी हो गई कि सारे हिन्दुस्तान में विख्यात हो गए। इस बात के लिए प्रख्यात हो गए कि वे हथेली पर रखकर के रोटी खाया करते हैं। भला आप संत नहीं हैं तो क्या, महात्मा नहीं हैं तो क्या? आपकी खुराक सम्बन्धी आदत ऐसी बढ़िया होनी चाहिए कि जहाँ कहीं भी आप जाएँ, वहाँ हर आदमी आपको बर्दाश्त कर सकता हो, 'अफोर्ड' कर सकता हो। गरीब आदमी भी ये हिम्मत कर सकता हो कि हमारे यहाँ पंडित जी का भोजन हो। गरीब आदमी को भी ये कहने की शिकायत न हो कि हमारे यहाँ ये नहीं होता, हमारे घर में दूध नहीं होता, हमारे घर में दही नहीं होता, हम तो गरीब आदमी हैं, फिर हम किस तरीके से उनको बुलाएँगे, किस तरीके से भोजन कराएँगे। आपकी हैसियत संत की होनी चाहिए और संत का व्यवहार जो होता है, हमेशा गरीबों में ज्यादा होता है। गरीबों जैसा होता है, अमीरों जैसा संत नहीं होता, संत अमीर नहीं हो सकता। संत कभी भी अमीर होकर नहीं चला है। जो आदमी हाथी पर सवार होकर जाता है, वह कैसे संत हो सकता है? संत को तो पैदल चलना पड़ता है। संत को तो मामूली कपड़े पहनकर चलना पड़ता है। संत चाँदी

की गाड़ी पर कैसे सवारी कर सकता है? आपको यहाँ से जाने के बाद अपना पुराना बड़प्पन छोड़ देना चाहिए और पुराने बड़प्पन की बात भूल जानी चाहिए।

संतो जैसा जीवन व व्यवहार हो

बस, आपको यहाँ से जाने के बाद अपना पुराना बड़प्पन छोड़ देना चाहिए और पुराने बड़प्पन की बात भूल जानी चाहिए और जगह-जगह से नहीं कहना चाहिए कि हम तो रिटायर्ड पोस्टमास्टर थे या रिटायर्ड पुलिस इन्सपेक्टर थे या हमारे गाँव में जमीदारी होती थी। आप यह मानकर जाना कि हम नाचीज हो करके जा रहे हैं। **संत नाचीज होता है।** संत तिनका होता है और अपने अहंकार को त्याग देने वाला होता है। यदि आपने अपने अहंकार को त्यागा नहीं, तो फिर आप संत कहलाने के अधिकारी नहीं हुए। हमारी पुरानी परम्परा थी कि जो कोई भी संत वेष में आता था, उसको भिक्षायापन करना पड़ता था। क्यों? भिक्षायापन कौन करता है? भीख माँगने वाला गरीब होता है ना? कमजोर होता है ना? संत वेष धारण करने के पश्चात हर आदमी को भिक्षा माँगने के लिए जाना पड़ता था, ताकि उसका अहंकार चूर-चूर हो जाए। हम अपने ब्रह्मचारियों को जनेऊ पहनाते थे। जनेऊ पहनाने के समय ऋषि अपने बच्चों को भिक्षा माँगने भेजते थे कि जाओ बच्चो भिक्षा माँगो, ताकि किसी बच्चे को यह कहने का मौका न मिले कि हम तो जमींदार साहब के बेटे हैं, ताल्लुकेदार के बेटे हैं और धनवान के बेटे हैं, गरीब के बेटे नहीं हैं, हर आदमी का आध्यात्मिकता का आत्मसम्मान अलग होता है और अपने धन का, अपनी विद्या का, अपनी बुद्धि का, अपने पुरानेपन का और अपनी जमींदारी का और अपने अमुक होने का गर्व होता है, वह अलग होता है। आप यहाँ से जाना, तो अहंकार छोड़ करके जाना।

मैं-मैं मत करिए

मित्रो, कई आदमियों को-चेलों को बार-बार यह कहने की आदत होती है कि जब तक वे अपनी महत्ता और अपना बड़प्पन, अपने अहंकार की बात को सौ बार जिकर नहीं कर लेते, तब तक उनको चैन नहीं मिलेगा। निरर्थक की बात-चीत करेंगे। निरर्थक की बातचीत करने का क्या उद्देश्य होगा? यह उद्देश्य होगा कि मैं ये था और मैंने ये किया था और मैं वहाँ गया था और मेरा ये हुआ था। मैं पहले ये था, मैं पहले ये कर रहा था-आधा घंटे तक भूमिका बनाएँगे। आधे घंटे भूमिका बनाने के बाद फिर किस्सा शुरू होगा-मैं, मैं...मैं...मैं...मैं...मैं... को अनेक बार कहते हुए चले जाएँगे। लेकिन मित्रो, ये समझदारी की बात नहीं हैं, नासमझी

की बात है। जो आदमी अपने मुँह से, अपनी जबान से, अपने बड़प्पन की जितनी बात बताता है, वह उतना ही कमजोर होता चला जाता है और उतनी ही उसकी महत्ता कम होती जाती है। हम आपको जिन लोगों के पास में भेजने वाले है, वे फूहड़ लोग नहीं हैं, बेअकल लोग नहीं हैं, बेवकूफ लोग नहीं हैं। हमने अखण्ड ज्योति पैंतीस वर्ष से निकाली है और पैंतीस वर्ष से जो आदमी अखण्ड ज्योति पत्रिका को पढ़ते हुए चले जा रहे हैं, वे काफी समझदार लोग हैं। हमारा हर आदमी समझदार आदमी है। इस बात की तमीज उसको है और हर बात की अकल उसको है कि क्या आपके स्तर का है और क्या आपके स्तर का नहीं है। अपने अहंकार के बारे में और अपने बड़प्पन के बारे में जितनी शेखी आप बघारेंगे, उतनी ही आपकी इज्जत कम होती जाएगी और लोग यह समझेंगे कि ये कितना घमण्डी आदमी है और लोलुप आदमी है। यह बहुत बड़ाई करना चाहता है और हमको अपने बड़प्पन की बात बताना चाहता है। यह मैं आपको विदा करते समय में उसी तरह की शिक्षा दे रहा हूँ जैसे कि माँ अपनी बेटी को विदा करने के समय जब ससुराल भेजती है, तो तरह-तरह की नसीहतें देती है और तरह-तरह की शिक्षाएँ देती है कि बेटी सास से व्यवहार ऐसे करना। बेटी ससुर से ऐसे व्यवहार करना। बेटी अपने पति से ऐसे व्यवहार करना। बेटी अपनी ननद से ऐसे व्यवहार करना। मैं आपको बेटियों की तरीके से नसीहत दे रहा हूँ, क्योंकि मैं आपको ससुराल भेज रहा हूँ।

ससुराल भेज रहे हैं

ससुराल कहाँ? ससुराल का मतलब जनता के समक्ष भेजने से है, जहाँ पर आपका इम्तिहान लिया जाने वाला है। आपके व्याख्यान का नहीं, मैं आपसे फिर कहता हूँ कि आपको व्याख्यान देना न आता हो, तो कोई डरना मत और कन्फ्यूज मत होना। व्याख्यान के बिना भी काम चल जाएगा। आप चुप बैठे रहना-महर्षि रमण के तरीके से, तो भी काम चल जाएगा। पांडिचेरी के अरविन्द घोष ने अपनी जबान पर काबू कर लिया था। कन्ट्रोल कर लिया था। उन्होंने लोगों से मिलने से इन्कार कर दिया था और कह दिया था कि हम आप लोगों से बातचीत नहीं करना चाहते हैं। बातचीत न करने के बाद भी महर्षि रमण और पांडिचेरी के अरविन्द घोष इतने ज्यादा काम करने में समर्थ हो गए, आपको मालूम नहीं है क्या? बहुत काम करने में समर्थ हो सके। जहाँ कहीं भी आप जाएँ जरूरी नहीं है कि आपको स्वयं ही बोलना चाहिए। आप जो प्वाइंट ले करके गए हैं और जो प्वाइन्ट इस

डायरी में भी लिखे हुए हैं और डायरी के अलावा हमने अलग किताब भी छपवा दी है, उससे आपका काम चल जाएगा। जहाँ कहीं भी आप जाएँगे, वहाँ भी आपको ढेरों के ढेरों व्याख्यान देने वाले वक्ता जरूर मिल जाएँगे। उनको आप बोलना और कहना कि देखो भाई, ये हमारे डायरी के पन्ने हैं और देखो ये पुस्तक के पन्ने हैं। आपको इन प्वाइंटों के ऊपर ऐसी-ऐसी बातें कहनी हैं। यहाँ हमको बोलकर सुना दो एक बार। आप इम्तिहान लेना और जब आपको लग जाएगा कि वह ठीक बोल रहा है, तो कहना बेटा कल तुम्हें यह संदेश गुरुजी का वहाँ पढ़ना है। हम तो सिखाने के लिए आए हैं, स्वयं बोलने के लिए थोड़े ही आए हैं। हमें थोड़े ही बोलना है। आपको बोलना पड़ेगा, आपको सम्मेलन करना पड़ेगा। हमको तो अपना काम करना है। हमको तो सिखाना है और तुमको बोलना है। तुमको बोलना चाहिए—हमारे सामने, तुम नहीं बोलोगे तो हम कैसे पहचानेंगे कि तुमने गुरुजी के संदेश को समझ लिया और अपना लिया, इसलिए रोज सबेरे के वक्त में ये बोलना है। बोलकर सिखा दो और बता दो कि पहले क्या कहोगे? ऐसा मत कहना कि हम कुछ और कहने आए हैं और तुम अपना नमक-मिर्च लगाकर कहने लगो। हम जो बात कहना चाहते हैं, वही बात कहना।

कोई भी आदमी जिसको बोलने की जानकारी हो और लेक्चर देने की कला आती हो, वह बोल देगा। यों तो व्याख्यान देने की कला तमाम स्कूलों में पढ़ाई जाती है। लैक्चरार एक पेशा बन गया है, धन्धा बन गया है। लेक्चरार तो ढेरों आदमी पैदा हो गया। लेक्चर देना और व्याख्यान देना कोई मुश्किल बात नहीं। आप उससे घबड़ाना मत। आपको न आता हो, तो दूसरे लोगों से कहलवा देना और सायंकाल के स्टेज के लिए भी आप तैयार होकर जाना। कोई न मिलता हो तो वकील को बुला लेना। वकील साहब, हाँ तुम्हारी-हमारी बहस है। बहस है तो अच्छा, शाम को आ जाना, हमार केस लड़ देना। क्या केस है? अरे गुरुजी का मुकदमा है। गुरुजी ने ये-ये प्वाइंट्स बताए हैं, जरा बैठकर जरा-सी बात कह दीजिए। इसके लिए आपको एक घंटा बोलना पड़ेगा। अरे साहब एक घंटे का तो हम दस रुपये ले लेते हैं, तो आप दस रुपये ले लीजिए या फिर आज फोकट में ही बोल दीजिए। हाँ फोकट में ही बोल देंगे, बताइये क्या बोलना है। बस वह आपके प्वाइंटों को लेकर के खड़ा हो जाएगा और ऐसे धड़ल्ले से बोलेगा कि आपको मजा आ जाएगा। किसी अध्यापक को बुला लेना, किसी को भी बुला लेना, कोई भी आदमी आ जाएगा। आपकी बात को कह देगा। इसलिए आप मत देना व्याख्यान।

व्याख्यान से ज्यादा जरूरी है शिक्षण

तो आपको क्या करना है? आपको तो लोगों को सिखाने के लिए जाना है। आपको तो तभी बोलना है, जब बहुत मुसीबत आ जाए, बहुत जरूरी हो जाए, आप वहाँ के लोगों को सिखाना-बोलने का काम तो उन्हीं को करना है, शाखा तो उन्हीं को चलानी है। आपके सामने बोल लेंगे, तो अच्छी बात है। आप भी कभी-कभी कह दिया करिए। गुरु तो पीछे बैठा रहता है और तीर-कमान तो लड़के चलाते रहते हैं। गुरु जो होता है, झट से बता देता है। आपने अखाड़े के उस्ताद को नहीं देखा। अखाड़े का उस्ताद कहीं लड़ता है क्या? पर यह बताता रहता है कि ये पकड़, यह क्या करता है, मालूम है क्या करता है? हाथ पकड़ता है-टाँग नहीं पकड़ता है गिराना है तो। पहलवानी करने चला है और टाँग पकड़ना नहीं आता, पहले टाँग पकड़ उसकी। अच्छा हाँ, उस्ताद अभी पकड़ता हूँ और कान पकड़ता है। टाँग पकड़ गिरा इसको। अभी गिराता हूँ। ऐसे करके आपको तो उस्ताद बनाकर भेजेंगे, कोई अखाड़े के पहलवान बनाकर थोड़े ही भेजेंगे। पहलवान तो ढेरों के ढेरों मिल जाएँगे। पहलवानी को रहने दीजिए। गुरुजी हमें तो यहाँ एक महीने रहते हुए होने को आया। अब आप परसों भेज देंगे, हमको लेक्चर झाड़ने पड़ेंगे, तो लेक्चर कैसे देंगे? अरे बाबा, लेक्चर की हम नहीं कह रहे हैं। लेक्चरार बनाकर नहीं भेज रहे हैं। हम तो आपको वह चीज दे करके भेज रहे हैं कि जहाँ कहीं भी आप जाएँ, वहाँ आपके क्रिया-कलाप ऐसे होने चाहिए जैसा कि हमारे कार्यकर्त्ता का होना चाहिए, जिसे देखकर अन्य कार्यकर्त्ताओं का उत्साह बढ़ता हुआ चला जाए। आपको हमने वहाँ मुआयना करने के लिए और कोई इन्सपेक्टर बना करके नहीं भेजा है और न ही हम आपको नेता बनाकर भेज रहे हैं। नेता पर लानत। नेता, हम नहीं बनाएँगे आपको। नेता से हमें कोई मोहब्बत नहीं है। जो आदमी स्टेज पर बैठ करके, मटक मटक करता है और फूलमाला पहन करके माइक पकड़ करके बैठ जाता है और किसी का नम्बर ही नहीं आने देता। प्रेसीडेंट कहता है-अरे बाबा बन्द कर! उसने तो माइक पकड़ लिया है, दूसरों को देता ही नहीं। ऐसा ही होता है। जब तक सारे लोग उसके नीचे नहीं होंगे, तब तक नहीं छोड़ेगा, ऐसा नेता मुबारक, माइक मुबारक, दोनों चीजें मुबारक।

नेता नहीं कार्यकर्त्ता बनें

मित्रो, हम आपको नेता बनाकर नहीं भेज रहे हैं। हम तो आपको कार्यकर्त्ता और ज्ञानी बनाकर भेज रहे हैं वालन्टियर की तरह। जहाँ कहीं भी जाएँ और जो

कोई भी कार्य करें, वालन्टियर के रूप में करें। आप उस तरीके से करना, जिस तरीके से हाथ से काम करना सिखाया जाता है। सर्जन अपने मैटरनटरी कॉलेज के स्टूडेन्टों को अपने आप करके स्वयं दिखाता है और यह कहता है कि तुमको पेट का ऑपरेशन करना हो तो देख लो एक बार फिर, भूलना मत। तुम्हारा मुँह इधर होगा, तो ऑपरेशन करना नहीं आएगा। देखो हम पेट को चीरकर देखते हैं- ये देखो-ये निकाल दिया और ये सिल दिया और ये बाँध दिया। देखो फिर ध्यान रखना और ऐसे मत करना कि पेट का ऑपरेशन किसी का करना पड़े और कहीं का वाला कहीं कर दो और कहीं का वाला कहीं कर दो। आपको हर काम स्वयं करने के लिए स्वयंसेवी कार्यकर्त्ता के रूप में जाना है। आपको किसी का मार्गदर्शक होकर के या किसी का गुरु हो करके या किसी का नेता हो करके नहीं जाना है। दीवारों पर जब वाक्य लिखने की जरूरत पड़े, तो आप स्वयं डिब्बा लेना और कहना—चल भाई मोहन, अरे तूने इस बात के लिए मना किया, अब मैं लिखकर दिखाता हूँ कि किस तरह से अच्छे तरीके से वाक्य लिखा जाता है, चल तो सही मेरे साथ। अपने साथ आप ले करके चले जाएँगे। अरे वानप्रस्थी जी साहब! आप वहाँ से आए हैं, आप तो गुरुजी वहाँ बैठो, हम बच्चे लिख लेंगे—वाक्य। बेटा, बच्चे लिख लेंगे, तो हम किसलिए आए हैं। चल जरा! हमारे साथ-साथ चल देख हम साफ-साफ लिखकर दिखाते हैं। जब आप आगे-आगे चलेंगे, तो ढेरों आदमी आपके साथ चलेंगे, आपकी लिखने वाली बात, अमुक बात और अमुक बात, आसानी से होती हुई चली जाएगी।

वालण्टियर बनाकर भेजा है

परन्तु जब आप पीछे जा बैठेंगे तब, तब लोग हमसे शिकायत करेंगे और कहेंगे कि गुरुजी ने ऐसे लोगों को हमारे पास भेज दिया। चलते तो हैं ही नहीं, सुनते तो हैं ही नहीं, कुछ करते तो हैं ही नहीं। हुकुम चलाना भर आता है। बेटे हमने उनके ऊपर हुकुम चलाने के लिए आपको नहीं भेजा है। हमने तो आपको मार्गदर्शन करने के लिए भेजा है। वालन्टियर के रूप में भेजा और सक्रिय कार्यकर्त्ता के रूप में भेजा है। जो बात आपको नहीं आती है, वह काम आपको करने चाहिए। उनके कंधे से कंधा मिलाकर चलना, आगे-आगे बढ़ना चाहिए। जहाँ ये समस्या है लोगों के लिए कि जनता कहीं भी नहीं आती है, यह आप ध्यान रखना। जनता बहुत खीझी हुई है और बहुत झल्लाई हुई है। उसने ढेरों-के-ढेरों व्याख्यान सुने हैं और व्याख्यान सुनने के बाद में यह भी देखा है कि जो आदमी व्याख्यान दिया

करते हैं, रामायण पढ़ा करते हैं, गीता पढ़ा करते हैं, कैसे-कैसे वाहियात आदमी हैं और कैसे बेअकल आदमी हैं।

व्याख्यान देने वालों की जिन्दगी, उनके स्वरूप और उनके क्रियाकलाप का फर्क, आवाज का फर्क लोगों ने जाना है। लोगों ने जाना है कि जब सन्त का बाना ओढ़ लेता है, तो क्या कहता है और जब रामायण पढ़ता है तो कैसे-कैसे उपदेश दिया करता है और जब मकान पर आ जाता है, घर पर आ जाता है, तो उसके क्रियाकलाप क्या होते हैं? लोगों ने जान लिया है और समझ लिया है कि लेक्चर झाड़ना एक धंधा बन गया है। उसमें कोई दम नहीं और कोई अकल नहीं।

जनता झल्लाई हुई है

मित्रो, क्या करना पड़ेगा? आपको वहाँ जाने के बाद में सक्रिय कार्यकर्त्ता के रूप में, एक मार्गदर्शक के रूप में आपको रहना पड़ेगा। जनता अभी आपके पास नहीं आने वाली है। वह सहज रूप से नहीं आयेगी। जनता को निमंत्रण देने के लिए आपको स्वयं ही खड़ा होना पड़ेगा। जनता अब नहीं आयेगी, आप ध्यान रखना। जनता बहुत झल्लाई हुई है। जनता पर बहुत रोष छाया हुआ है। सन्तों के प्रति अविश्वास, नेताओं के प्रति अविश्वास, वक्ताओं के प्रति अविश्वास, सभा-संस्था वालों के प्रति अविश्वास, हरेक के प्रति अविश्वास हर आदमी को है। इस जमाने में जब हरेक के प्रति अविश्वास छाया हुआ है। बड़े-बड़े मिनिस्टर आते हैं, तो दो सौ आदमी भी नहीं आते। कान में जाकर के बी.डी.ओ. को कहना पड़ता है और बोर्ड का अध्यक्ष मास्टरों को बुला करके कहता है कि अच्छा भाई कल की छुट्टी है, कल के लिए लीजिए 'रेनी-डे' लिख देते हैं-वर्षा का दिन और कल सब स्कूलों की छुट्टी है। सब बच्चों को और सब मास्टर लोगों को लेकर के वहाँ पर विक्टोरिया पार्क में सब जने ४ बजे तक इकट्ठा हो जाना, ताकि उनको ये मालूम पड़े कि जनता बहुत आई है।

उसमें से कौन होता है? किसमें? व्याख्यान करने वालों में। व्याख्यान करने वालों में तलाश करना कि जब कोई नेता आता है, तो सुनने वाले कौन होते हैं? आप एक-एक की पहचान करना कि जो व्याख्यान सुनने आये हैं, इसमें जनता वाले कितने थे और स्कूल वाले कितने थे। आपको ये मालूम पड़ेगा कि सफेद कुर्त्ता पहने हुए आगे वाले तो सिपाही बैठे हैं। जो वर्दी को तो उतार आए हैं और मामूली कपड़ा, मामूली पैण्टकमीज पहने हुए हैं। आगे तो ये लोग बैठे हुए हैं। ताली बजाने वालों में कौन बैठे हुए हैं। मास्टर लोग बैठे हुए हैं, पुलिस के सिपाही

बैठे हुए हैं। ताली बजाने वालों में और कौन बैठे हुए हैं? ये बैठे हैं और वो बैठे हैं। जनता को आप तलाश करेंगे, तो मुश्किल से पचास आदमी आपको नहीं मिलेंगे। क्यों नहीं मिलते हैं? गाँधी जी की सभा में लोग आते थे और नेहरू की सभा में जाते थे; लेकिन अब सभा में लोग क्यों नहीं आते, क्योंकि नफरत छा गई है? नफरत इसलिए छा गई है कि सिखाने वाले और कहने वाले में अब जमीन-आसमान का फर्क है। इसलिए इनकी बात नहीं सुनेंगे, जरूरी हुआ, तो अखबार में क्यों नहीं पढ़ लेंगे। इन्हें सुनने में हम अपना टाइम क्यों खराब करेंगे? धक्के क्यों खाएँगे? इसलिए यह भी एक प्रश्न आपको हल करना पड़ेगा कि जिन बेचारों ने अपना आयोजन करके रखा है-पन्द्रह दिन का और दस दिन का, वहाँ किस तरह से जनता को बुलाया जाए, ताकि हमारे विचार और हमारी प्रेरणा, हमारे प्रकाश को फैलाने के लिए वे इतना महत्त्व दें, जिसके लिए मेहनत करने भेज रहे हैं आपको। जनता को बुलाने के लिए आपको ही आगे-आगे बढ़ना होगा।

पीले चावल से निमंत्रण

मित्रो, शुरू के ही दिन में मैंने आपको यह सब बता दिया था। जनता को अब हम व्यक्तिगत रूप से निमंत्रण दे सकते हैं। पीले चावल ले करके जाना। घर-घर में जाना निमंत्रण देने के लिए और कहना कि मथुरा वाले गुरुजी को आप जानते हैं क्या? गुरुजी को, हाँ जानते हैं, तो उन्होंने एक बात कह करके भेजी है, आपके लिए कुछ खास संदेश भेजा है, आपके लिए कुछ अलग शिक्षाएँ भेजी हैं; कुछ अलग से संदेश भेजा है; जिसे आपको सुनने के लिए जरूर आना पड़ेगा शाम को। इस तरह से एक घर में, दो घर में, तीन घर में आप स्वयं जाना और वहाँ के कार्यकर्त्ताओं को ले करके जाना। टोलियाँ बनाना और निमंत्रण देने के लिए जाना-निमंत्रण देने के लिए व्यक्तिगत सम्पर्क बनाने वाली बात करनी चाहिए।

एक बात और भी है कि इश्तहारों से आप किसी को नहीं बुला सकते और लाउडस्पीकर पर तो सिनेमा वाले और बीड़ी वाले चिल्लाते हैं। लाउडस्पीकर आप भी लेकर चले जाइए और कहिए-प्यारे भाइयो, शाम को साढ़े छह बजे आना, वानप्रस्थी लोग शान्तिकुंज से आये हैं, प्रवचन करेंगे। तब आप में और बीड़ी वालों में कोई फर्क नहीं होगा। सभी बीड़ी वाले चिल्लाते हैं कि सत्ताईस नम्बर की बीड़ी भाइयो, पिया करो, सत्ताईस नम्बर पिया करो। फिल्मस्तानी भाई, बीड़ी वाले भाई और गुरुजी के वानप्रस्थियों में फिर क्या फर्क रह गया है? माइक, इसकी कोई कीमत नहीं, कहाँ कोई इसे सुनने को आते हैं, कान बन्द कर लेता है। बोल-

बोलकर माँगकर चला जाएगा। इस माइक की बात कोई नहीं सुनता। इशारों की बात, इश्तहारों की भी बात नहीं सुनी लोगों ने, पर जब हमको जनता को बुलाना है, तो उसको बुलाने के लिए स्वयं ही आपको निकलना पड़ेगा, कार्यकर्त्ताओं को लेकर के अपने साथ-साथ। कार्यकर्त्ता को साथ लेकर आपको चलना पड़ेगा।

शंख ध्वनि से आमंत्रण

हमारी जनता को निमंत्रित करने की शैली अलग है। कार्यकर्त्ता के रूप में जब आप जाएँगे, तो आपमें से हर आदमी के हाथ में एक शंख थमा दिया जाएगा। मान लीजिए, आप साठ आदमी हैं और उनमें से चालीस व्यक्ति ऐसे हैं, जिन्हें कहाँ जाना है? शाखाओं में जाना है, तो चालीसों के हाथ में शंख थमा दिया जाएगा और शंख बजाते हुए जब आप शहर के बाजार में निकलेंगे, तो देखना ताँगे वाले खड़े हो जाएँगे, रिक्शे वाले भी खड़े हो जाएँगे और कहेंगे कि अरे देखो तो सही, ये कौन आ गया? चालीस शंख बजाते हुए और पीले कपड़े पहने हुए, झंडा लिए हुए और एक नए बाबाजी के रूप में, एक नये क्रान्तिकारी के रूप में, एक नये व्याख्यानदाता के रूप में जब आप जाएँगे, तो क्रान्ति मच जाएगी। बैंडबाजे बजते हुए सबने देखे हैं, पर चालीस शंख एक साथ बजते हुए किसी ने नहीं देखे आज तक। चालीस शंख कैसे बजते हैं? आपको मालूम नहीं। चालीस शंखों की आवाज जब एक साथ बजती है, तो कान कैसे काँपते हैं, नवीनता कैसे मालूम पड़ती है? यह शैली आपको गायत्री तपोभूमि सिखाएगा। जब आप जहाँ कहीं भी जाएँ, तो स्थानीय कार्यकर्त्ता को ले करके चलना। छोटे-से गाँव में भी आपको सम्मेलन करना है, सभा करनी है, ये शैली तो आपको अख्तियार करनी ही पड़ेगी। यूँ मत कहना कि मैं बैठा हूँ और तू चला जा। सारी जनता को तो बुलाया नहीं, हमें क्यों बुला लिया। हमारे लिए क्यों सभा की। हम तो बेकार आ गए। अरे बेकार क्यों आ गए बाबा, तुम्हें तो काम सिखाने के लिए भेजा है, चलो हमारे साथ। आगे-आगे शंख ले करके चलना। आप गाँव के मंदिरों से, सब पंडितों के यहाँ से, सत्यनारायण कथा कहने वालों के यहाँ से, सभी संतों को जमा कर लेना और जितने भी कार्यकर्त्ता हैं, सबको लेकर के ही शंख बजाते हुए चलना। घंटियाँ बजाते हुए चलना।

शिविरों का क्रम

मित्रो, आपको ही चलना पड़ेगा, जनता को आमंत्रित करना पड़ेगा, यह सब आपको ही करना पड़ेगा। आप ही नाचे, आप ही गावे, मनवा ताल बजावे। तीन-चार लोग गा रहे थे, जब मैंने सुना, तो बहुत अच्छा लगा। **आपको क्या करना**

पड़ेगा? स्टेज पर व्याख्यान भी आपको देना पड़ेगा और दीवारों पर वाक्य भी आपको लिखने पड़ेंगे। जनता को निमंत्रित करने से लेकर आपको आगे-आगे भी चलना पड़ेगा। निमंत्रण देने जाएँगे, तो भी आपको आगे-आगे चलना पड़ेगा। हमारे प्रात:कालीन शिविर बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। इसमें हमारे कार्यकर्त्ता, जिनकी कि लाखों की संख्या है, बना करके तैयार किये गये हैं। अब उनमें प्रेरणा भरना बाकी है, हवा भरना बाकी है। गुब्बारे बने हुए रखे हैं। हवा भरनी है, ये साइकिल के ट्यूब भी तो बने रखे हैं। ये अमुक के ट्यूब हैं। ये बढ़िया वाले ट्यूब हैं। खराबी कहीं भी नहीं आयेगी। हवा भरने वाला नहीं आया, जिसकी वजह से इनका उत्साह ठंडा पड़ गया और इनका जोश ठंडा पड़ गया। आपको इन लोगों में हवा भरनी पड़ेगी और जोश भरना पड़ेगा। शाम को तो वैसे भी तमाशवीन लोग रहते हैं, प्रात:कालीन शिविर वाले जो आपके हैं, उसमें संभव है कि प्राणवान लोग न आएँ। उसके लिए आपको स्वयं उनके पास तक जाना पड़ेगा।

जहाँ कहीं भी, जिस भी शाखा में आप जाएँगे, वहाँ पर आपको सौ-पचास आदमी जरूर ऐसे मिलेंगे, जिनके पास अखण्ड-ज्योति पत्रिका जाती होगी और युग-निर्माण पत्रिका जाती होगी। ध्यान रखना है कि ये शिविर और शाखा वहाँ हों, जहाँ पर कम-से-कम सौ पाठक ऐसे हों, जो हमारी अखण्ड-ज्योति जरूर मँगाते हों। सौ पाठक वहाँ होंगे, जहाँ हमारी पत्रिका १०० की तादाद में भेजी जाती होगी। आप उन सौ आदमियों की लिस्ट माँगना कार्यकर्त्ताओं से या फिर आप गायत्री तपोभूमि चले जाना और पता करना कि कौन-कौन आदमी हैं, जो हमारी अखण्ड-ज्योति मँगाते हैं, युग निर्माण मँगाते हैं। आप उन सबके पास बजाय इसके कि तू जाना-तू जाना आप स्वयं ही जाना, वहाँ के आदमियों को लेकर के और लिस्ट पर निशान लगाते चले जाना।

जिस दिन से आपका आयोजन होगा, उससे तीन दिन पहले हम आपको भेजते हैं। पन्द्रह दिन के आयोजन रखते हैं। दस दिन के आयोजन हैं, पाँच दिन आपको फालतू के मिलते हैं। हमने आपको तैयारी के लिए भेजा है, जिससे आप दो दिन की व्यवस्था बनाकर तब आगे बढ़ें। पन्द्रह दिन का शिविर आपके लिए है। दस दिन का शिविर शाखा के लिए है। शाखा वालों को जो क्रिया-कलाप करना पड़ेगा, वह केवल १० दिन है। पन्द्रह दिन तो आपकी निभ जाए। जब भी पहुँचे, जिस दिन भी पहुँचें, वहाँ के स्थानीय कार्यकर्त्ताओं की लिस्ट ले करके आप निकल जाइए, पूछिए आपके पास आती है अखण्ड-ज्योति? हाँ हमारे यहाँ तो

आती है। आपको लेख पसन्द आते हैं ? हाँ आते हैं। आप गुरुजी से सहमत हैं ? हाँ साहब सहमत हैं। हम तो खुद पढ़ते हैं और दूसरों को पढ़ाते हैं। अच्छा तो यह हम गुरुजी का संदेश लेकर के आये हैं और उनसे प्रेरणा ले करके और शिक्षा लेकर आये हैं, खासतौर से आपके लिए ले करके आये हैं। इस तरह से आप इनसे कहना कि आपको हमारे प्रात:कालीन शिविरों में जरूर सम्मिलित होना चाहिए। गुरुजी ने हमें अपने सभी कार्यकर्त्ताओं को यह संदेश आपसे कहने भेजा है। आपको जरूर आना है। हाँ साहब, हम जरूर आयेंगे। कल हमको भी जरूर आना है। सबेरे याद रख लीजिए और देख लीजिए—इसमें से कौन-कौन आये और कौन-कौन नहीं आये। सायंकाल को आपको यदि फिर समय मिल जाए, तो जो लोग नहीं आये थे, उनके पास शाम को जा पहुँचे और कहें साहब, हम तो आपका इंतजार ही करते रहे। गुरुजी ने देखिए कहा था और हमने लाल रंग का टिकमार्क पहले ही लगा दिया था कि इनको जरूर बुलाना और देखिए आपके नाम पर टिकमार्क लगा हुआ है और आप ही नहीं आये, ये क्या हुआ ? अच्छा तो कुछ काम लग गया होगा ? हाँ साहब, आज तो बहुत काम लग गया था, संध्या से जुकाम हो गया था। कल तक तो जुकाम आपका अच्छा हो जाएगा, तो देखो कल जरूर आना। ये टिकमार्क-लाल स्याही का निशान हमें गुरुजी को दिखाना पड़ेगा। आप नहीं आये, तो खराब बात होगी। साहब, हम तो जरूर आयेंगे। गुरुजी से कहना कि उनके विचारों को सब सुनने को आयेंगे। कल सुबह फिर बुलाना। **एक-एक आदमी आपको जरूर जमा करना पड़ेगा। यह जिम्मेदारी उठाने के लिए आप स्वयं तैयार होकर जाइये।**

सभी कार्य करने हैं आपको

गुरुजी, यह कार्य तो वहाँ के कार्यकर्त्ता या अन्य लोग मिलकर सारी व्यवस्था कर लेंगे। यदि वे लोग कर लेते, तो मित्रो हम नहीं भेजते आपको। ये काम वो नहीं कर सकते। यह टैकनिक उनको नहीं मालूम है। यह आपको मालूम है, इसीलिए वहाँ जाकर के सबसे आगे वाली लाइन में आप खड़े हुए दिखाई पड़ेंगे। **खाना बनाने से ले करके सफाई करने तक और शिविर की यज्ञशाला में पत्तियाँ लगाने से लेकर यज्ञशाला का स्वरूप बनाने तक, आपको आगे-आगे बढ़ना चाहिए। आपने यह कह दिया। अरे यार, यह कैसा कुंड बना, दिया ऐसे बनते हैं कहीं। तुम तो कैसे कह रहे थे-हम शाखा चलाते हैं। ये तुमने कुंड बना दिया और वेदी बना दी, ये भी कोई तरीका है। ऐसे भी कहीं कुंड बनते**

हैं क्या? कुंड ऐसे बनने चाहिए थे। तो आप कहाँ चले गये थे? हम तो साहब वहाँ बैठे थे, अखबार पढ़ रहे थे। अखबार पढ़ने के लिए आये थे या सामाजिक सहायता करने के लिए आए थे। आपको हम विशुद्ध रूप से कार्यकर्त्ता बना करके भेजते हैं, नेता बनाकर नहीं। नेता हम आपको नहीं बना सकते। किसी को भी हम नेता बनाकर नहीं भेजेंगे। हर आदमी को कार्यकर्त्ता **'सिन्सियर वालन्टियर'** बना करके भेजेंगे। उस आदमी को भेजेंगे, जो काम करने के लिए स्वयं आगे-आगे बढ़े और दूसरों को साथ लेकर चले। आपका व्यक्तित्व अलग नहीं होना चाहिए।

नियत दिनचर्या हो

आपकी सबेरे से लेकर सायंकाल तक की दिनचर्या जो होनी चाहिए, ऐसी होनी चाहिए, जिससे कि दूसरा आदमी अपनी दिनचर्या को सही कहे। आपके सोने का समय, उठने का समय और जगने का समय क्रमबद्ध होना चाहिए। प्रात:काल आपको देर से नहीं उठना चाहिए। संध्या आप करते हैं कि नहीं, मैं नहीं जानता, लेकिन नहीं करते, तो भी आपको करना चाहिए। यहाँ आपने कितना भजन किया या नहीं किया, आप जानें, आपका काम जाने, पर वहाँ जहाँ कही भी हम भेजते हैं, हम इसलिए भेजते हैं कि हर आदमी को हम उपासक बनाएँगे और गायत्री की उपासना सिखाएँगे और निष्ठा करना सिखाएँगे। अगर आपकी देखा-देखी यही ढीलम-पोल कार्यकर्त्ताओं में भी चालू हो गई हो, तो फिर सब काम बिगड़ जाएगा। अत: आप उपासना निष्ठापूर्वक करना, चाहे आप आधा घंटा ही करना, पर नियमपूर्वक जरूर करना। भूलना मत कभी। अगर कभी आपने ऐसा करना शुरू कर दिया कि आप साढ़े आठ बजे उठे और बहाना बना दिया कि साहब आज तो रात को देर हो गयी थी और साहब आपके यहाँ तो जगह भी नहीं है। आपके यहाँ हवा अच्छी नहीं है, यहाँ तो कोई बैठने को स्थान मिला नहीं, हम तो एकान्त में भजन करते हैं, गुफा में करते हैं। आपके यहाँ तो गुफा भी नहीं, एकान्त भी नहीं, तो हम यहाँ कहाँ भजन करेंगे। यह गलती मत करना। गुफा मिलती है, तो मुबारक, एकान्त मिलता है, तो मुबारक और चौराहा मिलता है, तो मुबारक और छत मिलता है, तो मुबारक। जहाँ कहीं भी आपको ठहरा दिया गया-धर्मशाला में ठहरा दिया गया है, तो आपको निष्ठावान व्यक्ति की तरह रहना और उपासना करनी चाहिए।

स्वच्छता का रखें ध्यान

मित्रो, आपको इस बात का ध्यान रखकर चलना चाहिए कि आपको थैलों के थैलों और बक्सों के बक्सों कपड़े लेकर नहीं जाना चाहिए। आप ढेरों के ढेरों धोती-कुर्ता लेकर नहीं जा रहे हैं। आप जहाँ कहीं भी जाने वाले हैं, वहाँ आपको वही एक दो धोती लेकर जाना होगा और एक-दो कपड़े लेकर जाना होगा। अगर आप कहीं अपना तरीका-वह तरीका जो घर में बरतते थे, मैला कपड़ा है, तो मैला ही पहने हैं, फटा है, तो फटा ही पहने हैं। इसको आप भूलना मत, शरीर को भी स्नान कराना और कपड़े को भी स्नान कराना। कपड़ा कौन है? चुगलखोर। ये हर आदमी की हैसियत को, हर आदमी के स्वभाव को और आदमी के रहन-सहन को बता देता है। ये आदमी कौन है? **आप गरीब हैं, सस्ता कपड़ा पहने हैं कोई हर्ज नहीं। आपका कपड़ा फट गया हो, तो भी कोई बात नहीं। साबुन आप साथ रखना और सुई-धागा अपने साथ रखना। बटन टूट गया हो तो, आप लगाकर रखना ठीक तरह से। करीने से कपड़े पहनना, आपका कपड़ा मैला नहीं होना चाहिए। मैला कपड़ा पहनकर आप अपने व्यक्तित्व को गँवा बैठेंगे। फिर आप रेशम का कपड़ा ही क्यों न पहने हों और टेरेलीन का कपड़ा क्यों न पहने हों, आपकी बेइज्जती हो जाएगी और आप बेकार के आदमी हो जायेंगे। आपका शरीर सफाई से रहे, आपके सब कपड़े सफाई से रहें। आप वहाँ-जहाँ कहीं भी जाएँ, आप भले ही अमीर आदमी न हों, बड़े आदमी न हों, लेकिन आपको मैले-कुचैले नहीं रहना चाहिये।** मैला कुचैला वह आदमी नहीं रह सकता, जो शरीर को स्नान कराता है। कपड़ों को भी रोज स्नान कराइए और कपड़ों को रोज धोइए।

पीला कपड़ा शान से पहनें

आपको ये मैं छोटी बातें बता रहा हूँ, लेकिन हैं ये बड़ी कीमती और बड़ी वजनदार। सायंकाल को जब आप सोया करें, तो अपने कुर्ते को तह करके अपने तकिए के नीचे लगा लिया करिए और तब सोया कीजिए। सबेरे आपका कुर्ता प्रेस किया हुआ और आयरन किया हुआ ऐसा भकाभक मिलेगा कि आप कहेंगे वाह भाई वाह, कैसा बढ़िया वाला प्रेस हुआ। वानप्रस्थ की पोशाक हमने पहनाई है। इसको आप ऐसे मत करना, अपनी शर्म की बात मत बनाना। शर्म की बात नहीं, आप वानप्रस्थ के कपड़े को अपनी बेइज्जती मत समझना, हम पीला वाला कपड़ा पहनकर जाएँगे, तो लोग हमें भिखारी समझेंगे और हम बाबाजी समझे जाएँगे,

जबकि हम तो नम्बरदार हैं, हम तो जमींदार हैं और देखों हम बाबाजी कहाँ हैं? ठीक है हम इस पीले कपड़े की इज्जत बनायेंगे। जैसे कि लोगों ने बिगाड़ी, हम बनाएँगे इज्जत। किसकी बनायेंगे? पीले कपड़े की बनायेंगे। इसलिए पीले कपड़े को आप छोड़ना मत। **रेलगाड़ी में जाएँ, तो भी आप पीला कपड़ा पहनकर जाना। लोग-बाग आपसे कहना शुरू करेंगे कि ये बाबाजी लोगों ने सत्यानाश कर दिया। ये छप्पन लाख बाबाजी हराम की रोटी खा-खाकर कैसे मोटे हो गये हैं? ये फोकट का माँगते हैं रोज और नम्बर दो वाला पैसा, ब्लैक वाला पैसा खा-खाकर कैसे मुस्टन्डे हो गये हैं। याद रखिए, आप जहाँ कहीं भी जाएँगे, जो देखेगा यही कहेगा कि ये देखो ये बाबाजी बैठे हैं। इन लोगों को शरम नहीं आती है। तब आप क्या करना? डरना मत उससे। उसकी गलती नहीं है? आप उसको समझाना कि हम बाबाजी कैसे हैं और हमारे बाबाजी का सम्प्रदाय कौन-सा है? और हमारा गुरु कैसा है? और हमको जो काम करना है- वह क्या है? और हम किस तरीके से हैं?**

इस बार का कुम्भ

मित्रो! लोगों की निष्ठाएँ ब्राह्मण के प्रति कम हो गई हैं और जो रही बची हैं, वह और खत्म हो जाएँगी। लोगों की निष्ठाए साधु पर से भी खत्म हो गई हैं और जो रही-सही बची हैं, तो और खत्म हो जाएँगी। अबकी बार मुझे कुंभ के मेले में इतनी खुशी हुई कि मेरे बराबर कोई भी नहीं। कुंभ के मेले को देखकर मैं भाव विभोर हो गया। एक बार मैं इलाहाबाद गया था, तो मैंने क्या देखा था? उसी साल ऐसा हुआ था कि रेलों के नीचे-पाँव के नीचे छह-सात सौ आदमी कुचलकर मर गये थे। उस साल मैं कुंभ में था। उसके बाद मैं गया नहीं। अबकी बार मैं यहाँ हूँ। अबकी बार तो मुझे बड़ी भारी प्रसन्नता है कि लोगों ने आने से इनकार कर दिया और यह सही काम किया। इस तरीके से जहाँ लोग इकट्ठे होते थे, सन्त और महात्मा इकट्ठे होते थे, सन्त और महात्मा इकट्ठे होने के बाद सम्मेलन करते थे और सम्मेलन के पश्चात् वाजपेय यज्ञ करते थे, इन मौकों के द्वारा यह किया करते थे कि किस तरह से हमको देश का निर्माण करना चाहिए। समाज की गुत्थियों को हल कैसे करना है और व्यक्ति की नैतिक कठिनाइयों का समाधान कैसे करना है? वे सारी-की-सारी शिक्षाओं को देने के लिए कुंभ में चले आते थे।

परंतु अब देखा ना आपने, क्या-क्या हो रहा है? कहीं रास हो रहा है, कहीं क्या हो रहा है? जनता को आकर्षित करने के लिए, जैसे कठपुतली वाले तमाशा

करने के लिए जो ढोंग किया करते हैं, वे इस तरीके से किया करते हैं। न कोई सम्मेलन की बात है, इनके पास न कोई ज्ञान है, न कोई दिशा है, न विचार है। लोगों को घृणा होगी और होनी चाहिए। मुझे बहुत प्रसन्नता है कि लोगों में नफरत होती चली जा रही है और घृणा उत्पन्न होती चली जा रही है और बाबाजी के दर्शन करने से इनकार करता हुआ आदमी चला जाता है। वे लोग अपने घर में कम्बल पहनकर सोते हैं और लिहाफ ओढ़कर सोते हैं और जब बाजार में होकर स्नान करने के लिए निकलते हैं, तो लंगोटी खोलकर निकलते हैं। मुझे बहुत शरम आती है। मुझे बहुत दुःख होता है। ठीक है, आप कपड़ों को उतारने वाले महात्मा हैं, तो आप जंगल में जाइये और वहाँ रहिए। वहाँ आप झोपड़ी डालिए और गंगाजी में स्नान कीजिए। गाँव से आप बाहर रहिये। जहाँ हमारी लड़कियाँ घूमती हैं, जहाँ हमारी बेटियाँ घूमती हैं, जहाँ हमारी बहुएँ घूमती हैं, जहाँ हमारे बच्चे घूमते हैं, वहाँ आप मत जाइए। यदि आप नागा बाबाजी हैं, तो आप दुनिया को क्या संदेश देने चले हैं?

हरिद्वार में गंगा विस्तृत क्षेत्र में फैली हुई है, परंतु नहीं साहब, हम तो हर की पौड़ी में ही स्नान करेंगे। अरे बाबा, हरिद्वार की हर की पौड़ी भी तो किसी काम की नहीं है। यह तो हमारे लिए किसी ने खोदकर नहर निकाल दी है। यह तो एक नहर है। आप मालूम कर लीजिए हर की पौड़ी एक नहर है। यह क्या? हर की पौड़ी तो गंगाजी है। गंगाजी तो है, पर खोदकर लाई गई है। गंगाजी में आपको नहाना है, तो आप वहाँ जाइये-नीलधारा पर नहाइये। यह गंगाजी नहीं है। यह मनुष्यों की बनाई हुई नहर है। नहीं साहब, हम तो ब्रह्मकुण्ड में नहाएँगे, हम तो यहीं नहाएँगे। हम तो ये करेंगे और हम तो नंगे होकर नहाएँगे। इस तरह के लोगों के दर्शन करने को अब आदमी नहीं जाता है। मुझे बहुत खुशी है कि लोगों ने इस साल कुंभ में आने से इनकार कर दिया और मैं भगवान् से प्रार्थना करूँगा कि अगले वर्ष भी वे यहाँ न आयें। इसमें सफाई कर्मचारियों के अलावा, पुलिस वालों के अलावा और बाबाजियों के अलावा, तीसरा कोई जनता न आवे। तीन आदमी आ जाएँ। बस, काम बन जाएगा। लोग क्यों आने चाहिए? और क्यों पैसा खराब करना चाहिए? इनको किस काम के लिए पैसा खराब करना चाहिए? छह तारीख को आप नहाएँगे, तो बैकुंठ को जाएँगे। हर की पौड़ी के ब्रह्मकुंड में नहाकर के आप बैकुंठ को जाएँगे? यह बहम जिनके दिल के ऊपर सवार है, उनकी तादाद खत्म होनी चाहिए। जिनको यह बहम हो गया है कि छह तारीख को न नहाने से बैकुंठ नहीं जाएँगे और हर की पौड़ी के कुंड पर नहा लेंगे, तो सीधे बैकुंठ को जाएँगे और वहाँ सड़कों पर नहा

लेंगे तो नरक को जाएँगे। इस तरह की मनोवृत्ति जितनी लोगों में कम होती चली जाएगी, धर्म की उतनी ही सेवा होती जाएगी।

गाली खाने के लिए तैयार रहें

इसलिए मित्रो क्या हो गया? लोगों में पंडितों के प्रति, संतों के प्रति, साधुओं के प्रति, हरेक के प्रति अवज्ञा का भाव उत्पन्न हो गया है और वे भाव हमने पैदा किये हैं। हम पुनः आस्था की स्थापना करेंगे। साधु के गौरव को हम फिर जिन्दा करेंगे, ब्राह्मण के गौरव को हम फिर जिन्दा करेंगे कि साधु और ब्राह्मण अपनी जिन्दगी किस तरीके से खपा देते थे। समाज के लिए, समाज को ऊँचा उठाने के लिए और धर्म की ऊँचा उठाने के लिए। ऋषियों की निष्ठा को ऊँचा उठाने के लिए किस तरह से वे अपने आपके लिए तबाही मोल लेते थे और किस तरीके से गरीबी मोल लेते थे? कि तरीके से कष्ट उठाते थे? इसे हमको जिन्दा करना है। इसलिए आप पीला कपड़ा जरूर पहनना, जिससे कि लोगों को बहस करने का मौका मिले और आपको गालियाँ खाने का मौका मिले। गालियाँ आपको खानी चाहिए, मैं तो कहता हूँ कि जिस आदमी को गालियाँ नहीं मिलीं, वह हमारा चेला नहीं हो सकता। गाँधीजी के शिष्य जितने भी थे उनको गालियाँ खानी पड़ी और आचार्य जी के चेलों को गालियाँ खानी चाहिए। गोलियाँ खाने को तैयार हो जाइये। नहीं साहब, गोली तो हम नहीं खाएँगे। ठीक है, आप गोली मत खाइये। तो क्या गाली खाएँ। गाली खाने से क्या एतराज है आपको? गाली तो खाइए ही।

आप पीले कपड़े पहन लेना और रेलगाड़ी के थर्डक्लास के डिब्बे में बैठ जाना। हर आदमी गाली देगा आपको और कहेगा कि देखो बाबाजी बैठा हुआ है। यह देखो फोकट का माल खाने वाला बाबाजी बैठा हुआ है। यह हरामखोर बाबाजी बैठा हुआ है। चालाक बाबाजी बैठा हुआ है, यह ढोंगी बाबाजी बैठा हुआ है। उन सबकी गाली आपको नहीं पड़नी चाहिए क्या? गाली आपको पड़नी चाहिए; क्योंकि लोगों ने इस तरीके से हमारे धर्म को, अध्यात्म को और भगवान को, ईश्वर को और सन्तवाद को बदनाम किया है। उसका प्रायश्चित हमें तो करना पड़ेगा ही। आखिर उनके वंश के तो हमीं लोग हैं ना? उनकी परम्परा के अनुयायी हमीं लोग तो हैं ना? उनकी औलाद तो हमीं लोग हैं ना? उनकी जिम्मेदारी हमीं लोग तो उठाने वाले हैं। ऋषियों के गौरव, ऋषियों के यश का लाभ हमीं लोग तो उठा सकते हैं। तो फिर हमारे जो मध्यकाल में ऋषि हुए हैं, उनके बदले की गाली कौन उठाएगा? गाली हमको

खानी चाहिए। इसलिए पीला कपड़ा, आप उतारना मत। जहाँ कहीं भी जाएँ, वहाँ रंग का डिब्बा साथ लेकर जाएँ। यह मत कहना यहाँ तो रंग मिलता नहीं। यह हमारी शान है, यह हमारी इज्जत है। यह हमारी हर तरह की साधु और ब्राह्मण की परम्परा-का उस समय की निशानी है, कुल की निशानी है। पीले कपड़े पहन करके जहाँ कहीं भी जाएँगे लोगों को मालूम पड़ेगा कि ये कौन हैं? ये उस मिशन के आदमी हैं, युग निर्माण योजना के आदमी हैं, गायत्री परिवार के आदमी हैं। युग निर्माण के आदमी कौन? जो संतों की परम्परा को जिन्दा रखने के लिए कमर बाँधकर खड़े हो गये, जो ब्राह्मण की परम्परा को जिन्दा रखने के लिए कमर कसकर खड़े हो गये हैं। जिन्होंने जीवन का यह व्रत लिया है कि हम श्रेष्ठ व्यक्तियों के तरीके से भले मनुष्यों के तरीके से-शरीफ आदमियों के तरीके से और अध्यात्मवादियों के तरीके से जिन्दगी यापन करेंगे। आपके बोलने की शैली, चलने की शैली और काम करने की शैली जब लोग देखेंगे, तो समझेंगे कि साधु घृणा करने का पात्र नहीं है। साधु नफरत करने की निशानी नहीं है। साधु हरामखोर का नाम नहीं है। साधु फोकट में मुक्ति माँगने वाले का नाम नहीं है, बल्कि परिश्रम करके और कीमत चुकाकर जीवनयापन करने वाले का नाम है। स्वयं मुक्ति पाने के लिए नहीं, बल्कि बंधनों से सारे समाज को मुक्ति दिलाने वाले का नाम ही साधु है। ये बातें जब लोगों को मालूम पड़ेंगी, तो परिभाषाएँ बदल जाएँगी, सोचने का तरीका बदल जाएगा। लोगों की आँखों में जो खून खौल रहा है, लोगों की आँखों में जो गुस्सा छाया हुआ है, वह खून खोलने वाली बात, गुस्सा छाने वाली बात से राहत मिलेगी।

मित्रो, अब ये जड़ें खत्म होने जा रही हैं और अध्यात्म बढ़ता हुआ चला जा रहा है। उसकी नींव मजबूत होने का फायदा फिर आपको मिल सकता है। आपको अपने इन्स्टीट्यूशन को मजबूत करने के लिए और मिशन की जानकारी अधिक से अधिक लोगों को कराने के लिए इन पीले वस्त्रों को प्यार करना होगा। जब तक आपको मिशन में जाना है, क्षेत्रों में जाना है, तब तक इन पीले कपड़ों को उतारना मत।

अच्छे काम में शरम कैसी

अच्छे काम के लिए, अच्छा काम करने के लिए शरम की जरूरत नहीं है। आपको खराब काम, बुरे काम करने की जरूरत हो, तो बात अलग है। अच्छा काम गाँधीजी ने शुरु किया था। तब चरखा को बुरा समझा जाता था। चरखा विधवाओं की निशानी समझा जाता था, लेकिन गाँधीजी ने जब से चरखा चलाना शुरू कर दिया, देशभक्तों की निशानी बन गई और वह काँग्रेस वालों की निशानी

बन गई। हमें इस पीले कपड़े को चरखे की तरह समझना चाहिए। हम इसका गौरव बढ़ाएँगे और हम संत और महात्माओं की निष्ठा-आस्था को फिर मजबूत करेंगे, जो घटती चली जा रही है और हवा में गायब होती चली जा रही है। हमारे क्रिया-कलाप और हमारे वस्त्र-दोनों का तालमेल मिला करके जब हम कार्यक्षेत्र में चलने के लिए तैयार होंगे, तो फिर क्यों हम उन परम्पराओं को जाग्रत करने में-जीवित करने में समर्थ न होंगे? जिसको ऋषियों ने हजारों और लाखों के खून से सींचकर के बनाया था, उसको जिन्दा रखा था।

पैसे की पारदर्शिता

आपको वहाँ जहाँ-कहीं भी जाना है, एक आदर्श व्यक्ति की तरह से जाना है। आपको कन्याओं में भी काम करना पड़ेगा, आपको लड़कियों में भी काम करना पड़ेगा। और महिलाओं में काम करना पड़ेगा। आप जहाँ कहीं भी जाएँ— दो बातों का ख्याल रखना। एक बात तो पैसे के बारे में है। उससे अपने हाथ बिल्कुल साफ रखना। जहाँ कहीं भी आपको पैसे चढ़ाने का मौका आए, आरती का मौका आए, पूजा का मौका आए, कोई भी पैसा आता हो, वहाँ आप लेना मत। आप चाहें कि इकट्ठा दस हजार जेब में भरते जाएँ और कहें कि अरे साहब! ये पूजा की आरती में पैसे आये थे। ऐसा मत करना आप। यद्यपि यह सब करने का मौका मिलेगा। आप वहीं के लोगों को बुलाना और देखना कोई पैसे आते हैं, चढ़ावे में आते हैं, सामने रखे जाते हैं। कोई चवन्नी चढ़ा जाती है लड़की, कोई अठन्नी चढ़ा जाती है। इस तरह पैसे का हिसाब बढ़ता चला जाएगा। इनको आप उसमें रखना, जमा करना। आप पैसे के बारे में हाथ साफ रखना। आपको शाखा जो कुछ भी दे वह किराये-भाड़े के रूप में कहीं भी जमा रखना। किराया आपको जो कुछ भी लेना हो, अपना खर्च वहीं से लेना। बाहर के लोगों से आप ये शिकायत न करना कि हमें साबुन की जरूरत है, कपड़े की जरूरत है और हमको वो वाली चीज चाहिए, हमको फलानी चीज चाहिए। कोई लाकर दे दे साबुन तो बात अलग है, लेकिन अगर आपको न दे तो आप अपने पैसे से ले लेना। नहीं तो वहाँ के आदमी से माँग लेना, **लेकिन वहाँ के लोगों का कोई दान-दक्षिणा का पैसा आप मंजूर मत करना।**

दान व्यक्तिगत नहीं है

आपको हमने संत बनाया है, लेकिन दान-दक्षिणा का पैसा वसूल करने का अधिकारी नहीं बनाया है। व्यक्तिगत रूप से दान-दक्षिणा लेने का अधिकार बहुत

थोड़े आदमियों को होता है। उन्हीं को होता है, जिनके पास अपनी कोई सम्पत्ति, अपना कोई धन नहीं होता। उस आदमी को भी दान-दक्षिणा लेने का अधिकार है, जिसने सारा जीवन समाज के लिए समर्पित कर दिया है और अपने घर की सम्पदा को पहले खत्म कर दिया है और अपने घर की सम्पदा के नाम पर उसके पास कोई पैसा जमा नहीं है। तब उस आदमी को हक हो जाता है कि लोगों से अपने शरीर निर्वाह करने के लिए पैसा ले। शरीर के निर्वाह करने के लिए रोटी ले। आपको मालूम होगा-अखण्ड ज्योति कार्यालय से गायत्री तपोभूमि प्रतिदिन दो बार आना-जाना होता था। भोजन अखण्ड ज्योति जाकर ही करते थे। यदि कभी तपोभूमि में देर तक रुकना पड़ता था, तो भोजन अखण्ड ज्योति संस्थान से मँगा लेते थे और वहाँ बैठकर खाते थे। आपको मालूम है कि नहीं, हमें ज्ञान नहीं। हमारे पास जमीन थी उस वक्त तक। इसीलिए जमीन जब तक हमारी थी, हमें क्या हक था कि हम अस्सी बीघे जमीन से अपना गुजारा न करें और गायत्री तपोभूमि के पैसे से हम कपड़े पहनें और रोटी लें। लोगों ने हमको धोतियाँ दीं, कपड़े हमको दिए और कहा कि गुरुजी के लिए लाए हैं। गुरु-दक्षिणा में लाए हैं। आपके लाने के लिए बहुत धन्यवाद, बहुत एहसान। सारे के सारे बक्से में बन्द करते चले गये। सारे कपड़ों को तपोभूमि में भिजवा दिया। जहाँ कार्यकर्त्ता रहते थे, दूसरे लोग रहते थे, हरेक को हमने दे दिया। अच्छा भाई लो, किसकी धोती फट गई। हमारी फट गई धोती, इनको देना। इसके पास नहीं है। उनके पास नहीं है। अच्छा खोल दो बक्सा मेरा; क्योंकि वे अपना घर छोड़ करके आ गये थे। उनके पास जीविका नहीं थी। इसलिए उन्हें खाने का अधिकार था। हमको नहीं था अधिकार, हमने नहीं खाया। जब तक हम गायत्री तपोभूमि में रहे हमने रोटी नहीं खाई, लेकिन जब हम अपनी अस्सी बीघे जमीन दे करके और भी हमारे पास जो कुछ था, दे करके खाली हाथ हो करके आ गये, हम अपना केवल शरीर और वजन ले करके आ गये, तो हमने यह मंजूर कर लिया है और हम यहाँ शांतिकुंज के चौके में रोटी खाते हैं और कपड़े पहनते हैं।

मित्रो! दान-दक्षिणा की, रोटी खाने का और कपड़े पहनने का अधिकार सिर्फ उस आदमी को है, जिसने अपनी व्यक्तिगत सम्पदा को समाप्त कर दिया है। जब तक आदमी अपनी व्यक्तिगत सम्पदा को समाप्त नहीं कर देता। कहीं गया है ठीक है, मेहनत की तरह से रोटी खा ले बस। आपके पास पैसा आता है, तो आप संस्था में जमा करना। पैसे के मामले में कहीं आप यह करके मत आना कि लोग

आपके बारे में ये कहने लगें कि गुरुजी के चेले पैसे के बारे में चोरी का भाव लेकर के आते हैं, भिक्षा माँगने का भाव लेकर आते हैं। यह ख्याल ले करके मत आना। यह बदनामी है आपकी, हमारी और हमारे मिशन की।

जनसम्पर्क संबंधी अनुशासन

एक और बात आप करना मत। क्या मत करना? आपको हमने महिलाओं में, लड़कियों में मिला दिया है। हमने हवन-कुण्डों पर हवन करने के लिए लड़कियों को, स्त्रियों को शामिल करने की जिम्मेदारी उठा ली है। हमने एक बड़ा काम कर डाला। बड़ा दुस्साहस का काम कर डाला। आप समझते नहीं कितनी बड़ी जिम्मेदारी हमने उठा ली है। उस जिम्मेदारी की शरम रखना आपके जिम्मे है। लड़कियाँ आई हैं। सम्मान के साथ काम करेंगी। अमुक काम करेंगी। लड़कियाँ आई हैं-अपने-अपने कंधों पर सिर पर कलश के घड़े ले करके चलेंगी। आपके पास आएँगी और परिक्रमा लगाएँगी और जय बोलेंगी। कोई आपके लिए क्या कहेंगी और कोई हवन करने के लिए कहेंगी। **आप हमेशा दो बातों का ध्यान रखना कि अकेले किसी लड़की से बात मत करना। जब कभी कोई अकेली लड़की, अकेली महिला आती हो, तो चुप हो जाना और आवाज देकर दूसरों को बुला लेना। किसी मर्द को बुला लेना या किसी महिला को बुला लेना। अकेले बात मत करना कभी। कभी कोई अकेली स्त्री आये और आपसे कोई बात करना चाहती हो या अकेली बात करती हो, तो आप कहना बहिन जी आप अपने बाप को, बहिन को लिवा लाइये और अपने भाई को लिवा लाइये। वह यहाँ आ करके बैठ जाएँ या फिर हम अपने बाबाजी को बुला लेते हैं। अकेली स्त्री से कभी भी बात मत करना। आप पर मैं यह प्रतिबन्ध लगाता हूँ। अकेले मत बात करना। किसी मर्द के बिना बात मत करना। यह प्रतिबन्ध नम्बर एक हुआ।**

बन्धन नम्बर दो। कन्याओं से और लड़कियों से बात करते हुए आपको ईसाई मिशन वाली बात याद रखनी चाहिए। 'नन' जो होती हैं, ईसाई मिशन का काम करती हैं। उनको ऐसी शिक्षा दे दी जाती है कि वे महिला में, महिला समाज में काम करती हैं। उनको आपने देखा होगा। नर्सों के रूप में जो काम करती हैं, महिलाओं में काम करती हैं, उनको नर्स कहते हैं। जो पादरी होती हैं, उनको नन कहते हैं। ननें टोपा-सा पहने रहती हैं। शायद कभी आपने देखा हो। ननों को एक खास शिक्षा दी जाती है कि कभी भी मर्दों से आँख-से-आँख मिलाकर बात नहीं

करनी चाहिए। मर्दों के सामने बात करें, तो काम की बात करें। समझाइए ये बात कीजिए, वो बात कीजिए, पर आँख से आँख मत मिलाइये। आँखें नीची रख करके महिलाओं से आप भी बातें करें। आपको भी यही शिक्षा दी जाती है। आपको भी ये शिक्षा दी जाती है कि महिला समाज में जहाँ कहीं भी आपको रहना पड़े, आँख से आँख मिलाइए मत, आँखें नीची करके बात कीजिए। नीचे आँख करके बात करेंगे, तो आपका गौरव, आपका सम्मान, आपकी इज्जत बराबर बनी रहेगी। गंभीर हो करके आप कीजिए बात। जोरों से कीजिए बात। दोस्तों से विशिष्ट बात मत कीजिए। जो भी कह रहे हैं, उसे जोर से कहिए। ऐसे कहिए मानो दूसरों को कम सुनाई पड़ता है। कम सुनने वाला आदमी कैसे बोलता है? सोचता है इन सबको कम सुनाई पड़ता है। धोती मँगा दीजिए। अरे हमारे तो कान अच्छे हैं। आप ये समझ रहे हैं, महिला समाज में जब आपको काम करना पड़े, तो आप क्या कहेंगे। आप यह समझना कि हमारे कान बहरे हो गये हैं। जोर से कह लड़की, क्या कहती है। जो कहना हो वह भी जोर-जोर से कहना। आप इन बातों को ध्यान रखना। ये बातें काम की हैं। हैं तो राई की नोक की बराबर, लेकिन आप जहाँ कहीं भी जाएँगे, शालीन आदमी हो करके जाएँगे, श्रेष्ठ आदमी हो करके जाएँगे। आप अपनी संस्था के गौरव को अक्षुण्ण रखने में समर्थ हो सकेंगे।

परीक्षा की घड़ी

जब मैं आपको यहाँ से भेजता हूँ। कहाँ भेजता हूँ? आपने अपनी कन्या के हाथ पीले कर दिए। मैंने किसके पीले हाथ कर दिए? आप लोगों के पीले हाथ किये हैं। कपड़े मैंने पहना दिये हैं, पीले हाथ कर दिये हैं, अब आपकी जिम्मेदारी है। अब आपका इम्तिहान लिया जाने वाला है और आपकी यह परख होने वाली है कि ये जो बहू आई है, कैसी है और बहू को क्या-क्या बनाना आता है। रोटी बनानी आती है बहू को, नहीं। बहू को पकौड़ी बनानी आती है कि नहीं। उसके सास, ससुर बैठे हैं। अरे ये बहू आई है, बहू के हाथ से पूड़ी तो बनवाकर खिलवाओं, बहू के हाथ से कचौड़ी, तो बनवाकर खिलवाओ। सब बैठे हुए हैं, सारा घर बैठा हुआ है और देखिए बहू आती है और कैसे पकौड़ी बनाती है, कैसे पकौड़ी बनाकर खिलाती है? आप पीले कपड़े पहन करके और अपने पीले हाथ करा करके अपनी ससुराल चले जाना। वहाँ इस तरह से काम करके आना, इस तरह का व्यवहार करके आना कि आपका समधी कहे, आपकी जिठानी कहे,

देवरानी भी कहे, सारा गाँव ये कहे कि ये लड़की क्या है! बड़े खानदान की इज्जत को रखना और बहू को असली इज्जत को रखना आप अपनी ससुराल में।

याद रखिए आप वह नाम कमा करके आना कि लोग हमसे बार-बार यही कहें कि पिछली बार जिन मोहनलाल जी को आपने भेजा था, इस बार भी आप उन्हीं को भेजना गुरुजी। अबकी बार फिर हमने सम्मेलन किया है और हमारे लिए तो मोहनलाल जी को ही भेज दीजिए। बेटा, मोहनलाल जी को नहीं अबकी बार तो मक्खनलाल जी को भेजेंगे, पिछली बार मोहनलाल जी को भेजा था। मोहनलाल जी से इक्कीस ही भेज रहे हैं उन्नीस नहीं हैं। अरे गुरुजी, उन्हीं को भेज देते तो अच्छा रहता। लोग याद करें आपको, ऐसी आप निशानियाँ छोड़ करके आना—अपने स्वभाव की, अपने कर्म की, अपने गौरव की और अपनी विशेषताओं की। गौरव की बात छोड़ करके आये, तो मित्रो, धन्य हो जाएगा आपका वानप्रस्थ, धन्य हो जाएगा हमारा यह शिविर। धन्य हो जाएँगे आपके वे क्रियाकलाप, जिनके लिए सारे भारतवर्ष में भ्रमण करने के लिए, लोगों में जागृति लाने के लिए, लोगों में भावना पैदा करने के लिए, लोगों में भगवान् के प्रति निष्ठा जगाने के लिए, **अध्यात्मवाद की स्थापना करने के लिए, आत्मा का विकास करने के लिए और धार्मिकता की स्थापना करने के लिए** आपको भेजते हैं। आपको इन्हीं तीन उद्देश्यों के लिए भेजते हैं। आप साधना करके आना और हमारी लाज रखके आना।

आज की बात समाप्त हुई।

॥ ॐ शान्ति ॥

जीवंत विभूतियों से भावभरी अपेक्षाएँ

(१७ अप्रैल १९७४ शान्तिकुञ्ज में दिया गया उद्बोधन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बोलें,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! भगवान् ने गीता में 'विभूति योग' वाले दसवें अध्याय में एक बात बताई है कि जो कुछ भी यहाँ श्रेष्ठ दिखाई पड़ता है, ज्यादा चमकदार दिखाई पड़ता है, वह मेरा ही विशेष अंश है। जहाँ कहीं भी चमक ज्यादा दिखाई पड़ती है, वह मेरा विशेष अंश है। उन्होंने कहा, वृक्षों में मैं पीपल हूँ। छलों में मैं जुआ हूँ। वेदों में मैं सामवेद हूँ। साँपों में वासुकी मैं हूँ। अमुक में अमुक मैं हूँ-आदि मुझ में ये सारी विशेषताएँ हैं। मित्रो! आपको जहाँ-कहीं भी चमक दिखाई पड़ती है, वो सब भगवान् की विशेष दिव्य विभूतियाँ हैं और जहाँ कहीं भी जितना अधिक विभूतियों का अंश है, यह मानकर के हमको चलना पड़ेगा कि यहाँ इस जन्म में अथवा पहले जन्मों में इन्होंने किसी प्रकार से इस संपत्ति का उपार्जन किया है। अगर यह उपार्जन इन्होंने नहीं किया है, तो सामान्य मनुष्यों की अपेक्षा उनमें ये विशेषता क्यों दिखाई पड़ती हैं? जिनके अंदर कुछ विशेषताएँ दिखाई पड़ती हैं, मित्रो! उनके कुछ विशेष कर्त्तव्य और विशेष जिम्मेदारियाँ हैं। इसलिए उनको उद्बोधन करना चाहिए। उन लोगों को, जिनके अंदर कुछ विशेष प्रभाव और विशेष चमक दिखाई पड़ती है।

संपदा बनाम विभूति

मित्रो! विशेष प्रभाव और विशेष चमक क्या है? वह है जिनको हम विभूतियाँ कहते हैं। कुछ संपदाएँ होती हैं, कुछ विभूतियाँ होती हैं। संपदाएँ क्या होती हैं और विभूतियाँ क्या होती हैं? संपदा उसे कहते हैं जो कि बाप-दादों की हैं। वे उसे छोड़कर चले जाते हैं और हम उस कमाई को बैठकर खाया करते हैं, ये संपदाएँ हैं। ये स्त्रियों को भी मिल जाती हैं, बच्चों को भी मिल जाती हैं। ये कोढ़ियों को भी मिल जाती हैं, अंधों को मिल जाती हैं और पंगु को भी मिल जाती हैं, गूँगें-बहरे को भी मिल जाती हैं। गूँगे-बहरे भी कई बार जुआ खेलते हैं और लाटरी लगाते हैं।

लाटरी लगाने के बाद में उनको रुपया भी मिल जाता है। न मालूम किसको क्या मिल जाता है बाप-दादों की कमाई से? बाप-दादों की कमाई से मिनिस्टरों के लड़के-लड़कियों को ऐसे-ऐसे काम मिल जाते हैं, ऐसे-ऐसे धंधे मिल जाते हैं, जिससे उनको घर बैठे लाखों रुपए की आमदनी होती रहती है। इसे क्या कहते हैं? इसे हम संपदा कहते हैं।

किसी के पास जमीन है। भगवान् की कृपा से उस साल अच्छी वर्षा हो गई, तो दो सौ क्विंटल अनाज पैदा हो गया। दो सौ क्विंटल अनाज बिक गया, तो ढेरों पैसा आ गया और उसे बैंक में जमा करा दिया। मकान बन गया, ये बन गया-वो बन गया। पैसे का खेल बन गया। क्या कहता हूँ मैं इनको? इनको मैं संपत्तियाँ कहता हूँ। संपत्ति जमीन में गड़ी हुई मिल सकती है, बाप-दादों की उत्तराधिकार में भी मिल सकती है और किसी बड़े आदमी की कृपा एवं आशीर्वाद से भी मिल सकती है। संपत्ति किसी भी तरीके से मिल सकती है, किंतु संपत्तियों का कोई मूल्य नहीं है, विभूतियों का मूल्य है। विभूतियाँ जहाँ कहीं भी दिखाई पड़ें, उनको आप यह मानकर चलना कि वे भगवान् का विशेष अंश हैं। विशेष अंश जो उनके भीतर है, वह जहाँ कहीं भी हो, उस अंश को जाग्रत् करना, उसको उद्बोधन करना और सोए हुओं को जगाना हमारा-आपका विशेष काम है।

साथियो! रावण के घर में ढेरों-के-ढेरों आदमी थे। सुना है एक लाख बच्चे थे और सवा लाख नाती-पोते थे, लेकिन जब रामचंद्र जी से लड़ाई हो गई और दोनों और की सेनाएँ खड़ी हो गईं, तो उसने देखा कि हमारे पास एक ही सहायक, एक ही मजबूत और जबरदस्त आदमी है, उसको जगाया जाना चाहिए और उसकी खुशामद की जानी चाहिए। उसकी खुशामद की जाने लगी, उसे जगाया जाने लगा। कौन आदमी था वह? उसका नाम था कुंभकरण। वह छह महीने जागा करता था। रावण को यह विचार आया कि कुंभकरण यदि जाग करके खड़ा हो जाए, तो सारे रीछ-बंदरों को एक ही दिन में मारकर खा जाएगा। एक ही दिन में सफाया कर देगा और लड़ना भी नहीं पड़ेगा और रामचंद्र जी की सेना का सफाया हो जाएगा। सुना है, इसीलिए उसके ऊपर बैल, घोड़े और हाथियों को चलाना पड़ा था, ताकि कुंभकरण की नींद छह महीने पहले ही खुल जाए और वह उठकर खड़ा हो जाए। अगर वह तुरंत उठकर खड़ा हो गया होता, अगर जाग गया होता, तो रामचंद्र जी की सेना के लिए मुसीबत खड़ी कर दी होती, लेकिन भगवान् की कृपा ऐसी हुई,

भगवान् का जोश और प्रताप ऐसा हुआ कि वह काफी देर से जागा। तब तक रावण युद्ध हार चुका था। इसीलिए रावण मारा गया, मेघनाद मारा गया और सारी लंका तहस-नहस हो गई।

विभूतिवान जागें

मित्रो! हमको समाज में सोए हुए, गड़े हुए कुंभकरणों को जगाना चाहिए। कुंभकरणों की कमी है क्या? नहीं, इनकी कमी नहीं है, पर वे सो गए हैं। हमारा एक काम यह भी होना चाहिए कि जहाँ कहीं भी आपको विभूतिवान् मनुष्य दिखाई पड़ें, तो आपको उनके पास बार-बार चक्कर काटना चाहिए और बार-बार उनकी खुशामद करनी चाहिए।

विभूतिवान् लोगों में एक तबके के वे लोग आते हैं, जिनको हम विचारवान् कहते हैं, समझदार कहते हैं। समझदार मनुष्य इस ओर चल पड़ें, तो भी गजब ढा देते हैं और उस ओर चल पड़ें, तो भी गजब ढा देते हैं। मोहम्मद अली जिन्ना बड़े समझदार आदमी थे और बड़े अक्लमंद आदमी थे। मालवार हिल के ऊपर मुंबई में उनकी कोठी बनी हुई है। उनके यहाँ चालीस जूनियर वकील काम करते थे और केस तैयार करते थे। मोहम्मद अली जिन्ना केवल बहस करने के लिए हाईकोर्ट में जाते थे और एक-एक केस का हजारों रुपया वसूल करते थे—उस जमाने में। मोतीलाल नेहरू के मुकाबले के आदमी थे। उनमें बड़ी अक्ल थी, बड़े दिमाग वाले थे। बड़ा दिमाग वाला, अक्ल वाला मनुष्य इधर को चले, तो भी गजब और उधर को चले, तो भी गजब। सही भी कर सकता था वह तथा गलत भी। यही हुआ।

मोहम्मद अली जिन्ना एक दिन खड़े हो गए और पाकिस्तान की वकालत करने लगे, पाकिस्तान की हिमायत करने लगे। परिणाम क्या हुआ? परिणाम यह हुआ कि सारे पाकपरस्तों के अंदर उन्होंने एक ऐसी बगावत का माद्दा पैदा कर दिया, ऐसी लड़ाई पैदा कर दी, जेहाद पैदा कर दी और न जाने क्या-क्या पैदा कर दिया कि एक ही देश के लोग एक दूसरे के खूनी हो गए, बागी हो गए। खूनी और बागी होकर के जहाँ-तहाँ दंगे करने लगे। आखिर में गाँधीजी को यह बात मंजूर करनी पड़ी कि पाकिस्तान बनकर ही रहेगा। निर्णय सही था कि गलत, यह चर्चा का विषय नहीं है। वास्तविकता यह जाननी चाहिए कि यह जहर किसने बोया? यह जहर उस आदमी ने बोया, जिसको हम समझदार कहते हैं और अक्लमंद कहते हैं, मोहम्मद अली जिन्ना कहते हैं। यह तो मैं उदाहरण दे रहा हूँ। मनुष्यों का क्या उदाहरण दूँ, मैं तो समझदारी का उदाहरण दे रहा हूँ।

कीमत सही अक्ल की

समझदारी जहाँ कहीं भी होगी, न जाने क्या-से-क्या करती चली जाएगी? समझदार आदमी आर्थिक क्षेत्र में चला जाएगा, तो वो मोनार्क पैदा हो जाएगा और हेनरी फोर्ड पैदा हो जाएगा। पहले ये छोटे-छोटे आदमी थे। नवसारी गुजरात का एक नन्हा-सा आदमी, जरा-सा आदमी और समझदार आदमी अगर व्यापार क्षेत्र में चला जाएगा, तो उसका नाम जमशेद जी टाटा होता चला जाएगा। राजस्थान का एक अदना-सा आदमी जुगल किशोर बिड़ला होता चला जाएगा। अगर आदमी के अंदर गहरी समझदारी हो तब? तब एक नन्हा-सा आदमी, जरा सा आदमी, दो कौड़ी का आदमी जिधर चलेगा, अपनी समझदारी के साथ, वह गजब ढाता हुआ चला जाएगा।

मित्रो! गहरी समझदारी की बड़ी कीमत है। गहरी समझदारी वाले सुभाषचंद्र बोस गजब ढाते हुए चले गए। सरदार पटेल एक मामूली से वकील। यों तो दुनिया में एक ही नहीं, बहुत सारे वकील हुए हैं, लेकिन पटेल ने अपनी क्षमता और प्रतिभा यदि वकालत में खरच की होती, तो शायद अपनी समझदार अक्ल की कीमत एक हजार रुपया महीना वसूल कर ली होती और उन रुपयों को वसूल करने के बाद में मालदार हो गए होते और उनका बेटा शायद विलायत में पढ़कर आ जाता और वह भी वकील हो सकता था। उनकी हवेली भी हो सकती थी और घर पर मोटरें भी हो सकती थीं, लेकिन वही सरदार पटेल अपनी समझदारी को और अपनी बुद्धिमानी को लेकर खड़े हो गए। कहाँ खड़े हो गए? वकालत करने के लिए। किसकी वकालत करने के लिए? काँग्रेस की वकालत करने के लिए और आजादी की वकालत करने के लिए। जब वे वकालत करने के लिए खड़े हो गए, तो कितनी जबरदस्त बैरिस्टरी की और किस तरीके से वकालत की और किस तरीके से तर्क पेश किए और किस तरीके से उनने फिजाँ पैदा की कि हिंदुस्तान की दिशा ही मोड़ दी और न जाने क्या-से-क्या हो गया?

मित्रो! अक्ल बड़ी जबरदस्त है और आदमी का प्रभाव, जिसको मैं प्रतिभा कहता हूँ, विभूति कहता हूँ, यह विभूति बड़ी समझदारी से भरी है। अगर यह विभूति आदमी के अंदर हो, जिसको मैं आदमी का तेज कहता हूँ, चमक कहता हूँ, तो वह आदमी जहाँ कहीं भी जाएगा, वो टॉप करेगा। वह टॉप से कम कर ही नहीं सकता। सूरदास जब वेश्यागामी थे, बिल्वमंगल थे, तो उन्होंने अति कर डाली और सीमा से बाहर चले गए। वहाँ तक चले गए जहाँ तक कि अपनी धर्मपत्नी के

कंधे पर बैठकर वहाँ गए, जहाँ उनके पिताजी का श्राद्ध हो रहा था। वहाँ भी पिताजी के श्राद्ध के समय भी वे वेश्यागमन के लिए चले गए। श्राद्ध करने के लिए भी नहीं आए। अति हो गई।

प्रतिभाएँ सदैव शीर्ष पर पहुँचीं

और तुलसीदास? तुलसीदास जी भी जिजीविषा के मोह में पड़े हुए थे। सारी क्षमता और सारी प्रतिभा इसी में लग रही थी। एक बार उनको अपनी पत्नी की याद आई। वह अपने मायके गई हुई थी। नदी बह रही थी। वे नदी में कूद पड़े।
नदी में कूदने पर देखा कि अब हम डूबने वाले हैं और कोई नाव भी नहीं मिल रही है। तभी कोई मुरदा बहता हुआ चला आ रहा था, बस वे उस मुरदे के ऊपर सवार हो गए और तैरकर नदी पार कर ली। उनकी बीबी छत पर सो रही थी। वहाँ जाने के लिए उन्हें सीढ़ी नहीं दिखाई पड़ी, रास्ता दिखाई नहीं पड़ा। वहाँ पतनाले के ऊपर एक साँप टँगा हुआ था। उन्होंने साँप को पकड़ा और साँप के द्वारा उछलकर छत पर जा पहुँचे। कौन जा पहुँचे? तुलसीदास। यही तुलसीदास जब हिम्मत वाले, साहस वाले तुलसीदास बन गए, प्रतिभा वाले तुलसीदास बन गए, तब वे संत हो गए।

इसी तरह सूरदास, प्रतिभा वाले और हिम्मत वाले सूरदास जब खड़े हो गए और जो भी दिशा उन्होंने पकड़ ली, उसमें उन्होंने टॉप किया। सूरदास ने जब अपने आपको सँभाल लिया और अपने आपको बदल लिया, तब उन्होंने टॉप किया। टॉप से कम में तो वे रह ही नहीं सकते। वही बिल्वमंगल जब वेश्यागामी था तो पहले नंबर का और जब संत बना तब भी पहले नंबर का। पहले नंबर का क्यों? इसलिए कि वह भगवान् का भक्त हो गया। जब वह भगवान् का भक्त हो गया, तो फिर वह ऐसा मजेदार भक्त हुआ कि उसने वह काम कर दिखाए, जिस पर हमको अचंभा होता है। हिम्मत वाला और दिलेर आदमी जो काम कर सकता है, मामूली आदमी उसे नहीं कर सकता। उसने अपनी आँखें गरम सलाखें डालकर फोड़ डालीं। हम और आप कर सकते हैं क्या? नहीं कर सकते। ऐसा कोई दिलेर आदमी ही कर सकता है। उसने दिलेरी के साथ और तन्मयता के साथ ऐसी मजबूत भक्ति की कि श्रीकृष्ण भगवान् को भागकर आना पड़ा और बच्चे के रूप में, जिनको कि वे अपना इष्टदेव मानते थे, उसी रूप में उनकी सहायता करनी पड़ी। आँखों के अंधे सूरदास की लाठी पकड़ करके टट्टी-पेशाब कराने के लिए, स्नान कराने के लिए भगवान् ले जाया करते थे और सारा इंतजाम किया करते थे। भगवान् उनकी नौकरी बजाया करते थे।

कौन से सूरदास की? उस सूरदास की, जो प्रतिभावान् था। मैं किसकी प्रशंसा कर रहा हूँ? भक्ति की? भक्ति की बाद में, सबसे पहले प्रतिभा की, समझदारी की। प्रतिभा की बात मैं कह रहा हूँ। प्रतिभा अपने आप में एक जबरदस्त वस्तु है। वह जहाँ कहीं भी चली जाएगी, जिस दिशा में भी चली जाएगी, चाहे वह जहाँ कहीं भी जाएगी, पहले नंबर का काम करेगी। तुलसीदास ने क्या काम किया? तुलसीदास ने जब अपनी दिशाएँ बदल दीं, जब उनकी बीबी ने कहा, नहीं, तुम्हारे लिए ये मुनासिब नहीं है। क्या तुम इसी तरीके से वासना में अपनी जिंदगी खत्म कर दोगे? तुमको भगवान् की भक्ति में लगा जाना चाहिए और जितना हमको प्यार करते हो, उतना ही भगवान् से करो, तो मजा आ जाए और तुम्हारी जिंदगी बदल जाए। उनको यह बात चुभ गई। हमको और आपको चुभती है क्या? नहीं चुभती। हमारी औरतें सौ गालियाँ देती रहती हैं। और फिर हम ऐसे ही हाथ-मुँह धोकर के आ बैठते हैं। वह फिर गाली सुनाती है और गुस्सा होकर के चले जाते हैं और कहते हैं कि फिर तेरे घर नहीं आएँगे और बस वह जाता है और दुकान पर बैठा बीड़ी पीता रहता है। शाम को घूम-फिरकर फिर आ जाता है। क्यों फिर आ गए? आ गए, क्योंकि उसके अंदर वह चीज नहीं है, जिसे जिंदगी कहते हैं।

जिंदगी वाले इंसान—महामानव

मित्रो! जिंदगी की बड़ी कीमत है। जिंदगी लाखों रुपये की कीमत की है, करोड़ों रुपये की है, अरबों-खरबों रुपये की कीमत की है। तुलसीदास भी जिंदगी वाला इंसान था। वासना के लिए जब व्याकुल हुआ, तो ऐसा हुआ कि बस हैरान-ही-हैरान, परेशान-ही-परेशान और जब भगवान् की भक्ति में लगा, तो हमारी और आपकी जैसी भक्ति नहीं थी उसकी कि माला फिर रही है इधर और मन फिर रहा है उधर। मन के फिर रहे हैं इधर और सिर खुजा रहे हैं उधर। भजन कर रहे हैं इधर और पीठ खुजा रहे हैं उधर। भला ऐसी कोई भक्ति होती है? तुलसीदास ने भक्ति की, तो कैसी मजेदार भक्ति की कि बस पीपल के पेड़ पर से, बेल के पेड़ पर से कौन आ गया? भूत आ गया। उन्होंने कहा कि हमको भगवान् के दर्शन करा दो। उस भूत ने कहा कि भगवान् के तो नहीं करा सकते, हनुमान् जी के करा सकते हैं। अच्छा! चलो हनुमान् जी के ही करा दो।

हनुमान् जी वहाँ रामायण सुनने जाते थे। उसने उनके दर्शन करा दिए। तुलसीदास ने हनुमान् जी को पकड़ लिया और कहा कि हमको रामचंद्र जी के दर्शन करा दीजिए। आपने पढ़ा है न तुलसीदास जी का जीवन! उन्होंने क्या किया,

कि रामचंद्र जी का , जिनका कि वे नाम लिया करते थे, उन रामचंद्र जी को पकड़कर ही छोड़ा। उन्होंने कहा कि रामचंद्र जी का भी ठिकाना नहीं है और मेरा भी ठिकाना नहीं है। दोनों को एक होना होगा या तो मैं रहूँगा या रामचंद्र जी रहेंगे? या तो हनुमान् जी रहेंगे या रामचंद्र जी रहेंगे? मैं तो लेकर के हटूँगा। भला ऐसे कैसे हो सकता है कि मैं हनुमान् चालीसा पढ़ूँगा और हनुमान् जी भाग जाएँ और पकड़ में नहीं आएँ? पकड़ में कैसे नही आएँगे? हनुमान् को पकड़ में जरूर आना पड़ेगा। हनुमान् जी पकड़ में जरूरत आ गए। हनुमान् जी पकड़ में नहीं आए, हनुमान् जी के ताऊ रामचंद्र जी भी पकड़ में आ गए। दोनों को पकड़ लिया उसने। किसने पकड़ लिया? तुलसीदास ने। हम और आप पकड़ सकते हैं क्या? हम और आप नहीं पकड़ सकते। भूत तो पकड़ सकते हैं? नहीं पकड़ सकते। हनुमान् जी को पकड़ लेंगे? नहीं, हनुमान् जी भी पकड़ में नहीं आएँगे और रामचंद्र जी तो, भला कैसे पकड़ में आ सकते हैं? वे भी नहीं आएँगे।

दिशा जो बदली, तो गजब हो गया

मित्रो! क्या वजह है इसकी? हम में और तुलसीदास जी में क्या अंतर है? एक अंतर है। नाक, आँख, कान, दाँत और हाथ-पाँव सब बराबर हैं, पर एक चीज जो उनके अंदर थी, वह हमारे अंदर नहीं है। वह चीज है, जिसे मैं जिंदगी कहता हूँ, जिसको मैं प्रतिभा कहता हूँ, जिसको मैं विभूति कहता हूँ, जिसको मैं लगन कहता हूँ, तन्मयता कहता हूँ, जीवट कहता हूँ। वह जीवट मित्रो! जहाँ कहीं भी होगा, तो वह बड़ा शानदार काम कर रहा होगा और गलत दिशा पकड़ने पर गलत काम भी कर रहा होगा।

अंगुलिमाल पहले नंबर का डाकू था। उसने ये कसम खाई थी कि फोकट में किसी का पैसा नहीं लूँगा। उँगलियाँ काट-काटकर उसकी माला बनाकर वह देवी को रोज चढ़ाया करता था। अगर कोई कहता कि अरे भाई! पैसे ले ले, पर उँगली क्यों काटता है हमारी? वह कहता, वाह! फोकट में, दान में नहीं लेता हूँ। पहले तेरी उँगली काटूँगा, तो मेरी मेहनत हो जाएगी। फिर उस मेहनत का पैसा ले लूँगा। ऐसे मुफ्त में कैसे ले लूंगा किसी का पैसा? इस तरह वह रोज एक साथ उँगलियाँ कट-काटकर उसकी माला देवी को पहनाया करता था? कौन? खूंख्वार अंगुलिमाल डाकू, लेकिन जब उसने पलटा खाया, तो कैसा जबरदस्त पलटा खाया, आपको मालूम है न? अंगुलिमाल जब तक डाकू था, तो पहले नंबर का और जब संत हो गया, तो उसने हिंदुस्तान से आगे जाकर के सारे-के-सारे विदेशों

में, मिडिल ईस्ट में वो काम किए कि बस, तहलका मचा दिया। वह जहाँ कहीं भी गया, अपने प्रभाव से दुनिया को बदलता हुआ चला गया।

मित्रो! क्षमताएँ जिनके अंदर हैं, प्रतिभाएँ जिनके अंदर हैं, वह कहीं-से-कहीं जा पहुँचता है। आम्रपाली जब तक वेश्या रही, तो पहले नंबर की रही। राजकुमार, राजाओं से लेकर सेठ-साहूकार तक उसकी एक निगाह के लिए, उसकी एक चितवन और एक इशारे के लिए ढेरों रुपया खरच कर डालते थे और उसके गुलाम हो जाया करते थे, लेकिन जब आम्रपाली अपनी करोड़ों की संपत्ति को लेकर भगवान् बुद्ध की ओर चली गई, तो न जाने क्या-से-क्या हो गई और सम्राट् अशोक जो था, ऐसा खूनी था कि उसने खानदान-के-खानदान समाप्त कर दिए थे। सभी शाही खानदानों को एक ओर से उसने मरवा डाला था। मुसलमानों ने एक-आध को मारा था, लेकिन उसने तो किसी को जिंदा ही नहीं छोड़ा। ऐसी खूनी था अशोक। उसने चंगेज खाँ, नादिरशाह और औरंगजेब, सबको एक किनारे रख दिया था। जहाँ कहीं भी हमले किए, वहाँ खून की नदियाँ ही बहाता चला गया।

लेकिन मित्रो! जब उसने पलटा खाया और जब अपने आप में परिवर्तन कर डाला, तो फिर वह कौन हो गया? सम्राट् अशोक हो गया, जिसने बौद्ध संघ और बौद्ध धर्म का सारे-का-सारा संचालन किया। आज जो हमारे झंडे के ऊपर और हमारे सिक्कों-नोटों के ऊपर तीन शेर वाला निशान बना हुआ है, वह सम्राट् अशोक की निशानी है। और जो हमारे राष्ट्रीय ध्वज पर चौबीस धुरी वाला और चौबीस पंखुड़ी वाला चक्र लगा हुआ है, यह क्या है? यह सम्राट् अशोक के द्वारा पारित किया और प्रतिपादित किया हुआ धर्मचक्र प्रवर्तन है, जिसको हमने राष्ट्रीय झंडे के ऊपर स्थान दिया हुआ है। ये किसकी हिम्मत, किसकी दिलेरी थी किसकी बहादुरी थी? उसकी थी, जो डाकू था और खूंखार था।

जीवंत बनाम मुरदे

मित्रो! भगवान् जहाँ कहीं भी अपना अंश देता है, विभूति देता है, उसके अंदर चमक होती है, लगन होती है, उसके अंदर तड़प होती है और मुरदे? मुरदे हमारे और आपके जैसे होते हैं। साँस लिया करते हैं। भगवान् की जब पूजा करते हैं, तो भी ऐसे-ऐसे सिर हिलाते रहते हैं और साँस लेते रहते हैं। सेवा करने जाते हैं, तो वहाँ भी निठल्ले की तरह पड़े रहते हैं। सत्संग करने, शिविर करने आते हैं, तो यहाँ भी मौसी जी-मौसा जी की याद सताती है।

मित्रो! ये क्या होता है? ये मैं किसकी कहानियाँ सुना रहा हूँ? मुरदे की। जिंदा आदमियों की भी कह रहा हूँ। आपके जिम्मे मैं एक काम सुपुर्द कर रहा हूँ कि जहाँ भी आपको जिंदा आदमी मालूम पड़ें, जिंदादिल आदमी मालूम पड़े, आप उनके पास जाना। आप उनको मेरा संदेश लेकर के जाना और खुशामद करने के लिए जाना और यह कहना कि भगवान् ने जो विशेषताएँ आपके अंदर दी हैं, आपके अंदर जो प्रतिभा है, जो क्षमता है और जो आपके अंदर विशेषता है, उसके लिए भगवान् ने निमंत्रण दिया है, समय ने निमंत्रण दिया है। युग ने निमंत्रण दिया है, मनुष्य जाति के गिरते हुए भविष्य ने और यह कहा है कि पेट भरने के लिए आपको जिंदा रहना काफी नहीं है। पेट तो मक्खी-मच्छर भी भर लेते हैं, कीड़े-मकोड़े और कुत्ते भी भर लेते हैं। किसी ने जलेबी खा ली तो क्या और मक्का की रोटी खा ली तो क्या? खाने के लिए आदमी को पैदा नहीं किया गया है। औलाद पैदा करने के लिए आदमी को पैदा नहीं किया गया है। खाने के लिए और औलाद पैदा करने के लिए सुअर को पैदा किया गया है, जो एक-एक साल में बारह-बारह बच्चे पैदा कर देता है। गंदी-संदी चीजें खाकर के भी हट्टा-कट्टा होकर मोटा पड़ा रहता है। पेट भर गया, बस खर्राटे भरता रहता है। पेट भरने के लिए इंसान को पैदा नहीं किया गया है।

हमारे संदेशवाहक बनें

मित्रो! इंसान बड़े कामों के लिए पैदा किया है। इंसान की जिंदगी कई लाख योनियों में घूमने के बाद आती है। एकाएक कहाँ आ पाती है? इसलिए मित्रो! **वहाँ हमारा संदेश लेकर के जाना, युग की पुकार लेकर के जाना। वक्त की पुकार लेकर के जाना और यह कहना कि आपको समय ने पुकारा है, युग ने पुकारा है, राष्ट्र ने पुकारा है, गुरुजी ने पुकारा है। अगर आप उनकी पुकार सुन सकते हों, अगर आपके कान हैं, अगर आपके अंदर दिल है; अगर आपके पास कान नहीं है, दिल नहीं है, तो हम क्या कह सकते हैं।** फिर कौन आदमी सुनेगा? रामायण की कथा हम सुन लेते हैं और जैसे ही आते हैं, पल्ला झाड़ करके आ जाते हैं। भागवत की कथा हम सुनकर के आते हैं, व्याख्यान हम सुन करके आते हैं और जैसे ही आते हैं, पल्ला झाड़ करके आते हैं। चिकने घड़े के तरीके से हमारे आपके ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

मित्रो! आप वहाँ जाना और लोगों से यह कहना कि अगर कहीं आपके अंदर जिंदादिली हो, तो आपको समय की पुकार सुननी चाहिए और युग की पुकार

सुननी चाहिए। समय की माँग को पूरा करना चाहिए और युग की माँग को पूरा करना चाहिए और महाकाल ने, भगवान् ने जहाँ आपको बुलाया है, वहाँ आपको चलना चाहिए। हनुमान् जी भगवान् की पुकार सुनकर चले गए थे, रीछ और बंदर चले गए थे, गिलहरी चली गई थी। आपके लिए क्या यह संभव नहीं है ? क्या आप इस लोभ और मोह से, अपने वासना और तृष्णा के बंधनों को काटते हुए अंगद के तरीके से चलने के लिए तैयार हैं ?

मित्रो! मैं आपको अंगद के तरीके से संदेशवाहक बनाकर के भेजता हूँ। मेरे गुरु ने मुझे संदेशवाहक बनाकर भेजा। हिंदुस्तान से बाहर कई बार अंगद की तरह से मैं केवल संदेशवाहक के रूप में गया हूँ। मैंने कोई व्याख्यान नहीं दिए और न संगठन किए। सारे-के-सारे देशों में, विदेशों में और न जाने कहाँ-से-कहाँ गया, लेकिन अपने गुरु का संदेश लेकर के गया। मैंने लोगों से कहा, **देखो अपने को बदल दो। समय बदल रहा है। परिस्थितियाँ बदल रही हैं। धन किसी के पास रहने वाला नहीं है। अगले दिनों में, थोड़े दिनों में आप देखना कि धन किस तरीके से गायब हो जाता है। राजाओं के राज किस तरीके से चले गए, यह हमने और आपने देख लिया। आपने देखा कि थोड़े दिनों पहले जो लोग राजा कहलाते थे, सोने-चाँदी की तलवारें लेकर हाथी पर चला करते थे, आज वे किस तरीके से अपनी दोनों वक्त की रोटी का जुगाड़ कर रहे हैं।**

साथियो! जहाँ कहीं भी जाएँगे, वहाँ आप लोगों से कहना कि समय बहुत जबरदस्त है। समय सबसे बड़ा है। धन बड़ा नहीं है। जहाँ कहीं भी विभूतियाँ आपको दिखाई पड़ती हों, वहाँ आप हमारे संदेशवाहक के रूप में जाना, जैसे कि हमारे गुरुजी ने सारी दुनिया के जबरदस्त आदमियों के पास और भावनाशील आदमियों के पास हमको संदेश दे करके भेजा।

मित्रो! **आपको समय से पहले बदल जाना चाहिए, नहीं तो आपको पश्चाताप ज्यादा करना पड़ेगा। जब कोई डाकू चीजें छीन ले जाता है, तो आदमी को ज्यादा अफसोस होता है, लेकिन अगर अपने हाथों से किसी भिखारी को दे देता है, स्कूल की इमारत बनाने के लिए दे देता है, तो उसको संतोष होता है। पैसा तो चला गया न, चाहे वह डाकू ले गया हो तो भी और चाहे स्कूल बनाने के लिए दे दिया तो भी। लेकिन अपने हाथ से देने पर संतोष रहता है।** अतः आपको लोगों से यह कहने के लिए जाना है क अब युग बदल रहा है, समय बदला रहा है, युग की धाराएँ बदल रही हैं। धन के बारे में

मूल्यांकन बदल रहा है। धन लोगों के पास रहने वाला नहीं है। धन बहुत तेजी से चला जाने वाला है। आप देख नहीं रहे हैं क्या? गवर्नमेंट क्या-क्या कर रही है? मृत्यु टैक्स लगा रही है। संपत्ति टैक्स लगा रही है और दूसरे टैक्स लगा रही है। सब अगले दिनों जो गवर्नमेंट आने वाली है, अगले दिनों जो समय आने वाला है, उसमें रशिया वाला कानून लागू हो जाएगा, चाइना वाला कानून लागू हो जाएगा। हमको और आपको बस हाथ-पाँव से मेहनत करनी पड़ेगी, परिश्रम करना पड़ेगा और उस मेहनत के बदले में जो खुराक हमको मिलनी चाहिए, जो रोटी मिलनी चाहिए, वह मिल जाएगी। खुराक की सारी-की-सारी चीजें मिल जाएँगी।

वक्त रहते बदलें

साथियो! **लोगों से कहना कि आपको भगवान् ने जो विभूतियाँ दी हैं, क्षमताएँ दी हैं, उसका सवाब आप उठा सकते हैं, लाभ उठा सकते हैं, जीवात्मा को शांति दे सकते हैं। जीवात्मा की शांति के लिए, पुण्य के लिए अपने आपको तैयार कर लेना चाहिए, ताकि आपका अंतःकरण शांति में रहे और समाज को भी आपके बदले का अनुदान मिले और हमारा सिर भी गर्व से ऊँचा उठ जाए। समय से पहले हम अंगद के तरीके से इसीलिए आपके पास आए हैं, ताकि यह बता सकें कि आपको वक्त रहते बदल जाना चाहिए और लाभ उठा लेना चाहिए।**

इसलिए मित्रो! जहाँ कहीं भी क्षमताएँ दिखाई पड़े, प्रतिभाएँ दिखाई पड़ें, वहाँ आप हमारे संदेश वाहक के रूप में जाना और खासतौर से उनसे प्रार्थना करना, अनुरोध करना। पूर्व में मैंने विभूतिवानों को संबोधित किया था और उनका आह्वान किया था कि आपकी जरूरत है। भगवान् ने आपको विशेषताएँ दी हैं, उसकी उसे जरूरत है, लड़ाई, युद्ध का जब वक्त आता है, तो नौजवानों की भरती कंपलसरी कर दी जाती है और जो लोग बुड्ढे होते हैं, उनको छोड़ दिया जाता है। कंपलसरी लड़ाई में सभी नौजवानों को, चौड़े सीने वालों को पकड़ लिया जाता है और फौज में भरती कर लिया जाता है। कब? जब देश पर दुश्मन का हमला होता है। मित्रो! उनसे जो नौजवान हैं, प्रतिभावान् हैं, विभूतिवान् हैं, उनसे मेरा संदेश कहना। लेकिन जो व्यक्ति मानसिक दृष्टि से बुड्ढे हो गए हैं, वे जवान हों तो क्या, सफेद बाल वाले बुड्ढे हों तो क्या, हमको उनकी जरूरत नहीं है। क्यों? क्योंकि वे मौत के शिकार हैं। वे इसी के लिए हैं कि जब मौत को चारे की जरूरत पड़े, तो वे उसकी खुराक का काम करें।

बूढ़ा कौन? कौन जवान?

मित्रो! बुड्ढा आदमी कौन? क्या वह जिसके बाल सफेद हो गए हैं? सफेद बालों वाला बुड्ढा होता है कहीं, वह जवान होता है। इंग्लैण्ड का प्रधानमंत्री जिसका नाम चर्चिल था, अस्सी वर्ष का हो गया था और उसकी कमर में दरद रहता था। इंग्लैंड के लोगों ने कहा कि हम अपनी हुकूमत और अपने राष्ट्र की जिम्मेदारी इस आदमी के हाथ में सुपुर्द करेंगे, और वो चर्चिल जो था, जब दिन-रात जर्मनी वाले इंग्लैण्ड के ऊपर बम बरसा रहे थे, तब सारी-की-सारी सत्ता का केन्द्र वही एक आदमी था। बड़ा जबरदस्त आदमी, नौजवान आदमी था। कितने वर्ष का था, अस्सी वर्ष का, जो सारे-के-सारे लोगों से कह रहा था, इंग्लैण्ड के लोगों! घबराने की जरूरत नहीं। भगवान् हमारा सहायक है और हम ऊँचा उठेंगे, आगे बढ़ेंगे और हम फतह करके रहेंगे। हर आदमी के अंदर उसने जिंदगी पैदा की और जोश पैदा किया। वो कौन आदमी था? जवान आदमी था।

और विनोबा कौन हैं मित्रो! जवान आदमी। और गाँधी जी अस्सी वर्ष के करीब पहुँच गए थे। वो कौन थे? जवान आदमी। जवाहरलाल नेहरू चौहत्तर-पिचहत्तर वर्ष के थे, जब उनकी मृत्यु हुई। तब वे कौन थे? जवान आदमी और राजगोपालाचार्य? राजगोपालाचार्य की जब मृत्यु हुई थी, तो वे अस्सी वर्ष को भी पार कर गए थे। वे कौन थे? जवान आदमी, और हम और आप? हम और आप बुड्ढे आदमी हैं, जर्जर आदमी हैं, टूटे हुए और लकवा के मारे हुए आदमी हैं। कंगाली के मारे हुए, दरद के मारे हुए, दुर्भाग्य के मारे हुए और हम सब देवताओं के मारे हुए आदमी हैं। हमारी नसें और हड्डियाँ गल गई हैं। हमार मन सड़ गया है और हमारी भवनाएँ सो गई हैं। हमारा जीवन समाप्त हो गया है। हम लुहार की धौंकनी के तरीके से साँस जरूर लिया करते हैं। हमारी साँस चलती तो है, पर बहुत धीरे-धीरे चलती है। हम कौन हैं? हम मुरदा आदमी हैं। हम मर गए हैं। हमारे अंदर कोई जीवट नहीं है, कोई जिंदगी नहीं है। हमारे अंदर कोई लक्ष्य नहीं है, कोई दिशा नहीं है। हमारे अंदर कोई तड़प नहीं है, कोई कसक नहीं है और हमारे अंदर कोई जोश नहीं है। हमारा खून ठंडा हो गया है।

साथियो! जिनका खून ठंढा हो गया है, उनको मैं क्या कहूँगा? उनको मैं बूढ़ा आदमी कहूँगा। पच्चीस वर्ष का हो तो क्या, अट्ठाइस वर्ष का हो तो क्या, बत्तीस वर्ष का हो तो क्या? वह बूढ़ा आदमी है और मौत का शिकार है। उसके

सामने जिंदगी का कोई लक्ष्य नहीं है, उसके सामने कोई चमक नहीं है। जिसके सामने कोई चमक नहीं है, जिसके सामने कोई उम्मीद नहीं है, जिसकी हिम्मत समाप्त हो गई, जो आदमी निराश हो गया, जिसकी आँखों में निराशा और मायूसी छाई हुई है, वह बूढ़ा आदमी है। मित्रो! इन बूढ़े आदमियों का हम क्या करेंगे? इनसे हम क्या उम्मीद कर सकते हैं कि वे स्वयं के लिए क्या काम कर सकते हैं और भगवान् के लिए क्या कर सकते हैं। और समाज के लिए क्या कर सकते हैं? यह देखकर हम उनसे ना उम्मीद हो जाते हैं। हम उनसे ज्यादा-से-ज्यादा यही उम्मीद रखेंगे कि हमारा जब हवन होगा, तो उन्हें उम्मीद दिलाएँगे कि आपके बेटा-बेटी हो जाएँगे। उनके लिए बस सब से बड़ा एक ही काम है कि बेटा-बेटी हो जाएँ। पैसा हो जाए।

मृतकों से क्या अपेक्षा?

मित्रो! सारे-के-सारे ये वो लोग हैं, जो मर गए हैं, जो सड़ गए हैं। लोभ के अलावा, लालच के अलावा, ख्वाहिशों के अलावा, तमन्नाओं के अलावा इनके पास कुछ नहीं है। जो आदमी खाली हो गए हैं और जो ढोल तरीके से पोले हैं, उनका हम क्या करेंगे? इनके लिए हम कुछ नहीं करेंगे और न इनसे समाज के लिए, भगवान् के लिए ही कुछ उम्मीद रखेंगे। किसी के लिए भी इनसे उम्मीद नहीं रखेंगे। इनको हम छोड़ देंगे।

मित्रो! हमारा मिशन जो इंसान में भगवान् का अवतरण करने के लिए और जमीन पर स्वर्ग की धाराओं को बहाने के लिए बोया और खड़ा किया गया है, उसके लिए हमें जिंदा आदमियों की जरूरत है। जिंदा आदमी ही इस मिशन को आगे लेकर चलेंगे। मुरदा आदमी ज्यादा से ज्यादा माला घुमा देंगे। एक हनुमान जी की घुमा देंगे, एक लक्ष्मी जी की घुमा देंगे, एक युग-निर्माण की घुमा देंगे और एक अपने बेटे की घुमा देंगे और एक अपने मोहल्ले वाले की घुमा देंगे और कहेंगे कि गुरुजी मैं रोज नौ माला जपता हूँ। उसमें एक आपके लिए जपता हूँ और एक लक्ष्मी जी के लिए। वाह, बेटे! लक्ष्मी जी भूखी बैठी थी और भगवान् जी को तीन दिन से नाश्ता नहीं मिला था। तूने एक माला जपी थी, बस उससे भगवान् जी का कलेऊ हो जाएगा और उनको रोटी मिल जाएगी। अहा! ये हैं असली भगत और असली जादूगर। सारे जादू के पिटारे ये अपने माला में भरे हुए बैठे हैं।

मित्रो! इनसे हमारा काम चलेगा? इनसे हमारा काम नहीं चलेगा। जो व्यक्ति हर काम के लिए माला को ही काफी समझते हैं, उनसे हमारा काम नहीं चलेगा। जब कभी इनको जुंग आती है, छटपटाहट आती है, तो खट माला पकड़ लेते हैं और कहते हैं कि इस पर माला को चलाऊँगा, उस पर माला को चलाऊँगा। इस तरह वे तरह-तरह की चर्खियाँ चला देते हैं। जिस तरह बंदूक में तरह-तरह के कारतूस चढ़ा देते हैं? मंत्र का। इस माला पर महामृत्युंजय मंत्र का कारतूस दनादन चढ़ा दिया, जो खट्-खट् सब बीमारियों को मार डालता है और जब इसको लक्ष्मी जी की जरूरत पड़ती है तब? अहा! "**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे**" मंत्र का दे दनादन-दे दनादन जप, और वो आई देवी और ये आई चंडी और ये आया पैसा। बस इसके पास तो एक ही मशीनगन है। मरने दो इन अभागे को, इसके पास न कोई जिंदगी है, न कोई दिशा है, न कोई प्रेरणा है, न कोई लक्ष्य है और न इसके पास दिल है। ये अभागा तो केवल माला को लेकर ही दफन होने वाला है और माला को लेकर ही मरेगा।

जीवट वालों को तलाशिए

इसलिए मित्रो! इन लोगों से हमारा क्या बनने वाला है? क्या करेंगे हम इन मुरदा आदमियों का? इनसे हमारा कुछ काम नहीं बनेगा। हमको जीवट वाले आदमियों को तलाश करना पड़ेगा। अतः आपको जहाँ कहीं भी जीवट वाले आदमी मिलें, आप वहाँ जाना। हमारा संदेश लेकर के जाना और कहना कि हम आपकी तलाश करते रहे हैं। हम इसलिए तलाश करते रहे हैं कि हमारा ये ख्याल था, भगवान् जाने सही था या गलत था कि आपके अंदर जीवट नाम की कोई चीज है। इस जन्म की नहीं, तो पहले जन्म की है। कभी भी हमारी इन आँखों ने चमक में धोखा नहीं खाया है। आपके बारे में हमने अपने मन में यह ख्याल बना करके रखा था कि आप जिंदा इंसानों में से हैं और आपके अंदर दरद नाम की कोई चीज है। आपके अंदर विवेक नाम की कोई चीज है और आपके अंदर तड़प नाम की कोई चीज है। अगर हमको ये चीजें न मालूम पड़ें, तो फिर मुरदे आदमियों को ढोने में क्या आनंद आता है? लाशों को ढो-ढोकर हम कहाँ डालेंगे? सड़े हुए बदबूदार आदमियों को हम कहाँ कंधे पर लिए फिरेंगे? मित्रो! इनको हम बैकुंठ का रास्ता कैसे दिखा देंगे? इनको हम स्वर्ग की कहानी कैसे कह देंगे? भगवान् से मिलने की बात हम कैसे कह देंगे?

मित्रो! हम सड़े हुए मनुष्यों और मरे हुए मनुष्यों की मनोकामना पूर्ण करने की जिम्मेदारी कैसे उठा लेंगे? हमारे लिए यह बिलकुल असंभव था, नामुमकिन था। हमारा एक ही ख्याल था कि आप लोग जिंदा आदमी हैं। अगर आप वास्तव में जिंदा आदमी हैं, तो यहाँ से जाने के बाद जिंदा आदमियों के तरीके से अपनी जिंदगी जीना। विवेकशील लोगों के तरीके से जीना, विचारशील और भावनाशील लोगों के तरीके से जीना, दिलवाले आदमियों के तरीके से जीना। अगर आप इस तरह से जिएँ, तो फिर तलाश करना और यदि कहीं कोई जिंदा आदमी दिखाई पड़े, तो आप उसके आस-पास चक्कर काटना। आप इस तरीके से चक्कर काटना, जिस तरीके से भौरा खिले हुए फूल के पास चक्कर काटता है। खिले हुए फूल के आस-पास तितलियाँ और मधुमक्खियाँ चक्कर काटती हैं, जैसे हम बराबर आपके पास चक्कर काटते रहते हैं।

साथियो! हमको मालूम पड़ा कि शायद आप खिले हुए फूल हैं, तो हम भी रामकृष्ण परमहंस के तरीके से आपके पास आए हैं, जिस तरीके से वे विवेकानंद के पीछे लगे थे और शिवाजी के पीछे जिस तरीके से रामदास लगे थे। हम भी आपके पीछे उसी तरीके से लगे रहे हैं, जिस तरीके से चाणक्य चंद्रगुप्त के पीछे लगे रहे थे। अगर गलती हो गई हो, तो माफ करना, क्योंकि हमने समझा यही है। आप यह मत सोचना कि गुरुजी जो अपना पुण्य हिमालय पर से लेकर के आए हैं, वह हमको मालदार बनाने के लिए और संपत्ति देने के लिए हमारे पीछे लगे हुए हैं। हमको औलाद वाला बनाने के लिए, बेटा-बेटी देने के लिए पीछे लगे हुए हैं। हम इसके लिए नहीं लगे हुए हैं।

संपत्ति नहीं विभूति माँगें

मित्रो! हमारे गुरु ने और हमारे पिता ने हमको लक्ष्मी नहीं दी है, औलाद नहीं दी है, लेकिन जो चीजें हमको दी हैं, वे लक्ष्मी जी से लाख गुनी और करोड़ गुनी ज्यादा हैं। हमारी निगाह में भी और हमारी उम्मीदों में भी यही चीज जमी हुई है कि आपको कोई चीज हम दें, तो कम-से-कम ऐसी चीज दें, जिससे कि आप भी जन्म-जन्मांतरों तक याद करते रहें कि हमको कोई चीज मिली थी और कोई चीज हमको दी गई थी। अगर आपके पास जिंदादिली हो और आपके पास रखने की चीजें हों, तब। रखने की चीजें न होंगी, तब फिर बड़ा मुश्किल है। फिर स्वाति की बूँदें बरसती चली जाएँगी और वो अभागी सीप है जिसने अपना मुँह नहीं खोला।

मुँह बंद करके पड़ी रही। फिर उसके लिए ये संभव नहीं है, मुमकिन नहीं है कि स्वाति की बूँदें बरसती चली जाएँ और उसके अंदर मोती पैदा हो जाए। ऐसी स्थिति में मोती पैदा नहीं हो सकते।

एक बार अमृत की वर्षा हुई। सारे मरे हुए आदमी जिंदा हो गए। केवल एक आदमी जिंदा नहीं हुआ। लोगों ने पूछा, क्या वजह है? वह आदमी क्यों नहीं जिंदा हुआ? जानने पर यह मालूम हुआ कि वह आदमी अपना मुँह जमीन में गाड़े हुए था और पीठ ऊपर किए हुआ था। लोगों ने कहा, अच्छा, तो यह वजह है कि जो मुरदे मुँह खोले हुए थे, नाक ऊपर किए हुए पड़े थे। उनमें से अमृत की बूँदें किसी की नाक में पड़ गईं, किसी के मुँह में पड़ गईं और वे सब जिंदा हो गए। लेकिन जिसने अपना मुँह पलट कर के रखा था, जमीन में गाड़कर रखा था, उसकी नाक में भी अमृत की बूँदें नहीं जा सकीं और मुँह में भी नहीं जा सकीं। इसलिए वह जिंदा नहीं हो सका। बेशक वो आदमी जिंदा नहीं हो सकते, चाहे उनका गुरु कोई भी क्यों न हो। गुरुजी! आप अपने गुरुजी के दर्शन करा दीजिए। हम दर्शन क्यों करा दें? हमारे गुरुजी का दर्शन करके तेरा कोई फायदा नहीं हो सकता। कैसे नहीं होगा? बेटे! वो जिंदगी कहाँ है वो सीप कहाँ है, जहाँ कि अमृत की बूँदें पड़ा करती हैं और जिंदगी पैदा हो जाती है।

मित्रो! हमारे पास अपनी विशेषताएँ होनी चाहिए। अपनी विशेषताएँ नहीं होंगी तो बाहर के आदमी, दूसरे आदमी कोई सहायता नहीं कर सकते। आज तक बाहर वाले आदमियों ने किसी की सहायता नहीं की है। केवल अपना हृदय और अपना मन आगे बढ़ा है, तब दूसरों ने सहायता की है। आदिकाल से यही सिद्धांत था और आगे भी यही रहेगा। इसलिए हम आपको विदा करते वक्त उन लोगों के पास भेजना चाहेंगे, जिनके अंदर विशेषता मालूम पड़ती है और चमक मालूम पड़ती है। आप उन सब नौजवनों को निमंत्रण देने जाना, आमंत्रण देने जाना, जिनके घर में बंदूकें हैं, भाले हैं। उनसे कहना कि गाँव जल रहे हैं, गाँव में डकैतियाँ हो रही हैं और चूँकि आपके पास बंदूकें हैं, भाला है, इसलिए आप चलिए। चूँकि आपके पास जवानी है, इसलिए आप चलिए। चूँकि आपके पास ज़वानी है, इसलिए आप चलिए। चूँकि आपके पास अमुक चीजें हैं, इसलिए आप चलिए। जिन लोगों को आप साधन-संपन्न देखें, उन लोगों को आप निमंत्रण देना। जिनके पास बाल्टी है, उनको आप निमंत्रण देना। जिनके पास रस्सी है, उनको

आप निमंत्रण देना। उनसे कहना कि बाल्टी खींचिए। गाँव जल रहा है, उसकी आग को बुझाइए। उनको निमंत्रण देने के लिए हम आपको भेजते हैं।

साथियो! ये दावत खाने का निमंत्रण नहीं है। गुरुजी से आशीर्वाद लेने का निमंत्रण नहीं है। मालदार होने का और बीमारियों को अच्छा करने का नहीं है। औलाद प्राप्त करने का नहीं है। आप ये निमंत्रण मत देना किसी को। ये तो बिना आपके निमंत्रण दिए खुद ही चले आते हैं और उन पर मुझको झल्लाना पड़ता है और ये रोज कहना पड़ता है कि बाबा! यहाँ ठहरने की जगह नहीं है, चला जा। ये तो पहले भी आते रहे हैं और आते ही रहेंगे। उनको निमंत्रण देने की आपको जरूरत नहीं है। वे तो अपने आप बिना बुलाए आ जाएँगे और सब तरीके से आ जाएँगे।

प्रतिभाओं से है अपेक्षा

मित्रो! आप उन लोगों के पास जाना जिनके पास क्षमताएँ हैं, जिनके पास प्रतिभाएँ हैं, जिनके पास जीवन है, जिनके पास कसक है, जिनके पास विचार हैं। जिनके पास इस तरह की चीजें दिखाई पड़ें, वहाँ आप जाना और जा करके हमारा संदेश दे करके आना। जहाँ कहीं भी आपको विद्या दिखाई पड़े, जिस किसी के पास भी विद्या दिखाई पड़े कि उसके पास विद्या है, तो आप उन विद्यावानों के पास जाना और यह कहना कि आपकी विद्या की समाज को आवश्यकता है और युग को आवश्यकता है। विद्या पेट पालने के लिए नहीं होती है, पेट भरने के लिए नहीं होती है। विद्या का उद्देश्य भिन्न है। विद्या का उद्देश्य है, जो ज्ञान हमको मिला हुआ है, उससे हमको वकालत भी करनी पड़े, तो उस विद्या के द्वारा लोगों के अज्ञान के निवारण के लिए खरच करना चाहिए। आपकी सारी-की-सारी विद्या धन के लिए, पैसे के लिए खरच नहीं होनी चाहिए। अगर आप पढ़े-लिखे आदमी हैं, जीवट वाले आदमी हैं, तो आपकी विद्या का लाभ उन लोगों को मिलना चाहिए, जो पढ़े-लिखे नहीं हैं, जो निरक्षर हैं।

मित्रो! आप पढ़े-लिखे हुए लोगों से कहना कि यदि आपका गुजारा हो जाता है, तो आपको 'नाइट स्कूल' रात्रि पाठशाला खोलनी चाहिए। बाहर विदेशों में लोग नाइट स्कूल चलाते हैं। सारे-के-सारे लोग पढ़ाई उसी में करते हैं। वहाँ दिन भर आठ घंटे मेहतन-मजदूरी हर आदमी को करनी पड़ती है। छोटे बच्चों की बात जाने दीजिए, वे तो स्कूलों में चले जाते हैं। वे साढ़े नौ बजे चले जाते हैं और शाम को चार बजे आ जाते हैं, पर जिसको पेट पालना पड़ेगा, वो किस तरीके से स्कूल जा

सकता है। और जो बड़ा आदमी हो गया, जवान आदमी हो गया, वह कैसे जा सकता है? अत: हमको समाज में विद्या का विस्तार करना है। विद्या का ऋण-कर्ज हमारे ऊपर है। इसे चुकाने के लिए हमको दूसरों को विद्यावान् बनाना चाहिए। शिक्षित बनाना चाहिए, ज्ञानवान् बनाना चाहिए, इसके लिए हममें से और आप में से हर आदमी को समाज का ऋण चुकाने के लिए वो काम करना चाहिए, जो कल मैंने आपको बताए थे और आपको बताता रहा हूँ। योरोप के तरीके से हमारे यहाँ भी रात्रि के विद्यालय चलने चाहिए, जहाँ मजदूर, धोबी आदि शाम के वक्त अपने काम से छुट्टी पाने के बाद चले जाते हैं और पढ़ाई करते हैं और जिंदगी के आखिरी वक्त तक एम.ए. हो जाते हैं, पी.एच.डी. हो जाते हैं और डी. लिट् हो जाते हैं। जिंदगी के आखिरी-से-आखिरी वक्त तक जो समय उनको पढ़ने को मिल जाता है, वे उसे पढ़ाई में लगा देते हैं।

मित्रो! हमारे देश में सिनेमाघरों में भीड़ बहुत है। हमारे समाज में गप्पें हाँकने के लिए भीड़ बहुत है, जुआघर में भीड़ बहुत, शराबखानों में भीड़ बहुत होती है, लेकिन आपको उस तरह की भीड़ कहीं भी नहीं दिखाई पड़ेगी कि अपने जातीय संगठन के नाम पर, अपने शिक्षित समुदाय के नाम पर इकट्ठे होकर के हमने सायंकाल के वक्त 'रात्रि पाठशालाओं' को चलाया हो। इन रात्रि पाठशालाओं में असंख्य महत्त्वपूर्ण बातें पढ़ाई जा सकती हैं। मैं यह तो नहीं कहता कि हरेक आदमी को बी.ई. पढ़ाना चाहिए, लेकिन जीवन जीने की कितनी समस्याएँ हैं, उनको हल करने के लिए विद्यावानों को आगे आना चाहिए।

स्वास्थ्य की शिक्षा अभी प्रारंभ नहीं हुई है। हम और आप वकील हों, तो मुबारक, लेकिन आपको नहीं मालूम कि पेट खराब क्यों हो गया? और पेट को खराब होने से बचाने के लिए क्या तरीका होना चाहिए। क्या आपके पास इसके लिए कोई स्कूल है? दवाखाने वाले तो वो चीज हैं कि जहाँ कहीं भी जाइए, हर चीज का इंजेक्शन लगा देंगे। उन्हें ये मालूम नहीं है कि वजह क्या है और किसकी वजह से सेहत खराब कर रहा है। उन सेहत खराब करने वाली खुराक और आदतों को जब तक ये हेर-फेर नहीं करेगा, तब तक उसकी सेहत कभी भी अच्छी नहीं हो सकेगी, चाहे वह रोज एक-एक दिन में बीस इंजेक्शन लगवाता चला जाए। व्यक्ति इंजेक्शन से कदापि अच्छा नहीं हो सकता। सेहत को अच्छा करने के लिए शिक्षण की आवश्यकता है।

शिक्षण प्रक्रिया नई जन्म ले

मित्रो! हमको शिक्षण की प्रक्रिया राष्ट्र में पैदा करनी पड़ेगी। विद्या हमारे देश में नहीं है। साक्षरता हमारे देश में नहीं है। उसको बढ़ाने के लिए हमको नाइट स्कूलों की जरूरत पड़ेगी। विद्या के लिए घनघोर आंदोलन खड़ा करना पड़ेगा और इस आंदोलन के लिए हम नौकर नहीं रख सकते, कर्मचारी नहीं रख सकते और वेतन-भोगी नहीं रख सकते। गवर्नमेंट ने इस तरह के वेतन-भोगी रख लिए हैं और आप देखिए क्या हाल हो रहा है? हर डिपार्टमेंट को बढ़ा-बढ़ाकर इतना लंबा चौड़ा कर लिया है कि अगर इतना पैसा इन डिपार्टमेंट में नहीं लगाया गया होता, तो उस बचत से शिक्षण-प्रशिक्षण की समस्या सुलझ गई होती।

मित्रो! हमको जो काम करना पड़ेगा, उन क्षमता वालों के आधार पर और प्रतिभा वालों के आधार पर करना पड़ेगा। अपना यह मिशन कितना जबरदस्त मिशन है। इसको आगे बढ़ाने के लिए हमको उन आदमियों के पास जाना पड़ेगा, जिनके पास विचारशीलता भी विद्यमान है और क्षमता भी विद्यमान है। विचारशीलता नहीं है और क्षमता है, तो हमको यह कोशिश करनी पड़ेगी कि अपने मिशन की विचारधारा को, मिशन की पुस्तिकाओं को, मिशन के ट्रैक्टों को उनको बार-बार सुनाएँ और किसी प्रकार से इस तरीके से लाएँ कि वे हमारी विचारधारा के संपर्क में आएँ। **अगर कोई आदमी हमारी विचारधारा के संपर्क में आ गया, तो यह बड़ी जलती हुई विचारधारा है, यह बड़ी तीखी और प्रखर विचारधारा है। सौ फीसदी मरा हुआ आदमी हो, तब तो हम नहीं कह सकते, लेकिन कोई अगर जिंदा आदमी होगा, तो उसको एक बार तड़फड़ाए बिना, उसको एक बार हिलाए बिना नहीं रह सकती।** माला वालों को तो यह शायद जगाएगी नहीं। माला वाले तो अखण्ड ज्योति का चंदा इसलिए भेज देते हैं कि गुरुजी नाराज हो जाएँगे और अगली बार मुकदमे में सहायता नहीं करेंगे। वे पत्रिका को पढ़ते थोड़े ही हैं, कोई नहीं पढ़ते, लेकिन जिन लोगों ने इन विचारों को पढ़ा है, वे आदमी काँपते हैं, हिलते हैं। उन आदमियों के अंदर एक स्पंदन पैदा होता है, फुरेरी पैदा होती है।

आप इन विचारों को लेकर सामान्य जनता तक जरूर जाना। लेकिन सामान्य जनता के अलावा कोई विशेष आदमी दिखाई पड़ते हों, जिनके अंदर आपको जीवट दिखाई पड़ती हो, प्रतिभा दिखाई पड़ती हो, उनके पास आप जरूर जाना विद्यावानों के पास, प्रतिभावानों के पास, कलाकारों के पास जाना। जहाँ कहीं भी कलाकार दिखाई पड़ते हों, उनके पास आप जरूर जाना। उनसे कहना कि भगवान्

ने आपको मीठा वाला गला दिया है, आपको गाने की कला आती है। आप इस गाने की कला के द्वारा जिस तरीके से कामुकता के गीत, अंध विश्वासों का समर्थन करने वाले गीत और भक्ति के नाम पर शृंगार रस के गीत गाया करते हैं। इनके स्थान पर कहीं आप चंदवरदायी के तरीके से समय को कँपाने वाले, भूषण के तरीके से समय को कँपाने वाले, युगों में जीवन भरने वाले गीत आप इसी गले के द्वारा गाने लगें, चौराहे-चौराहे पर खड़े होकर अलख जगाने लगें-गाँव-गाँव जाकर लोगों को इकट्ठा करके गीत की कला का उपयोग करने लगें, तो आपके यही गीत आपका यही गला और गले की मिठास सैकड़ों-हजारों मनुष्यों के जीवन में हेर-फेर करने में समर्थ हो सकती है। मीरा का गला, मीरा की मिठास और मीरा का संगीत कितने आदमियों के जीवन में हेर-फेर करने में समर्थ हो गया। अत: हमको उस हर मीठे गले वाले व्यक्ति से कहना चाहिए, जिसको ये विशेषताएँ और विभूतियाँ भगवान् ने अमानत के रूप में विशेष रूप से दी हैं।

मित्रो! हमको उनके पास विशेष रूप से जाना चाहिए, जिन लोगों के पास कला है। जिन लोगों के पास लेखन की शक्ति है, जिन लोगों के पास विद्या की शक्ति है, जिन लोगों के पास बुद्धि की शक्ति है, उन लोगों के पास आप जरूर जाना। बीमारी के समय डॉक्टर के पास हमको जरूर जाना चाहिए, क्योंकि वह जानता है और उस काम को आसानी से पूरा कर सकता है। एक डॉक्टर हैजे का मुकाबला आसानी से कर सकता है, जबकि सौ गँवार मिलकर भी हैजे का मुकाबला नहीं कर सकते। इसलिए आप उनके पास चक्कर जरूर लगाना। उनकी खुशामद करने में अपमान महसूस मत करना। आप उनकी खुशामद करना, उनकी मिन्नतें करना, जिनके अंदर आपको जीवन मालूम पड़ता है और जीवट मालूम पड़ता है। अगर आपने खुशामद की है, मिन्नतें की हैं, तो आपने भीख माँगने के लिए नहीं की है, अपना पेट भरने के लिए नहीं की है। अपना उल्लू सीधा करने के लिए नहीं की है, वरन् समाज के लिए की है, देश के लिए की है, मानवता के लिए की है और मिशन के लिए की है।

मित्रो! आपको उन लोगों की खुशामद करनी चाहिए, जिनके पास बुद्धि है, क्षमता है, जिनके पास प्रभाव है, जिनके पास अक्ल है, जिनके पास कला है, जिनके पास जान है। जो आदमी कलम को पकड़ सकते हैं, जो आदमी अपनी विद्या से दूसरों को प्रभावित कर सकते हैं। जिनके पास भगवान् ने वाणी दी है, जो बोल सकते हैं, जो व्याख्यान दे सकते हैं, उनको आप यह कहना कि आपको जो

विशेषताएँ मिली हुई हैं, वह भगवान् की अमानत हैं। आपको इसको इस विशेष समय पर इस्तेमाल करना चाहिए। गवर्नमेंट के पास रिजर्व फोर्स, रिजर्व पुलिस होती है और वह विशेष समय के लिए रखी जाती है, ताकि जिस समय इसकी बेहद आवश्यकता हो, उस समय विशेष रूप से काम आए। आप उनसे यही कहना कि आप भगवान् के रिजर्व फोर्स के तरीके से हैं, तभी तो दूसरे सामान्य लोगों की अपेक्षा ज्यादा बुद्धि दी गई है, ज्यादा प्रभाव दिया गया है, ज्यादा प्रतिभा दी गई है और ज्यादा समझदारी दी गई है। यदि आप प्रतिभाओं को, विभूतियों को जगाकर राष्ट्र-निर्माण के लिए लगा सकें, तो इससे बड़ा पुण्य कोई नहीं।

आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शांति ॥

धर्मग्रंथ हमें क्या शिक्षण देते हैं, यह जानें

(पूज्य गुरुदेव द्वारा दिया गया उद्‌बोधन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! पिछले दिनों जन्माष्टमी के अवसर पर हमने आपको यह बतलाया था कि भगवान् अपनी लीला के माध्यम से किस तरह से व्यक्ति, परिवार एवं समाज निर्माण के अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। **हमारा लक्ष्य भी ध्रुव की तरह साफ है। हम व्यक्ति निर्माण की बात करना चाहते हैं, परिवार का स्तर, जो नष्ट हो गया है, उसका हम विकास करना चाहते हैं। हम व्यक्ति और समाज के बीच की कड़ी की स्थापना करना चाहते हैं, जिसका नाम परिवार है। इसी में से हीरे, मोती, जवाहरात निकलते हैं। वह आज चरमरा गया है। उसे हम ठीक करना चाहते हैं। परिवार को हमें शिक्षित करना है, संस्कारित करना है।** लोग विलायत पढ़ने जाते हैं, परन्तु संस्कार कहीं से लेकर नहीं आते हैं।

बच्चा जब माँ के गर्भ में होता है, तब से लेकर तीन साल तक, जब तक वह कुछ बड़ा होता है, उसकी अस्सी प्रतिशत शिक्षा समाप्त हो जाती है। भावना, संवेदना के संदर्भ में वह सब सीख जाता है। अगर आप पाँच साल के बच्चे बन जाएँ, तो मेरी समझ से आपके संस्कार को जाग्रत करने का समय लगभग एक वर्ष नौ महीने पहले ही समाप्त हो गया था। बचपन ही संस्कार का महत्त्वपूर्ण समय है। आप पब्लिक स्कूलों में हजारों रुपये महीने का शिक्षण दिला सकते हैं, जहाँ बच्चा क्रीज किया हुआ कपड़ा पहनना, जूतें पर पॉलिश करना, थैंक यू वेरी मच कहना सीख जाएगा, परन्तु जो संस्कार हम परिवार के अन्तर्गत दे पाते हैं, वह कदापि इन स्कूलों में संभव नहीं हैं। संस्कार कहाँ से आता है? वह माँ-बाप से आता है?

हम खुशबूदार परिवार बसाना चाहते हैं

मित्रो, आज परिवार संस्था का नाश हो गया है। आज कहीं भी हमें परिवार दिखलाई नहीं पड़ते। वे काम-वासना के क्रियाकलाप वाले मात्र केन्द्र रह गए हैं। उनके अन्दर यह ख्याल तथा प्रयास कहाँ है कि परिवार के अन्तर्गत वे सोचें कि हमें परिवार, समाज, देश एवं संस्कृति के लिए एक महान रत्न देना चाहिए, जो प्रगति कर सके। दो आदमी मिलकर एक तीसरी महान आत्मा बनाएँ-ऐसा साहस किसी में नहीं है। आज परिवार वासना प्रधान बन गया है। ऐसी स्थिति में हम एक नया परिवार बसाना चाहते हैं, जिसमें से बेहतरीन चीजें निकल सकें। हम खुशबूदार परिवार बसाना चाहते हैं। मित्रो, चन्दन के जंगल के पास जो भी पेड़ उगते हैं, वे भी खुशबूदार होते हैं। हम चाहते हैं कि एक ऐसा ही परिवार बने। जर्मनी में जब हिटलर ने एक नया जोश-खरोश पैदा किया, तब बाकी कमजोर लोग सलवार एवं स्मार्ट ड्रेस पहनने लगे तथा अन्दर-बाहर से मजबूत बनने लगे। हम परिवार एवं समाज का वातावरण अच्छा बनाना चाहते हैं। शालीनता का, व्यावहारिकता का वातावरण पैदा करना चाहते हैं, ताकि इनसान को देखकर लोग परिवार एवं समाज की स्थिति को समझ-बूझ सकें। आज हमारे अन्दर हैवान काम कर रहा है। वह केवल इनसान का चोला पहन आया है। अभी हमारे अन्दर का महामानव, ऋषि, भगवान्, संत कहाँ जागा है? वैसा जीवन कहाँ आया है? हम चाहते हैं कि हम इनसान का जीवन जिएँ, ऋषि एवं संतों का जीवन जिएँ, मानवता का जीवन जिएँ तथा देश एवं समाज का उत्थान करें।

महामानवों के जीवन चरित्र हमारे इष्ट बनें

मित्रो, हम अपने आपको तथा दूसरों को नसीहत देने के लिए चले हैं। हम मिशन की एक रूपरेखा बनाकर चल पड़े हैं। **आपको इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमें मंजिल तक चलना है। महापुरुषों का, महामानवों का जीवन चरित्र हमारी मंजिल है, जहाँ तक हमें चलना है।** यह हमें ध्यान रखना चाहिए। जितने भी महापुरुष हुए हैं, उनकी शिक्षा, उनकी वाणी हमारे लिए उपयोगी है, परन्तु इससे भी महत्त्वपूर्ण है उनकी जीवन जीने की कला, जो कि हमें सीखनी चाहिए और उससे प्रेरणा लेनी चाहिए तथा अपना आत्म-विकास करना चाहिए। महापुरुषों ने जिन्दगी को कैसे जिया, असल में प्रेरणा हमें वहाँ से मिलती है। उन्होंने क्या कहा, यह हमें मालूम नहीं है। अगर हम जिन्दगी भर बकवास करते

हुए उसे समाप्त कर दें, तो भी उसका कोई प्रभाव समाज पर नहीं होगा। क्योंकि उस सिद्धान्त को, जो हम कहना चाहते हैं, उसका समावेश हमने अपने जीवन में नहीं किया है। इस कारण से उसका कोई प्रभाव नहीं होने वाला है। **हमारे महापुरुषों, अवतारों की कथाएँ इसलिए महत्त्वपूर्ण हैं कि उनकी वाणी तथा कर्म में कोई फर्क नहीं था।**

मन, वाणी और कर्म जब एक जगह मिल जाते हैं, तो त्रिवेणी संगम बन जाता है। उस समय आदमी शक्तिपुंज बन जाता है। साहसी, ताकतवर बन जाता है। उस समय उसकी आँखों में से बिजली निकलती है। उस समय उसका व्यक्तित्त्व मनुष्यों के ऊपर छाता हुआ नजर आता है तथा वह व्यक्ति सूर्य की तरह चमकता हुआ नजर आता है। मन, वाणी, कर्म में एकरूपता का समावेश जिसमें हो जाता है, उसे हम भगवान्, महामानव, अवतार, ऋषि, संत व देवता कहते हैं। उनके चरणों की हम वन्दना करते हैं। उनसे हम प्रेरणा ग्रहण करते हैं। समुद्र में लाइट हाऊस होता है, जो आने वाले जहाजों को दिशा का ज्ञान कराता है। उसी प्रकार ये लोग करते हैं तथा समाज के उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। आप भी भगवान् हैं तथा अवतारी चेतना हैं। रामायण में कहा गया है-"**ईश्वर अंश जीव अविनाशी।**" अतः आप सभी भगवान् के अंश हैं अर्थात् एक हार्सपावर के भगवान् हैं। कलाओं के हिसाब से भगवान् का मूल्यांकन किया जाता है। परशुराम जी तीन कला के तथा भगवान् राम बारह कला के तथा भगवान् श्रीकृष्ण सोलह कला के थे। ये सब कलाँ हार्सपॉवर हैं। एक बार परशुराम जी में एवं रामचंद्र जी में लड़ाई-झगड़ा होने लगा। प्रश्न यह था कि एक समय में क्या दो भगवान् हो सकते हैं? हाँ हो सकते हैं। दोनों में लड़ाई-झगड़ा होने लगा कि असली भगवान् कौन है तथा नकली भगवान कौन है? आप और हम भी लड़ाई लड़ सकते हैं, क्योंकि आप लोग भी एक अंश भगवान् का धारण किये हुए हैं। हम नहीं जानते हैं कि असली भगवान् कौन है तथा नकली भगवान् कौन है?

लोकोपयोगी प्रेरणा देते हैं—धार्मिक दृष्टान्त

मित्रो, पिछले दिनों हमने जन्माष्टमी के अवसर पर आपको बतलाया था कि हमें उक्त बात को समझना चाहिए तथा इन अवतारों के कथानकों को लेकर समाज के बीच में जाकर लोगों को प्रेरणा देनी चाहिए। क्योंकि हमारा देश गाँवों से भरा है।

अधिकांश व्यक्ति कम पढ़े-लिखे हैं, उन्हें हम केवल सरल शब्दों में समझा सकते हैं। इस कार्य में कथानक बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। इस प्रकार धार्मिक विचारधारा के द्वारा ही हम लोगों को समझा सकते हैं। महात्मा गाँधी ने भी धार्मिक विचारधारा को साथ लिया तथा प्रार्थना को स्थान दिया। "**रघुपति राघव राजा राम। पतित पावन सीता राम।**" इस प्रकार उन्होंने रामराज्य की दुहाई दी। उन्होंने धर्म की जय बोली। धार्मिक विचारधारा के अलावा इस देश की जनता को हम किसी कार्य के बारे में समझा नहीं सकते हैं। उन्होंने हिंसा का रास्ता न अपनाकर '**अहिंसा परमोधर्मः**' की बात बतलायी। उन्होंने यह कहा कि भारत में पैसे व अस्त्र-शस्त्र की कमी है। हम अँग्रेजों से इस मामले में विजय नहीं पा सकते। अतः हमें अहिंसा का रास्ता ही अपनाना होगा। उन्होंने इसी रास्ते पर चलते हुए अँग्रेजों को झुका दिया। गाँधीजी को वे जादूगर कहते थे।

धर्म ही एक मात्र धुरी—नवनिर्माण की

हम यहाँ के लोगों को फिजिक्स, सिविक्स, सोसियोलॉजी नहीं समझा सकते। यह समझाना बहुत ही कठिन है। हम केवल धर्म के आधार पर ही समझा सकते हैं। धर्म हमारी जीवात्मा की भूख है। यह दोनों ही परिस्थितियाँ हिन्दुस्तान की फिलोसफी-दर्शन के अनुसार तथा यहाँ की गई-गुजरी परिस्थिति के हिसाब से आवश्यक है। परिवार के लोगों को संस्कारवान बनाने तथा समाज के लोगों को नसीहत देने, दोनों के लिए धर्म से बढ़कर कोई दूसरा साधन नहीं है। इसमें अपने क्रियाकलाप तथा व्याख्यान दोनों की संगति बिठाना परम आवश्यक है, तभी हम इसका प्रभाव दूसरों पर डाल सकते हैं। महापुरुषों, संतों ने इसी प्रकार अपने जीवन में धारण किया, जिसका प्रभाव समाज, देश व संस्कृति पर पड़ा। श्रीकृष्ण भगवान् के गीता में व्याख्यान से ज्यादा महत्त्वपूर्ण यह जानना आवश्यक है कि उनका व्यवहार और कर्म कैसा था। आचार्यजी को देखने के साथ, सुनने के साथ, आचार्यजी के जीवन के ६५ पन्नों को भी देखना होगा, पढ़ना होगा, तभी आप आचार्यजी को समझ सकते हैं।

जनमानस का परिष्कार होगा, जीवन-चरित्र की प्रेरणाओं से

साथियो, हम आपसे यह निवेदन कर रहे थे कि हमें लोकमंगल के कार्य के लिए, जनमानस के परिष्कार करने के लिए महामानवों के चरित्र को लेना पड़ेगा।

उसके माध्यम से ही जनचेतना जगाने का कार्य करना पड़ेगा, तभी वह प्रभावकारी व हितकारी सिद्ध हो सकती है। **परन्तु एक बात आपको बतलाना चाहता हूँ कि कोई भी व्यक्ति पूर्ण नहीं है। जो भी इस मनुष्य शरीर में आया है, वह कहीं-न-कहीं अवश्य गलती कर रहा है। इसलिए हमें अच्छे चेहरों का फोटो खींचने व दिखाने के स्थान पर उनके चरित्र का जो अच्छा पक्ष है, श्रेष्ठ गुण है, उसको लेना चाहिए। उनकी बुराइयों पर हमें ध्यान नहीं देना चाहिए।** अगर आप गुरुजी की टट्टी-पेशाब करते समय फोटो खींचेंगे, तो आपको यह देखकर उल्टी हो जाएगी तथा हम आपको बहुत घिनौने मालूम पड़ेंगे। अत: आपको हमारी फोटो उस समय नहीं खींचनी चाहिए, जब हम टट्टी-पेशाब कर रहे हों। आपको केवल हमारे चेहरे का फोटो ही नहीं लेना चाहिए, हमारा जीवन भी औरों को बताना चाहिए। भगवान् श्रीकृष्ण के शादी-विवाह के मामले को हमने कभी भी नहीं लिया है। हमने अपने पिताजी तथा माताजी के उस दृश्य को कभी भी नहीं देखा है, जब वे आपस में हँस-बोल रहे थे। श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ क्या रास किया, क्या मनोरंजन किया, हमें नहीं देखना है, क्योंकि वे हमारे पिता हैं। पिता के वे रूप देखना हमें पसन्द नहीं हैं। जैसे दृश्य को देखकर हमारी आँखें बन्द हो जाती हैं, झुक जाती हैं-वैसे दृश्य को हम देखना नहीं चाहते हैं। हमें उनके शिक्षण वाला पहलू चाहिए, हमें उनका चक्रसुदर्शन वाला पहलू चाहिए। हमें उनका गीता का उपदेश सुनाता हुआ पहलू चाहिए, जिससे हम प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्राप्त कर सकें।

मित्रो, दूसरा वाला पहलू जो हम आपको बतलाना-सिखाना चाहते हैं, वह रामायण वाला पहलू है। वह भगवान् राम के द्वारा दिया गया शिक्षण है, वो हम आपको बतलाना चाहते हैं। रामायण में राम का जो शिक्षण है, प्रेरणा है, उस ओर हम लोगों को घसीटकर ले जाना चाहते हैं। हाथी एवं घोड़े को रस्सी से बाँधकर, घसीटकर ले जाते हैं। हम जनसामान्य को, मनुष्य समुदाय को भी इसी प्रकार से घसीटना चाहते हैं। इनकी रस्सी क्या होगी? महामानवों के जीवन-चरित्र, श्रीराम, श्रीकृष्ण का जीवन-चरित्र, जिसको हम आपको पढ़ाते हैं। बाल्मीकि रामायण के उस पहलू को, जो हमारे उद्देश्य के काम आ सकते हैं, उसे भी हम आपको पढ़ाना चाहते हैं। अत: आप सभी से हमारी प्रार्थना है कि आप जब कभी भी जनता के

बीच जाएँ या आप स्वयं पढ़ें, उस समय आप केवल ये बातें लोगों को बतलाने का प्रयास करें, जो प्रेरणादायक हों तथा हमारे उद्देश्यों को पूरा कर सकती हों।

आप उन कथानकों का खण्डन-मण्डन न करें, उस समय आप चुपचाप हो जाएँ। जैसे रामायण में एक कथा आती है कि एक धोबी आता है और रामचन्द्र जी उसके कहने पर सीताजी को त्याग देते हैं। यह आपको नहीं मानना चाहिए। **जब वे शासनसत्ता सँभाल रहे थे, तब वे जज भी थे, मजिस्ट्रेट भी थे, उनको विचार करना चाहिए था, सीता जी की बात सुननी चाहिए थी कि वह क्या कह रही हैं। वह यह कह रही थीं कि हम निर्दोष हैं। उनकी बातों को न सुनना उनकी गलती थी तथा जो डिसीजन लिया, वह भी गलत था। आपको इस प्रकार के कथानकों को काट देना चाहिए।** जिसमें कहा गया है कि गलती धोबी की थी तथा सजा सीताजी को मिली। **हम रामचंद्रजी के अनुयायी हैं, परन्तु हम अन्धे अनुयायी नहीं हैं। उनकी गलत बातों को हम समर्थन नहीं करेंगे। हमारा मिशन बहुत दिनों से सत्यनारायण कथा सुनाता रहा है। हम केवल सत्य बातों को मानेंगे, उसे सुनायेंगे। आप मजहब की हर बातें न मानें, जो सत्य हैं उसे मानें,** क्योंकि भगवान् उसे कहते हैं, जो सत्य हैं। अतः आप सत्य को, विवेक को, इनसाफ को नारायण मानिये तथा उसी कार्य के लिए गतिशील रहिए, तो आपको लाभ होगा।

अब हम आपसे यह कहते हैं कि आप रामायण के माध्यम से परिवार, समाज तथा देश को नयी प्रेरणा तथा प्रकाश दीजिए। उसके नये पन्ने पलटकर सबको बतलाइये। भगवान् राम के बहुत-से पन्ने बड़े ही महत्त्वपूर्ण हैं तथा बहुत से पन्ने ऐसे हैं जिस पर बहस करना हमें मंजूर नही है, जो अनुपयोगी है। **हमारा उस अंश से ज्यादा संबंध है, जो उपयोगी हो सकता है, दिशा दे सकता है। एक बात और आती है कि रामचन्द्र जी ने दशरथ जी को पिण्डदान देने के लिए मांस का पिण्ड बनाया। यह बात भी हम नहीं मानते हैं। रामचन्द्र जी ने रावण मारा था, श्रीकृष्ण जी ने गोवर्धन उठाया था, इस प्रकार की बातें तो हम मानने के लिए तैयार हैं, पर भगवान् की अनर्गल बातों को हम नहीं मानेंगे। अतः आप यह समझ लीजिए कि आप इस तरह की बातें अपने व्याख्यानों में कभी नहीं करेंगे।** हम वास्तव में किसी देवी, देवता या किताब के गुलाम नहीं हैं। हम

तो सत्य के गुलाम हैं। हम अकल, सत्य और इन्साफ के गुलाम हैं। आप गलत बातों का समर्थन न करें। **श्रीकृष्ण भगवान् ने सोलह सौ रानियाँ की थीं, तो हम तीन कर लें तो क्या गलत है ? बेकार की बातें मत करें, अपने विचारों को ठीक रखें।**

हमारी नयी रामायण में है, प्रेरणा-मार्गदर्शन

हमने इसी उद्देश्य से एक नयी रामायण का सृजन किया है, जिसमें केवल काम की बातों की गुंजायश है। इसमें प्रेरणा है, मार्गदर्शन है। हम चाहते हैं कि आप इन बातों को मानें, शिक्षा ग्रहण करें तथा समाज को रामायण के माध्यम से इन बातों को बतलावें। अगर आप इन बातों को समाज में बतलाने का प्रयास करेंगे, तो प्रबुद्ध वर्गों के बीच रामायण अंधविश्वास, मूढ़-मान्यताएँ फैलाने वाला ग्रंथ बन जाएगा और दुनिया का सत्यानाश कर देगा। **श्रीकृष्ण की यह बात कि रुक्मिणी का भाई उनकी शादी नहीं करना चाहता था, परन्तु श्रीकृष्ण उसे भगाकर ले गये तथा शादी कर ली, यह बात हमें नामंजूर है। किसी लड़की को इस तरह भगाना न्यायसंगत नहीं है। यह गलत बात हमें नामंजूर है।** अत: आपको आगाह किया है कि रामायण की कथा बतलाते समय इस तरह की बातें न करें, जो नैतिकता को आघात पहुँचाएँ और लोगों के विचारों को गलत कर दें। अत: आपको सावधान रहना चाहिए।

मित्रो, गलती हर आदमी से हो सकती है, रामचन्द्र जी से भी हो सकती है। श्रीकृष्ण भगवान् से भी हो सकती है। साथियों हम नहीं जानते हैं कि कौन **विश्वामित्र हैं और कौन विश्वामित्र नहीं हैं। कितना अंश उनका पूजने योग्य है, कितना नहीं, यह हम नहीं जानते हैं। हमें तो अच्छे अंश की आवश्यकता है, उसका ही पूजन करते हैं। विश्वामित्र ने मेनका से शादी की थी कि नहीं की थी, यह हम नहीं जानते हैं। हम यह जानते हैं कि हर आदमी में कच्चाई होती है। गाँधीजी में कच्चाई हो सकती है, तो हर आदमी में कच्चाई हो सकती है। हमें तो इसके अच्छे पहलुओं की आवश्यकता है। उनकी शराफत एवं दिशाओं से मतलब है। अगर ये दृष्टिकोण आपका होगा तो आप गीता, रामायण, भागवत सुना सकते हैं और प्रेरणा दे सकते हैं। अगर ये दृष्टिकोण नहीं रखेंगे तो आप अपना भी सत्यानाश करेंगे तथा रामचन्द्र जी एवं श्रीकृष्ण जी का भी सत्यानाश करेंगे।** हम चाहते हैं कि आपकी अपनी दृष्टि हो। आप को किसी को

भी अपनी अकल नहीं बेचनी चाहिए। आपको हमने श्रीकृष्ण जी की कथा के बारे में बतलाया था। आज मैं आपको रामचन्द्र जी की कथा के बारे में बतलाना चाहता हूँ कि आपको किस तरह से कथा सुनाना चाहिए।

सुसंतति कैसे

रामचन्द्र जी की कथा श्रीकृष्ण की तरह ही है। कथा आती है कि मनु शतरूपा ने तप किया था, तो दशरथ रूप में पैदा हुए। मित्रो, तप करने से ही अच्छे एवं सुसंस्कारी बच्चे पैदा हो सकता हैं। आप लोग तो कहते हैं कि गुरुजी हमें आशीर्वाद दीजिए कि हमारा बेटा ठीक हो जाए। बेटे, तेरे घर में अच्छे बेटे नहीं हो सकते। तेरे घर तो रावण पैदा होंगे, मेघनाद पैदा होंगे। अगर अच्छे बच्चे पैदा करना है, तो आपको तप करना होगा। तप करने का अर्थ है-शारीरिक एवं मानसिक क्रियाओं को ठीक करना होगा। आप जब स्वयं संस्कारवान बनेंगे, तभी आप संस्कारवान बच्चे पैदा कर सकते हैं। अगर साँचा-ठप्पा ठीक नहीं है, तो खिलौना कैसे ठीक बनेगा। इसके लिए अपने आपको गलाइये।

मित्रो, यज्ञीय वातावरण में संस्कारवान बच्चे पैदा होते हैं। एक कथा आती है कि दशरथ जी द्वारा यज्ञ किया गया था, तो उससे चार भगवान्-राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न पैदा हुए थे। गुरुजी आप हवन करा सकते हैं तथा हमारी बीबी को दो बच्चा दे सकते हैं ? बेटे हम नहीं करा सकते हैं। आप पहले अपने परिवार में इस तरह का त्यागमय वातावरण बनाइये, जैसे कि दशरथ के यहाँ था और जैसा कि राम-सीता, लक्ष्मण-उर्मिला आदि का त्यागमय जीवन था। वैसा वातावरण आपके घर-परिवार का होगा, तभी यह हो सकता है। उर्मिला का त्याग सीता से भी ज्यादा है। उर्मिला ने कहा कि मेरा पति मेरा आदर्श-सिद्धान्त है, जो सदैव हमारे साथ है, अतः हमारा वन जाना उचित नहीं है। लक्ष्मण का जाना आवश्यक है। बड़े भाई की सेवा करना उनका परम कर्त्तव्य है। जिस घर में ऐसा वातावरण होगा, वहाँ संस्कारवान बच्चे पैदा होंगे। रामचन्द्र जी और भरत जी गेंद खेल रहे थे। भरत जी खेलने में कमजोर थे, परन्तु रामचन्द्र जी उन्हें बार-बार जिता देते थे। अपने से छोटों की हिम्मत और इज्जत बढ़ा देने में ही महानता है-हारा आदमी जीत जाता है। रामचन्द्र जी ने भरत को गुलाम बना लिया। सारी जिन्दगी वे राम के गुलाम रहे। यह है भगवान् का स्वभाव, जो कि हमारे लिए प्रेरणा लेने एवं देने लायक है। ऐसे ही भगवान् को लोग मानते हैं। आज घटिया भगवान् को कोई नहीं मानता है।

भगवत्तत्त्व के मर्म को समझें

एक बार कौशल्या जी रामचन्द्र जी को पालने में झुला रही थीं, उस समय भगवान् ने वही गीता वाला ज्ञान दिया कि भगवान् इनसान के रूप में ही हो सकता है। विराट्ब्रह्म को, निराकार को कौन देख-समझ सकता है। निराकार भगवान् तो ऊँचे विचारों में है, आदर्शवादिता में है, उत्कृष्ट चिन्तन में है, भलाई में है। साकार मानना है, तो सारा समाज ही, सारे समाज के लोग ही भगवान् हैं।

आज लोग अपने-अपने भगवान् के लिए लड़ते रहते हैं। कोई कहता है कि हमारा भगवान् चूहे पर सवारी करता है, तो कोई कहता है कि हमारा भगवान् हाथी पर सवारी करता है। तो कोई कहता है कि हमारा भगवान् हंस पर सवारी करता है। अरे भगवान् तो एक है और मनुष्य है कि सवारी के लिए लड़ता है। हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई के भगवान् एक हैं। भगवान हिन्दू, मुस्लिम सबके लिए होगा, तो सफेद रंग का ही होगा। इसमें फर्क हमने और आपने पैदा कर दिया है। सूर्य, चन्द्र जब एक ही हो सकते हैं, तो भगवान् दो कैसे हो सकते हैं? मन्दिर में रखे हुए भगवान् जड़ हैं, हम इसके द्वारा अपनी भावना को जाग्रत करते हैं। इसमें कोई चमत्कार नहीं है। चमत्कार है, तो मनुष्य की भावना में है। यह कूड़े में, गोबर, लकड़ी, पत्थर सबमें हो सकता है। आप भगवान् की पूजा करते हैं, तो भगवान् के बारे में जानने का भी प्रयास करें, तभी आपको सही बातें मालूम पड़ेंगी। रामचन्द्र जी ने विराट् ब्रह्म के बारे में कागभुसुण्डि एवं कौशल्या को दिखाया और कहा कि इसकी सेवा करना ही भगवान् की पूजा है। इसे हर व्यक्ति को समझना चाहिए।

तपस्वी जीवन की प्रेरणा

भगवान् के भक्त के लिए हीरा तराशना आवश्यक है अर्थात् अपनी अन्तश्चेतना को परिष्कृत करना आवश्यक है। इसके लिए तप करना आवश्यक है। विश्वामित्र राम और लक्ष्मण को इसके लिए जंगल में ले गए और कहा कि तप करना परम आवश्यक है। वहाँ कन्द-मूल आपको मिलेगा और वही खाकर रहना पड़ेगा। आपको वहाँ मक्खन और डबल रोटी नहीं मिलेगी। चलिए वहाँ रहिए और वे तप करने चले गये। उन्होंने कहा कि अनीति से विरोध करना पड़ेगा, आदर्श पद्धति का अवलम्बन लेना पड़ेगा। समाज को ऊँचा उठाने के लिए तप करना यानी तपस्वी का जीवन जीना होगा। वे सहर्ष तैयार हो गए एवं चले गए। इसके बाद ही भगवान् कहलाए। महापुरुषों के लिए इसी प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता पड़ती है।

आदर्श विवाह किस प्रकार

राजा जनक के चार लड़कियाँ थीं। राजा दशरथ के यहाँ एक यज्ञ हुआ था जिसके फलस्वरूप चार लड़के पैदा हुए। इन चारों का जनक की पुत्रियों से विवाह हो गया। हम इसी प्रकार का वातावरण बनाना चाहते हैं। हम दहेज के विरोधी हैं, लेकिन अगर कोई स्वेच्छा से कन्या को कुछ देता है, तो हमें ऐतराज नहीं है, परन्तु पैसा दिखाकर नहीं देना चाहिए। आप पेटी में रखकर इच्छा से दीजिए अथवा बेटी के नाम जमा कर दीजिए। दहेज हर दृष्टि से अनैतिक है। इम्मोरेल है। इसे तत्काल बन्द करना चाहिए। यह प्रेरणा हमें रामायण से लेनी चाहिए।

इसी प्रकार रामायण से हमें अन्यान्य प्रेरणादायक दृष्टान्त लेकर लोगों को समझना चाहिए। एक बार दशरथ जी को अपना सफेद बाल दिखलाई दिया। उन्होंने सोचा कि हमें क्या करना चाहिए। यह सम्मन है मौत का। हमारे सिर पर ६५० बाल सफेद हैं, जो यह बताते हैं कि ६५० बार मौत की सूचना का सम्मन आ चुका है, आपको होश आया कि नहीं। आपको भगवान् के पास जाना है। आपको वहाँ अपनी सारी रिपोर्ट देनी है कि आपने यहाँ क्या-क्या किया है। दशरथ जी ने सफेद बाल देखकर अपने बड़े लड़के रामचन्द्र जी को बुलाया और कहा कि आप इस राजकाज को देखें और अब हमें वानप्रस्थ लेना है। आप छोटों को देखें तथा परिवार के उत्तरदायित्व को सँभालें। यह प्राचीन परम्परा थी कि लोगों को जीवन के उत्तरार्द्ध में वानप्रस्थ लेना पड़ता था तथा समाज का उत्तरदायित्व उठाना पड़ता था। समाज में अलख जगाना पड़ता था।

इससे रामचन्द्र जी के जीवन में धर्म-संकट आ गया। वस्तुतः इसके बिना हम यह नहीं जान सकते हैं कि रामचन्द्र जी, भरत जी, लक्ष्मण जी आदि कितने महान थे। जब रामचन्द्र जी के सामने यह प्रश्न आया कि आप राज्यपाट देखेंगे अथवा जंगल में वनवास के लिए जाएँगे, तो उन्होंने देखा कि सिद्धान्तों के लिए कष्ट उठाना, मुसीबत सहना ज्यादा महत्त्वपूर्ण है, बजाय इसके कि हम राज्यपाट देखें। उन्होंने समाज के उत्कर्ष के लिए, सिद्धान्तों के लिए चौदह वर्ष के लिए वनवास को सहर्ष स्वीकार कर लिया। उन्होंने राज्यपाट जो ऐय्याशी का काम था, उसे ठुकरा दिया। उन्होंने ऋषियों के साथ घुलने-मिलने, राक्षसों से लोहा लेने तथा जंगलों में रहकर तपस्वी जीवन जीने को ज्यादा महत्त्व दिया और वनवास को

सहर्ष स्वीकार कर लिया। उन्होंने सोचा कि हमें उसी काम को करना चाहिए जिसकी ऋषियों को आवश्यकता है, देश को, संस्कृति को आवश्यकता है। खेती का काम कोई भी कर सकता है। खेती का काम आपका नौकर कर सकता है। आप समाज में जाइये और समाज की सेवा कीजिए।

राम का वनवास इसलिए

भगवान् रामचन्द्रजी ने भी समाज की सेवा के लिए वनवास जाना स्वीकार किया। इस वनवास के समय उनके सामने ऐसी-ऐसी बेहतरीन घटनाएँ हुईं, जिसके द्वारा उन्हें प्यार, मोहब्बत मिला। उन्होंने न जाने कितने लोगों को दिशाएँ दीं-प्रेरणाएँ दीं। शबरी की घटना हमें याद आती है। वे उसके पास पहुँचे और उससे कहा कि हम बहुत भूखे हैं। शबरी ने बेर चखकर देखा तथा मीठे बेर को उन्हें खिलाती चली गयी। शबरी ने राम से पूछा कि क्या आप वही राम हैं, जिसका मैं जप करती हूँ। हाँ, मैं वही राम हूँ। उसने पूछा कि आप अयोध्या से यहाँ क्यों आये? रामचन्द्र जी बोले-शबरी, हमेशा भगवान् भक्त के पास आते हैं। हम सूरदास के पास गये थे। हम राजा बलि के पास गये थे। सुदामा के भी हमने पैर धोये थे। महर्षि भृगु ने हमारे कलेजे में लात मारी थी। मीरा के पास मैं गया हूँ। मैं भक्त का गुलाम हूँ। भक्त भगवान् से बड़ा है। शबरी तू तो रोज रास्ते को बुहारती है, वह महान भक्ति है। यह तुम्हारी असली भक्ति है।

मित्रो, एक और भक्त की याद आ गयी। सीताजी को रावण चुराकर ले जा रहा था। जटायु इस काण्ड को देखकर द्रवित हो गया। उसने रावण से कहा कि दूसरे की पत्नी को इस तरह से चुराकर ले जाना पाप है। रावण बोला कि तू चुपचाप बैठ और बेकार की बातें मत कर। जटायु को आक्रोश आ गया और वह अनीति से लड़ने के लिए तैयार हो गया। यद्यपि वह मर गया, परन्तु अमर हो गया। आज इस प्रकार के लोग हो जाएँ, तो फिर समाज में गुण्डे कहाँ रह सकते हैं? समाज के लोगों को संगठित होकर अनीति के विरुद्ध संघर्ष करना चाहिए। हार जाने से कोई असफल नहीं होता। हमारे समाज में ईसामसीह असफल नहीं हुए। लोगों ने उनके हाथ-पैरों में कील ठोंक दी थी, परन्तु लोग सफल नहीं हुए। जो आदमी सिद्धान्तों के लिए जिये हैं, वे अमर हैं। सुकरात ने जहर पिया, फिर भी वे मरे नहीं, अमर हैं। रामचन्द्र जी मरे नहीं, वे अमर हैं। जटायु जीत गया था। रामचन्द्र जी आये और

उसके जख्मों को अपने आँसुओं से धोया, अपने हाथों से साफ किया तथा प्यार दिया। उन्होंने कहा कि कहो तो हम तुम्हें स्वर्ग भेज दें, कहो तो मोक्ष प्रदान कर दें। उसने कहा कि यह सब हमें नहीं चाहिए। मित्रो, भगवान् के प्यार, मोहब्बत से बढ़कर कुछ भी नहीं है। उसने कहा कि हमें यह प्राप्त हो गया, हम धन्य हो गये, आप चिन्ता न करें।

भगवान् का प्यार कैसा होता है?

भगवान् के प्यार के तीन तरीके हैं-पहला भगवान् जिसे प्यार करते हैं, उसे 'संत' बना देते हैं। संत यानी श्रेष्ठ आदमी। श्रेष्ठ विचार वाले, शरीफ, सज्जन आदमी को श्रेष्ठ कहते हैं। वह अन्तःकरण को संत बना देता है। दूसरा-भगवान् जिसे प्यार करते हैं उसे 'सुधारक' बना देते हैं। वह अपने आपको घिसता हुआ चला जाता है तथा समाज को ऊँचा उठाता हुआ चला जाता है। तीसरा-भगवान् जिसे प्यार करते हैं उसे 'शहीद' बना देते हैं। शहीद जिसने अपने बारे में विचार ही नहीं किया। समाज की खुशहाली के लिए जिसने अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया, वह शहीद होता है। जो दीपक की तरह जला, बीज की तरह गला, वह शहीद कहलाता है। चाहे वह गोली से मरा हो या नहीं, वह मैं नहीं कहता, परन्तु जिसने अपनी अकाल, धन, श्रम पूरे समाज के लिए अर्पित कर दिया, वह शहीद होता है। जटायु ने कहा कि आपने हमें धन्य कर दिया। आपने हमें शहीद का श्रेय दे दिया, हम धन्य हैं। जटायु, शबरी की एक नसीहत है। यह भगवान् की भक्ति है। यही सही भक्ति है।

मित्रो, **हनुमान जी भी भगवान् राम के भक्त थे। भक्त माँगने के मूड में नहीं रहता है। भक्त भगवान् के सहायक होते हैं। वह अपने लिए मकान, रोटी, कपड़ा या अन्य किसी चीज की चाह नहीं करता है, उसका तो हर परिस्थिति में भगवान् का सहयोग करना ही लक्ष्य होता है। वह अपनी सारी जिन्दगी भगवान् के लिए अर्पित कर देता है। हनुमान जी इसी प्रकार के भक्त थे। आज तो भक्त की पहचान है-"राम नाम जपना, पराया माल अपना।" मित्रो, यह भक्ति नहीं है।** आज बगुला भक्तों की भरमार है, जो माला को ही सब कुछ मानते हैं। भक्त वही है, जिसका चरित्र एवं व्यक्तित्व महान हो।

साथियो, हिरण्यकशिपु वह है, जिसे केवल पैसा दिखलाई पड़ता है, सोना दिखलाई पड़ता है, ज्ञान दिखलाई नहीं देता है। हिरण्याक्ष-जिसकी

आँखों को केवल सोना ही दिखलाई पड़ता है। यह दोनों भाई थे। हिरण्यकशिपु को नरसिंह भगवान् ने मारा था और हिरण्याक्ष को वाराह अवतार ने मारा था। आज मनुष्य इसी स्तर का बन गया है। आप लोगों का आज यही स्तर है। आपकी भक्ति नगण्य है। **रावण मोह में मारा गया और सीता लोभ में फँस गयी और मुसीबत मोल ले बैठी। जो भी व्यक्ति लोभ एवं मोह में फँस जाता है, वह भी इसी तरह मारा जाता है। लक्ष्मण जी ने एक रेखा खींची थी। मित्रो जो भी व्यक्ति अपनी मर्यादा को कायम नहीं रखता है, वह इसी प्रकार दुखी रहता है। आप कायदे एवं नियम का पालन कीजिए,** यह हमें रामायण बतलाती है।

भक्ति भी, संघर्ष भी

रामायण में भक्ति भी भरी पड़ी है तथा संघर्ष भी भरा पड़ा है। उसके कण-कण में दिव्य प्रेरणाएँ भरी पड़ी हैं। उसमें तप, संघर्ष दोनों चीजें विद्यमान हैं। इसमें गुरु गोविन्द सिंह की तरह एक हाथ में माला तथा दूसरे हाथ में भाला की बात बतलायी गयी है। बेटे, तुम्हें माला की रक्षा के लि एक हाथ में भाला भी पकड़ना होगा।

रामचन्द्र जी गुरु विश्वामित्र जी के साथ यज्ञ-रक्षा के लिए जंगल से होकर जा रहे थे। रास्ते में उन्होंने देखा कि यहाँ तो हड्डियों का ढेर लगा है। उन्होंने पूछा कि यह किनका है? ऋषियों ने बतलाया कि यह उन ऋषियों की हड्डियाँ हैं, जिन्हें राक्षसों ने भक्षण करके डाल दिया है। यह देख-सुनकर अन्दर आक्रोश भर आया और उन्होंने संकल्प लिया-

निशिचर हीन करौं महि, भुज उठाइ प्रण कीन्ह।

जब इस तरह मन में क्रोध आता है, तो वे संघर्ष के लिए तैयार हो जाते हैं। रामचन्द्र जी कहते हैं कि यद्यपि यह हमारे पूर्वज नहीं हैं, परन्तु वे महान व्यक्ति थे, जो समाज के लिए जीते थे। हम इनके लिए संकल्प लेते हैं कि इसके दुश्मन ऐसे दुष्ट राक्षसों को समाप्त करेंगे तथा धरती पर स्वर्ग का वातावरण बनाएँगे।

संघ शक्ति का महत्त्व

रामचंद्र जी आगे चलते गये। उन्होंने अपने साथ बन्दर-भालुओं को लिया। मित्रो, अच्छे काम के लिए जनसहयोग की आवश्यकता होती है। अकेला व्यक्ति कोई बड़ा काम नहीं कर सकता है। कृष्ण भगवान् को भी ग्वालवालों का सहयोग लेना पड़ा। रामचन्द्र जी ने कहा कि हम भगवान् हैं, शक्ति हैं और हम अकेले ही रावण को मार सकते हैं, लेकिन यह कायदा नहीं है। हमें जनसहयोग लेकर काम करना चाहिए। आप जनता की शक्ति को लेकर सत्य के लिए आगे बढ़ें। कहा भी

गया है-**सत्यमेव जयते**। सत्य में हजार हाथी का बल होता है। छोटे-छोटे बन्दर-भालुओं के सहयोग से समुद्र में पुल बनता चला गया। मित्रो, जहाँ मन:स्थिति अच्छी होती है। वहाँ परिस्थिति भी अच्छी होती है। एक गिलहरी आयी और अपने बालों में भरकर मिट्टी डालने लगी। इसके श्रम को देखकर बन्दर-भालू सहित रामचन्द्र जी बहुत प्रसन्न हुए। गिलहरी ने कहा कि हम छोटे हैं तो क्या हुआ, हम भी भगवान् के काम में सहयोग करेंगे तथा अपनी सामर्थ्य के अनुसार कार्य करेंगे। उसकी दिलेरी को देखकर भगवान् राम बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने उसे हथेली पर रखा और अपनी अँगुलियों से उसे सहलाने लगे। सुना है कि रामचन्द्र जी काले रंग के थे। उनकी अँगुलियाँ काले रंग की थीं। अत: उसके ऊपर काले रंग की लकीरें पड़ गयीं। हमने सुना है कि वही लकीर आज तक गिलहरी के खानदान पर पड़ी हुई है।

मित्रो, यह बात सही है कि भगवान् के प्यार-मोहब्बत का निशान उसी आदमी के ऊपर होता है, जो अपने को त्यागी, बलिदानी के रूप में आगे कर एक आदर्श प्रस्तुत करता है। उसके बिना कोई आदमी भगवान् का प्यारा नहीं हो सकता है। अगर आप दिन-रात भजन-कीर्तन करते हैं, परन्तु आपने नेक जीवन, आदर्श का जीवन, लोगों को ऊँचा उठाने का जीवन नहीं जिया है, अपने व्यक्तित्व को ऊँचा नहीं उठाया है, दूसरों की सेवा नहीं की है, तो आप भगवान् का प्यार नहीं पा सकते हैं।

रामायण के हर पन्ने महत्त्वपूर्ण प्रेरणाओं से भरे पड़े हैं। रावण मरा हुआ था। लक्ष्मण ने यह पूछा कि रामचन्द्र जी आपने कहा था कि हमने एक तीर मारा है, तो इसके शरीर में हजारों छेत कैसे हो गये? रामचन्द्र जी ने कहा-हे लक्ष्मण! हमने तो उसे केवल एक ही तीर मारा है, परन्तु वे छिद्र उसके अपने कर्मों के फल हैं।। पाप अपने आप में फूटता है। अगर आप पारा खा लें, तो वह अपने आप फोड़कर निकल जाता है। उसी प्रकार पाप अपने आप निकलता है। पाप अपने आप खून बहाता है, अपने आप तबाही लाता है।

पाप की परिणति अंततः ऐसी

एक और प्रसंग रामायण में आता है कि रामचन्द्र जी की पत्नी सीताजी को जब रावण चुराने गया था, तो भिखारी का वेष बनाकर गया था। चोर के तरीके से वह वहाँ गया था। इस प्रकार की नीयत या मन:स्थिति जब व्यक्ति की हो जाती है, तो सारी दैवी सम्पदाएँ ऋद्धि-सिद्धियाँ समाप्त हो जाती हैं। रावण सब चीजों से

परिपूर्ण था, परन्तु उसकी एक कमी के कारण गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं- **"जिमि कुपंथ पग धरइ खगेशा, रहइ न तेज बुद्धि लव लेशा।"** उसके तेज, बल, धन सब समाप्त हो गये। रावण का सत्यानाश हो गया। सोने की लंका न जाने कहाँ चली गयी। सारे कुटुम्ब का सत्यानाश हो गया। इतने बड़े ज्ञानी, तपस्वी, सामर्थ्यवान व्यक्ति की एक कमी उसका सत्यानाश कर सकती है और वह है चाल-चलन की कमी, चिन्तन की कमी।

यही आप लोग समाज को शिक्षण देना कि आप लोग शराफत सीखिए, इन्सानियत को सीखिये, भलमनसाहत को सीखिये-अपनाइये। सच्चाई, श्रेष्ठता आदर्शवादिता को सीखिए। इसके द्वारा ही व्यक्ति, परिवार, समाज निर्माण का उद्देश्य पूरा होगा। हमें विश्वास है कि आप यहाँ से इस प्रकार की बातें सीखकर जाएँगे, तो हमारा उद्देश्य पूरा हो सकेगा। हमने अपने मिशन के द्वारा रामायण का प्रशिक्षण राम की दुहाई देने के लिए नहीं, वरन् समाज को राम का चरित्र, कार्यपद्धति से अवगत कराने के लिए प्रारम्भ किया है, ताकि इसके माध्यम से लोगों को प्रेरणा दी जा सके और समाज को ऊँचा उठाया जा सके। इसके द्वारा हमारे मिशन का व्यक्ति-निर्माण, परिवार-निर्माण, समाज-निर्माण का उद्देश्य पूरा हो सके। यही हमारा रामायण प्रशिक्षण का उद्देश्य है। आशा है, आप इसे समझ गये होंगे तथा उसी प्रकार लोगों को समझाने का प्रयास करेंगे।

आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शान्तिः ॥

फिज़ाँ बदल देती है अवतार की आँधी

(३० अगस्त १९७५ जन्माष्टमी पर उद्बोधन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! आज जन्माष्टमी का पुनीत पर्व है। आज से पाँच हजार वर्ष पूर्व इसी दिन पृथ्वी पर भगवान् की वह शक्ति अवतरित हुई, जिसने प्रतिज्ञा की थी कि हम सृष्टि का संतुलन कामय रखेंगे। भगवान् की उस प्रतिज्ञा के भगवान् कृष्ण प्रतिनिधि थे, जिसको पूरा करने के लिए उन्होंने अपनी सारी जिंदगी लगा दी। उसी प्रतिज्ञा के आधार पर उन्होंने जनसाधारण को विश्वास दिलाया है कि हम पृथ्वी को असंतुलित नहीं रहने देंगे और सृष्टि में अनाचार को नहीं बढ़ने देंगे। भगवान् ने यह प्रतिज्ञा की हुई है-

यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे॥

संतुलन हेतु आता है अवतार

मित्रो! मनुष्य के भीतर दैवी और आसुरी-दोनों ही वृत्तियाँ काम करती रहती हैं। दैत्य अपने आपको नीचे गिराता है। पानी का स्वभाव नीचे की तरफ गिरना है। पानी बिना किसी प्रयास के, बिना किसी 'परपज' के नीचे की तरफ गिरता हुआ चला जाता है। इसी तरह मनुष्य की वृत्तियाँ जब बिना किसी के सिखाए और बिना किसी आकर्षण के अपने आप पतन की ओर, अनाचार और दुराचार की ओर बढ़ती हुई चली जाती हैं, तब सृष्टि का संतुलन बिगड़ जाता है। व्यक्ति के भीतर भी और समाज के भीतर भी संतुलन बिगड़ जाता है। ऐसी स्थिति में समाज में सफाई की प्रक्रिया यदि न चलाई जाए, कमरे में झाड़ू न लगाई जाए, तो कूड़ा भरता चला जाएगा। दाँत पर मंजन न किया जाए, शरीर को स्नान न कराया जाए, तो उस पर

मैल जमता चला जाएगा। इसी तरह अगर कपड़े को न धोया जाए, तो कपड़ा मैला होता चला जाएगा।

मलीनता को साफ करने की प्रक्रिया जब बंद हो जाती है या ढीली पड़ जाती है, तो सृष्टि में अनाचार बढ़ जाता है, यह सृष्टि के बहिरंग रूप में भी और अंतरंग रूप में भी फैल जाता है। अंतरंग रूप हमारा व्यक्तिगत रूप है। यह भी एक सृष्टि है। व्यक्ति अपने आप में सृष्टि है, व्यक्ति अपने आप में संसार है, विश्व है। अगर संघर्ष की गुंजाइश न हो, सफाई की गुंजाइश न हो, धुलाई की गुंजाइश न हो, तब इसके भीतर भी अनाचार बढ़ता हुआ चला जाता है। इसी तरह बहिरंग संसार में भी अगर सुधार की प्रक्रिया, संघर्ष की प्रक्रिया, सही करने की प्रक्रिया को जारी न रखा जाए, तब संसार में अनाचार बढ़ता चला जाता है।

कभी-कभी देव भी हार जाते हैं, जब समाज को ऊँचा उठाने वाले उनके सलाहकार धीमे पड़ जाते हैं, हारने लगते हैं। जब हम अपना संघर्ष बंद कर देते हैं और दुष्ट प्रवृत्तियों को खुली छूट दे देते हैं, तब हमारा भीतर वाला देव हारने लगता है और दुष्ट प्रवृत्तियाँ खुलकर खेलने लगती हैं। दुष्ट प्रवृत्तियाँ हमारे मस्तिष्क में छाई रहती हैं। दुष्ट प्रवृत्तियाँ हमारे स्वभाव और अभ्यास में बनी रहती हैं। चूंकि हम अपने भीतर से संघर्ष बंद कर देते हैं, दुष्प्रवृत्तियों को रोकते नहीं, काटते नहीं, तोड़ते-मरोड़ते नहीं, उनसे लोहा लेते नहीं और न ही उन्हें छोड़ते हैं, इसलिए वे हम से चिपक कर बैठी रहती हैं और उनको हमारे अंतरंग जीवन में खुलकर खेलने का मौका मिल जाता है।

और बहिरंग जीवन में? बहिरंग जीवन में भी यही बात है। बहिरंग जीवन में आप अनाचार को छूट दे दीजिए, उसे रोकिए मत, सुधारिए मत, प्रतिबंध लगाइए मत, तब वह चारों ओर से बढ़ता हुआ चला जाएगा। अनाचार आता बहिरंग से है, लेकिन उतरेगा अंतरंग जीवन में। इस कारण कभी-कभी आप में ऐसा असंतुलन पैदा होगा, जो विनाश की ओर ले जाएगा। जब कभी असंतुलन पैदा हो जाता है, तो यह मालूम पड़ता है कि दुनिया का विनाश होने वाला है। हमारी भीतर की दुनिया का भी और बाहरी दुनिया का भी विनाश होने वाला है। यह विनाश नहीं, वरन् विनाश के आधार हैं।

मित्रो! विनाश का आधार एक ही है- अनाचार। अनाचार की वृद्धि अर्थात् विनाश। अनाचार और विनाश दोनों एक ही चीज हैं। इनमें जरा भी फरक नहीं है। एक दूध है, तो एक दही। दूध अगर जमा दिया जाएगा, तो दही बन जाएगा और

जीवन में अनाचार को बढ़ावा दिया गया होगा, तो विनाश उत्पन्न हो जाएगा। यह प्रक्रिया न जाने कब से बार-बार बनती और चलती आ रही है। भगवान् को सृष्टि निर्माण से पूर्व ही यह ख्याल था कि कहीं ऐसा न हो जाए और सृष्टि का संतुलन बिगड़ जाए। इसलिए सृष्टि का संतुलन जब कभी बिगड़ने लग जाता है, तो उसका बैलेंस ठीक करने के लिए भगवान् अपनी शक्तियों को लेकर अवतार लेते रहे हैं।

अवतारा: असंख्या:

अब तक भगवान् ने जाने कितने अवतार लिए हैं, हम कही नहीं सकते। उनमें से एक अवतार यह भी है जिसका कि हम जन्मोत्सव मनाने के लिए, जन्मदिन मनाने के लिए, जन्माष्टमी मनाने के लिए एकत्रित हुए हैं। भगवान् के अवतार हमारे यहाँ हिंदू सिद्धांत के अनुसार दस और एक दूसरे सिद्धांत के आधार पर चौबीस हुए हैं। कोई कहता है कि दस अवतार हुए हैं, तो कोई कहता है कि भगवान् के चौबीस अवतार हुए हैं। यह तो मैं हिंदू समाज की बात कह रहा हूँ। लेकिन हिंदू समाज ही दुनिया में अकेला नहीं है। मुसलमान समाज अलग है। मूसा से लेकर मोहम्मद साहब तक ढेरों अवतार हुए हैं। ईसाइयों में भी न जाने कितने अवतार हो चुके हैं। बौद्धधर्म में न जाने कितने अवतार हुए हैं। पारसियों में कितने अवतार हो चुके हैं। हर मजहब में कितने अवतार हो चुके हैं, यह हम नहीं बता सकते। अवतार होने से हमें कोई शिकायत भी नहीं है।

मित्रो! चलिए इन अवतारों में हम एक और कड़ी जोड़ने को तैयार हैं। जितने भी महामानव, महर्षि, लोकसेवक एवं संसार को रास्ता बताने वाले हुए हैं, चलिए उन सबको हम अवतार मान लेते हैं। इस संबंध में हम यह नहीं कहेंगे कि यह अवतार नहीं था या वह अवतार नहीं था। हमारे ये सब अवतार हैं। मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि अवतार आपके भीतर में कई तरीके से प्रकट होता रहता है। कभी अनाचार को दबाने के लिए खड़ा हो जाता है, तो कभी पीड़ा-पतन निवारण के लिए खड़ा हो जाता है। तो कभी विकृतियों से जूझने के लिए खड़ा हो जाता है। जिस तरीके से कसाई बकरे को बाँधकर ले जाता है, उसी तरीके से हमारा आंतरिक अवतार न जाने कहाँ से कहाँ ले जाने के लिए हमें विवश कर देता है। दुनिया में ऐसी कौन सी शक्ति है, कौन है वह, जो हमें बताता है कि इस रास्ते पर चलना नहीं है। वह शक्ति हमें ऐसे रास्ते पर चलने से रोक देती है। जब कभी शौर्य का-साहस का उदय हमारे भीतर होता है, तो मित्रो हम कह सकते हैं कि अवतार का उदय हुआ।

यह भी एक अवतार

अवतार का उदय कितने मनुष्यों के भीतर हुआ और उन्होंने कितनों का कायाकल्प कर दिया? एक उदाहरण बताता हूँ आपको—समर्थ गुरु रामदास का। समर्थ गुरु रामदास शादी के लिए तैयार खड़े थे। पंडित पंचांग लेकर पति-पत्नी को एक-दूसरे के गले में वरमाला पहनाने को कह रहे थे। तभी समर्थ के सामने दो सपने आकर खड़े हो गए। सपना नंबर एक कि बीबी आएगी, हाथ-पाँव दबाया करेगी, सिर में तेल लगाया करेगी, खाना पकाया करेगी और बच्चा पैदा किया करेगी। दूसरा सपना इतना जबरदस्त आया कि चूहे के तरीके से रोटी के टुकड़े को देखकर मौत के पिंजड़े में जाने को तैयार है? यह पता नहीं कि जिंदगी कितनी कीमती है और इसके लिए क्या करना चाहिए? भगवान् आया और उसने समर्थ को आवाज दी-बुलाया। भगवान् हमारे और आपके पास भी रोज आता है। रोज संदेश देता है, आदेश देता है, निर्देश करता है। लेकिन भगवान् की पुकार हम और आप कब सुनते हैं? भगवान् आदर्श की, सिद्धांतों की, नैतिकता की, मर्यादा की बातें बताकर चला जाता है, लेकिन हम और आप यह सब सुनते हैं क्या? हमारे लिए तो भगवान् की पूजा करने के लिए ये खेल-खिलौने ही काफी हैं, जो हमने और आपने पकड़ रखे हैं। हमारी और आपकी समझ में तो भगवान् की आरती उतारनी चाहिए, जप कर लेना चाहिए, भगवान् को धूपबत्ती चढ़ा देना चाहिए, भगवान् को चावल चढ़ा देना चाहिए, और प्रसाद बाँट देना चाहिए। इतना काफी है। और कुछ? नहीं और ज्यादा न हमारी हिम्मत है, न हमारा मन है, न हमारी तबियत है, न हमारे अंदर जीवट है और न हमारे अंदर चिंतन है। बस, इन्हीं बाल-बच्चों जैसे खिलौनों से खेलते रहते हैं। भगवान् की पूजा के लिए इन खेल-खिलौनों के अतिरिक्त हम और हिम्मत नहीं कर सकते।

लेकिन भगवान् तो अपनी पूजा के लिए कुछ और ही चाहता है। वह धर्म स्थाना के लिए, समय की माँग को पूरा करने के लिए आपको रोज पुकारता है। धर्म की स्थापना के लिए भगवान् ने किसको-किसको पुकारा? समर्थ गुरु रामदास को पुकारा। उनसे कहा कि अरे! कहाँ चलता है नरक में, चल तेरे लिए दूसरा रास्ता खुला पड़ा है। उन्होंने कहा- भगवान् मैं आया। भगवान् मैं डूब रहा हूँ, इस भवसागर से आप मेरा त्राण कीजिए अर्थात् रक्षा कीजिए। भगवान् का तो संकल्प ही है- "**परित्राणाय साधूनां**" अर्थात् साधुओं का त्राण होता है, असाधुओं का

नहीं। असाधुओं के त्राण के लिए भगवान् के पास कोई फरसत नहीं है। कोई टाइम नहीं है और कोई मोहब्बत नहीं है। जो आदमी साधु-संत नहीं है अथवा साधु होकर भी पाप के गर्त में गिरते हुए चले जाते हैं, तो भगवान् क्यों करेंगे मोहब्बत उनसे और क्यों प्यार करेंगे उनसे? एक सिद्धांत वाले-उच्च आदर्शों वाले की ओर उन्होंने अपना हाथ बढ़ा दिया और समर्थ गुरु उठकर खड़े हो गए। शादी के मंडप से वे भाग खड़े हुए। लोगों ने कहा कि पकड़ना इन्हें, पर समर्थ गुरु उनकी पकड़ से दूर भाग खड़े हुए। उनकी होने वाली बीबी का ब्याह दूसरे व्यक्ति से कर दिया गया। समर्थ गुरु रामदास जाने कहाँ चले गए।

मित्रो! समर्थ गुरु रामदास वहाँ चले गए, जहाँ से हिंदुस्तान के अध्याय का नया इतिहास आरंभ हुआ। उन्होंने न जाने कितने शिवाजी तैयार कर दिए। महाराष्ट्र में उन्होंने न जाने कितने ज्ञान केन्द्रों, हनुमान मंदिरों को स्थापित किया। एक-एक मुट्ठी अनाज घर-घर से एकत्र करके कितना अपार धन अर्जित किया और उसे राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए शिवाजी की सेना में लगा दिया। शिवाजी के नाम से जो संग्राम चला, उसके असली संचालक कौन थे? समर्थ गुरु रामदास। समर्थ गुरु रामदास का इतिहास-भगवान् का इतिहास है। आपका इतिहास? औरों का इतिहास-बंदरों का इतिहास है, शेरों का इतिहास है, चूहों का इतिहास है, जो केवल पेट के लिए जीते हैं, औलाद के लिए जीते हैं। हम और आप भी कोई भगवान् के भक्त हैं? नहीं, साहब हम तो भगवान् की शरण चाहते हैं। खाक चाहता है अभागा कहीं का। बस भक्ति के नाम पर चंदन चढ़ाता हुआ चला जाता है, माला घुमाता हुआ जाता है। नहीं साहब! हम तो बद्रीनाथ जाते हैं, चंदन चढ़ाते हैं, माला घुमाते हैं, धूपबत्ती जलाते हैं। ये कुछ नहीं, मात्र तू खेल-खिलौना करता, मजाक करता और भगवान् को अँगूठा दिखाता है। आपके ये पूजा करने के ढंग भगवान् से दिल्लगीबाजी करने के समान हैं। पूजा करने के सही ढंग वे हैं, जो समर्थ गुरु रामदास के पास आए थे।

श्रेय व प्रेय मार्ग

मित्रो! पूजा करने के सही तरीके वे हैं, जो भगवान् की पुकार सुनने वालों ने अपनाए हैं। भगवान् की पुकार सुनने वालों में से एक नाम जगद्गुरु शंकराचार्य का भी है। एक ओर शंकराचार्य की माँ चाहती थीं और ये कहती थीं कि मेरा फूल-सा छोकरा ब्याह करके गोरी बहू लाएगा और नाती-पोते पैदा करेगा। कमाकर लाएगा, महल बनाएगा, कोठी बनाएगा, गाड़ी लाएगा और घर में पैसे इकट्ठे करेगा। एक ओर इस तरह शैतान वाला ख्वाब, पाप वाला ख्वाब, लोभ वाला ख्वाब, आकर्षण

वाला ख्वाब था, दैत्य वाला ख्वाब था, तो दूसरी ओर शंकराचार्य के मन में देवत्व वाला ख्वाब था। भगवान् ने शंकराचार्य के कान में इशारे से कहा-अरे अभागे जिस काम के लिए कुत्ते और बिल्ली, मेढक और चूहे अपनी सारी जिंदगी खर्च कर देते हैं, वह तेरे लिए काफी नहीं है। तेरे लिए दूसरा रास्ता खुला हुआ है, उस ओर चल।

शंकराचार्य ने अपनी माँ को समझाया, परंतु माँ की समझ में कहाँ और क्यों आने वाला था? उसकी समझ में तो यही आता था कि मुझे पोता चाहिए, पोती चाहिए, कोठी चाहिए। मित्रो! इन सब ख्वाबों को लात मार उठ खड़ा हुआ-शंकराचार्य। कौन खड़ा हो गया? चारों धाम की स्थापना करने वाला शंकराचार्य, बौद्ध नास्तिकवाद की जड़ें उखाड़कर हिंदुस्तान से बाहर करने वाला शंकराचार्य। उन दिनों बौद्धों का नास्तिकवाद हिंदुस्तान में लोगों के मन-मस्तिष्क में घुसता हुआ चला जा रहा था, तब शंकराचार्य ने कहा था कि हिंदुस्तान में आस्तिकता जिंदा रहेगी, नास्तिकता को हम जिंदा नहीं रहने देंगे। हिंदुस्तान से नास्तिकता को उन्होंने निकाल बाहर किया। फिर वह कहाँ चली गई? चाइना चली गई, कोरिया चली गई, मलेशिया चली गई, जापान और वर्मा चली गई, श्रीलंका चली गई, कहीं भी चली गई, पर हिंदुस्तान से भाग गई। ये शंकराचार्य की हिम्मत थी। चारों धामों की स्थापना करके सारे हिंदुस्तान को एकता के सूत्र में पिरोने वाला वह शंकराचार्य, दिग्विजय करने वाला शंकराचार्य, अनूठे विचारों वाला शंकराचार्य अलग था। उसने भगवान् की पुकार सुन ली थी।

मित्रो! अगर शंकराचार्य ने भगवान् की पुकार न सुनी होती तब? तब बेटे यही होता, जो हमारा-आपका हुआ है। क्या हो जाता? नौ बेटे और ग्यारह बेटियाँ होतीं। एक बच्चा गोद में बैठा होता, तो एक सिर पर बैठा होता और एक माँ के पेट में। एक गालियाँ दे रहा होता, एक मूँछें काट रहा होता और एक मारपीट कर रहा होता। आपके जैसे उसकी भी मिट्टी पलीद हो गई होती। लेकिन भगवान् की पुकार को सुनने वाला शंकराचार्य उनकी कृपा से जीवन की दिशाओं को लेकर न जाने कहाँ से कहाँ चला गया। भजन इसी का नाम है, जिसमें कि आदमी के जीवन की दिशाधारा बनाई जाती है, विचार बनाए जाते हैं और काम करने के तरीके बदले जाते हैं। इसी का नाम है भजन। भजन माला घुमाना नहीं है, भगवान् की पुकार सुनने का नाम भजन है।

भगवान् की पुकार

मित्रो! भगवान् की पुकार सुनने का प्रतिफल यही होता रहा है। कितने मनुष्यों के भीतर भगवान् की पुकार पैदा हुई और किन-किन सामाजिक परिस्थितियों में पैदा हुई? भगवान् समय-समय पर साकार रूप में भी और निराकार रूप में भी आते हैं। निराकार रूप में भगवान् किस-किसके पास आए और साकार रूप में किस-किसके पास आए, जैसा कि अभी मैंने आपको सुनाया। गुरुदेव अभी आप और उदाहरण सुनाएँगे। नहीं बेटे, मैं और नहीं सुनाऊँगा। अगर और हवाला देना पड़ा, तो सारे विश्व का इतिहास आपके सामने पेश करना पड़ेगा, जिन्होंने नियमों के लिए, सिद्धांतों के लिए, आदर्शों के लिए कुरबानियाँ दीं, बलिदान दिए, कष्ट उठाए और दूसरों की नजरों में बेवकूफ कहलाए, बेकार कहलाए। लेकिन अपने आदर्शों के लिए, सिद्धांतों के लिए, दुनिया में शांति कायम रखने के लिए, दुनिया में शालीनता कायम रखने के लिए जिन्होंने अपने आपको, अपनी अक्ल को, अपनी ताकत को और अपनी संपत्ति को सर्वस्व न्योछावर कर दिया, ऐसे लोगों की संख्या सारी-की-सारी तादाद लाखों भी हो सकती है और करोड़ों भी। भगवान् की गाथाएँ सुनाने के लिए मुझे उन सबके इतिहास सुनाने पड़ेंगे। आप इन सबकी कथागाथा को भगवान् की कथागाथा मान सकते हैं।

इसी तरह गाँधीजी की कथागाथा को यह कहने में कोई एतराज नहीं है कि वह भगवान् की कथागाथा है। बुद्ध की, शंकराचार्य की कहानी कहने में मुझे कोई ऐतराज नहीं है कि वह भगवान् की कथागाथा है। दूसरे अन्य लोगों ने, जिन्होंने भी नेक जीवन, श्रेष्ठ जीवन जिया, आदर्श जीवन जिया, लोगों को प्रकाश देने वाला जीवन जिया, मित्रो! वे सारे-के-सारे भगवान् थे, क्योंकि उनके भीतर भगवान् अवतरित हुआ होगा और भगवान् ने भगवान् की बाँह पकड़ ली होगी। भगवान् से उन्होंने कहा होगा कि हम आपके पीछे चलेंगे और आपकी छाया होकर रहेंगे।

सभी देवता सभी अवतार

साथियो! भगवान् का हुक्म जिन लोगों ने माना, वे सब आदमी भगवान् के अवतार कहे जा सकते हैं, देवता कहे जा सकते हैं और जिन लोगों ने भगवान् को ठोकर मारी, माला भले ही घुमाते रहे, उन्हें मैं कैसे कह सकता हूँ कि आप भगवान् के भक्त हो सकते हैं। मैं ऐसे किसी व्यक्ति को मानने को तैयार नहीं हूँ कि वह व्यक्ति भगवान् की इज्जत करने वाला हो सकता है, भगवान् पर विश्वास करने वाला हो सकता है, जो सारा दिन माला घुमाता है, सारा दिन भजन करता है, लेकिन

उसकी जिंदगी ऐसी घिनौनी है, जिसे देखकर घृणा आती है और नफरत होती है। ऐसे व्यक्ति भगवान् के भक्त नहीं हो सकते और न ही उनके अंदर भगवान् अवतरित हो सकता है।

भगवान् के अवतार मन में अवतरित हुए हैं, हृदय में अवतरित हुए हैं, आदर्शवादी सिद्धांतों और श्रेष्ठकर्मों के रूप में अवतरित हुए हैं। सृष्टि में हवा के रूप में, आँधी के रूप में निराकार भगवान् व्याप्त है। हवाएँ दिखाई नहीं देतीं, फिर भी अपना काम कर जाती हैं। इसी प्रकार निराकार भगवान् है। गाँधी जी के जमाने में एक हवा आई थी। गाँधी जी आगे-आगे चलते थे, तो उनके पीछे-पीछे सब चल पड़ते थे। गाँधी जी अकेले थे? नहीं, मित्रो! वे अकेले नहीं थे, हजारों-लाखों आदमी उनके साथ काम करते थे। हजारों-लाखों लोगों की कुरबानियों-बलिदानों, लाखों लोगों की तबाही, लाखों लोगों का गोली खाना आदि तरह-तरह की मुसीबतों को झेलकर, सबसे मिलकर उनका संग्राम हुआ। तब देश को आजादी मिली।

मित्रो! इस देश में हर जमाने में एक-एक ऐसी हवा चली है, जिसने दुनिया की दिशाधारा ही बदल दी अन्यथा इस देश मे नास्तिकवाद, अनाचारवाद फैल जाता। इन हवा को लेकर कौन आया? हवा के संदेश को लेकर कौन आया? संदेश लेकर के यहाँ भगवान् बुद्ध आए थे। तो क्या भगवान् बुद्ध ने हिंदुस्तान का-सारे एशिया का बेड़ा गर्क नहीं कर दिया था? नहीं मित्रो! ऐसा नहीं हो सकता। यह काम पीछे वालों का अनुयायियों का तो हो सकता है, पर भगवान् बुद्ध का नहीं। बुद्ध भगवान् अकेले क्या कर सकते थे? एक अकेला चना भाड़ को नहीं फोड़ सकता। एक आँधी आती है, एक तूफान आता है, एक हवा आती है। जब आँधी आती है, तो हमें आगे का काम दिखाई पड़ता है। सेना जब चढ़ाई करने जाती है, तब एक विशेष रंग का झंडा आगे-आगे फहराता हुआ चलता है और सैनिक बढ़ते हुए चले जाते हैं। ठीक है जब चढ़ाई होती है, तो झंडे के निशान आगे बढ़ते हुए दिखाई देते हैं, परंतु वह झंडा तो लड़ाई नहीं लड़ता, लड़ने वाली फौज होती है। हवाएँ कभी-कभी आती हैं। ये हवाएँ क्या काम करती हैं? ये हवाएँ यह काम करती हैं कि असंख्य मनुष्य उपकार में लगे दिखाई पड़ते हैं। गाँधी एक हवा थी, बुद्ध एक हवा थी, कृष्ण एक हवा थी, राम एक हवा थी। मित्रो! राम अकेले अगर रावण को मार सकते, तो उन्होंने वहीं से क्यों नहीं मार दिया? नहीं साहब, अकेले राम नहीं मार सकते थे। हाँ, बेटे, अकेले नहीं मार सकते थे। उन्हें रीछों की सेना लेनी पड़ी, वानरों की सेना लेनी पड़ी, जमीन पर सोना पड़ा। मनुष्य होकर रहना

पड़ा। विभीषण को साथ लेना पड़ा। ढेरों-के-ढेरों मनुष्यों को संग लेना पड़ा और तब एकत्रित सेना को लेकर रावण से युद्ध लड़ा। इस तरह से रावण का खात्मा हुआ। यह हवा थी एक जमाने में।

फिजाँ बदल देता है—अवतार

इसी तरह क्या कृष्ण भगवान् महाभारत युद्ध अकले नहीं लड़ सकते थे? अगर अकेले लड़ सकते, तो पांडवों की खुशामत क्यों करते? पांडव बार-बार यही कहते रहे कि हमें यह लड़ाई नहीं लड़नी है। वे हमारे रिश्तेदार लगते हैं। हम तो भीख माँगकर खा लेंगे, अपनी दुकान चलाकर खा लेंगे। हमें राजपाट नहीं चाहिए। हमें लड़ाई से छुट्टी दीजिए। हमने अपने स्वजनों का खून-खराबा नहीं होगा। फिर भी कृष्ण भगवान् खुशामद करते रहे, नाराज होते रहे, गालियाँ सुनाते रहे और कहते रहे कि तुम्हें लड़ना चाहिए। कृष्ण अगर अकेले महाभारत का युद्ध लड़ सकते, कंस को मार सकते, असुरों को मार सकते, सभी आततायियों को मार सकते, तो फिर मैं सोचता हूँ कि सारे विश्वभर में निमंत्रण भेजकर सेनाओं को बुलाने की क्या जरूरत थी? अगर अकेले ही गोवर्द्धन उठा सकते थे, तो ग्वालवालों को लाठी लगाने की क्या जरूरत थी।

मित्रो! अकेला आदमी कितना कर सकता है। मैं किसी तरह से यह विश्वास करने को तैयार नहीं हूँ कि एक व्यक्ति विशेष सारे-के-सारे समाज को रोक सकता है, बदल सकता है। ऐसा नहीं हो सकता। ये हवा है, जिस पैदा करने की कोई मशीन काम करती होगी, इस बात का समर्थन करने को मैं तैयार हूँ। इस हवा में बहुत से ढेरों आदमी घिरे होते हैं। इनके दिमाग और दिल एक दिशा में चल पड़ते हैं, जैसे कि अपने आंदोलन में। आपके अपने इस आंदोलन में क्या एक आदमी संचालन करता है? नहीं, एक आदमी संचालन नहीं कर सकता। क्या एक आदमी नियम बनाने के लिए आश्वासन दे सकता है? नहीं, एक आदमी के बस की बात नहीं है। एक आदमी फिजाँ बदल सकता है? एक आदमी नया जमाना ला सकता है? एक आदमी लोक-समाज में हलचल पैदा कर सकता है? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।

मित्रो! फिर यह हलचल कौन पैदा करता है? नया जमाना कौन लाता है? एक हवा आती है। ठीक है गुरुजी कहते हैं कि एक हवा आती है। नहीं बेटे, अकेले गुरुजी के कहने से कोई फायदा नहीं है। वास्तव में जब इस एक ही बात को असंख्य व्यक्ति कहते हैं, उसका समर्थन करते हैं कि हाँ ऐसा होना चाहिए, तब

इस बात को-आवाजें हलक़ को 'नक्कारे खुदा समझो।' जब हलक़ से आवाज निकलती है, तो वह नक्कारे खुदा है। जब हम कहते हैं कि 'हम नया जमाना लाएँगे।' 'हम मनुष्य के भीतर देवत्व की स्थापना करेंगे।' 'हम संसार में पुनः स्वर्ग की स्थापना करेंगे।' तो यह कौन कहता है-मैं? नहीं, हम कहते हैं। हम और आप सब मिल करके—जमाने को मिला करके एक हवा है, एक दिशा है। ये कौन हैं? ये भगवान् हैं। जब कभी एक ठिकाने पर ये हवा पैदा होती है, जिन आदर्शों को पैदा करने के लिए यह आँधी-तूफान पैदा होता है, हलचलें पैदा होती हैं, तो आप समझ सकते हैं कि इसके पीछे भगवान् की हवा है। भगवान् की प्रेरणा काम कर रही है। भगवान् का अवतार काम कर रहा है। इसी को मैं अवतार मानता हूँ।

अवतार लोकशिक्षण के लिए

क्या व्यक्ति के रूप में भी भगवान् का अवतार होता है? चलिए अब मैं आपकी बात का भी समर्थन करने को तैयार हूँ कि व्यक्ति के रूप में अवतार होता है। साकार रूप में भगवान् होता है। आप निराकार की बात पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। अतः मैं आपको साकार की बात बताऊँगा कि कैसे भगवान् लीलाएँ करने आते हैं। व्यक्ति आता है। आप भगवान् की कथाएँ तो सुनते हैं, पर गहरे में क्यों नहीं जाते? भगवान् की सारी की सारी लीलाएँ, कथा-गाथाएँ इस बात पर टिकी हुई हैं कि भगवान् एक है। यह बात अलग है कि उसने लोकशिक्षण का तरीका क्या अख्तियार किया। जब कभी भगवान् के अवतार होते हैं, तो प्रत्येक बार वह अपने आचरण से जन-जन को शिक्षा और प्रेरणा देते हैं। लोकशिक्षण का यही सबसे जानदार और सबसे सफल तरीका है।

मित्रो! लोगों के सामने बकवास करने की अपेक्षा, लोगों को उपदेश सुनाने या कथा सुनाने की अपेक्षा यह ज्यादा अच्छा है कि आपने लोगों के सामने जो उपदेश दिए हैं, उसे स्वयं के जीवन में उतारकर बताएँ कि हमने इस तरीके से जीवन जिया है। दुनिया में सबसे ज्यादा प्रभावशाली तरीका यही है। इससे बढ़िया और बेहतरीन तरीका और कोई है ही नहीं। आप इस तरीके से चलिए, जिसे देखकर के लोग सोच सकें, समझ सकें कि जो सिद्धांत आप कहना चाहते हैं, समझना चाहते हैं, वे आपके रोम-रोम में इस कदर समाए हैं कि आप इस तरह का रास्ता अख्तियार किए बिना जिंदा नहीं रह सकते। अगर आप इतना ज्यादा विश्वास लिए हुए बैठे हैं, तो आपके विचार आपकी वाणी से और आपके आचरण से टपकने चाहिए।

चलिए मैं तो यह भी कहता हूँ कि बिना वाणी के भी लोकशिक्षण किया जा सकता है। बहुत से लोगों ने अपनी जबान को बंद कर दिया था, लेकिन उनकी आस्थाएँ, उनकी निष्ठाएँ और जिंदगी का स्वरूप इतना शानदार और जबरदस्त था कि उन्होंने नई हवाएँ बना दीं, नई फिजाएँ पैदा कर दीं और न जाने दुनिया में कितनी हलचलें पैदा कर दीं। आदमी के समझने का तरीका, सुझाने का तरीका, गुरु होने का तरीका यो है कि जबान से जो हमने लंबे-चौड़े व्याख्यान सुनाए हैं, कथाएँ सुनाई हैं, उनकी अपेक्षा अपनी जिंदगी का एक नमूना पेश करें।

भगवान् कृष्ण हों या भगवान् राम अथवा और कोई अवतार, उन्होंने लोकशिक्षण का जो तरीका अख्तियार किया है, वह उनकी जिंदगी जीने का एक ढंग था। वह उनके काम करने की एक शैली थी। इस शैली के द्वारा उन्होंने लोगों से कहा कि आप स्वयं निश्चय कीजिए और उन सिद्धांतों को ढूँढ़िए, जिसके लिए हमें जन्म लेना पड़ा और जिसके लिए निरंतर कष्ट सहने पड़े। भगवान् कृष्ण की लीलाएँ, जो हमारे लिए और आपके लिए बिलकुल सामयिक हैं, आधुनिक हैं, अति उत्तम और अति प्राचीनतम भी हैं, वे हमको बताती हैं कि सिद्धांतों को जीवन में कैसे उतारें। उन सिद्धांतों को अपनाए बिना कोई महापुरुष रहा नहीं। उन सिद्धांतों को आपके मन में प्रवेश कराने के लिए भगवान् ने लीलाएँ दिखाईं-क्रीड़ाएँ कीं।

श्रीकृष्ण की लीलाएँ

भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाएँ क्या हैं? कृष्ण भगवान् जेलखाने में पैदा हुए, जो चारों तरफ से बंद था, जिसमें उनके माता-पिता बंद थे। जंजीरों से जकड़े हुए थे। उस स्थिति में एक बालक पैदा हुआ। सब ओर से घिरा हुआ जब बालक पैदा हुआ, तो उसके अंदर संकल्प की शक्ति थी। बालक यह संकल्प लेकर आया कि मुझे इन बंधनों से मुक्त होना है, और लोगों को बंधनों से मुक्त करना है। परिस्थितियाँ कितनी विपरीत और विषम थीं, लेकिन वे किस तरह से टूटती चली गईं—कच्चे धागे की तरह से।

भगवान् श्रीकृष्ण के बारे में हम किताबों में पढ़ते हैं कि उनके जन्मकाल में जेलखाने से बाहर निकलने के लिए परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं थीं। फिर भी भगवान् के संकल्प से सारे पहरेदार सो गए। सभी दरवाजे खुल गए, जंजीरें टूट गईं और पिता उस बच्चे को लेकर सुरक्षित रखने के लिए चल पड़े। भादों की घनघोर अँधेरी रात थी। जिस तरह आज की रात बादल छाए हुए हैं,पानी बरस रहा है, गंगा में बाढ़ आई हुई है, कुछ ऐसा ही दृश्य उस समय रहा होगा। जमुना में बाढ़ आई

हुई थी। चारों ओर अँधेरा छाया हुआ था। कोई रास्ता सूझ नहीं रहा था। प्रकाश कहीं था नहीं। लेकिन प्रकाश देने वाली एक ज्योति, जो इनसान के भीतर जला करती है और सहारा देती रहती है, जो मझदार में से पार निकालती रहती है। हमें मझधार में से दूसरे लोग पार नहीं निकालते हैं। हमारी अंतर्ज्योति ही हमको पार निकालती है। उन विषम परिस्थितियों में भी वसुदेव श्रीकृष्ण को टोकरी में लिए हुए आगे बढ़ते चले गए और वहाँ जा पहुँचे जहाँ नंद-यशोदा का घर था। वहाँ उस बच्चे के रहने का इंतजाम कर दिया।

मित्रो! यह घटना हमें क्या सिखाती है? यह हमें सिखाती है कि इनसान संकल्प तो करके देखे, निश्चय तो करके देखे, विश्वास तो करके देखे फिर हमसे कहे। आप यह तजुर्बा करके लाइए, फिर आपको कहीं जाने की जरूरत नहीं पड़ती। आप आगे बढ़ते हुए चले जाएँगे और आपको सफलता मिलती हुई चली जाएगी। आदमी की हिम्मत के अलावा दुनिया में और कोई शक्ति नहीं है, जो उसे पार लगा सके। आदमी की हिम्मत सबसे बड़ी ताकत है। ज्वाराभाटे की अपनी ताकत हो सकती है, लहरों की अपनी ताकत हो सकती है, समुद्र की अपनी ताकत हो सकती है, लेकिन इनसान के संकल्प के आगे कोई और ताकत नहीं है।

यही सब आदमी को सिखाने के लिए भगवान् ने अवतार लिया था। बेटे! अपने भीतर वाले को कमजोर मत होने दीजिए। भीतर वाले को मजबूत बनाइए। भीतर वाले को कमजोर बना देंगे, तो आप गिर जाएँगे। भीतर वाले को साहस के सहारे उठाएँगे, तो आप आगे बढ़ेंगे और दूसरा आदमी सहायता करने के लिए आएगा। अगर आप अपने को पीछे हटाएँगे, तो लोग आपसे पहले ही दूर हट जाएँगे। यह नसीहत कृष्ण भगवान् ने अपने जन्म के पहले दिन से ही आरंभ कर दी थी। उनके पिताजी ने भी यही बात बताई थी कि यदि परिस्थितियाँ अनुकूल रहती हैं, तो ठीक है, अन्यथा साहस और संकल्प के सहारे उन पर विजय पाई जा सकती है। अगर आपका उद्देश्य ऊँचा है और आपके अंदर साहस का अभाव नहीं है, तो परिस्थितियाँ आपके प्रतिकूल हो ही नहीं सकतीं। अगर आपका उद्देश्य नीचा है और आपके अंदर साहस का अभाव है, तो फिर आप गिरे या मरे ही समझना चाहिए। बेटे! यदि आपका उद्देश्य ऊँचा है, साहस आपका ऊँचा है, तो आपको सहायता देने के लिए सारी देवशक्तियाँ आगे आएँगी, चाहे कितना ही आपके मार्ग में अवरोध क्यों न हो। सारी सहायता आपको मिलती चली जाएगी।

जन्माष्टमी का शिक्षण

आज जन्माष्टमी के दिन यह है शिक्षण नंबर एक, जो भगवान् श्रीकृष्ण ने, उनके पिता ने अपनी घटना के द्वारा, अपने क्रियाकलाप के द्वारा हमको दिया। हम और आप तो बकवास करना जानते हैं और व्याख्यान करना जानते हैं। लेकिन भगवान् ने जो उदाहरण प्रस्तुत किया, वह कितना शानदार है। देवकी इतना नहीं कर सकती थी, वसुदेव भी इतना नहीं कर सकते थे कि कंस का मुकाबला करें और उसे मार डालें। वे सामर्थ्यवान् नहीं थे, शक्तिवान् नहीं थे, विद्वान नहीं थे, नेता नहीं थे, लेकिन साहसी थे। किन्हीं अच्छे कामों के लिए आप भी साहसी बन सकते हैं। रीछ-वानरों के तरीके से अच्छे कामों में सहायता कर सकते हैं।

रीछ और बंदर रावण को नहीं मार सकते थे, पर लंका जाने के लिए समुद्र पर पुल तो बना सकते थे। गिलहरी ज्यादा काम नहीं कर सकती थी, लेकिन समुद्र में मिट्टी तो डाल सकती थी। ठीक है, जो आदमी जिस हैसियत में रहता है, उससे आगे बढ़कर दूसरा काम नहीं कर सकता, वह अगली पंक्ति में नहीं खड़ा हो सकता, लेकिन अच्छे कामों में सहायता तो कर ही सकता है। गाय चराने वाले ग्वाले मामूली आदमी थे। उन्होंने कहा-ठीक है हम ज्यादा तो नहीं कर सकते, लेकिन भगवान् का उद्देश्य पूरा करने में अपनी लाठी का सहारा तो दे ही सकते हैं। अगर आप प्रेरणा लेना चाहें, तो आप इनसे प्रेरणा व श्रद्धा ले सकते हैं।

भागवत की कहानी कही जा रही है और लोगों द्वारा सुनी जा रही है। कहते हैं-इसको सुनने से बड़ा भारी पुण्य मिलता है। बेटे! कहानी कहने और सुनने भर से कोई पुण्य नहीं हो सकता। पुण्य केवल उस स्थिति में होगा, जब आप उससे प्रेरणा ग्रहण करेंगे, जीवन में उतारेंगे, प्रवेश करने देंगे और उसे बाहर अपने क्रियाकृत्यों में, व्यवहार में प्रकट होने देंगे। इससे कम में कोई पुण्य नहीं हो सकता। इसलिए मित्रो! भगवान्, भगवान् की क्रीड़ाएँ, लीलाएँ हमको दिशाएँ देती हैं, शिक्षण देती हैं। संघर्षों से लोहा लेना सिखाती हैं।

मित्रो! संघर्षों से आदमी समर्थ होता है। संघर्षों से आदमी की श्रद्धा निखरती है। गुरुजी! संघर्ष आते हैं तो हमारे ऊपर बड़ी मुसीबत आती है। तो बेटा, मुसीबत के बिना कोई भी आदमी दुनिया में बड़ा नहीं हुआ, तीखा नहीं हुआ, कामयाब नहीं हुआ। नहीं साहब, मुसीबत दूर कीजिए। मुसीबत हम जरूर कम कर देंगे, लेकिन साथ-साथ यह शाप भी देंगे कि तू मंदबुद्धि हो जा, फालतू हो जा, निकम्मा हो जा,

कीड़ा-मकोड़ा हो जा। महाराज जी आप ये क्या कहते हैं ? बेटे, ये तो साथा-साथ होगा, क्योंकि जो आदमी आराम की जिंदगी, चैन की जिंदगी, मानसिक चिंता रहित जिंदगी जिएगा, वह निकम्मा हो जाएगा, बेकार हो जाएगा। उसकी योग्यताएँ, प्रतिभाएँ, इच्छाएँ समाप्त हो जाएँगी और वह किसी काम का नहीं रहेगा, मुरदा बन जाएगा।

संघर्ष ही जीवन मंत्र बने

मित्रो! मनुष्य हमेशा से संघर्षों से घिरा पड़ा है। जो आदमी अपनी जिंदगी में संघर्षों से मुकाबला नहीं करते, वे जिंदगी का आनंद नहीं ले सकते। जो आदमी जरा भी श्रम नहीं करता, वह नींद का आनंद नहीं ले सकता। गहरी नींद का आनंद सिर्फ उस आदमी के हिस्से में आया है, जिसने कड़ी मशक्कत की है। हल जोतने वाला किसान दोपहर में आराम से बगीचे में जाकर हाथ का तकिया बनाकर खर्राटे भरता है और अपनी नींद पूरी कर लेता है। उसे आरामतलबों की तरह नींद के इंजेक्शन की कोई जरूरत नहीं पड़ती। रोज की गहरी नींद उनके हिस्से में आई है, दाला-रोटी उनके हिस्से में आई है, जिन्होंने कड़ी मशक्कत की है, जिन्होंने मेहनत की है। जिन्हें यही पता नहीं है कि जीवन संघर्ष क्या होता है, कठिनाइयाँ क्या होती हैं, उनका भी कोई जीवन है!

साथियो, कठिनाइयाँ आदमी को निखारने के लिए, उभारने के लिए बेहद आवश्यक हैं। चाकू पर तब तक धार नहीं रखी जा सकती, जब तक कि उसे पत्थर पर घिसा नहीं जाएगा। इसके बिना पैनापन, तीखापन नहीं आ सकता। चाकू की धार नहीं निकल सकती। मित्रो! मुसीबतें हमारी सबसे बड़ी मित्र हैं और सबसे बड़ी सुधारक-अध्यापक हैं, जो हमारी सारी-की-सारी कमजोरियों को चूर-चूर कर डालती है और हमारे भीतर हिम्मत का, बहादुरी का माद्दा पैदा करती हैं। कठिनाइयाँ हमें संघर्ष करना सिखाती हैं और न जाने क्या-क्या सिखाती हैं। यह इतनी बड़ी पाठशाला है कि इसमें से होकर आदमी प्रतिभावान् निकलता है, नया जीवन लेकर निकलता है और जिन्होंने आराम की जिंदगी जी, हराम की जिंदगी जी, वे मिट्टी के होकर के रहे हैं, कीड़े होकर के रहे हैं। अमीरों के बच्चों को आप देख सकते हैं। अमीरी में पले हुए बच्चों का सत्यानाश हो गया। जो बच्चे गरीबी में पैदा हुए, कठिनाइयों में पैदा हुए, वे हीरे के तरीके से चमकते हुए निकले, तलवार के तरीके से दरदनाते हुए निकले।

सीखें श्रीकृष्ण के जीवन से

मित्रो! भगवान् ने इसीलिए कहा कि मुसीबतों से घबड़ाना मत। कठिनाइयों से भागो मत, उनसे कुछ सीखने की कोशिश करो। कठिनाइयों से जूझने के लिए भीतर से हलचल होनी चाहिए। भगवान् श्रीकृष्ण का प्रारंभिक जीवन यही सिखाता है कि आदमी को यदि भगवान् बनना है, महान् बनना है, तो उसे कठिनाइयों का आलिंगन करना चाहिए। कठिनाइयों को जानबूझकर चैलेंज करना चाहिए। तपश्चर्या का मतलब ही होता है-कठिनाइयों को जानबूझकर अपनाना और यह अभ्यास करना कि हम मुसीबत में हैं। मुसीबत हमें सबसे पहले बहादुरी के साथ संयम करना सिखाती है। तप आदमी को न जाने क्या से क्या बना देता है।

संपत्ति, अमीरी आदमी को दुर्व्यसनी बनाती है, अनाचारी और दुराचारी बनाती है तथा असंख्य बुराइयाँ लेकर आती है। ऐय्याशी आदमी को गलाती है और उसे हजम कर जाती है। आदमी को गलत रास्ते पर ले जाती है। यह दौलत की लाभ-हानियाँ हैं और कठिनाइयाँ? कठिनाइयों में जहाँ मुसीबतें उठानी पड़ती हैं, असंख्य दिक्कतें आती हैं, वहीं मनुष्य को अपनी भट्टी में गलाकर कुंदन भी बनाती है। तो मित्रो! भगवान् श्रीकृष्ण ने अपनी जिंदगी से यही सिखाया है कि कठिनाइयों से भागो मत। कठिनाइयों का मुकाबला करो। कठिनाई आदमी की क्षमता को निखारती है। ये इम्तिहान है, मनुष्य के लिए कि उसने सिद्धांतों के लिए कितना कष्ट सहा। इसी के आधार पर हम फेल और पास होते हैं। इसके अतिरिक्त और कोई कसौटी नहीं है। कसौटी एक ही है कि सिद्धांतों के लिए उसने क्या किया, कौन-सी मुसीबतें उठाईं। जिसने ऐसा नहीं किया, जिसके जीवन में कोई प्यार नहीं, कोई सेवा नहीं, कोई बलिदान नहीं, कोई परिश्रम नहीं है, उसे हम महापुरुष नहीं कह सकते। धिक्कार है ऐसे जीवन को।

मित्रो! महापुरुषों को अपने जीवन में अनेकों कठिनाइयाँ झेलनी पड़ी हैं, इम्तिहान देना पड़ा है। भगवान् कृष्ण को सारी जिंदगी लड़ना पड़ा है। उन्हें मारने के लिए कौन-कौन आए? कालिया नाग आया, पूतना आई, कंस आया और न जाने कितने असुर आए। उनकी जिंदगी में कितने ही असुर जबरदस्ती मारने आए, जबकि वे अपनी गली में, घर में ग्वालवालों के साथ खेलते-विचरते रहते थे। वस्तुतः जो आदमी मौत के साथ में जद्दोजहद कर सकते हैं, कठिनाइयों के साथ लड़ सकते हैं, उनका यश चारों ओर फैलता है। जो मुसीबतों के लिए-कठिनाइयों के लिए तैयार रहते हैं, उनकी हिम्मत निखरती जाती है। हिम्मत के बिना सफलता के पहाड़ पर चढ़ना किसी के लिए भी संभव नहीं है।

भगवान् के जीवन की और कितनी ही सरस लीलाएँ मालूम पड़ती हैं। शुष्कजीवन, रूखा जीवन, नीरस जीवन कभी भी फलीभूत नहीं हो सकता। हँसने-हँसाने वाले जीवन में, हलकी-फुलकी जिंदगी में सरसता भरी रहती है और वह आप ही खिलती हुई चली जाती है। हँसी-खुशी की जिंदगी अगर आपकी है, तो आप हँसोगे, खिलखिलाएँगे, गाना गाएँगे और नहीं तो मुँह फुलाए बैठ रहेंगे और जिंदगी भर ये शिकायत-वो शिकायत करते रहेंगे। ये कमी है, वो कमी है—का रोना रोते रहेंगे।

मित्रो! जो आदमी हँसता हुआ, खिलखिलाता हुआ रहता है, उसके चारों ओर खुशियाँ छाईं रहती हैं। हँसने-हँसाने वाले खुद भी खिलखिलाते रहते हैं और दूसरों को भी हँसाते रहते हैं। भगवान् श्रीकृष्ण को देखिए-हँसने वाले भगवान्, हँसाने वाले भगवान्, रास करने वाले भगवान्, नाचने वाले भगवान्, बाँसुरी बजाने वाले भगवान्, साहित्यकार और कलाकार भगवान्, संगीत से प्रेम करने वाले भगवान् अरे आप इनसे कुछ तो सीखें और अपनी सारी जिंदगी को हलका बनाकर जिएँ। सारी जिंदगी हर समय मुँह फुलाकर रहने से जिंदगी जी नहीं जा सकती। इस तरह से आप खुद भी नाखुश रहेंगे और रोकर जिएँगे। शिकायतों पर जिएँगे, तो आप मर जाएँगे। जिंदगी इतनी भारी हो जाएगी कि उसे फिर ठीक नहीं कर पाएँगे। उसके नीचे आप दब जाएँगे, कुचल जाएँगे। अगर आप लंबी उम्र तक जिंदा और स्वस्थ रहना चाहते हैं, तब आप हँसने-हँसाने की कला सीखें। अगर आपको हँसना आता है, तो समझिए कि जिंदगी के राज को आप समझते हैं।

साथियो! हँसी के लिए—हँसने-हँसाने के लिए ढेरों चीज हमारे पास हैं। आपके पास हर चीज नहीं है, तो क्या आप चिड़चिड़ाते हुए, शिकायत करते हुए बहुमूल्य जीवन को यों ही बरबाद कर देंगे? क्या आपको निखिल आकाश हँसता हुआ दिखाई नहीं देता। अगर आप कविहृदय हैं, सरस हृदय हैं, तो आपको सब कुछ हँसता हुआ दिखाई पड़ सकता है। आकाश में बादल आते हैं, घुमड़ते हुए-बरसते हुए दिखाई पड़ते हैं, क्या आप इनका आनंद नहीं ले सकते? नदियाँ कलकल करती हुई बहती हैं, क्या आप इनका आनंद नहीं ले सकते? आपको इनका आनंद लेना चाहिए और आप को कलाकार होना चाहिए। जिंदगी जीने की कला को आपको समझना चाहिए। जिंदगी में आनंद के अनुभव होने चाहिए। जीवन में हँसने का समय होना चाहिए, हँसाने का समय होना चाहिए।

जिन्दगी की कला के शिक्षक

भगवान् को हम कलाकार कहते हैं। श्रीकृष्ण भगवान् ने रासलीला के माध्यम से हलकी-फुलकी जिंदगी, हँसने-हँसाने वाली जिंदगी की कला सिखाई। रासलीला गाने की विद्या है, नृत्य की विद्या है। नहीं साहब! श्रीकृष्ण भगवान् ने तो हँसने-हँसाने की विद्या बहुत छोटेपन में सीखी थी, हम तो उम्र में बड़े हो गए हैं। नहीं बेटे, बड़ी उम्र के हों तो क्या, योगी हों तो क्या, तपस्वी हों तो क्या, ज्ञानी हों तो क्या, महात्मा हों तो क्या? हँसना आपको भी आना चाहिए, हँसाना आपको भी आना चाहिए। गाँधी जी के नजदीकी मुझे बहुत दिन रहने का मौका मिला। शुरू में वे जिस कोठी में रहते थे, उससे मैं दूर रहता था, तो मुझे बार-बार उनके हँसने की आवाज आती थी। उन दासता के दिनों वे इतने गंभीर विषयों पर बातें करते थे, जैसे कि वेश्याओं की समस्या, अन्यान्य सामाजिक समस्या, करोड़ों लोगों के भाग्य के निर्माण की समस्या—इतनी समस्याओं के बीच भी मैंने उनको हँसते हुए देखा है। हमारे-आपके पास तो यह भी समस्या नहीं है। आपके पास क्या समस्या है? बस एक ही समस्या है—बेटे की और पैसे की। देश, समाज और संस्कृति को तो आप जानते भी नहीं हैं कि उनके प्रति भी आपका कुछ उत्तरदायित्व है। लेकिन मैंने गाँधी जी को इन तमाम समस्याओं के बाद भी हँसते हुए देखा है। एक बार उनसे पूछा कि बापू एक बात तो बताइए कि आप इतने गंभीर रहते हैं, इतनी चिंताओं से घिरे रहते हैं, इतने गंभीर विषय आपके पास हैं। इतनी असफलताएँ आपके पास आती हैं, इतनी समस्याओं का समाधान सुझाते हैं, पर इस कदर आप हँसते कैसे हैं?

गाँधी जी ने कहा-"मैं इसीलिए एक सही जिंदगी जी पा रहा हूँ। मेरे जिंदा रहने का और कोई तरीका नहीं। अगर मैं खुश नहीं, तो मेरी मौत, मेरी हँसी नहीं, तो मेरी मौत समझो।" मित्रो! जिसके चेहरे पर हँसी नहीं आती है, उसे बस मरा ही समझो। श्रीकृष्ण भगवान् ने वह कला सिखाई, जिसको हम जिंदगी का प्राण कह सकते हैं, जीवन कह सकते हैं। 'राम' इसी का नाम है। नहीं साहब, इसमें तो बहुत रंगदारी है? नहीं बेटे, इसमें स्वाभाविकता है, शालीनता है। आप महाभारत पढ़ लीजिए, भागवत पढ़ लीजिए, जिस समय तक उन्होंने रासलीला की है, तब उनकी उम्र दस साल की थी। दसवें साल तक सब रासलीला बंद हो गई थी। सात साल की उम्र से प्रारंभ हुई थी और दस साल की उम्र में सब रासलीला खत्म हो गई थी। दस साल से ज्यादा में कोई रासलीला नहीं खेली गई। उसमें कामुकता नहीं थी, ब्याह-शादी की कोई बात नहीं थी।"

हर्षमय जीवन

तब उसमें क्या बात थी ? उसमें था हर्षमय-आनंदमय जीवन, उसमें कन्हैया ने चाहा कि छोटे-छोटे बच्चे हों, साथ-साथ घुलमिल कर हँसे-खेलें। स्त्री-पुरुष के बीच शालीनता का क्या फर्क होना चाहिए, शील और आचरण का क्या फर्क होना चाहिए, यह जानें। अगर एक दूसरे को अलग कर देंगे,काट देंगे, तो फिर आप किस तरह से जिएँगे। माँ-बेटे साथ-साथ नहीं रहेंगे, तो किसके साथ रहेंगे ? बाप-बेटी, भाई-बहिन साथ-साथ नहीं रहेंगी। बेटी बाप की गोदी में नहीं जाएगी, क्योंकि वह स्त्री है और ये पुरुष है। दोनों को अलग कीजिए, छूने मत दीजिए। औरत को इस कोने में बैठाइए और मरद को उस कोने में बैठाइए। अरे भाई, ये कहाँ का न्याय है ? स्त्री और पुरुष कंधे-से कंधा मिलाकर काम करें, गाड़ी के दो पहियों के तरीके से काम करें, तो ही जीवन में आनंद है, प्रगति है। आज भी हमारे यहाँ रिवाज है कि मरद औरत को नहीं देखने पाए और औरत मरद को। वह घूँघट मारकर घर में रहे और पुरुष बाहर रहें। साथ-साथ नहीं चल पाएँ। ये भी कोई बात है।

मित्रो! श्रीकृष्ण भगवान् ने उस जमाने में लड़के-लड़कियों की एक सेना पैदा की और उसे एक दिशा दी। उन्होंने कहा कि लड़के और लड़कियों में अंतर करने से क्या होगा। हम और आप सब बच्चे हैं। स्त्री और पुरुष में क्या फर्क होता है ? स्त्रियों को मूँछें नहीं आतीं और मरद को मूँछें आती हैं। मूँछ आने से क्या फर्क हो गया ? स्त्रियाँ मूँछें लगा लें तब ? तब फिर वे मरद हो जाएँगी और पुरुष मूँछ हटा लें, तो वे औरत हो जाएँगे। अरे महाराज जी आप ये क्या कहते हैं ? हाँ बेटा, यही फर्क है। उस जमाने का पुरुषवादी समाज, परस्त्रीगामी समाज, जिसमें पाप और अनाचार का बंधन नहीं लगाया गया था, केवल स्त्री-पुरुष को अलग रखने की व्यवस्था की गई थी। जहाँ शील आँखों में रहता है, उस पर ध्यान नहीं दिया गया था, केवल शारीरिक बंधनों से शील की रक्षा करने की कोशिश की गई थी, श्रीकृष्ण भगवान् ने उसे तोड़ने की कोशिश की।

भगवान् श्रीकृष्ण का जीवन सिद्धांतों का जीवन था, आदर्शों का जीवन था। उनकी सारी लीलाएँ सिद्धांतों और आदर्शों को प्रख्यात करने वाले जीवन से ओतप्रोत थीं। भगवान् राम की लीलाएँ इससे आगे चली जाती हैं। उनके जीवन में एक कमी रह गई थी। क्या कमी रह गई थी ? लोगों के साथ शराफत करने का वास्ता, जो उन्होंने पढ़ा था। उनके पिताजी बड़े शरीफ थे। उन्होंने आज्ञा दी कि आपको वनवास चले जाना चाहिए। रामचंद्र जी ने कहा—ठीक है, ऐसे धर्मपरायण

शालीन पिता यदि आज्ञा देते हैं और हमको वनवास जाने का मौका मिलता है, तो हमें चले जाना चाहिए। भरत जैसा भाई यदि राजपाट सँभाल लेता है, तो वह और अच्छी तरह से चलेगा। उसमें कोई कमी नहीं आने वाली है। प्रेमभाव भी बना रहेगा, मुझे भी शांति मिलेगी। अत: मैं वनवास चला जाता हूँ, तो हर्ज की क्या बात है। इस सिद्धांत को लेकर उन्होंने राजगद्दी भरत के हवाले कर दी और बाप का कहना मान लिया।

अपूर्णता को पूरा किया

मित्रो! बात चल रही थी—श्रीकृष्ण भगवान् की। कृष्ण भगवान् का रास्ता दूसरा था। रामावतार में जो अभाव रह गया था, जो कमी रह गई थी, जो अपूर्णता रह गई थी, वह उन्होंने पूरी की। इस बात से फायदा यह हुआ कि यदि शरीफों से वास्ता न पड़े, तब क्या करना चाहिए? खराब लोगों से वास्ता पड़े तब, खराब भाई हो तब, खराब मामा हो तब, खराब रिश्तेदार हो तब, क्या करना चाहिए? तब के लिए श्रीकृष्ण भगवान् ने नया रास्ता खोला। इसमें विकल्प हैं। इसमें शरीफों के साथ शराफत से पेश आइए। जहाँ पर न्याय की बात कही जा रही है, उचित बात कही जा रही है, इनसाफ की बात कही जा रही है, वहाँ पर आप समता रखिए और उसको मानिए और आप नुकसान उठाइए। लेकिन अगर आपको गलत बात कही जा रही है, सिद्धांतों की विरोधी बात कही जा रही है, तो आप इनकार कीजिए और उससे लड़िए और यदि जरूरत पड़े, तो मुकाबला कीजिए और मारिए।

कंस श्रीकृष्ण भगवान् के रिश्ते में मामा लगता था। लेकिन वह अत्याचारी और आततायी था, अत: उन्होंने यह नहीं देखा कि रिश्ते में कंस हमारा कौन होता है। उन्होंने न केवल स्वयं ऐसा किया, वरन् अर्जुन से भी कहा कि रिश्तेदार वो हैं, जो सही रास्ते पर चलते हैं। सही रास्ते पर चलने वालों का सम्मान करना चाहिए, उनकी आज्ञा माननी चाहिए, उनका कहना मानना चाहिए। उनके साथ-साथ चलना चाहिए। लेकिन अगर हमको कोई गलत बात सिखाई जाती है, तो उसे मानने से इनकार कर देना चाहिए। यह परंपरा कितने युगों से चली आ रही है कि पिता का कहना मानना चाहिए। लेकिन अगर कोई गलत बात मानने के लिए कही जाती है तब? तब पिता का कहना प्रधान नहीं है। तब कहना चाहिए कि मैं गलत बात नहीं मानूँगा। गलत बात कहता है और पिता बनता है। गलत बात कहने वाला व्यक्ति पिता नहीं हो सकता। नहीं बेटे, हम तो तेरे पिताजी हैं और तेरे दहेज में पच्चीस हजार रुपया लेंगे। देख तुझे मेरी आज्ञा माननी होगी। पच्चीस हजार रुपये

लेंगे। देख तुझे मेरी आज्ञा माननी होगी। देख श्रवणकुमार ने अपने पिता की आज्ञा मानी थी और भीष्म पितामह ने आज्ञा मानी थी। श्रवण कुमार ने जिनकी आज्ञा मानी थी, वो ऋषि थे। भीष्म पितामह ने जिनकी आज्ञा मानी थी, वे शांतनु थे और राम ने जिनकी आज्ञा मानी थी, वो दशरथ थे। तू तो काम करता है चांडाल के, बात करता है कसाई की और हुक्म देता है। हमसे बात मनवाएगा। हम नहीं मानेंगे, चला है बाप बनने।

मात्र एक ही रिश्तेदार : धर्म

मित्रो कृष्ण भगवान् की दिशाएँ और शिक्षाएँ यही थीं कि कोई हमारा रिश्तेदार नहीं है। हमार रिश्तेदार सिर्फ एक है और उसका नाम है-धर्म। हमारा रिश्तेदार एक है और उसका नाम है-कर्त्तव्य। आप ठीक रास्ते पर चलते हैं, तो हम आपके साथ हैं और आपके हिमायती हैं। बाप के साथ हैं, रिश्तेदार के साथ हैं। अगर आप गलत रास्ते पर चलते हैं, तो आप रिश्ते में हमारे कोई नहीं होते। हम आपकी बात को नहीं मानेंगे और आपको उजाड़कर रख देंगे।

मित्रो! ये हैं श्रीकृष्ण भगवान् के जीवन की गाथाएँ, जो राम के जीवन की विरोधी नहीं हैं, वरन् पूरक हैं। राम के अवतार में जो कमी रह गई थी, उसे कृष्ण अवतार में पूरा किया। राम का वास्ता अच्छे आदमियों से ही पड़ता रहा। अच्छे संबंधी मिलते रहे। उन्हें सुमंत मिले तो अच्छे, कौशल्या मिली तो अच्छी, लक्ष्मण मिले तो अच्छे। उन्हें सब शरीफ ही मिलते गए। अगर शरीफ आदमी न मिलते तो क्या करते? तब श्रीकृष्ण भगवान् ने जो लीला करके दिखाई, वही वे भी करते। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को समझाया कि तू लड़, चाहे तेरे गुरु हों या कोई भी क्यों न हों। गुरु हैं, तो क्या हुआ? भाई हैं, तो क्या हुआ? मामा हैं तो क्या हुआ? कोई भी क्यों न हों, जब गलत काम करते हैं, तो हमारे कोई नहीं, सब विरोधी हैं। भगवान् ने यह शिक्षण अपने विरोधी मामा से लोहा लेकर के दिया।

जिंदगी बादलों की तरह जी

भगवान् श्रीकृष्ण ने अपनी सारी जिंदगी बादलों के तरीके से जी। उन्होंने कहा—हमारा कोई गाँव नहीं है। सारा गाँव हमारा है। जहाँ कहीं भी हमारी जरूरत होगी, हम वहाँ पर जाएँगे। वे कहाँ पैदा हुए? वे मथुरा में पैदा हुए, फिर गोकुल में बसे, वहाँ गाय चराई। उज्जैन में पढ़ाई-लिखाई की। दिल्ली में-कुरुक्षेत्र में लड़ाई-झगड़े में भाग लिया और फिर न जाने कहाँ-कहाँ मारे-मारे फिरते रहे। आखिर में कहाँ चले गए? आखिर में द्वारिका चले गए। आपके ऊपर तो होम सिकनेस हावी हो गई है, जो घर से आपको निकलने ही नहीं देती। अरे साहब! घर से बाहर कैसे

निकलें, हमें तो घरवालों की याद आती है, हमारा पोता याद करता होगा, पोती याद करती होगी। हम अपने घर से बाहर नहीं जाएँगे, गाँव में ही हवन कर लेंगे। सौ कुंडीय यज्ञ, तो हमारे गाँव में ही होगा। मंदिर बनेगा, तो हमारे गाँव में ही बनेगा। अस्पताल बनेगा, तो हमारे गाँव में ही बनेगा। गाँव-गाँव रट लगाता रहता है। श्रीकृष्ण भगवान् ने इस मान्यता को समाप्त किया और कहा कि सारे गाँव हमारे हैं। हर जगह हमारी जन्मभूमि है। वे दो बार मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, हिमाचल प्रदेश गए, दिल्ली गए। वे सब प्रदेशों में गए बादलों के तरीके से।

मित्रो! सिस्टर निवेदिता, एनीबेसेंट कहाँ पैदा हुई? योरोप में पैदा हुईं। उन्होंने देखा कि हिंदुस्तान में महिलाओं की स्थिति गिरी हुई है। महिलाओं की जो ऊँची स्थिति योरोप में है, वही हमको यहाँ करना है। यहाँ क्या करेंगे? जहाँ हमारी जरूरत होगी, वहाँ चले जाएँगे। सिस्टर निवेदिता हिन्दुस्तान आ गईं, एनीबेसेंट हिंदुस्तान में आ गईं। सी.एफ. एण्ड्रयूज हिंदुस्तान में आ गए। वे कितने जबरदस्त थे, उनके यहाँ कुछ कमी नहीं थी, लेकिन हिंदुस्तान में उन्होंने अपनी-अपनी जिंदगियाँ खत्म कर दीं। हिंदुस्तान की मिट्टी में उनकी हस्ती तबाह हो गई। इसी तरह गाँधी जी पोरबंदर में पैदा हुए और कहाँ चले गए? साबरमती चले गए। जब तक स्वराज नहीं मिला, आजादी नहीं मिली, वे दर-दर भटकते फिरे, गाँव-गाँव घूमते फिरे। महापुरुषों की कोई जन्मभूमि नहीं होती, कोई गाँव नहीं होता, वरन् सारा संसार ही उनका अपना घर होता है।

मित्रो! लोग अपनी-अपनी जन्मभूमि की रट लगाते रहते हैं कि यह मेरी जन्मभूमि है, वह मेरी जन्मभूमि है। अरे, जन्मभूमि किसकी होती है? जो केवल शरीर को ही सब कुछ मान लेते हैं, उन्हीं की जन्मभूमि होती है, श्रेष्ठ मनुष्यों की कोई जन्मभूमि नहीं होती। हमारी तो हर जगह जन्मभूमि है। जहाँ कहीं भी हमारी आवश्यकता पड़ेगी, हम वहीं बस जाएँगे। नहीं साहब, हमारी तो अमुक जगह जन्मभूमि है और हम वहीं जाएँगे। नहीं, कोई जन्मभूमि नहीं। शंकराचार्य कहाँ पैदा हुए थे? केरल में पैदा हुए थे। परंतु वे सारे हिंदुस्तान में घूमते फिरे। उनकी प्रेरणा से दक्षिणभारत के लोग उत्तर में आ गए और उत्तरभारत के लोग दक्षिणभारत में चले गए। कुमारजीव कश्मीर में पैदा हुए थे और सूडान होते हुए मंगोलिया चले गए और चीन में मर-खपकर खत्म हो गए। ईसा कहाँ पैदा हुए थे? कहाँ जन्म लिया और कहाँ-से-कहाँ चले गए। मोहम्मद साहब मक्का में पैदा हुए और मदीने चले गए। वहाँ रहे और बाद में उस गाँव को छोड़कर और कहीं चले गए।

नहीं साहब! हम तो अपने गाँव में रहेंगे और गाँव को ही सब कुछ बनाएँगे और वहीं मरेंगे। नहीं, मित्रो इसकी कोई जरूरत नहीं है। जहाँ कहीं भी जगह है; जहाँ कहीं भी भूमि है; जहाँ कहीं भी मौका है, जहाँ कहीं भी आपकी आवश्यकता है, आप वहाँ जाइए। नहीं साहब, हम तो गाँव में ही रहेंगे। गाँव में ही हमारे बच्चे रहेंगे। हमारे ही गाँव में पुस्तकालय बनेगा। नहीं कोई जरूरत नहीं, जब आपके गाँव में बिना पढ़े-लिखे लोग हैं, तो आप क्यों बनाते हैं—अपने गाँव में पुस्तकालय। गाँव-गाँव चिल्लाते हैं। यह 'होम सिकनेस' की, औरों से अपने को अलग करने की प्रवृत्ति है। नहीं साहब, इसके कारण तो सब छोड़कर चले गए। चले गए, तो चले गए, उनसे क्या मोहब्बत? मोहब्बत करनी है तो सिद्धांतों से कीजिए, आदर्शों से कीजिए। गाँव से क्या मोहब्बत, क्या रिश्ता? इसका सबसे अच्छा उदाहरण हमें श्रीकृष्ण भगवान् के जीवन में देखने को मिलता है। भगवान् की ये कथाएँ और प्रेरणाएँ हमें यही सिखाती हैं कि जहाँ हमारी आवश्यकता है, हमें वहीं बादलों के तरीके से जाना चाहिए।

अध्यात्म का यही है सही रूप

मित्रो! भगवान् श्रीकृष्ण की कथाएँ और प्रेरणाएँ हमको जाने क्या-क्या सिखाती हैं। श्रीकृष्ण का जीवन हमें अध्यात्म का सही स्वरूप जानने की प्रेरणा देता है। आपने तो अध्यात्म का जाने क्या-क्या अर्थ निकाल रखा है। आपके हिसाब से अध्यात्म हो सकता है—भजन, ध्यान, कुंडलिनी जगाना और आज्ञाचक्र जगाना। दंड-कमंडल लेकर ठाले-निठल्ले बैठे रहते हैं और बेकार की बातें करते हैं। जब मुसीबत आती है, तो यहाँ-वहाँ मारे-मारे भागते-फिरते हैं। सनक में जीते हैं। बैठे-बैठे योगीराज बनने का ढोंग करते और चित्र-विचित्र स्वाँग रचते रहते हैं। ऐसे लोग अफीमची की तरह सनकते रहते हैं और फालतू बकवास करते रहते हैं। इसे हम अध्यात्म नहीं कह सकते।

मित्रो! अध्यात्म क्या हो सकता हैं? अध्यात्म केवल वह है, जो हमारे क्रियाकलाप में शामिल हो। यह बात हमने शुरू में ही बताई है। अध्यात्म को हम आपके क्रियाकलाप में देखना चाहते हैं। आज्ञाचक्र जगने का मतलब आपका जीवन-चक्र घूमा कि नहीं घूमा? नहीं महाराज जी, यह तो केवल सिर में घूमेगा। बेटे, सिर में कोई चक्र नहीं घूमता। घूमता है, तो सारे क्रियाकलापों में घूमता है। केवल घर में ही नहीं, सारे संसार में चक्र घूमता है। भगवान् ने अपनी लीला के माध्यम से धर्मचक्र को घुमाया। वह धर्मचक्र जो रुक गया था, जिसका पहिया जाम

हो गया था। उस पहिए को उन्होंने घुमाया, न केवल हिंदुस्तान में, वरन् सारे विश्व में घुमाया। धर्म का चक्र इसी को कहते हैं। नहीं महाराज जी, चक्र तो सिर में घूमता है, आज्ञाचक्र में घूमता है। पागल कहीं का, सनकता रहता है और बेसिरपैर की बातें करता है। चक्र को जाने क्या समझ लिया है।

गीता का कर्मयोग

इसलिए मित्रो, श्रीकृष्ण भगवान् ने गीता में अध्यात्म का सूत्र समझाया। गीता का कर्मयोग बतलाया। गीता के कर्मयोग में उन्होंने कहा कि कर्म करने का अधिकार मनुष्य को है, किंतु फल प्राप्त करने के लिए हैरान होने की, उतावली करने की आवश्यकता नहीं है। काम करो, ईमानदारी से काम करो, शराफत से काम करो। बस, वही काफी है—आपके आत्मसंतोष के लिए। फल मिला या नहीं? हम नहीं जानते कि फल क्या मिलेगा या क्या नहीं मिलेगा? बहुत से आदमी दुनिया में ऐसे हुए हैं, जिन्होंने बेहद अच्छे-अच्छे काम किए हैं, लेकिन ईसामसीह को फाँसी पर चढ़ा दिया गया, सुकरात को जहर का प्याला पिला दिया गया। न जाने कितने अच्छे-अच्छे आदमियों को क्या-क्या किया गया। अतः हम सफलता की कोई गारंटी नहीं ले सकते, लेकिन हम आपको शांति की गारंटी दे सकते हैं।

मित्रो! अगर आप शराफत के मार्ग पर चलेंगे और यह समझते रहेंगे कि हम नेक काम कर रहे हैं, शराफत का काम कर रहे हैं, तो फिर जटायु के तरीके से आपको सफलता मिल जाए, तो क्या और न मिले, तो क्या—कोई अंतर नहीं पड़ेगा। आततायी रावण से सीता को छुड़ाते हुए जटायु मारा गया, उसे नेक काम के लिए अपनी जिंदगी देनी पड़ी, लेकिन जटायु को आप हारा हुआ नहीं कह सकते। भगतसिंह को फाँसी लग गई—तख्त पर टाँगा गया। ईसा को कीलें गाड़ दी गईं, लेकिन हम ईसा को हारा हुआ नहीं कहेंगे, भगतसिंह को मरा हुआ नहीं मानेंगे, जटायु को हारा हुआ नहीं मानेंगे। सफलता-असफलता से क्या बनता-बिगड़ता है? सफलता-असफलता की कोई कीमत नहीं। आप ने सही काम किया; नहीं किया, आपके लिए इतना ही काफी है।

यह न देखें कि मिला क्या?

साथियो! कर्मयोग में भगवान् ने यह बताया है कि आप यह मत देखिए कि उसमें फायदा हुआ कि नहीं? हमने जो चाहा था, वह मिला कि नहीं मिला? मिलना, न मिलना आपके हाथ की बात नहीं है। यह परिस्थितियों और प्रारब्ध की बात है। यह आपके प्रारब्ध की बात है कि दूसरे लोगों की सहायता या बिना

सहायता के आप क्या कर सकते हैं? किसी कार्य का क्या फल मिलता है, आपके हाथ में यह कुछ नहीं है। लेकिन एक बात पूरी तरह से आपके हाथ में है कि आप अपनी जिम्मेदारियाँ निभाएँ और कर्त्तव्य को पूरा करें। आप कर्त्तव्यों को पूरा करेंगे, जिम्मेदारियों को निभाएँगे, तो यकीन रखिए, आपको वह लाभ मिल जाएगा, जो कि योगी को मिलना चाहिए, संत को मिलना चाहिए और ज्ञानी को मिलना चाहिए। यही गीता का कर्मयोग है। गीता में अर्जुन को भगवान् ने कर्मयोग की शिक्षा दी और उसे कर्म में लगाया। उन्होंने अर्जुन से कहा कि कर्म कर, सारी-की-सारी जिंदगी की प्रतिक्रिया को अपना योग मान। गृहस्थ को योग मान। समाज के प्रति अपनी जिम्मदारी को योग मानकर अपने कर्त्तव्य को पूरा करता जा। मित्रो, यह उनका कर्मयोग था।

एक बार अर्जुन भगवान् श्रीकृष्ण से कहने लगा कि भगवान् मैं तो आपके विराट् स्वरूप का दर्शन करना चाहता हूँ। उन्होंने कहा कि भगवान् के दर्शन इन आँखों से नहीं हो सकते। इन आँखों से मिट्टी देखी जा सकती है, पत्थर देखे जा सकते हैं। इससे हाड़-मांस देखा जा सकता है। पंचतत्त्वों से बनी आँखें सिर्फ पंचतत्त्व देख सकती हैं। भगवान् पंचतत्त्वों से बड़ा है, इसलिए कभी किसी ने भगवान् को नहीं देखा और इन आँखों से कोई देख भी नहीं सकता। भगवान् को देखने के लिए आँखें ही काफी नही हैं और आँख से भगवान् को देखने की किसी के लिए भी गुंजाइश नहीं है।

दिव्य विराट् रूप

तो फिर भगवान् को कैसे देखा जा सकता है? इस पर भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा—"**दिव्यं ददामि ते चक्षुः**" अर्थात् मैं तुझे दिव्य आँखें दूँगा, विवेक की आँखें दूँगा, ज्ञान की आँखें दूँगा। मात्र ज्ञान की आँख से ही भगवान् को देखा जा सकता है और किसी तरीके से नहीं। चमड़े की आँख से आप भगवान् को नहीं देख सकते। इससे आप पत्थर देख आइए। नहीं साहब, हम तो इसी से भगवान् को देखेंगे। नहीं, आप इससे भगवान् को नहीं देख सकते। जब यह चमड़े का विषय ही नहीं, तो आप देख कहाँ से लेंगे? आपने क्या ठंढक देखी है, नहीं साहब, हमने तो केवल बरफ देखी है, ठंड तक नहीं देखी। तो क्या आपने गरमी देखी है? नहीं गरमी भी नहीं देखी है, आग देखी है। आग की बात हम पूछते हैं, गरमी की बात पूछते हैं। नहीं साहब, गरमी तो नहीं देखी है। अच्छा, तो हमारा प्यार देखा है? महाराज जी! प्यार तो आपका नहीं देखा। हाँ, आपके चेहरे की स्मिति, मुस्कान देखी है। मित्रो! हम प्यार की बात पूछते हैं, मुस्कान की नहीं।

मित्रो! अच्छा बताइए, आपने मेरा ज्ञान देखा है? नहीं महाराज जी, ज्ञान भी नहीं देखा। ज्ञान आपने देखा नहीं, प्यार देखा नहीं, गरमी देखी नहीं, ठंड देखी नहीं, तो फिर आप भगवान् को कैसे देखेंगे? नहीं महाराज जी! भगवान् दिखा दीजिए। पागल कहीं का—भगवान् देखेगा। भगवान् भी कोई देखने की चीज है! भगवान् किसी ने नहीं देखा है। अर्जुन भी कह रहा था कि भगवान् को दिखा ही दीजिए। श्रीकृष्ण ने कहा—चल तुझे दिखाते हैं। उन्होंने अपना विराट् रूप दिखाया और कहा—देख यही है भगवान्। यही स्वरूप उन्होंने अपनी माता यशोदा को भी दिखाया था। राम ने भी अपनी माता कौशल्या को अपना विराट् रूप दिखाया था। उन्होंने काकभुशुंडि को दिखाया था और कहा था कि देख यही मेरा विराट् रूप है।

मर्म समझिए

साथियो! अगर आप आँखों से भगवान् को देखना चाहते हों, तो संसार में जितनी दिव्यशक्तियाँ हैं, जितनी दिव्य विचारधाराएँ हैं और जितने दिव्यकर्म दिखाई पड़ते हैं, उनमें आप भगवान् की क्रीड़ा को देख सकते हैं। यही उनके क्रीड़ा करने योग्य स्थल हैं। उनको ही आप अक्षत चढ़ाइए, जल चढ़ाइए, अगरबत्ती जलाइए। उसमें ही अपनी अक्ल लगाइए अर्थात् ध्यान कीजिए। ध्यान करने का मतलब है—भगवान् के लिए अपनी अक्ल खरच करना। 'अक्षतांन् समर्पयामि' का अर्थ है—अपनी कमाई का एक हिस्सा लोकमंगल में लगा देना। 'आचमनं समर्पयामि' एवं 'स्नानं समर्पयामि' अर्थात् पानी चढ़ा देने का भी यही मतलब होता है—समाज को श्रेष्ठ बनाने के लिए, लोगों को अच्छा बनाने के लिए, दुनिया में भलाई लाने के लिए अपना पसीना बहाइए, अपनी अक्ल लगाइए, अपना पैसा खरच कीजिए। नहीं महाराज जी, मैं तो तीन चम्मच पानी चढ़ाऊँगा, तो पुण्य हो जाएगा। हाँ बेटे, चाहे तीन चम्मच चढ़ा, चाहे चार, इनसे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। अरे चढ़ाना है, तो वह चढ़ा, जो इसके पीछे कुछ शिक्षा है, प्रेरणा है, नहीं महाराज जी! भगवान् तो पानी चढ़ाने से ही प्रसन्न हो जाते हैं। तो फिर ठीकहै, चम्मच से ही क्यों चढ़ाता है? सावन के महीने में तीन घड़े पानी भर ले और उनकी पेंदी में सुराख करके भगवान् के ऊपर टाँग दे। चौबीस घंटे पानी टपकता रहेगा। सारे दिन 'आचमनं समर्पयामि' का पाठ चलता रहेगा और चौबीस घंटे का स्नान भी। न बार-बार नहलाना पड़ेगा, न धुलाना पड़ेगा, न बार-बार चम्मच डालना पड़ेगा, अपने आप बैठे-बैठे भगवान् जी नहाते रहेंगे। अरे मूर्ख, पानी चढ़ाने का अर्थ है—पसीना बहाना, श्रम करना। अच्छाई के लिए मेहनत करना। पूजा-अर्चना के पीछे, कर्मकांडों के पीछे छिपे हुए भाव, शिक्षा एवं प्रेरणाओं को समझना बहुत जरूरी है।

संघ शक्ति का जागरण

भगवान् ने गीता में हमें यही उपदेश सिखाया और यह कहा कि कोई भी श्रेष्ठ कार्य बिना श्रम और सहयोग के संभव नहीं है। उदाहरण के लिए, जब उन्होंने पहाड़ उठाया, तो ग्वालबालों से कहा कि आप जरा हिम्मत कीजिए, हमारे साथ आइए और हमारी मदद कीजिए, अपनी लाठी का सहारा लगाइए। मित्रो! जनता को साथ लिए वगैर आप कुछ भी नहीं कर सकते। अकेले आप समाज को सुधारेंगे? नहीं, आप अकेले कुछ भी नहीं कर सकते। आप लोगों को साथ बुलाइए, साथ लेकर चलिए। नहीं साहब, हम बड़े ज्ञानी हैं, बड़े विद्वान हैं। ठीक है, आप विद्वान हैं, तो बहुत अच्छी बात है, लेकिन आपके साथ में लोकशक्ति है कि नहीं? आप जनता के पास जाइए, और लोकशक्ति बढ़ाइए। लोकशक्ति को जगाए बिना राम का उद्धार नहीं हो सका, कृष्ण का उद्धार नहीं हो सका, बुद्ध का उद्धार नहीं हो सका और गाँधी का उद्धार नहीं हो सका, किसी का भी उद्धार नहीं हो सका, और न कभी हो सकता है। जनशक्ति को जगाइए, जनता के पास जाइए, जनता को साथ लीजिए। जनसहयोग लीजिए। श्रीकृष्ण भगवान् का गोवर्द्धन उठाना, महाभारत में सेना को खड़ा कर देना, इस बात का सबूत है कि उन्होंने जो काम किए, मेहनत से किए और लोगों की सहायता से किए हैं— जनशक्ति को साथ लेकर किए हैं।

भगवान् श्रीकृष्ण के ब्याह-शादी के बारे में कितनी ही किंवदंतियाँ मालूम पड़ती हैं। अभी जो आपको हम भगवान् की कथा बताने वाले थे, उसमें पहला विषय श्रीकृष्ण भगवान् के शादी-ब्याह वाला किस्सा ही था। लोगों ने उनके विवाह और रास को इतना घिनौना बना दिया है, जिसे हम नहीं चाहते कि हमारे पिता के ऊपर-हमारे बुजुर्गों के ऊपर ऐसे गंदे और वाहियात आक्षेप लगाए जाएँ। हम इस बकवास को सुनना नहीं चाहते और न इस तरह की रासलीला को देखने का हमारा जरा-सा भी मन है और न फुरसत है। नहीं, गुरुजी, रास देख लीजिए। नहीं बेटे, हम रास नहीं देखना चाहते। हम शिक्षा वाला नाटक देखना चाहते हैं, जिसमें भगवान् श्रीकृष्ण ने यह करके दिखाया था कि अपना राज्य सुदामा की सुपुर्द कर दिया था और तप करने चले गए। यह हमें पसंद है और इसे हम हजार बार देखेंगे। क्यों महाराज जी, आपने तो गोपियों वाली रासलीला और वह कपड़े चुराने वाली लीला देखी है? नहीं बेटे, यह रासलीला हमको नापसंद है, क्योंकि यह समाज में अनाचार फैलाती है, समाज में भ्रष्टाचार फैलाती है, समाज में अनीति फैलाती है,

समाज में भ्रष्टाचार फैलाती है, समाज में अनीति फैलाती है। हमारे आराध्य की हँसी उड़ाती है और हमारी संस्कृति के ऊपर कलंक लगाती है। यह हमें नापसंद है। इसे न हम देखना चाहते हैं और न सुनना चाहते हैं।

आराध्य का सच

मित्रो! भगवान् श्रीकृष्ण के दांपत्य जीवन के बारे में जो वाहियात बातें सुनने को मिलती रही हैं, इसके संबंध में जब मैं गहराई में गया, तो पता चला कि ये तमाम वाहियात बातें पीछे पंडितों ने मिलाई हैं। असल में उनका एक ही ब्याह हुआ था और रुक्मिणी को भी वे छीनकर नहीं लाए थे। रुक्मिणी के भाई रुक्म की रजामंदी से यह ब्याह हुआ था। जब महाभारत में यह कथा मैंने पढ़ी, तो मुझे बहुत पसंद आई और तब से मैंने श्रीकृष्ण भगवान् की शादी-ब्याह के बारे में भी जिक्र करना शुरू कर दिया। पहले मैंने यह फैसला किया था कि श्रीकृष्ण के ब्याह के बारे में मैं कुछ लिखूँगा ही नहीं कि उनका ब्याह हुआ या वे कुँवारे रहे अथवा उन्होंने बहुत-सी-औरतों से ब्याह किया था। यह सब मैं लिखना नहीं चाहता था। वस्तुतः श्रीकृष्ण भगवान् का ब्याह रुक्मिणी के साथ हुआ था, जिन्हें साथ लेकर के वे बारह वर्ष तक बद्रीनाथ तप करने चले गए।

बद्रीनाथ किसे कहते हैं? बद्री माने बेर, बेर माने बद्री। बेरों का जंगल था वहां, जहाँ आज बद्रीनाथ है। वे वहीं चले गए थे और अपनी धर्मपत्नी के साथ बारह वर्ष तक तप किया था। इसके पीछे सिद्धान्त छिपा हुआ था—आदर्श छिपा हुआ था कि हमें एक ऐसी संतान चाहिए, जो कामुकता के संस्कारों से दूर हो। इसके पीछे उद्देश्य यह था कि श्रेष्ठ नागरिक होने के लिए संयम के साथ में, तप के साथ में, ज्ञान के साथ में एक सुसंस्कारी संतान देनी है; बारह वर्ष तक इसलिए तप करके आए थे। उनके केवल एक पुत्र उत्पन्न हुआ था। उसका नाम प्रद्युम्न था। नहीं साहब! उनके सोलह हजार एक सौ आठ रानियाँ थीं। नहीं बेटे, यह सब बातें गलत हैं और पीछे पंडितों के द्वारा जोड़ी गई हैं। बेकार की इन बातों से कोई फायदा नहीं है।

मित्रो! श्रीकृष्ण भगवान् का दांपत्य जीवन श्रेष्ठ वाला दांपत्य जीवन रहा है। उसमें इस तरह के बकवास की कोई गुंजाइश नहीं है कि उनकी हजारों रानियाँ थीं। उनकी जिंदगी की आखीर वाली दो घटनाएँ इतनी शानदार रही हैं। पहली घटना वह है जब उन्होंने संपत्ति इकट्ठी की और कहा कि इसका हिसाब होना चाहिए कि कितना धन किस राज्य में कहाँ-कहाँ स्थापित हो? एक बार जब सुदामा जी द्वारका

राज्य में आए और कृष्ण भगवान् को बताया कि सुदामा नगरी का हमारा गुरुकुल टूटा-फूटा हुआ पड़ा है। हमारे यहाँ धन की कमी आ गई है। छात्रों के निवास के लिए स्थान की कमी पड़ गई है। पढ़ने के लिए पुस्तकें नहीं हैं। यह सुनकर उन्होंने सोचा कि पैसे का इससे अच्छा उपयोग और कुछ भी नहीं हो सकता है। आपके पास धन-संपदा हो, तो आप सोचेंगे कि इसे मेरा बेटा खाएगा, पोता खाएगा, लेकिन अगर कोई और खाएगा, तो मैं उसकी जान ले लूँगा। अपनी सारी कमाई किसको देगा? बेटे-पोते को देगा, अगर और किसी को देगा, तो तेरी जान निकल जाएगी।

निस्पृह जीवन

मित्रो! क्या हुआ? कृष्ण भगवान् ने देखा कि राज्य इकट्ठा किया, पैसा इकट्ठा किया, लेकिन इसे खरच करना चाहिए था। आखिर इसे खरच कहाँ किया जाए? यह विचार कर ही रहे थे कि सुदामा जी आ पहुँचे। उन्होंने सोचा, बस हो गया मेरा काम। यही तो मैं तलाश कर रहा था कि कोई ऐसा ठीक स्थान मिले, जहाँ हमारे धन का अच्छे-से-अच्छा उपयोग हो सके। समझ में नहीं आ रहा था कि मैं किसको दूँ, किसको न दूँ? माँगने वाले तो हजारों आते हैं, लेकिन जहाँ आवश्यकता है, ऐसा कोई स्थान या व्यक्ति नहीं मिला। सुदामा जी, आप ठीक समय पर आ गए। चलिए, जो कुछ भी मेरे पास है, वह सब मैं आपको देता हूँ—सब आपके सुपुर्द करता हूँ। उनका जो सारे-का-सारा धन था, उसे सुदामापुरी भेज दिया और वहाँ का विद्यालय विश्वविद्यालय में बदल दिया गया।

मित्रो! यह उनके जीवन की निस्पृहता थी, उनका कर्मयोग था। कर्मयोग में आदमी की आसक्तियाँ और मोह कटते जाते हैं और उसे यह दिखाई देने लगता है कि हमें क्या चाहिए? हमारे में कमाने का माद्दा है, लेकिन कमाने के माद्दे की सार्थकता तब है, जब इसे किसी अच्छे काम में लगा सकें। लेकिन आप तो कमाते जाते हैं और बेटों को, पोतों को चालाक बनाने के लिए, चोर बनाने के लिए, हैवान बनाने के लिए, व्यसनी बनाने के लिए और अनाचारी बनाने के लिए पाप की कमाई उनके ऊपर जमा करते जा रहे हैं। आप भी क्या यही करते हैं? नहीं, महाराज जी! हम ऐसा नहीं करते हैं। यदि आप भी ऐसा ही करते हैं, तो अपना विचार बदल दें। मित्रो! प्राचीनकाल में ऐसा ही होता रहा है। भगवान् श्रीकृष्ण ने भी अपना सारा धन सुदामा को सुपुर्द कर दिया और वे निस्पृह हो गए। ये सारी बातें उन्होंने अपने जीवन का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए सार्थक कर दिखाई।

उनके जीवन की अंतिम कथा यह है कि उन्हें याद आया कि पहले जन्म में हमने बाली को छिपकर मारा था। छिपकर मारना हमारी गलती थी। उसे छिपकर नहीं मारना चाहिए था। यह कोई कायदा नहीं है कि आप छिप करके किसी को मारे। छिप करके मारने वाले को हत्यारा कहते हैं, कसाई कहते हैं और जल्लाद कहते हैं। लड़ाई का कायदा यह है कि आप सामने वाले को भी हथियार दीजिए और खुद भी हथियार लीजिए, फिर चैलेंज कीजिए कि आइए, आपको भी अपनी रक्षा करने का अधिकार है। इस लड़ाई में जान हमारी भी जा सकती है और आपकी भी जा सकती है। आप हमारे ऊपर हमला कीजिए और हम आपके ऊपर हमला करेंगे। दोनों बहादुर ये बातें एक-दूसरे से कहते हैं। लेकिन जो आदमी बैठा हुआ है, सोया हुआ है और आपने ताड़ के पीछे से छिप करके उसे मार दिया। सोए हुए को मार दिया, यह क्या घोटाला किया। रामचंद्र जी थे तो क्या हुआ, उन्होंने ऐसा करके गलती की थी।

मित्रो! श्री भगवान् ने दिखाया कि गलती करने वाला कोई भी क्यों न हो, चाहे भगवान् ही क्यों न हो, गलती की सजा से माफी नहीं माँग सकता। वही बाली इस जन्म में बहेलिया हो गया और आकर के जब श्रीकृष्ण भगवान् पेड़ के नीचे बैठे हुए थे, तब उनको तीर मारा। तीर उनके पाँव में लगा, जिससे सुराख बन गया और सेप्टिक हो गया, टिटेनस हो गया। डाक्टरों ने इंजेक्शन लगाए, बहुतेरा चिकित्सा उपचार किया, लेकिन कोई फरक नहीं पड़ा। कृष्ण भगवान् वहीं ढेर हो गए। उनकी लाश वहीं पड़ी रही। बलराम ने भी देखा कि मेरा भाई मारा गया। अर्जुन भी वहाँ आ गए और जाकर उनका अंतिम संस्कार किया। इस सारी कथा का महाभारत में विशद वर्णन है।

मित्रो! इसी के साथ सारी कथा पूरी हो जाती है। रही बात अलौकिकता और चमत्कार की, तो महान् व्यक्तियों के साथ इसका कोई लेना-देना नहीं है। चमत्कार तो आप जैसे लोगों के लिए है, जो इसे ही सब कुछ मानकर किसी की महानता का आकलन करते हैं और कहते हैं कि यदि चमत्कारी होगा, तो महात्मा होगा, चमत्कारी होगा, तो भगवान् होगा, चमत्कारी होगा, तो गुरु होगा और अगर चमत्कारी नहीं हुआ, तो कुछ नहीं, मात्र सामान्य व्यक्ति है। नहीं साहब, गुरु गोविन्द सिंह ने तो एक से एक बड़े चमत्कार दिखाए थे, आप भी दिखाइए। नहीं भाई साहब, गुरुगोविन्द सिंह से जब एक व्यक्ति जिद करने लगा और कहने लगा था कि मेरा

खुदा बड़ा चमत्कारी है। वह एक बीज से हजारों फल निकालता है। बादलों को पिघलाकर पानी की बूँदें बना देता है। आप भी बालों में से बालू निकाल दीजिए, कानों में से मेढक निकाल दीजिए, तो हम आपको चमत्कारी मानेंगे। उन्होंने कहा—तू बाजीगरी को चमत्कार मानता है। वास्तविक चमत्कार तो यह है कि आदमी के हृदय में भगवान् पैदा किया जा सकता है या नहीं? जो आदमी पापी और पतित की जिंदगी जी रहा है, भीरु और परावलंबी जिंदगी जी रहा है, यदि वह अब स्वावलंबी और शानदार जिंदगी जीता है, श्रेष्ठ जिंदगी जीता है, लोगों को तारने वाली, विकास वाली जिंदगी जीता है, तो यही सबसे बड़ा चमत्कार है। इससे बड़ा और कोई चमत्कार नहीं हो सकता।

अलौकिक बनाम लौकिक

श्रीकृष्ण भगवान् चमत्कारी थे, लेकिन लौकिक दृष्टि से वे घोर असफल। गोपियों से प्यार करते थे, राधा से प्यार करते थे, लेकिन उन्हें छोड़कर वे कहाँ चले गए? गोपियाँ चिल्लाती रह गईं। ब्याह किया, राजपाट बसाया, अर्जुन को राजा बनाया। आखिर में भागकर स्वयं द्वारिका चले गए। अपना कुटुंब बसाया, जो अंत में आपस में लड़-मरकर खत्म हो गया। ये कैसे भगवान् थे, जिनके खानदान वाले सब खत्म हो गए। सारा खानदान चौपट हो गया। अर्जुन गोपियों को लेकर जा रहे थे। उनको रास्ते में भील मिल गए और गोपियों को ले गए। राधिका जी जाने कहाँ चली गईं। सब कुछ बिखर गया। आखिर में जो कुछ बचा खुचा था, उसे भी लोग समेट ले गए और श्रीकृष्ण भगवान् खाली हाथ रह गये। आखिरी वक्त में यह भी नहीं हो सका कि कोई मुँह में गंगाजल ही डाल दे या गौदान करा दे। गौदान कराने वाले तो नहीं हुए, उलटे उनकी लाश जंगल में पड़ी रही और वह भी अर्जुन को जलानी पड़ी।

मित्रो! इस तरह संसार की दृष्टि से भगवान् श्रीकृष्ण घोर असफल सिद्ध हुए, लेकिन आदर्शों की दृष्टि से-सिद्धांतों की दृष्टि से घोर सफल सिद्ध हुए। वे भगवान् जो आज के दिन पैदा हुए, जिन्होंने न केवल अपने क्रियाकलापों से कितना शिक्षण दिया, वरन् असंख्य नर-नारियों को संसार सागर से पार लगाया। उनका शिक्षण इतना शानदार है कि अगर हम आज की जन्माष्टमी के दिन इन चरित्रों को, इन प्रेरणाओं को, इन दिशाओं को अपने जीवन में धारण करने में समर्थ हो जाएँ, तो मजा आ जाए और आज का जन्माष्टमी का पर्व सार्थक हो जाए। हमारा समझाना भी

सार्थक हो जाए, अगर ये प्रेरणाएँ जो भगवान् ने अपनी स्थूल जीवन की लीलाओं द्वारा दी थीं, इनको हम धारण कर पाएँ तब, गीता में हमको जो बताया गया है, उसे हम धारण कर सकें तब। अगर हममें से प्रत्येक के भीतर जीवंत भगवान् का वह सिद्धांत आदर्शवादिता के रूप में उतर सके, हर क्षण उसकी आवाज और वाणी को हम सुन सकें, तो हमारा जीवन धन्य हो जाए और धन्य हो जाए आज का दिन और आज का हमारा लेक्चर।

बस, आज की बात यहीं समाप्त।

॥ ॐ शान्तिः ॥

श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट

गायत्रीतीर्थ-शांतिकुंज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

Internet:www.awgp.org Email:shantikunj@awgp.org